क़ुरआन और अहलेबैत

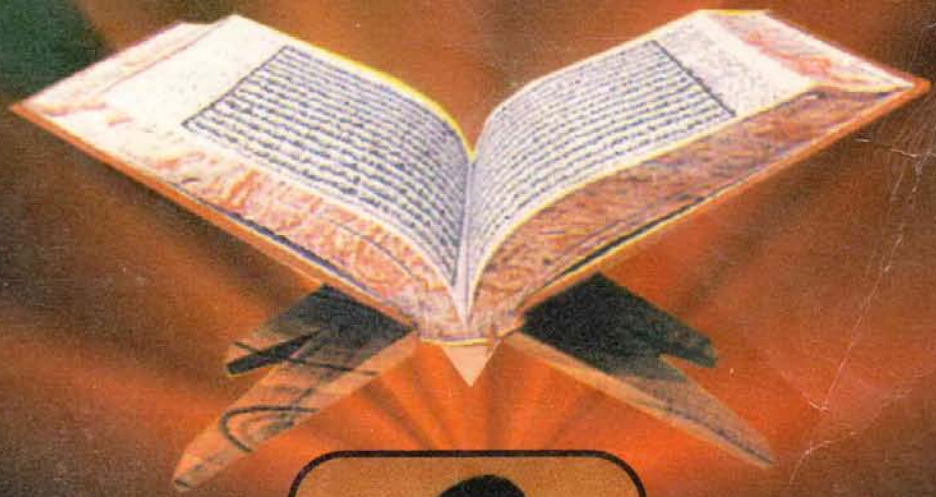

ख़तीब :

मौलाना सय्यद मुज़फ़्फ़र हुसैन ताहिर जरवली मरहूम

चेयरमैन शिया काउन्सिल आफ़ इण्डिया लखनऊ

अनुवादक :

सय्यद मोहम्मद जाफ़र एडवोकेट लखनऊ

अहबाब पब्लिशर्स

मक़बरा आलिया गोला गंज लखनऊ

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

या अली इला अला

क़ुरआन व अहलेबैत (अलै०)

ख़तीब :

ख़तीबुल ईमान आलीजनाबमौलाना

सै० मुज़फ़्फ़र हुसैन साहब

(एम० ए० एल एल० बी०)

(संस्थापक)

चेयरमैन शिया काउन्सिल ऑफ इण्डिया, लखनऊ

अनुवादक :

सै० मोहम्मद जाफ़र एडवोकेट

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

नाम किताब : कुरआन व अहलेबैत
तादाद : 1000
पब्लिशर : अहबाब पब्लिशर्स
मक़बरा आलिया, गोलागंज,
लखनऊ-226 018
फ़ोन : 0522-2225346

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

786

मुक़द्दमा

नई नस्ल का वह तबक़ा जो हिन्दी में मज़हबी किताबों को पढ़ने में दिलचस्पी रखता है उसकी ख़्वाहिश का ऐहतेराम मेरे लिऐ ज़रूरी हुआ उनका कहना कि आप उर्दू में ख़तीबुल ईमान की मजालिस का मजमुआ लायें अगर यह हिन्दी में आप शया करते तो क़ौम के वह नौजवान जो हिन्दी से ताअल्लुक़ रखते हैं वह भी फ़ैज़याब होते ।

चूँकि मेरा भी इरादा था कि हिन्दी मे भी मजालिस को लाया जाये इसलिए मैंने सबसे पहले *'कुरआन और अहलेबैत' (अ०)*को चुना कि यह हिन्दी में सबसे पहले शया हो ।

सन् २००१ में *'हक़ व बातिल'* सन् २००२ में *'इस्लाम और मुस्लमान'* ये दो किताबें *'अहबाब पब्लिशर्स'* से जनाब सै० मो० जाफ़र रिज़वी माहुली ने शया की है इसलिए मैंनें उनसे मशविरा किया तो उन्होंने फ़र्माया कि 'हैदरी कुतुबख़ाना' बम्बई से शाया हो चुकी है । मैंने उन से कहा कि मैं अब तक जो ख़तीबुल ईमान की उर्दू में किताबें शाया हैं उनमें *'कुरआन और अहलेबैत' (अ०)* को हिन्दी में लाना चाहता हूँ ताकि वह तबक़ा जो ग़ैर मुस्लिम है और अज़ादार है वह इससे फ़ायदा उठा सके *'कुरआन और अहलेबैत' (अ०)* का पैग़ाम ग़ैर तक जाय काफ़ी देर के बाद वह मेरी बात से मत्तफ़िक़ हो गये ।

मेरे वालिद ने उर्दू में इशाअत के लिये 'हैदरी कुतुबख़ाना बम्बई' को इजाज़त दी थी । आज वह नही है इसलिये मैं आपको हिन्दी में शया करने के लिये गुज़ारिश कर रहा हूँ । मेरी इस बात को 'जाफ़र भाई' ने क़ुबूल कर लिया और *'कुरआन और*

अह्लेबैत' (अ०) को हिन्दी में शाया करने की ज़िम्मेदारी कुबूल कर ली ।

मैं इसके लिये इदारे और जाफ़र भाई का शुक्रगुज़ार हूँ । यह मजालिस एक क़ीमती सरमाया है जो नई नस्ल तक पहुँचाना मेरी जिम्मेदारी है जिसको कि इदारा पूरी कर रहा है इसका सिला इनको इमामे वक़्त ही दे सकेगें ।

(मौलाना) *मीसम काज़िम जरवली* (साहब)

लखनऊ.
४.४.२००२

फ़ेहरिस्त

		पेज नं०
1.	मुक़द्मा	3–4
2.	फ़ेहरिस्त	5–5
3.	नज़रानए अक़ीदत	6–6
4.	पहली मजलिस	7–23
5.	दूसरी मजलिस	24–42
6.	तीसरी मजलिस	43–60
7.	चौथी मजलिस	61–80
8.	पाँचवी मजलिस	81–99
9.	छठवीं मजलिस	100–119
10.	सातवीं मजलिस	120–139
11.	आठवीं मजलिस	140–160
12.	नवीं मजलिस	161–177
13.	दसवीं मजलिस	178–197
14.	ग्यारहवीं मजलिस	198–222
15.	बारहवीं मजलिस	223–248

नज़रानए अक़ीदत

अज़ साहिल 'सिरसवी'

हाय ताहिर मियाँ ज़ाकिरे ख़ुशबयाँ, तेरी सूरत को किसकी नज़र हो गई
क़ौम के नौजवाँ तुझको ढूढें कहाँ, ज़िन्दगी क्यों तेरी मुख़्तसर हो गई
मजलिसों के जहाँ महफ़िलों की ज़बां, अर्ज़े मशहद पे कैसी सहर हो गई
लखनऊ की फ़िज़ा ख़ाक उड़ाने लगी, तेरे मरने की सबको ख़बर हो गई
जाके मिम्बर पे करता था बातें अज़ीब, कम नहीं हैं शहीदों से तेरा नसीब
जिस ज़मीं की भी फ़रिश्ते मोहसरत करें, वह ज़मीं हश्र तक तेरा घर हो गई
जो न सोचा था हमने वही हो गया, सबसे प्यारा जो हीरा था वह खो गया
दोस्तों के कलेजे धड़कने लगे, दुश्मनों की ख़बर मोतबर हो गई
यादे मौला में तू अपने घर से चला, सामने आ गया ख़ुल्द का रास्ता
दफ़न होने की मशहद में थी आरज़ू, ख़ाके मशहद ही ज़ादे सफ़र हो गई
इक समुन्दर था 'साहिल' से दूर, हो गया, आईना गिर के हाथों से चूर हो गया
लखनऊ अब तो ऐसा लगे है मुझे, क़ौम की रहबरी दर बदर हो गई

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पहली मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन
किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने ईमानी सरवरे कायनात ख़त्मी मरतबत जनाब मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स०) ने इस हदीस में इरशाद फ़रमाया कि मै तुम लोगों में दो चीज़े छोड़ रहा हूँ , दो वज़नी चीजें छोड़ रहा हूँ एक कुरआन और दुसरे अपनी इतरत, मशहूर व मारूफ़ हदीस है जिसे आपके सामने सरनामये सुख़न क़रार दिया है । इस लिये कि मौजुए मजालिस इन्शा अल्लाह 'कुरआन व अहलेबैत' रहेगा, इस जैल मे इन्शाअल्लाह गुफ़्तगू होगी और इस गुफ़्तगू का सबब ये है कि दुश्मनाने अहलेबैत मुख़तलिफ़ अन्दाज़ से अहलेबैत की मुख़ालफ़त करते रहे, आज भी कर रहें है और ताज़हूर हज़रते हुज्जत करते रहेंगें, हमें इसकी कोई परेशानी नहीं है, न हमें परेशानी है, और न हमें कोई हैरानी है, न हमको हैरत है इस बात पर कि लोग क्यों मुख़ालिफ है और न हम मुख़ालफ़त से परेशान हैं, हमतो सिर्फ़ हर दौर में दुनिया को बता देना अपना फ़र्ज़ समझते हैं कि चौदह सौ बरस हो गये, हज़ारों चोलें बातिल ने बदले और हज़ारों रंग अख़्तियार किये और हज़ारों तरीक़े बदले लेकिन हक़ का जादह वही रहा जो ख़िलक़ते आदम से पहले था वही आज भी है। अब एक नया अन्दाज़ निकाला गया है। इसको डाक्टर इक़बाल ने बहुत अच्छे अन्दाज़ में कहा है-

हक़ीक़ते अबदी है मक़ामे शब्बीरी ।
बदलते रहते हैं अन्दाज़ कूफ़ियो शामी ।।

ये ज़िक्रे आले मोहम्मद इसी तरह होता रहेगा और लोग नये नये रूख़ से और नये नये अन्दाज़ से आकर अहलेबैत की मुख़ालफ़त करते रहेंगें, नया ट्रेंड, नया रूख़, जो अख़्तियार किया गया है वह कुरआन मजीद यानी कुरआन अब ज़रिया बनाया जा रहा है मुख़ालफ़ते अहलेबैत का । इन्शाअल्लाह आप के सामने ये चीज़े दलील के साथ पेश की जायेंगीं मुसलमानो के ज़ेहनो को कुरआन के सहारे से और कुरआन के ज़रिये से इस तरह मोड़ा जा रहा है कि वह अहलेबैत से लगाव न रखें, आले मोहम्मद से राबता न रखें, इसके मुख़्तालिफ़ तरीक़े लोगों ने एख़्तियार किये है, इन्शाअल्लाह उन पर आपके सामने गुफ़्तगू होगी । सवाल ये पैदा होता है कि ख़ुद कुरआन अगर अहलेबैत के ख़िलाफ़ है तो आप कुरआन का नाम लीजिये आले मोहम्मद की मुख़ालफ़त में, तवज्जो फ़रमा रहे है, यानी अगर अल्लाह ख़िलाफ़ है तो उसके कलाम से फ़ायदा उठाईये, ख़ुद कुरआन अगर अहलेबैत के ख़िलाफ़ है तो कुरआन का नाम लीजिये अहलेबैत के मुक़ाबले में, यानी जब आप को मुक़ाबला करना ही है तो किसी मुख़ालिफ़ को लायें, ऐसे को लाने से क्या फ़ायदा है कि जब इस को लायें तो ख़ुद उसकी मदह मे सूरहः पढ़ने लगे । (सलवात)

क्या आप के पास मुख़ालफ़ीने अहलेबैत नहीं है ? क्या उनके अक़्वाल नही है ? क्या उनकी तक़रीरें नहीं है ? क्या उनकी किताबें नहीं है ? क्या उनकी गढ़ी हुई हदीसें नहीं है ? उन्होने कहा- भई वह सब करके देख चुके कुछ न चला, तो जब मोख़ालिफ़ की मुख़ालफ़त न चली तो कुरआन क्या चलेगा और कुरआन कैसे आले मोहम्मद के मुक़ाबले पर आयेगा, इसी लिये कुरआन की आयत को इस्तेमाल नहीं करते, सिर्फ़ नामे कुरआन, कुरआन पढ़िये, कुरआन पर अमल कीजिये, किसी की मोहब्बत से क्या होगा ? किसी के चाहने से क्या मसला हल हो जायेगा ? इस्लाम इसलिये आया था कि कुरआन पर मुसलमान अमल करें, इस्लाम इसलिये आया था कि लोग कुरआने मजीद के कहने पर अपनी ज़िन्दगी बसर करें, अपनी ज़िन्दगी को मुताबिक़े कुरआन बनाईये, मजालिस से क्या होगा ? मातम से क्या होगा ? रोने पीटने से क्या होगा ? क़सीदा ख़्वानी से

क्या होगा ? फ़ज़ाएल से क्या होगा ? कुरआन पढ़िये और कुरआन पर अमल कीजिये, तो पता नहीं इनके दिल में कुरआन कहाँ से आ गया ? मै समझता हूँ ये कुरआन जँगें सिफ़्फ़ीन से लायें है, बुज़ुर्ग मुझसे बेहतर जानते है, वाक़फ़ियत रखते है, मै बच्चों के लिये अर्ज़ कर रहा हूँ कि जंगे सिफ़्फ़ीन में जब लश्करे शाम को मौलाये कायनात के सामने शिकस्त होने लगी तो उन्होंने नैज़ों पर जुज़दानों में ईंट रख कर बलन्द कर दीं और कहा कुरआन हमारे आप के दरम्यान है, इससे फ़ैसला करेंगें तो आज जो तहरीके कुरआन चल रही है उससे हम परेशान नहीं है खुश है, इसलिये हम खुश है कि आप पर भी वही वक्त आगया है जो सिफ़्फ़ीन मे मावियां पर आ गया था । (सलवात)

तवज्जो फ़रमाई आपने बहरहाल गुफ़्तगू होगी इन्शाअल्लाह और बात होगी, सवाल ये पैदा होता है कि कुरआन, दरसे कुरआन, तजवीदे कुरआन, कुरआन पढ़ो, कुरआन समझो, कुरआन पर अमल करो, कुरआन पर चलो, कुरआन के अहकाम पर अमल करो, कुरआन मजीद क्या कहता है वह सुनो और किसी की पैरवी करने से, किसी से मोहब्बत करने से, किसी के फ़ज़ायल सुन कर खुश होलेने से, किसी की मुसीबत पर रो लेने से कुछ नहीं होने वाला बस जो कुछ है कुरआन है, तो इन्शाअल्लाह इसपर भी गुफ़्तगू होगी और जो ये लोग अहलेबैत को मानते है और अहलेबैत को चाहते है उनका कोई ताअल्लुक़ नहीं है कुरआन से यहाँ तक जसारत बढ़ी है कि लोगों ने एक जुमला निकाला है हदीस मे हदीस निकाली है और वह ये कि रसूल अल्लाह ने दो चीज़े छोड़ी थी एक कुरआन और एक इतरत यानी अहलेबैत, मुसलमानो ने क्या किया कुछ मुसलमानों ने कुरआन ले लिया और अहलेबैत को छोड़ दिया और कुछ मुसलमानो ने अहलेबैत को ले लिया और कुरआन को छोड़ दिया, देखियेगा आप अब आदमी की समझ मे आजाता है कि भई ये तो है कि कुछ लोग वह है जो कुरआन - कुरआन कहते है अहलेबैत को नहीं मानते और जो अहलेबैत को मानते है मआज़अल्लाह वह कुरआन को नहीं मानते कुछ ने कुरआन ले लिया अहलेबैत को छोड़ दिया और कुछ ने

अहलेबैत को ले लिया और मआज़ अल्लाह कुरआन को छोड़ दिया, कुरआन की कोई अहमीयत उनकी नज़र में नहीं है जब गुफ्तगू होगी तो इन्शाअल्लाह दलाएल से साबित किया जायेगा कि बग़ैर अहलेबैत के किसी को कुरआन मिलता ही नही ले लिया के क्या मानी ! बग़ैर अहलेबैत के कुरआन किसी के पास जाने को राज़ी ही नही है । (सलवात) खुद ही नहीं राज़ी है क्योंकि कुरआन तो अहलेबैत से जुदा होना ही नही चाहता । क्यों नही चाहता क्यों नहीं चाहता इसलिये कि नबी कह गये कि ये दोनों एक दूसरे से जुदा नहीं होंगें । न अहलेबैत कुरआन से जुदा होंगें और न कुरआन अहलेबैत से जुदा होगा जो लेगा उसे दोनो को क़बूल करना होगा एक का सवाल ही पैदा नहीं होता मगर हम खुश हैं कि अलहम्दो लिल्लाह हमको भला बुरा कहने का एक रास्ता निकालने के लिये चौदह सौ बरस के बाद आपने माना तो कि नबी कुरआन और अहलेबैत छोड़ गये थे । सलवात)

देखिये मैं बहोत अहम बात कह रहा हूँ अब तक तो यह प्रोपोगेंण्डा था और इसका ज़ोर था कि कुरआन और इतरत कहा ही नहीं नबी ने कुरआन और सीरत कहा तो फिर सीधी सीधी बात कहिये मुसलमानों के दो टुकड़े हो गये एक ने कुरआन ले लिया और एक ने सीरत अपना ली यही कहना चाहिये न कि रसूल ने कुरआन और सीरत छोड़ी थीं दो चीज़े छोड़ी थीं लेकिन मुसलमानों के एक तबक़े ने कुरआन ले लिया सीरत छोड़ दी एक तबक़े ने सीरत ले लिया और कुरआन छोड़ दिया यहाँ आपको अहलेबैत कैसे याद आ गये ? आप देखिये यहाँ भी शिकस्त खाई लश्करे बातिल ने कि अब उसे कहना पड़ा कि अहलेबैत के मरतबे को घटाने के लिये आले मोहम्मद के चाहने वालों के दरजात में कमी करने के लिये उनकी ख़िदमात को सुबक करने के लिये कहा और कुरआन और अहलेबैत दो चीज़े छोड़ी थीं एक ने अपना लिया कुरआन को और अहलेबैत को छोड़ दिया और कुछ लोगों ने, कुछ लोगों ने नाम लीजिये कि किन लोगों ने अरे साफ़ कहिये कि तुम लोगों ने (सलवात) साफ़ कहिये कि तुम लोगों ने कुछ लोगों ने कुरआन को छोड़ दिया और अहलेबैत को पकड़ लिया और देखो मुसलमानो जो कुछ है तो कुरआन है कुरआन

क्या है ? कुरआन कैसे नाज़िल हुआ ? कुरआन कब नाज़िल हुआ ? कुरआन क्यों नाज़िल हुआ ? कुरआन के नाज़िल होने के बाद क्या हश्र हुआ ? कुरआन किस तरह जमा किया गया ? कुरआन किस तरह से जमा करने के बाद जलाया गया ? मिटाया गया ? और किस तरह से कुरआन के साथ मुसलमानों नें सलूक रवा रखा वह सब बातें तारीख़ से आपके सामने पेश की जायेंगी आज तो सिर्फ़ तमहीदी मजलिस है जिसमे हम इतना अर्ज़ करना चाहते हैं कि जिसका दिल चाहे आये दोनो ही आ सकते हैं जिनको कुरआन से मोहब्बत है वह भी आयें और जिनको अहलेबैत से मोहब्बत है वह भी आयें क्योंकि ज़िक्र है 'कुरआन व अहलेबैत', और जो न आये या जिसे बात बुरी लगे तो दो में से एक बात है या कुरआन वाला नहीं है या अहलेबैत वाला नहीं है या दोनो से ही इसका कोई रिश्ता नहीं है। तो गुफ़्तगू सिर्फ़ इस बात पर होगी कि अहलेबैत का कुरआन से क्या राअबता है और कुरआन को समझने के लिये अहलेबैत की मारफ़त कितनी ज़रूरी है और अहलेबैत की मारफ़त के लिये कुरआन समझना कितना ज़रूरी है यानी पैग़म्बर फ़रमा रहे हैं कि एक दूसरे से जुदा न होगें और लोग इस बात की सई कर रहे हैं कि माअज़ अल्लाह दीने कुरआन और साबित किया जाये और दीने अहलेबैत और साबित किया जाये यानि कि अहलेबैत का मसलक और है और अहलेबैत तैयबे ताहरीन का इस्लाम और है और कुरआन का इस्लाम और है और कुरआन ने जो इस्लाम पेश किया है वह और है तो जब यह गुफ़्तगू छिड़ जाये और ज़ेहनो में ये बिठाने की कोशिश की जाय कि अहलेबैत का इस्लाम और है और कुरआन का इस्लाम और है और नजात कुरआन वाले इस्लाम पर मिलेगी माअज़ अल्लाह अहलेबैत वाले इस्लाम पर नहीं मिलेगी तो ज़ेहन इस नतीजे पर पहुँचता है ये लाफ़ व गुज़ाफ़ बकने वाले न ही कुरआन से वाक़िफ़ हैं और न अहलेबैत से वाक़िफ़ (सलवात)

कुरआन को भी सियासी ज़रूरयात के तहत इस्तेमाल करते हैं और अहलेबैत को भी सियासी मसलहत के तहत इस्तमाल करते हैं । इसकी दलील ये है कि इन्होंने न कभी एहतरामे कुरआन किया

और न कभी एहतराम अहलेबैत किया । जिसकी सिर्फ़ एक दलील और जवाब चाहूँगा । देखिये ! कुफ्फ़ारे कुरैश पैग़म्बर से लड़े बुत परस्त पैग़म्बर से लड़े बरसरे पैकार हुये । बद्र, ओहद, ख़न्दक़, ख़ैबर, सुल्हे हुदैबिया, फ़त्हे मक्का, लेकिन उन्होनें न कुरआन की बे हुरमती की और न ही अहलेबैत की बे एहतरामी की । ना मानना और है और बे एहतरामी करना और है । कुरआन को माना नहीं लेकिन कुरआन से बे अदबी नहीं की रसूल और आले रसूल को माना नहीं मगर रसूल व आले रसूल से बे अदबी नहीं की । ये शरफ़ मुसलमान को हासिल है कि जब तक काफ़िर था न कुरआन की बे हुरमती करता था न आले मोहम्मद की बे हुरमती करता था । मगर जबसे कलमा पढ़कर मुसलमान हुआ कुरआन की भी अहानत और अहलेबैत की भी और दोनों के साथ यकसां सुलूक किया । अगर अहलेबैत पर तीर चलाये तो कुरआन पर भी तीर चलाये, अगर अहलेबैत का घर जलाया तो कुरआन को भी जलाया । अगर अहलेबैत के फ़ज़ाएल चुरा कर दूसरो के नाम मन्सूब किये तो कुरआन का तरजुमा भी बदल डाला । आयतों की जगहें भी बदल डाली अरज़ ये है कि जिस तबक़े ने चौदह सौ साल से मुसलसल अहानते कुरआन की है और अहानते आले मोहम्मद की हो वह आज कुरआन, कुरआन कह रहा है तो अदावते अहलेबैत की वजह से कम अज़ कम कुरआन को तो माना अब वो जैसा माना आपके सामने अर्ज़ किया जायेगा । इस वक़्त तो सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना मक़सूद है कि हमें देखना क्या है ? हमें देखना इन मजालिस में यह है कि कुरआन क्या है ? और अहलेबैत क्या हैं ? कुरआन के आने का मक़सद क्या था ? और अहलेबैत का दुनियाँ में आने का मक़सद क्या है ? कुरआन की हक़ीक़त क्या है ? ख़िलक़त क्या है ? यानी किस चीज़ से कुरआन बना है । मिट्टी से बना है, आग से बना है, पानी से बना है, हवा से बना है, ख़ाली लफ़्ज़ों से बना है, काहे से बना है ? तो लोग कहते हैं कि 'नूर' से बना है अहलेबैत काहे से बने ह ? कहा 'नूर' से बने हैं यानी कुरआन की नूरानीयत को मुसलमानों ने तस्लीम नहीं किया तो कुरआन की सूरत को माना कुरआन की हक़ीक़त को

नहीं माना अगर आले मोहम्मद की नूरानीयत को तस्लीम नहीं किया तो सूरत को माना हक़ीक़त को नहीं माना । और फ़र्क क्या होता है हक़ीक़त और सूरत में ? इतना बड़ा फ़र्क है कि जो सूरत देखता है वह अपना बड़ा भाई कहता है और जो हक़ीक़त देखता है वह नूरे इलाही कहता है । (सलवात)

अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कुरआन हर घर में मौजूद और अलहम्दो लिल्लाह बावजूद इन सारी बातों के जो कल से बयान की जायेंगीं कुरआन एक ही घर में मौजूद सूरहः अलहम्द से शुरू है और सुरहः-ए-वन्नास पर ख़त्म फ़िरक़े तिहत्तर हो गये हैं कुरआन तिहत्तर नहीं हो पाये हैं कोई फ़िरक़ा हो किसी के घर से आप कुरआन उठा लाईये आप को एक ही कुरआन मिलेगा ये भी ज़रा फ़िक्र करने की बात है कि जिसके पास एक इस्लाम नहीं है उनके पास एक कुरआन कैसे हुआ ? ये बड़ा अहम मौज़ू है आज तो आप को मज़मून की सूरख़ियाँ सुना रहा हूँ और जिस दिन इसका ज़िक्र करूगाँ इन्शा अल्लाह आप के कैफ़ का ये आलम होगा कि कुरआन ऐसे का ऐसा रह कैसे गया ? मुझे बड़ी हैरत है जिन्होने कलमा एक न छोड़ा, जिन्होंने सीरत एक न छोड़ी, जिन्होने वज़ू एक न छोड़ा जिन्होनें नमाज़ यकसाँ न छोड़ी हर घर से एक ही कुरआन निकलता है जबकि हर फ़िरक़े के छपने वाले अलग अलग हैं इससे ज़्यादह मुझे हैरत इस बात की है कि अहलेबैत मे जितने नाम थे उतने ही नाम रहे फ़िरक़े बहत्तर हो गये लेकिन आजतक चौदह को पन्दरह न बना सके । (सलवात)

मासूम चौदह, ये कहा कि ये शिया चौदह मासूम मानते है ये किसी ने नहीं कहा कि हम सोलह मानते हैं, हम बीस मानते हैं, हम पच्चीस मानते है उन्होनें कहा हम मासूम नहीं मानते, बहोत से लोग कहते हैं कि हम कुरआन नहीं मानते, न मानना और है बदलना और है नहीं मानते मगर जो मानता है चौदह ही मानता है तेरह नही मानता और चौदह ही मानता है पन्दरह नहीं मानता उन्होने कहा जी हाँ मुख़ालफ़त कुरआन से भी रही मुख़ालफ़त अहलेबैत से भी रही लेकिन आले मोहम्मद में एक नाम का इज़ाफ़ा न हो सका और

अलहम्दो लिल्लाह वो नूरानी मख़लूक़ थी नूरानी है नूरानी रहेगी । चौदह के अलावा पन्दरहवाँ नूर कोई न दिखा सका चौदह में कोई ये न कह सका कि एक नूरानी न था तेरह ही नूरानी थे तो ये एक हैरत की बात है कि कुरआन न बदल सका और न ही अहलेबैत बदल सके इसका मतलब ये कि कोई ख़ास राअबता है कुरआन और अहलेबैत में रवायतें बनायीं, तरजुमे किये, तफ़सीरें लिखीं अहलेबैत के लिये न जाने क्या क्या कहा मगर शख़्सीयतों मे फ़र्क़ नहीं हो सका और लफ़्ज़ो में भी फ़र्क़ नहीं हुआ ज़माने में भी फ़र्क़ नहीं हुआ नामो में भी फ़र्क़ नहीं हुआ अहलेबैत में भी फ़र्क़ नहीं हुआ । ज़रा आप ग़ौर फ़रमाईयेगा यानी कोई दौर ऐसा नहीं रहा कि जिसमें अहलेबैत पर परदा डालने की कोशिश न की गयी हो और कोई दौर ऐसा नहीं रहा कि अपना ही डाला परदा उठा कर अहलेबैत की तरफ़ रुजूअ न करना पड़ा हो । (सलवात)

ये भी एक सुर्ख़ी है जो इन्शा अल्लाह अर्ज़ की जायेगी हर दौर मे कोशिश ये है कि मुसलमान इस्लाम हम से ले और दरे अहलेबैत पर न जाये और इस कोशिश के बावजूद आलम ये है कि बग़ैर जाये जवाब ढूँडे नही मिलता खुद बग़ैर जाये जवाब ढूँडे नहीं मिलता । तो ये सब चीज़े इन्शा अल्लाह इस अशरह-ए-मुबारक मे देखेंगें और ये ज़िम्मेदारी कि एक हरफ़ भी अपनी किताब से नहीं पढ़ेगें क्योंकि सबसे बड़ी मुसीबत तो यही है कि मुसलमान पूछता है कि किस किताब मे लिखा है देखिये मैं क्या अर्ज़ कर रहा हूँ हमारे यहाँ है तो ठीक है आप के यहाँ है तो हम क्यों माने ? तो लुत्फ़ तो यही है कि किताब आप की हो, और बात हमारी हो, मोअर्रिख़ आपका हो और हक़ीक़त हमारी हो, तारीख़ हमारी हो, मोहद्दिस आप का हो हदीस हमारी हो तफ़सीर आपकी हो मतलब हमारा हो । ग़ौर फ़रमा रहे है तो फिर इन तमाम चीज़ों पर नज़र डालने के बाद इन्शा अल्लाह बदले न बदले ये तो मुसलमान को अख़्तियार है लेकिन कम से कम ये ज़रूर साबित हो जायेगा बतसद्दुक़ आईम्मये मासूमीन कि हाँ भई कुरआन को मानता वही है जो अहलेबैत का मानने वाला है और जो अहलेबैत को मानता है वही कुरआन समझता है और जो

कुरआन को समझता है वही अहलेबैत को मानता है । (सलवात)

इस बात की सई हमेशा की गयी है कि कुरआन मजीद को मिटा दिया जाये लेकिन कुरआन किसी के मिटाये मिट नही सका इस बात की हमेशा कोशिश की गयी है कि ज़िक्रे अहलेबैत को मिटा दिया जाये लेकिन ज़िक्रे अहलेबैत किसी के मिटाये नही मिट सका मिटता विटता कुछ नही है तवज्जो चाह रहा हूँ आदमी खुद ही मिट जाता है जब भी कोई किसी हकीकत को मिटाने की कोशिश करता है तो हकीकत मिटती नही है मिटाने वाला खुद मिट जाता है उसकी मिसाल खुद बुजुर्गो ने दी कि अगर कोई सीसा पिलाई दीवार हो मज़बूत दीवार हो और इस दीवार को कोई चाहे कि सर टकरा टकरा कर दीवार को गिरा देंगें तो जितने सर दीवार से लड़ेगें सब टुकड़े हो जायेगें दीवार अपनी जगह खड़ी रहेगी वही बात आले मोहम्मद की है कि चौदह सौ बरस से सर मार रहे है मगर इतनी पाकीज़ा दीवार है कि इनके खून का धब्बा भी नज़र नही आता । अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कि कुरआन क्या है ? कुरआन अल्लाह का कलाम है आप समात फ़रमायें कि कुरआन मजीद का पहला वजूद क्या है ? वजूद कहाँ है ? कुरआन के मोताअल्लिक़ तो तमाम उलमाये इस्लाम लिखते है कि कुरआन मजीद रफ्ता रफ्ता नाज़िल हुआ । अब बात आयी है नज़ूल की तो आज आपके सामने नज़ूल की बात पेश करूँ जस्ता-जस्ता, टुकड़े-टुकड़े, आयत-आयत, सूरह-सूरह पैगम्बरे इस्लाम पर नाज़िल हुआ जिबरईल लाने वाले ज़रिये-ऐ नज़ूल जिबरईल भेजने वाला अल्लाह पाने वाला उसका रसूल लाने वाले जिबरईल अब इसी कुरआन में अल्लाह ने कह दिया कि हम ने कुरआन को मुबारक रात में नाज़िल किया-

इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलते मुबारका

एक आयत है कुरआने मजीद की इसमें ईरशाद होता है कि हम ने इसको मुबारक रात में नाज़िल किया इसके बाद महीना बताया और कहा -

शहरो रमज़ानल्लज़ी अन्ज़लता फ़ीहिल कुरआन

ये रमज़ान का महीना है जिस में हमने कुरआन को नाज़िल किया ।

ग्यारह महीने से घटकर एक महीने में आगया । (सलवात) और इसके बाद एक जगह पर इरशाद फ़रमाया -

इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़द्र

हमने कुरआन को 'लैलतिल क़द्र' मे नाज़िल किया मुबारक रात में नाज़िल किया ये २३ बरस तक नाज़िल होता रहा । (सलवात) माअज़ अल्लाह माअज़ अल्लाह अस्तग़फ़ार अल्लाह, जो बड़े कुरआन वाले बनते है वो कहते है तज़ाद है कुछ समझ मे नहीं आ रहा है अल्लाह क्या कह रहा है ? क्या फ़रमा रहा है ? अल्लाह क्या कह रहा है ? अल्लाह कह रहा है हमने मुबारक रात में नाज़िल किया तो ठीक है शबे क़द्र रमज़ान में है, तो जब शबे क़द्र रमज़ान में है तो कुरआन रमज़ान में नाज़िल हुआ और शबे क़द्र में नाज़िल हुआ यानी एक ही रात में नाज़िल हुआ । और फिर रवायतें हज़ारों कहती है कि नबी पहाड़ पर थे और आयत आयी, नबी नमाज़ मे थे और आयत आयी, नबी बिस्तर में थे और आयत आयी, नबी लिहाफ़ में थे और आयत आयी । *(सलवात)*

तो ये क्या मामला है ? ख़ोटा कहता है हमने रमज़ान में लैलतिल क़द्र मे क़ुरआन को नाज़िल किया और तारीख़ ये कहती है और रवायतें ये कहती है कि यहाँ नाज़िल हुआ, वहाँ नाज़िल हुआ, मक्का में नाज़िल हुआ, मदीने में नाज़िल हुआ, वह कौन सी शबे क़द्र थी जो आधी मक्के मे गुज़री और आधी मदीने मे गुज़री । ये है परेशानी की बात लाईये रवायत यहीं से गुफ़्तगू शुरू है । समझाईये मगर शर्त एक है कि बग़ैर अहलेबैत के, पहले नज़ूल की गुत्थी सुलझाईये बाद में देखा जायेगा । जो अल्लाह ने तीन-तीन आयतें कुरआन के लिये भेज दीं फिर आयतें अलग-अलग भेजीं इसमें क्या बाते सही है उन्होने कहा जी ! ख़ुदा फ़रमाता है ख़ोदा जाने । तो ख़ुदा जाने तो फिर आप न बोलिये क्योंकि आप कुछ नहीं जानते ! बताईये इस मसले में ख़ुलफ़ाये इस्लाम की क्या राय है ? इस मसले में असहाब क्या फ़रमाते है ? इस मसले में अज़वाज क्या फ़रमाते है ? इस मसले में ताबेईन क्या फ़रमाते है ? किताबें आप के सामने है कुतुबख़ाने आपके सामने है बताईये किसी मसले को बता दीजिये

क्या फ़रमाते है हुज़ूर, आईम्मा अरबा क्या फ़रमाते है, आईम्मा अरबा इस मसले में क्या फ़रमाते है ? इमाम अबू हनीफ़ा का क्या ख़्याल है ? इमामे मालिक का क्या ख़्याल है ? इमाम अहमद बिन हम्बल का क्या ख़्याल है ? खुद आप का क्या ख़्याल है ? मुफ़स्सरीन का क्या ख़्याल है ? मौलाना शौकत अली फ़हमी साहब का क्या ख़्याल है ? तफ़सीर लिखने वालों का क्या ख़्याल है ? अल्लामा जलालुद्दीन स्योती का क्या ख़्याल है ? अल्लामा फ़ख़रूद्दीन राज़ी का क्या ख़्याल है ? मौलाना आज़ाद का क्या ख़्याल है ? मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी का क्या ख़्याल है ? अल्लामा मौदूदी का क्या ख़्याल है ? उन्होने कहा साहब ! ये तो मुफ़स्सिर है तो जब नजुल का ही मामला तैय नहीं तो तफ़सीर का क्या सवाल । *(सलवात)*

अभी यही झगड़ा तैय नहीं कि एक रात में नाज़िल हुआ कि पूरे महीने में नाज़िल हुआ । बाईस बरस में नाज़िल हुआ उन्होने कहा भई ! ख़ोदा फ़रमाता है इसलिये कोई तो तावील करना चाहिये हमें तावील नहीं मालूम इसका मतलब ये है कि कुरआन बग़ैर तावील के समझमे नहीं आता ढूँडिये उलटिये वरक़ गरदानी कीजिये इस मौज़ू पर कोई बोला ? (सलवात) सिर्फ़ पूरी इसलाम की किताबों में इसमे सच्ची रवायतें भी, झूठी रवायतें, तवज्जो चाह रहा हूँ । एक रवायत और भी है वह जनाबे अब्बास से अरे ये तो ख़ानदाने रिसालत के है मगर क्या करें बस एक ही रवायत है वह भी इब्ने अब्बास से और इब्ने अब्बास से रवायत ये है कि मैने एक दिन अली से पूछा बेकार हो गया पूछ्ना तवज्जो चाह रहा हूँ वह कुरआन न लेगें जो अली (अ०) से मिलेगा । (सलवात) नहीं लिया एक जुमला कहना चाहता हूँ जो कुरआन अली ने जमा किया था वह तो वापस कर दिया कमाल तो जब था कि अली के मानी भी वापस कर दिये होते मानी भी वापस कर देते ये तो अजीब बात है कि आप मिठाई का डिब्बा लाये मैनें बर्फ़ी निकाल ली और डिब्बा वापस कर दिया जिसने खाते देखा कहा खा रहे है इसी डिब्बे का आज तक खा रहे है इसी डिब्बे का तो पूछा फ़रमाया क्या परेशानी की बात है ? कोई परेशानी की नहीं है सबसे पहले अल्लाह ने कुरआन को लौहे

महफ़ूज़ पर नाज़िल किया और ये कुरआन में नूज़ल की आयतें हैं ये हैं लौहे महफ़ूज़ के मुताअल्लिक़ कि अल्लाह ने एक शब में शबें क़द्र में रमज़ान के महीने में कुरआन को नाज़िल किया और लौहे महफ़ूज़ पर नाज़िल किया । और फ़रमाते है आने वाहिद में नाज़िल किया । (सलवात) और नबी के पास लौहे महफ़ूज़ से फिर रफ़्ता रफ़्ता आयतें नाज़िल होती रहीं..... तो हज़ूर ये मन्ज़िलें है कुरआन की पहली मन्ज़िल लौहे महफ़ूज़.....अच्छा.... ये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? "लौह" कहते है तख़्ती को और "महफ़ूज़" कहते है जिसमे गड़बड़ न हो सकें महफ़ूज़ हो, चोरी न होसकें, डाके न पड़ सके, बदला न जा सके, तब्दील न किया जा सके तब तो महफ़ूज़ रहेगा तो लौहे महफ़ूज़ का मतलब ये कि ऐसी लौह जो महफ़ूज़ हो, किससे ? यहूदियों से ? ईसाईयों से ? मैं कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ.....मुशरेकीन से ? कुफ़्फ़ार से ? नही जिन्होंने कुरआन बदला उनसे ! यानी मुस्लमानों से महफ़ूज़ (सलवात) तुम ही से महफ़ूज़..... तुम्ही से ख़तरा था कुरआन बदलेने का बताईये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? असहाब बतायें ये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? अज़वाज बतायें ये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? खुलफ़ाये बनी अब्बास बतायें ये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? आईम्मा-ए- अरबा बतायें ये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? अरे आप बतायें ये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? लौहे महफ़ूज़ ..... अरे क्या है ? लौहे महफ़ूज़ ? तख़्ती है ! काहे की तख़्ती है ? क्यों कर है ? किस ने आज तक लौहे महफ़ूज़ को वाज़ेह किया है ? जहाँ कुरआन सबसे पहले नाज़िल हुआ वह क्या है ? ये हमें नहीं मालूम तो जब वो नहीं मालूम तो दिमाग़े पैग़म्बर क्या है तुम क्या जानो- दिले रिसालत क्या है तुम क्या जानो - जहाँ पहले नाज़िल हुआ क्या है ? कहा तख़्ती अब एक एक करके दरवाज़े पर पहोंचा ? बताईये लौहे महफ़ूज़ क्या है ? कहा कुछ नहीं, है तो कोई चीज़ लौहे महफ़ूज़ मगर देखा नहीं, सुनी नहीं, भई लौहे महफ़ूज़ मे पढ़िये लिखा क्या है ? हम कहाँ पढ़ सकते हैं, तो जब पढ़ नहीं सकते तो कुरआन के मानी क्या बता सकतें है पता नहीं वहाँ क्या महफ़ूज़ है ? उन्होनें कहा साहब ! हमें नहीं मालूम तो फिर अब ढूँडिये तो अल्लामा जलालुद्दीन स्योती अपनी किताब 'अलईक़ान फ़ी

ईल्मुल कुरआन' में तहरीर फ़रमातें है कि जनाब इब्ने अब्बास से रवायत है कि उन्होने एक दिन पूछा कि या अली ये लौहे महफूज़ क्या है ? तो लिखा है अली (अ०) ने फ़रमाया लौहे महफूज नूरानी मोतियों की एक तख़्ती है । (सलवात) 'लौहे महफूज़ नूरानी मोतियों की एक तख़्ती है जिसका तल शर्क़ व ग़रब से ज़्यादह है अच्छा तसल्ली हो गयी मगर क्या कोई समझा ? कोई नहीं समझ सका आज समझिये कि अली ने क्या कहा था ? नूरानी मोती चाँदी नहीं कहा, सोना नहीं कहा, याकूत नहीं कहा, मरजान नहीं कहा तवज्जो चाह रहा हूँ । हीरा नहीं कहा, मोती कहा तो कलामे अली है इस मोती मे कोई मोती टका होगा । देखिये मोती होता है गोल । मोती सर्कुलर होता है पत्थर तो हश्त पहलू होंगें छः पहल होगें । चार पहल होंगें एक पहल होगें, फ्लैट होगें स्कवायर होगें मगर मोती गोल होगा और फरमाते है नूरानी, आज किसी से पूछ लीजिये ये कम्पयूटर क्या है ? तो वह कहेगा कि ये इलेक्ट्रानिक्स के डाट्स हैं डाट्स (नुक़्ते) को गोलाई बताई मोती की और इलेक्ट्रानिक को अली ने नूर बताया । जैसे आज अपना सारा मैटर आप इलेक्ट्रानिक के ज़रिये कम्पयूटर मे फ़िड कर देते है । वैसे ही अल्लाह ने सारा इल्म 'लौहे महफूज़' के कम्पयूटर में शबे क़द्र मे फ़िड कर दिया । (सलवात) नूरानी मोती, मोती से मौला ने गोलाई बताई और नूर से नूरानीयत साबित, डाट्स के (नुक़्ते) ऊपर सारा निज़ाम है कम्पयूटर का जितनी चीज़े कम्पयूटर में फ़िड की जाती है उनकी बुनियाद नुक़्ते है । बता दिया कि लौहे महफूज़ भी नुक़्ते से बनी है, तो पहले नुक़्ता समझो । ये भी ज़िक्र आयेगा इन्शा अल्लाह और नुक़्ता न समझोगे तो कुरआन क्या ख़ाक समझोगे । अब आप जाते है कम्पनियों में, लाईसेन्स में, और इधर उधर हर जगह कम्पयूटर लगे हुये है । मै गया मैने कहा क्या क्या है आप जानते है ? मैनें कहा जानता कुछ भी नहीं हूँ । उन्होने कहा छुईयेगा नहीं अरे साहब फिर लगाया क्यों है ? पब्लिक के लिये । पब्लिक के लिये तो है मगर मेहरबानी फ़रमाईये आप पूछिये क्या पूछते है ? हम बतायेगें अरे भई आप क्यों बतायेंगें ? कहा आप आपरेट करेगें तो मशीन ख़राब हो जायेगी । सब कुछ उसमें है मगर

चाबी हम दबायेंगें क्योंकि हमें मालूम है कि क्या दबाने से क्या पता चलेगा । अल्लाह ने कहा कि कुरआन भेजे तो देता हूँ मगर आपरेट न करना । अहलेबैत बतायेगें कहाँ पर क्या है । (सलवात) लौहे महफूज़ नूरानी मोतियों की एक तख़्ती है और इसी में कुरआन भी नाज़िल हुआ इसी में हमारा आप का मोक़द्दर भी लिखा है । तवज्जो चाह रहा हूँ । अल्हम्दो लिल्लाह कि हमारे मोक़द्दर में मदह लिखी है । हम क्या करें कि किसी के मोक़द्दर में जलना लिखा है । उन्होने कहा । साहब इससे अहलेबैत से क्या मतलब ? अहलेबैत से नहीं मतलब है ! भरा मजमा है । मस्जिदे नबवी है और पैग़म्बरे ईस्लाम है हसनैन गोद में बैठे है और कहा मुस्लमानो पहचान लो ये बच्चे वह है जो यहाँ से बैठकर लौहे महफूज़ का मुताअला करते है । *'सवाअक़े मुहरेक़ा'* में हज्र असक़लानी ने लिखा है कि एक रवायत के सिलसिले में कि ये बच्चे बचपने में लौहे महफूज़ का मोताअला करते थे तो जिस के बच्चे लौहे महफूज़ का मोताअला करें उसका बाप ? वह बतायेगा कुरआन, तो अर्ज़ करने का मक़सद ये है कि कुरआन कम्पयूटर मे फिड है आप ने उसे जब काग़ज़ पर उतारा तो मक्की, मदनी, न सभांल सके । मानी क्या सभांलेगें । बस इन्शा अल्लाह आज से शुरू कर दिया है । एक सैम्पिल आप को दिखा दिया है, एक नमूना दिखा दिया है कि आप आप तश्रीफ़ लायें । डरे नहीं और आकर देखें कि ग़ुलामाने दरे आले मोहम्मद कुरआन को क्या समझते है ? और जिन्होनें ने कुरआन के नाम पर दलीलें जमा कर ली उन्होने कुरआन को क्या समझा । ये जो मजालिस मुनाअक़िद हो रही है। ये ग़मे हुसैन में ही नहीं है ये मसायबे कुरआन भी है । अगर हुसैन न बचाते इस्लाम तो कौन बचाता । कौन सा इस्लाम बचाया हुसैन ने जिसको लोगों ने बदल दिया था वह बचाया नहीं..... जो कुरआन में है वह इस्लाम बचाया। तो कुरआन किसने बचाया ? कर्बला की लड़ाई, ख़िलाफ़त की और हुकूमत की लड़ाई नहीं थी । कर्बला की लड़ाई कुरआन की लड़ाई थी । और बैयत जो हुसैन से माँगी जा रही थी वह बैयत ख़िलाफ़त की नहीं माँगी जा रही थी बल्कि कुरआन के मिटाने की माँगी जा रही थी, और इस की दलील

ये है कि बादे शहादत हुसैन ने पहला काम जो किया वो ये कि नैज़े पर कुरआन पढ़ा । फ़िक्र से काम लें, नबी के नवासे ने क़त्ल होने के बाद, शहीद होने के बाद जैसे ही हुसैन का सर नोके नैज़ा पर बलन्द किया गया कुरआन मजीद की तिलावत शुरू हो गयी उसको सारे लोगों ने सुना जो कर्बला में थे । मौला आप कुरआन क्यों पढ़ रहे है कहा तुमको नहीं मालूम ये लड़ाई हम से नहीं थी । ये लड़ाई कुरआन से थी क्योंकि ये समझते थे कि हम को मिटा देंगें तो कुरआन मिट जायेगा । तो मै पढ़ कर बता रहा हूँ कि हम क़त्ल हो जायेगें मगर कुरआन का साथ नहीं छोड़ेगें । हम मरकर भी कुरआन पढ़ सकते है । आज कहते हो कि आशूरा के दिन कुरआन पढ़ो । किस लिये कुरआन पढ़ें कहा हुसैन के लिये कुरआन पढ़ो । कुरआन क्यों पढ़ते है ? अपने बाप दादा के लिये क्योंकि वह ज़िन्दगी में वह पढ़ते थे मरने के बाद वह पढ़ नहीं सकते इसलिये हुक्म है कि वह मजबूर है तुम पढ़कर बख़्शो । मगर जो मरने बाद खुद ही कुरआन पढ़ रहा है, जो खुद ही पढ़ रहा है कुरआन उसे तुम क्या कुरआन बख़्शोगे ? तुम्हारा शीन, क़ाफ़ तो सही नही... तवज्जो चाह रहा हूँ । शीन, क़ाफ़ तो सही नहीं तुम बख़्शोगे कुरआन उस हुसैन को जिसने नोके नैज़ा पर कुरआन की तिलावत करके बताया कि हम को कुरआन से जुदा नहीं किया जा सकता है और कुरआन हम से जुदा नहीं हो सकता । इस हुसैन ने अपने बेटे से क्या कहलाया । हम समझते है कि हर जगह आप ने कुरआन को इस्तेमाल किया है आशूर को भी इस्तेमाल करते है । ताकि मुस्लमान बाहर जाकर दास्ताने ग़म न मालूम कर सकें, जलूस में न शरीक हो सकें, न रो सकें, मातम न देख सकें और किसी से सुन सके कि हुसैन क्यो क़त्ल किये गये। बैठ गये मस्जिद में कुरआन पढ़ते रहो। किस लिये ? हुसैन के लिये ! नबी के नवासे के लिये ! क्या ज़रूरत है । हुसैन तो खुद ही कुरआन पढ़ रहे है। मजबूर नहीं है हुसैन । तुम्हारे कुरआन के मोहताज नहीं है तुम हुसैन के मोहताज हो । तवज्जो फ़रमाई आपने तो आज भी कुरआन को इस्तेमाल किया जाता है फिर क्या करें ? इसी से पूछ लो जिसे कुछ भेजना चाहते हो। वह चलते

चलते कह गया सैय्यदे सज्जाद जब क़ैद से छुट कर मदीने जाना मेरे दोस्तों को मेरा सलाम कह देना, और कहना जब ठंडा पानी पीना तो मेरी प्यास को याद कर लेना, सबील लगाना बिदअत हो गयी और कुरआन पढ़ना सुन्नत हो गया । फ़िक्र करने की बात है । हुसैन ने कहा देखो जब पानी पीना तो हुसैन की प्यास याद कर लेना और दूसरी वसीयत क्या फ़रमायी । हमारे दोस्तों से कहना कि जब तुम पर कोई मुसीबत पड़े तो हमारी मुसीबत को याद करके रो लेना । ये मजलिसें हम क्यों करते है ? ये ज़िक्रे शहादत क्यों करते है ? वो मुसलमान जो नबी के नवासे की वसीयत को पूरा करना चाहता है वो तज़किरा-ए-हुसैन करता है । उन्होने कहा ये रोना रूलाना । न रोना न रूलाना ज़िक्र ही ऐसा है और ये दलील ही मोहब्बत है । तीसरी बात क्या फ़रमायी । तीसरी बात ये फ़रमाई न सुनेगा मेरा दोस्त । ये इमाम हुसैन की लफ्ज़ें है । न सुनेगा मेरा दोस्त, मेरा वाक़या, मेरा तज़किरा मेरा नाम, मगर ये कि उसकी आँखों से आँसू निकल आयें । ये फ़रमाया इमाम हुसैन ने - ऐ मुसलमानो ग़मे हुसैन में रोना हुसैन से मोहब्बत और दोस्ती की दलील है । हम ये आँसू बहा कर चाहते है कि नामये अमाल में लिख लिया जाये और क़यामत में रसूल अल्लाह के सामने पेश किया जाये कि ये हुसैन के चाहने वालों में था । सबब भी बताया । यूँ ही नहीं कहा । अजब सबब बताया और इसी पर मजलिस तमाम । अजब सबब बताया । न सुनेगा मेरा दोस्त, मेरा तज़किरा मगर ये कि उसकी आँखों से आँसू न निकल पड़ें । इसीलिये कि मुझे रूला रूला कर क़त्ल किया । यूँ ही क़त्ल नही किया सुब्हे आशूरा से ले कर अस्रे आशूर तक कभी जुहैर पर रोये, कभी मुस्लिम पर रोये, और कभी सईद पर रोये और कभी बच्चे के साथी हबीब पर रोये और जब हुसैन असहाब को रो चुके तो कभी औन व मोहम्मद पर रोना पड़ा कभी क़ासिम का पामाल जनाज़ा देख कर रोये । कभी अब्बास के क़लम शाने देख कर रोये । लिखा है जब हुसैन ने शाने उठाये अब्बास के फ़ुरात के किनारे से तो आँखों से लगाते थे और चीख़ें मार मार कर रोते थे और कभी अली अकबर से कड़ियल जवाँ बेटे के सरहाने पहोंच कर रोये । अजब

करब व बेचैनी का आलम था । हुसैन फिर फ़रमाते हैं । मुझे रूला रूला कर क़त्ल किया और उस वक़्त हुसैन की आँखों से आँसू बह रहे थे जब ज़ुल्फ़िक़ार से नन्हीं सी क़ब्र खोद रहे थे । जज़ा ओ कुम रब्बो कुम । रूला रूला कर आख़री गिरयऐ हुसैन का वक़्ते रुख़्सत था जब बीबीयों को देख रहे थे । बेटी दामन पकड़े खड़ी थी । हुसैन रो रहे थे । इसलिये कि सकीना कह रही थी कि "बाबा आप मैदान में न जायें" ।

बाबा ! जो गय वह वापस नहीं आया । ऐ बाबा मुझे मदीने पहुँचा दीजिये । क्या हुसैन पर गिरिया तारी था और उस गिरिये का कौन अन्दाज़ा कर सकता है कि जब हुसैन सजदये आख़िर में थे और कान में आवाज़ आयी ओ साद के बेटे तू खड़ा देख रहा है और माँजाया ज़िब्ह किया जा रहा है । हुसैन ने सर को झुका कर बहन को देखा तो शिम्र कहता है मैने अपनी आँखों से देखा कि आँखों से आँसू जारी थे । मतलब ये था कि अभी तक हुसैन रो रहा है मुझे रूला रूला कर मारा गया । मुझे रूला रूला कर क़त्ल किया गया ।

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दूसरी मजलिस

ख़ुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन
किताबुल्लाहे व इतरती ।

बरादराने मिल्लत ! इरशादे ख़त्मी मरतबत है कि मै तुम में दो वज़नी चीज़े छोड़े जा रहा हूँ , एक अल्लाह की किताब और दुसरे मेरी इतरत । आगे ईरशाद फ़रमाया कि ये एक दूसरे से जुदा न होंगें । यहाँ तक की मुझ से हौज़े कौसर पर मिलें, और अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना । इस हदीस के ज़ैल मे 'कुरआन और अहलेबैत' के मौज़ू पर गुफ़्तगू का आग़ाज़ आप की ख़िदमत में अन्जुमन इमामिया के इस अशरे में किया गया है । कल मैने आप की ख़िदमत में तमहीद में अर्ज़ किया था कि मुहिब्बाने अहलेबैत, आशिक़ाने अहलेबैत, तरफ़दाराने अहलेबैत, गुलामाने अहलेबैत के ख़िलाफ़ नये रुख़ से इलज़ाम तराशी की जा रही है कि अहलेबैत से मोहब्बत रखने वाले, अहलेबैत के चाहने वाले माअज़ अल्लाह कुरआन को मानते ही नहीं है । कुरआन से उनका कोई राबता ही नही है । कुरआन मजीद से उनका कोई ताअल्लुक़ ही नहीं है । उन्होनें सिर्फ़ अहलेबैत को अपना लिया है । और इसी से अपनी निजात समझते है । कुरआन से उन का कोई राबता नहीं है । कुरआन से उनका कोई वास्ता नहीं है । और कुरआन मजीद के ये क़ायल भी नहीं है उसे ये मुहर्रिफ़ समझते है तहरीफ़ शुदा समझते है । और यहाँ तक रवायतें मशहूर है कि ये तीस पारे है । दस पारे और है इनके कुरआन के जो इस वक़्त मौजूद नहीं

हैं । चालिस पारों का कुरआन मजीद है । इनके पास और न जाने क्या क्या है ? जब आदमी झूठ बोलने पर आता है तो उसके लिये कोई हद नहीं रहती, और ये जितने झूठ बोले जा रहे हैं सिर्फ़ एक झूठ के लिये । तो इन्शा अल्लाह अर्ज़ करूगाँ कि वह झूठ क्या है ? बहरहाल ये तमाम मुसलमान जानते हैं कि ये हदीस पैग़म्बरे इस्लाम की ज़िन्दगी की आख़री हदीस है । इस के बाद पैग़म्बर ने कोई हदीस नहीं बयान फ़रमायी है । तो पैग़मबर का ईरशाद है कि मैं तुम में दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ । एक कुरआन और दूसरे इतरत और लोग ये कह रहे हैं कि इनको कुरआन से कोई राबता ही नहीं है कुरआन से कोई वासता नहीं है । ये अली वाले हैं । ये अह्लेबैत वाले हैं । हम कुरआन वाले हैं तो इस लिये सोंचा कि इस हमले का दिफ़ाह किया जाये । ज़ाहिर है कि अह्लेबैत का कुछ नहीं बिगड़ता । आले मोहम्मद का कुछ नहीं बिगड़ता । सारी दुनियाँ भी मुख़ालिफ़ हो जाये तो उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है क्योकि दुनिया के बिगड़ने से उसका बिगड़ता है जिसको दुनिया ने कुछ दिया हो, और जिसको सब कुछ अल्लाह ने दिया है तो सारी दुनिया बिगड़ कर अपना बिगाड़ कर लेगी उनका क्या बिगाड़ लेगी । फिर दूसरी तरफ़ एक बात और साथ साथ चलती है । आप अह्लेबैत के फ़ज़ायएल कब तक पढ़ते रहेंगें कब तक अह्लेबैत के फ़ज़ाएल हम सुनते रहेगें ? कब तक वही फ़ज़ीलते बयान होती रहेगीं ? कब तक वही अह्लेबैत का तज़किरा होता रहेगा ? क्या परेशानी है आपको ? ये सवाल ही गुमराही की दलील है, कब तक ? हम तो एक ही जवाब देते है, जब तक पूछ्ते रहेगें तब तक हम पढ़ते रहेगें । क्योकिं आप का पूछ्ना ही बताता है कि आप परेशान हो गये हैं । फिर कहते हैं हम कुरआन वाले हैं । पलट कर कोई उनसे पूछ ले कि आप कुरआन कब तक पढ़ते रहेगें ? अल्लाह कोई दूसरा कुरआन नाज़िल करेगा । पुराना हो चुका है । अरे माअज़ अल्लाह क्या बात करते हैं । कहा यही बात है । न कभी कुरआन पुराना होगा न कभी फ़ज़ाएले अह्लेबैत पुराने होगें । इस लिये इसी कुरआन के पढ़ने में सवाब है और इनही फ़ज़ाएल के बयान करने में सवाब है । कभी आप तक़ाज़ा नहीं करते कि माहे

रमज़ान में हाफ़िज़ाने क़ुरआन से कि साहब ! आप बीस बरस से हमारी मस्जिद में आ रहे है तरावीह पढ़ाने के लिये और वही क़ुरआन पढ़ाये चले जा रहे हैं । कम से कम अब कोई नया क़ुरआन पढ़िये । (सलवात)

यक़ीन मानिये कि कोई हाफ़िज़े क़ुरआन तरावीह की मनाज़ में किसी साल किसी मस्जिद मे एक भी सूरह : बदल के पढ़ दे तो उसके पीछे कोई नमाज़ नहीं पढ़ेगा । यानी सवाब इसी के पढ़ने का है जो चौदह सौ बरस से पढ़ते चले आ रहे हैं । वही सिफ़त फ़ज़ाएले अहलेबैत में है कि उनही फ़ज़ीलतों के बयान करने में सवाब है । सुनना सवाब है । दोहराना सवाब है और जैसे क़ुरआन पढ़ने से ईमान मुस्तहकम होता है इसी तरह फ़ज़ाएले अहलेबैत सुनने और पढ़ने से ईमान मुस्तहकम होता है । इन्शा अल्लाह वह किसी और मजलिस मे बयान करूगाँ ..... आज की मजलिस मे तो सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना है कि नज़ूले क़ुरआन के सिलसिले में कल आप की ख़िदमत में अर्ज़ किया था कि ये क़ुरआन जिस का ज़िक्र ख़ुद क़ुरआन में है कि "लौहे महफ़ूज़" पर नाज़िल हुआ । ये 'लौहे महफ़ूज़' क्या है ? इब्ने अब्बास से रवायत है कि कि मौलाये कायनात ने फ़रमाया कि एक नूरानी मोतियों से बनी हुई लौह और इसका तूल व अर्ज़ मशरिक़ व मग़रिब से ज़्यादह है । तमाम सोहफ़े अम्बिया अब तक इसी "लौहे महफ़ूज" में महफ़ूज़ है और तमाम इन्सानों के मुक़द्दरात, जो कुछ हो चुका है वह भी लौहे महफ़ूज़ में है । तो जो लौहे महफ़ूज़ का मोताअला कर लेता है वह पिछ्ली बातों को भी देख लेता है और आने वाली बातों को भी देख लेता है । चुनान्चा आप मुलाहेज़ा फ़रमायें जैसे आज कम्पयूटर है । कम्पयूटर की बुनियाद क्या है ? 'नूर' और 'नुक़्ते' इलेक्ट्रानिक्स डाट्स इन दो चीज़ो से मिल कर कम्पयूटर मिला है । और आप के मुल्क में तो कम्पयूटर का बड़ा ज़ोर बधाँ हुआ है । हर तरफ़ सरकार कह रही है कि कम्पयूटर लगाओ बीसवीं सदी, इक्कीसवीं सदी की तरफ़ चलो । कम्पयूटर हिन्दोस्तानियों ने नहीं बनाया है । उन्होने बनाया है जिनसे हमने आज़ादी हासिल की है । लेकिन अगर एक चीज़ अच्छी उन्होनें बनाई

.... जो इन्सान के काम आ सकती है तो हर शख़्स ख़ुशी ज़ाहिर करता है कि हमारे पास हो जाये । इस का मतलब ये कि मालूमात की सहूलत जहाँ फ़राहम होती है तो वहाँ ये नहीं होता है कि बनाने वाले का मज़हब क्या है ? वहाँ तो ये होता है कि हमारे लिये मुफ़ीद है तो दुनियाँ में हिसाब के लिये किताब के लिये, फ़ैक्ट्री के लिये, दुकान के लिये तो मुफ़ीद है ये कम्पयूटर और दीन के मामले में ? ये कहाँ से पढ़ रहे है आप । किस के यहाँ है ? हमारे यहाँ है इसमे क्या ख़राबी की बात है कि हमारे यहाँ है । अगर आप के यहाँ भी हो तो हमारे यहाँ से न लीजिये । अपने वहाँ से ले लीजिये । लेकिन जब आप के वहाँ है ही नहीं तो तो आप मजबूर हैं हम से लेने पर । क्योंकि आप जब कम्पयूटर को न समझ सके तो उन्हें क्या समझेगें । अरे ! अभी तक 'नूर' के क़ायल नहीं, नुक़्ते के क़ायल नहीं तो समझ मे कैसे आयेगा ? जैसे देहातों में लोग कहते है कि भई एक साहब आये थे बम्बई से और बतला रहे थे लेकिन हमारी समझ में नहीं आया । जनाब ! क्या समझ में आयेगा । देहात के रहने वाले है इल्म की दुनियाँ ये न वाक़िफ़ है क्या समझ में आयेगा ? बिल्कुल वही ईस्लाम का आलम है जब हम फ़ज़ाएले आले अहमद पढ़ते है तो लोग कहते हैं कि हमारी समझ में ही नहीं आता कि क्या पढ़ रहे है ? तो समझने के लिये भी इल्म बलन्द करना पड़ता है । समझने के लिये भी मेयार बलन्द करना पड़ता है । यही वजह है कि जब मुसलमान हमारी महफ़िलों और मजलिसों मे ज़िक्रे अहलेबैत सुनता है तो बिगड़ कर कहता है उन्होने तो रसूल अल्लाह से बढ़ा दिया है । हालाँकि ये बात सही नहीं है कि हम अहलेबैत को माअज़अल्लाह रसूल अल्लाह से बढ़ाते हैं । हम बढ़ाते नहीं है बल्कि रसूल अल्लाह आप को इतना घटाकर बताये गये हैं । (सलवात) कि जब अहलेबैत की बात सुनते है तो आप महसूस करते हैं कि बहोत बढ़ा दिया है. .... बढ़ाया नहीं है एक ही नूर है नूरे मोहम्मदी के ही सारे हिस्से हैं । बढ़ाने का सवाल ही पैदा नहीं होता । हम बढ़ाते नहीं है मगर एक नतीजे पर पहोंचे है कि अगर ज़िक्रे अहलेबैत बाक़ी न होता तो कोई अज़मते कुरआन समझ सकता और न ही अज़मते रसूल समझ सकता

। इतना तो तस्लीम करना ही पड़ेगा क्यों ? इसलिये कि जब अहलेबैत के फ़ज़ाएल समझ कर परेशान हैं कि आले मोहम्मद के फ़ज़ाएल मोहम्मद से बढ़ गये है तो कुरआन के मानी सुनेगें तो आप की समझ में क्या आयेगा ? अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कि कुरआन मजीद 'लौहे महफ़ूज़' पर महफ़ूज़ है । और अल्लाह का करम है कि उसने सारे सहीफ़े माहे रमज़ान में ही नाज़िल किये तफ़सीर साफ़ी सफ़ा १६ पर लिखा है कि इरशादे रिसालत है कि जनाब इब्राहीम के सहीफ़े रमज़ान की पहली शब में नाज़िल हुये । तौरित का नज़ूल ६ रमज़ान को हुआ । इन्जील का नज़ूल १३ रमज़ान को हुआ । ज़बूर का नज़ूल १८ रमज़ान और कुरआन का नज़ूल २३ रमज़ान को हुआ । कम्पयूटर में जो आप फ़ीड कर देते हैं तो ज़रूरी नहीं कि आगे ही देखते चले जायें, कम्पयूटर के ऊपर जो नूरानी तख़्ती आती है तो वह ऊपर भी चलती है, और नीचे भी चलती है । चाहे आप उसे आगे बढ़ा कर देखते जायें चाहे उसे पीछे बढ़ा कर देखते जायें । तवज्जेह चाहता हूँ । तो जो 'लौहे महफ़ूज़' देख लेता है वह जब चाहे पिछ्ले वाक़्यात देख ले जब चाहे अगले वाक़्यात देख लें । (सलवात) लेकिन हर एक न आगे बढ़ा सकता है और न पीछे हटा सकता है क्योंकि इसके लिये भी नूर की ज़रूरत होती है । तो गुज़ारिश ये है कि अम्बियाए मासबक़ के सहीफ़ों को बताया और मौलाये कायनात ने फ़रमाया कि हम अब भी लौहे महफ़ूज़ का मुताअला करते है । जब चाहते हैं लौहे महफ़ूज़ को देख लेते है । ये कुरआन तो सब के हाथ में आगया लौहे महफ़ूज़ किस के हाथ में है ? कौन देख सकता है ? अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । मैं पूछ्ता हूँ कि आले मोहम्मद (अ०) तो लौहे महफ़ूज़ का मुताअला करलें और रसूल अल्लाह ? बताईये ? उन्होने कहा यही तो हम कहते है कि बढ़ा देते हैं ।

हम नहीं बढ़ाते , रसूल अल्लाह ने हसन (अ०) व हुसैन (अ०) को गोद में बिठा कर कहा कि ये बच्चे लौहे महफ़ूज़ का मुताअला करते है अल्लामा हजर अस्क़लानी की रवायत मैने कल आप को सुनायी तो सवाल ये है कि किसी ने क्यों न पूछ कि क्या रसूल अल्लाह आप के नवासे लौहे महफ़ूज़ देखते है आप नहीं देखते

हैं...? इसका मतलब ये कि किसी का सवाल न करना इस बात की दलील है कि नबी तो देखते ही थे बता रहे थे कि हमारे घर के बच्चे तक देखते हैं लौहे महफ़ूज़ हमारे घर का बच्चा लौहे महफ़ूज़ देखेगा तुम बूढ़े भी हो जाओगे तो लौहे महफ़ूज़ नज़र नहीं आयेगा । यानी बचपना बुढ़ापा न देखो ताक़ते मुलाहेज़ाए नूर देखो । कितना अता किया है ? ये बच्चे हैं इन्हें बच्चा न कहना । कहा ! ये कब से देखने लगे लौहे महफ़ूज़ ! कहा हमेशा से । क्या ज़रूरत थी मस्जिद में बयान करने की ? कहा ज़रूरत है ताकि मुसलमान समझें कि सही तौर पर कुरआन को वह जान और समझ सकता है जो इस कुरआन का मुताअला कर लेता है जो लौहे महफ़ूज़ पर है या तुम समझोगे कुरआन कि तुम्हारे सामने रफ़्ता रफ़्ता आया अब जो कुरआन नाज़िल होना शुरू हुआ तो मक्के में भी नाज़िल हुआ और मदीने में भी तरजुमा तफ़सीर इब्ने अब्बास तबा कराची के सफ़ा १२ पर दर्ज है कि बारह साल, पाँच महीने, तेरह दिन कुरआन मजीद मक्का में हुआ और नौ साल, नौ महीने, और नौ दिन तक मदीने में नाज़िल हुआ । १९/३० हिस्सा कुरआन मजीद मक्का में नाज़िल हुआ और ११/२० हिस्सा कुरआन मदीने मे नाज़िल हुआ । आज कोई नही बता सकता ये सब वह बता गये जो कुरआन से वाक़िफ़ थे । (सलवात) और जब कुरआन नाज़िल होता था तो पैग़म्बरे इस्लाम फ़रमाते थे कि इन आयतों को लिख लो । याद कर लो । रसूल अल्लाह ने अपनी ज़िन्दगी में मक्का में भी कुरआन लिखवाया और मदीने में भी कुरआन लिखवाया । चौदह नाम मिलते हैं कातिबीने वही के जिनको उलमाये अजल्ला अहले सुन्नत ने तसलीम किया है । ये चौदह शख़्सीयतें रसूल अल्लाह के साथ रहती थीं जिनसे रसूल अल्लाह लिखवाते थे । अब हो सकता है चौदह ही पढ़े लिखे हों । (सलवात) हो सकता है और देखिये जो लोग इसको तसलीम करते है और ये वही लोग हैं जो अज़ा के ख़िलाफ़ हैं और रसूल अल्लाह की अज़मत के ख़िलाफ़ हैं और नूरानीयत के ख़िलाफ़ हैं और ये भी जिनको मानते हैं कि उनका शरफ़ बयान करते हैं । अमीरे शाम माविया के लिये कहते हैं । सब कातिबीने वही मे था । कभी आप कहते है किताबत हुई नहीं रसूल

की ज़िन्दगी में कभी आप कहते है कातिबीने वही में था । यानी मावियां का सब से बड़ा शरफ़ बयान करते है । मुसलमान इनके तरफ़दार, वो ये बताते है कि कातिबीने वही मे था । कुरआन लिखता था नबी के साथ साथ । अब पता नहीं बाप इससे खुश था या ख़फ़ा (सलवात) ये ग़लत बात है (सलवात) गुज़ारिश ये है कि जिस के क़हर व ग़लबा को आप ये कह कर मुस्तहकम बनाने की कोशिश कर रहें है कि ये शरफ़ था । कातिबीने वही में था । तो मै एक ही बात पूछता हूँ अगर किसी कातिबे वही का मुक़ाबला ग़ैर कातिबे वही से होता तो आप को ज़ेब देता कि आप को हम इसलिये पसन्द करते है । इसलिये अज़मत करते है इसलिये तारीफ़ करते है । कि ये कातिबीने वही में थे और आप जिसको मान रहे है वो कातेबीन वही में नहीं थे । कातिब वही थे तो कुरआन की अज़मत साबित है कि नहीं ? अगर कोई कुरआन लिखे तो ख़लीफ़ा-ए-रसूल बन सकता है तो आज 'ताज कम्पनी' तो बन ही सकती है । (सलवात) आज के जो कातेबीन और खुशनवीस है उन्होने कहा । आज की बात नहीं है नबी की ज़िन्दगी में लिखते थे । कब लिखते थे ? कहा जब आयत नाज़िल होती थी और रसूल अल्लाह आयत सुनाते थे । लिखने का ये शरफ़ है कि अमीर बन जाये शाम का तवज्जेह चाह रहा हूँ मगर जो पैदा होकर नबी को कुरआन पढ़ कर सुनाये अमीर वह भी बनेगा फ़र्क़ है तो सिर्फ़ इतना कि कोई शाम का अमीर बन कर रह जायेगा कोई मोमनीन का अमीर हो जायेगा । (सलवात)

मैने इसलिये ये दफ़ाऐ दरख़्ल किया कि एक किताबते वही पर इतनी तक़रीरें तवज्जेह चाह रहा हूँ । किताबते वही पर कि वही के कातिब थे शरफ़ था, तो अगर वही की किताबत शरफ़ है तो कुरआन सुनाना.....? और वह भी क़ब्ल नज़ूल सुनाना । एक साहब ने इशारह लिखा है नाम नहीं लूगाँ जब कुरआन नाज़िल ही नही हुआ तो अली ने सुनाया कैसे ? इसके जवाब में कल मजलिस पढ़ चुका कि मुबारक रात में नाज़िल हुआ माहे रमज़ान में नाज़िल हुआ । या शबे क़द्र में नाज़िल हुआ । और इस तरफ़ कहते है कि बारह बरस, पाँच महीने, तेरह दिन मक्के में नाज़िल हुआ और नौ बरस, नौ

महीने, जो दिन मदीने में नाज़िल हुआ । कुरआन कहता है कि एक रात में नाज़िल हुआ । तवज्जेह चाह रहा हूँ । उन्होने कहा आप ही ने बताया है कि 'लौहे महफ़ूज़' पर तो आप कुरआन पढ़ते हैं जब 'ताज कम्पनी' छापती है तब... (सलवात) और अली पढ़ते थे वह कुरआन जो 'लौहे महफ़ूज़' पर लिखा था अब समझे हसनैन के लिये क्यों सब ने कहा और किसी ने तब न माना । मै कुछ कह रहा हूँ... रसूल अल्लाह ने कहा देखो मेरे इन बच्चों को मेरे ये दोनो बच्चों को कि मेरे ये दोनो बच्चे बचपने से लौहे महफ़ूज़ का मुताअला करते है । आप समझे नहीं रसूल क्या कह रहे हैं ? अब कभी अली की तिलावते कुरआन का इन्कार न करना (सलवात) कुरआन 'लौहे महफ़ूज़' पर नाज़िल हुआ फिर रफ़्ता-रफ़्ता, जस्ता-जस्ता कुरआन नाज़िल होता गया । अब आ रही है गुफ़्तगू मन्ज़िल पर (सलवात) अल्लामा जलालुद्दीन स्योती "तारीख़-उल-ख़ोलफ़ा" सफ़ा नं० १३० में भी बयान करते हैं और "इत्क़ान फ़ी ऊलूम-उल-कुरआन" में जिल्द अव्वल सफ़ा ६३ भी और मोहद्दिस देहलवी "अज़ालत-उल-ख़ोफ़ा" हिस्सा दोएम सफ़ा २७३ में फ़रमाते हैं कि ये बात असहाब की ज़बानी तारीख़ से मुसल्लमा है । इसमें कोई शक नहीं कि अली एक बात में मुनफ़रिद थे तमाम असहाब में और वह बात ये थी कि अली ने पूरा कुरआन तन्हा लिखा (सलवात) और नबी की ज़िन्दगी में लिखा और लिख कर नबी को सुनाया, और नबी से तसदीक़ कर ली । इसका मतलब ये कि जब काबा में पैदा हुए तो पढ़ कर सुनाया बाद में लिखकर सुनाया । तो भई वह तो समझ मे आगया कि नबी को काबे मे कुरआन सुनाया । ये लिखकर दिखाया तो क्या देखा नबी ने ? हाय ! हाय ! कहते हैं ये मुनफ़रिद हैं अली तमाम असहाब में कि पूरा कुरआन नबी को लिख कर दिखाया नबी ने तस्दीक़ की कुरआन है । अमाँ जब नबी पढ़े ही नहीं तो तस्दीक़ क्या की ? (सलवात) पढ़े ही नहीं तो क्या सवाल है तो गुज़ारिश ये है कि आख़िर में आयतें रह गयीं थीं आख़िरुज़्ज़माँ की तो अल्लामा मोहद्दिस देहलवी "अज़ालत-उल-ख़ोफ़ा" मे लिखते हैं कि इसके लिये अली ने कहा था कि वफ़ाते नबी के बाद दोश पर चादर नहीं डालूगाँ जब तक

कुरआन को मोकम्मल न कर लूँ और वह कुरआन अली ने मुकम्मल किया और मुकम्मल करके ऊँट पर बार किया ऊँट के ऊपर लिख कर बार किया यानी इतना था कि तन्हा उठा कर नही ला सकते थे । ऊँट पर रखकर लाये मुसलमानों के सामने, ख़ोलफ़ा के सामने, मस्जिदे नबवी में और कहा देखो ये कुरआन मैंने मुकम्मल किया है । ये कुरआन मुकम्मल कर दिया है । इसे ले लो ताकि जो भी अम्ल करो मुताबिक़ कुरआन हो । अब आप बताईये आज जो आप हमसे कह रहे है कल वही हमारे मौला इनसे से कह रहे थे । तो आज जो कुछ हम को कह रहे है, वह सब रिबाउन्ड हो... होकर... उधर जारहे है । जा रहे है कि नही आप मुलाहेज़ा फ़रमाईये भई ! एक डायरेक्ट शाट होती है एक रिबाउन्ड शाट होती है । हम तो डायरेक्ट शाट वाले है । कहना आप को भी पड़ता है लेकिन आप को पता नहीं कि शाट लगाई किस पर और पड़ी किस पर ? अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । तारीख़-उल-खुलफ़ा सफ़ा नं० १९७ में मोहम्मद बिन सीरीन लिखते है कि कहीं उम्मत वह कुरआन ले लेती जो अली लिख कर लाये थे तो उम्मत में कभी फ़िरके बन ही नहीं सकते थे और हम को उलूम का वह ख़ज़ाना मिलता जो मुसलमान होते वह दुनिया में कोई कौम नही होती । लेकिन अफ़सोस कि इस कुरआन को कुबूल नहीं किया । दफ़ा दख़्ल कहा... देखिये... देखिये निकली न वही बात कि ये और है जो अली लिख कर लाये थे । ये बात नही है यही कुरआन था अली ने कोई अलग कुरआन नहीं लिखा था । मगर इस में और उसमे फ़र्क़ था कि वह मुताबिक़ नज़ूल था । जैसे-जैसे नाज़िल हुआ था उसी तरह अली ने लिखा था और सिर्फ़ कुरआन ही नही लिखा था । कुरआन के साथ-साथ तावीले कुरआन भी लिखी थी । आज की ज़बान में जिसे 'फुट नोट' कहते हैं । किताबे लिखी हुई होती है और नीचे लिखा हुआ होता है नं०-१, नं०-२ नं० ३ नं०-१ से क्या नं०-२से क्या वग़ैरह-वग़ैरह तो अली ने जो कुरआन लिखा था जो उस मे तशरीह कुरआन भी थी । आयात के मानी भी थे । शाने नज़ूल भी थी कि ये आयत कब नाज़िल हुई, किस मक़सद के लिये नाज़िल हुई, किस लिये नाज़िल हुई । इस से मुराद कौन कौन है ? इतना वाज़ेह

कुरआन था, लेकिन जवाब क्या मिला ? या अली हम आप से कुरआन नहीं लेगें ? देखिये ! ये नहीं कहा कि ये कुरआन लेगें । मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । काश ! ये कहते पता नहीं आप क्या लिख कर ले आये है मगर एक में हिम्मत नहीं थी जो अली की दियानत पर शक करता (सललवात) एक में हिम्मत न थी कहा- या अली ! आप ने मेहनत तो बहुत की है मगर हम आप से कुरआन नहीं लेगें । यही तारीख़ में लफ्ज़ें है । सवाल ये है कि कुरआन अल्लाह की किताब है, अली की नहीं है । इसके क्या मानी कि आप से नहीं लेगें । अली की किताब नहीं है अल्लाह की किताब है, अल्लाह का कलाम है । जब रसूल ने कहा कि कुरआन और इतरत दो चीज़ें छोड़ रहा हूँ तो नबी से कहा- इतरत न लेगें । कुरआन काफ़ी है तो जब इतरत कुरआन लेकर आयी तो कुरआन न लेगें तो एक बात का इन्कार नबी से और दूसरी बात का इन्कार अली से तो अब होगा मनमाना होगा । कुरआन नहीं होगा । (सलवात) अली इब्ने अबू तालिब ने कुछ न कहा और नाक़े को ले गये और वह कुरआन अपने घर में रख लिया । ये ख़िलाफ़ते अव्वल का वाक़या है ज़रा आप अली का ज़र्फ़ देखिय हमने तो अन्जुमनों में देखा है, एसोसिएशन में देखा है, हमने तो इदारों में देखा है किसी को नहीं कहता अपने आप को कहता हूँ मै सिक्रेटरी हूँ अन्जुमन का लोगों ने इलेक्शन करवा कर हटा दिया मुझे महीनों लग जाते है लोगों को रिकार्ड माँगनें में प्रोसीडिंग दे दिजिये नहीं देंगें । हिसाब दे दिजिये नहीं देगें । आप ने तो हमको हटा दिया है जाइये बनाइये रजिस्टर । तारीख दबा ली कि जब हम को नहीं माना तो सता लो ये मुसलमान का तरीक़ा है । अब मौलाये कायनात ने कहा- हमें छोड़ दिया कुरआन तो ले लो हम को छोड़ दिया, हमें नहीं कुबूल किया तो हमसे कुरआन ले लो । उन्होने कहा आप के हाथ से नहीं लेगें तो एक बात तैय हो गयी कि नबी की वफ़ात के बाद ऐसे भी मुसलमान थे जो कुरआन पर ईमान तो रखते थे मगर कहते थे कि हाथ से नहीं लेगें ये अली का हाथ किस का हाथ है !नबी यदुल्लाह कहें । हाय-हाय, वह कलामुल्लाह है ये यदुल्लाह है । कलामुल्लाह लेगें लेकिन यदुल्लाह से नहीं लेगें । मै

कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ तो फिर किस से लेगें ? देखेगें इसी अशरे में देखेंगें तवज्जेह चाहता हूँ ।

आप से कुरआन न लेगें तो शायद अल्लाह को ये बात ऐसी नागवार गुज़री, अच्छा ! मेरा कुरआन, मेरी किताब, मेरा कलाम, मेरा हाथ, और तुम अली से इतना चिढ़ते हो कि उनके हाथ से कुरआन न लोगे तो चलो, हम भी ख़ुदा है । तवज्जेह चाहता हूँ । अब हम जन्नत भी अली के हाथ से बटवायेंगें (सलवात) अली के हाथ से बटवायेंगें । अली जन्नत बाँटेगा बस! हम हिसाब किताब लेगें और सिरात पर अली रहेगें । अब चले जन्नत के इश्तयाक़ में तो कोई परेशानी नही होगी । अली कहेगें लो कहा- आप के हाथ से नही लेगें अब पहोंच गये । वहाँ तक गये है कि पलट भी नहीं सकते । तो जाओ जायें कहाँ ? सिवाये जहन्नुम के और कौन ठिकाना है.....तो कहा मै जन्नत भी अली के हाथ से बंटवाऊँगा । ताकि जो अली से चिढ़ जाये वह बोले जन्नत भी न सूँघ सके । अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कहा- आप से तो कुरआन न लेगें । कहा- न लो कुरआन । रख लिया कुरआन अली ने अपने घर, अब जब जंगे यमामा हुई और १०० हाफ़िज़ मार डाले गये जगें यमामा में अल्लामा जलालुद्दीन स्योती "तारीख़-उल-खुलफा" में लिखते है कि एक दिन ख़लीफ़ा अव्वल के दरबार में ख़लीफ़ा दोएम आकर बैठे और कहा- ऐ ख़लीफ़तुल मुसलेमीन जंगे यमामा में सौ से ज़्यादा हाफ़िज़ मार डाले गये । तवज्जोह चाह रहा हूँ । उन्होंने कहा मुशरिकों ने भी छँट-छँट कर हाफ़िज़ो को मारा है । (सलवात) छँट-छँट कर... तो फिर कुरआन का क्या होगा ? सब मुसल्लम सबूत से पढ़ूगाँ । मुझसे ख़ाली सुनियेगा । तसदीक़ कीजियेगा अपने फ़िरक़े के आलिम से और अगर कहे ग़लत है तो हवाला मुझ से ले जाइयेगा । तवज्जेह फ़रमाइयेगा और इन्शा अल्लाह पूरे अशरे में कुरआन की बात होगी । ताकि आप को अन्दाज़ा हो कि जिस कुरआन, कुरआन का नाम लिया जाता है उस कुरआन के साथ किया क्या मुसलमानों ने । क्या अज़मते कुरआन है । जो आज प्रोपगेन्डा है कुरआन, कुरआन पढ़ो कुरआन पर अम्ल करो । अरे ! बुज़ुर्गों को समझाओ वो तो कुरआन लेने से ही इन्कार कर रहे है । ये तो अली

कह रहे थे कि कुरआन पढ़ो, कुरआन पर अम्ल करो, तो ख़लीफ़ये अव्वल ने ख़लीफ़ये दोएम से कहा आप को मालूम है कि १०० से ज़्यादह हाफ़िज़ मार डाले गये । मुझे तशवीश है कि कुरआन ही ख़त्म हो जायेगा । देखिये एक तरफ रवायत ये है कि रसूल अल्लाह के ज़माने में कातिबीने वही थे जिनमें माविया भी था । यानी कुरआन की किताबत हो चुकी थी । दूसरी तरफ़ अली ने लाकर दिया भी साबित है लेकिन लिया नहीं । ज़रा ग़ौर फ़रमाईयेगा । मै क्या कह रहा हूँ । लेहाज़ा मै चाहता हूँ कि आप सब से पहला काम ये करें कि कुरआन जमा कर दें । जमा करा दें इसका मतलब ये है कि जमा नहीं है और अगर है तो वह लेना नही है । अब मालूम हुआ कि जो अली से कुरआन लेने से इन्कार किया वह इस लिये कि दूसरा कुरआन बनना था । बन सका कि नहीं वह मै नहीं कह रहा हूँ वह मन्ज़िल बाद में आयेगी । कहा कि जमा कराईये तो ये तैय हुआ कि किस से कहें कि जमा करो । अब यहाँ भी एक जुमला सुन लें । अली वारिसे रसूल थे लेहाज़ा उन्होने अपना पहला फ़रीज़ा समझा कि कुरआन जमा करके उम्मत को दें । मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । यानी कुरआन था यही दलील विरासते अली है कि नबी कुरआन किसे दे कर गये थे । जिसे दे कर गये थे वह लिख कर लाया तो ज़ैद बिन साबित को क्यों बुलाया । ये वाक़या अल्लामा जलालुद्दीन स्योती ने भी लिखा है । "अज़ालत-उल-खेफ़ा" में मोहद्दिस देहलवी ने भी लिखा है कि ज़ैद बिन साबित को बुलाया और ज़ैद बिन साबित को बुला कर कहा कि हम तुम्हारे सुपुर्द करते हैं कि तुम कुरआन जमा करो । तो ज़ैद बिन साबित ने कहा ये काम हमारे सुपुर्द न कीजिये । अगर आप हमसे कहिये कि ये पहाड़ उठा लाओ तो वल्लाह मेरे लिये हल्का काम है बनिसबत इसके कि कुरआन जमा करें । ज़रा मुलाहेज़ा फ़रमाईये । ज़ैद के मुँह से भी पहाड़ निकला कि कुरआन जमा करना पहाड़ से भी भारी है । जब ही तो नबी ने भी सक़्ल कहा था । (सलवाल) देखिये ज़ैद बिन साबित कहते हैं कि जमा कुरआन पहाड़ को उठाने से भी ज़्यादह गिराँ है और मुबाहला में नसारये नजरान कहते है कि ये जो बच्चे बैठे है इशारा कर दें तो पहाड़ हट

जाये । (सलवात)

"इन्नी तारेकुम फ़ी कुमुस्सक़लैन किताबुल्लाह व इतरती"

ये है वज़नी चीज़ें । ये वज़ने कुरआन है । ये वज़ने अहले बैत है । अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । ये ज़ैद बिन साबित ने कहा मुझसे यह काम न लीजिये, तो जुमला सुनिये । ख़लीफ़ये दोएम ने कहा कि हम ने जमा कुरआन के लिये तुम्हारा इन्तेख़ाब किया है । इस का मतलब ये है कि ख़लीफ़ये वक़्त इन्तेख़ाब कर सकता है । इसमें इलेक्शन की ज़रूरत नहीं है । उम्मत से इजाज़ज लेने की ज़रूरत नहीं है । जमा कुरआन के लिये अभी तक तुम मुतहम्म नहीं हो । बस हज़ूर आज इतना ही पढ़ना है । बाक़ी इन्शाल्लाह कल, मुतहम्म नहीं हो । इसका मतलब ये कि बाक़ी असहाब मुतहम्म थे (सलवात) जमा कुरआन वह करे जिस के ख़िलाफ़ पब्लिक मे कोई बात न हो तवज्जोह चाहता हूँ । जमा के लिये तो ग़ैर मोहतमिम चाहिये और मानी के लिए मासूम चाहिये ही चाहिये । (सलवात) और ज़ैद बिन साबित ने कुरआन को जमा करना शुरू किया किस तरह जमा किया । पूछ-पूछ कर तुम्हें कोंई आयत याद है, तुम्हें कोई सूरा: याद है । ये आयत फ़लाँ ने सुनाई है तुमने कभी सुनी है नबी से । यानी चन्दा हो रहा है । मेरी ये बात समझ में नहीं आती कि आप ने कहा कि मस्जिद बनना है । एक साहब बैठे थे, साहबे दिल, साहबे ख़ैर उन्होने कहा कि मस्जिद कितने में बनेगी ? कहा यही चार लाख लगेगें । कहा कल सुब्ह आईयेगा आफ़िस में चेक ले जाइयेगा चार लाख की । उन साहब ने कहा नहीं नहीं हम चन्दा करेगें । पूरा मजमा कहेगा पागल हुए हो । अमाँ चार लाख का इस्टीमेट बनाया एक ही आदमी चार लाख दे रहा है तुम हमसे चन्दा क्यों मांग रहे हो ? कैसे मुसलमान थे जिन्होने ये नहीं कहा कि हमारे पीछे क्यों पड़े हो अली के पास तो लिखा हुआ है ले लो । इसका मतलब ये था कि इस कुरआन को लेना ही नहीं चाहते थे । (सलवात) चन्दा जमा हो कर जमा हुआ । और कैसा जमा हुआ वह इन्शाल्लाह कल ही से सिलसिला शुरू हो जायेगा । बात को शिया सुन्नी की नहीं है । बात कुरआन की है कल ही कह चुका हूँ कि कुरआन शियों के घर में भी

है और सुन्नियों के घर में भी... तो ये तो पूछ लो कि उसकी तारीख़ क्या है ? अरे भई ! तारीख़े अहलेबैत नहीं बयान करते तो तारीख़े कुरआन तो बयान करो । उन्होने कहा ज़िक्रे अहलेबैत सुनने न जाना । आओ कुरआन का ज़िक्र है अब तो सुनने आओगे । (सलवात) आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया । तो गुज़ारिश ये है कि कुरआन, कुरआन - इन्शाअल्लाह आप में जो बुजुर्ग है वह मुझसे ज़्यादा मुताअला रखते है मुझसे ज़्यादा कुतुब बैनी करते है । मुझसे ज़्यादा तजरबा रखते है । मैं तो सिर्फ़ अपने बच्चों के लिये अर्ज़ कर रहा हूँ कि मौलाये कायनात ने हमें एक मौक़ा दिया कि आप हम अपने बच्चों को कम से कम बचा सकें हवाओं से । तवज्जेह चाहता हूँ । ठीक है आप की जो समझ में आये कहिये, जो कहिये वह तो खुली छूट है हमेशा से । जिसने नबी पर इत्तेहाम रख दिया तो हम क्या है । (सलवात) जिसने नबी पर इत्तेहाम रख दिया देखिये हमारा फ़र्ज़ है कि हम अपने बच्चों को अपने नौजवानो को बता दें कि हमारा अक़ीदा क्या है कुरआन के मुताल्लिक़, और हम कुरआन की कितनी अहमीयत समझते है और हमारे यहाँ कुरआन की क्या अज़मत है ? ये सब बाते इन्शाअल्लाह आईन्दा मजालिस में आप की ख़िदमत में आयेंगी । आज तो सिर्फ़ इतना कि ज़ैद बिन साबित ने कुरआन जमा किया । ये मत सोचियेगा कि जो आप के पास है ये वही है । नहीं ! नहीं ! अभी कई मन्ज़िलें है । बस इतना सुन लिजिये कि तमाम मुहद्दसीन और तमाम मोवर्रेख़ीन लिखते है कि ख़लीफ़ये अव्वल के दौर में जो कुरआन जमा हुआ था जिसे ज़ैद बिन साबित ने जमा किया था । हड्डियों पर लिखा था, चमड़े पर लिखा था, पत्तों पर लिखा था । तवज्जेह फ़रमाई आप ने....? हड्डी और चमड़े वाला तो था तारीख़ है बिल्कुल तारीख़ है । अपनी तरफ़ से एक हरफ़ भी नहीं लेकिन पत्तों पर भी था और तारीख़े लिखती है कि ख़लीफ़ा के इन्तेक़ाल के बाद वह कुरआन ख़लीफ़ये दोएम के पास था और उनके इन्तिक़ाल के बाद वो सिर्फ़ दो बीबीयों के पास था । उम्मुल मोमनीन । एक उम्मुल मोमनीन हफ़्सा के पास था और एक उम्मुल मोमनीन आएशा के पास था । तो उम्मुल मोमनीन आएशा के पास था । और कुछ

इसकी नक़्ल इधा उधर भेजी गयीं थीं और उम्मुल मोमनीन आयेशा के पास जो था तो अल्लामा जलालुद्दीन स्योती तहरीर फ़रमाते है कि जब उनसे किसी ने दो आयतें पढ़ने के लिये माँगी कि ये आयतें कैसे नाज़िल हुई थीं तो उन्होने कहा कि ये आयतें पत्ते पर लिखी थीं और वह पत्ते मैं पलगं के नीचे रख कर भूल गयी और बकरी वह पत्ते खा गयी । तारीख़ है अब आप हँसे या रोयें । ये आप का रिएक्शन है । मैं तो सिर्फ़ तारीख़ बयान कर रहा हूँ । मुझे यही हसरत है मुझे इस पर एतराज़ नहीं कि पत्ते पर था तो क्या करतीं बेचारी । तवज्जेह चाह रहा हूँ । अच्छा हुआ हड्डी वाला नहीं था पलगं के नीचे वरना कुत्ता आता कुत्ता आता। हड्डी वाला होता पत्ते वाला था । लेहाज़ा वह आयतें जो पत्ते पर लिखीं थीं पलगं के नीचे रखी थीं मुझे मुसलमानों से ये पूछ्ना है कि क्या कुरआन पलगं के नीचे रखना एहतेरामे कुरआन है ? (सलवात) हुज़ूर, पत्ते पर लिखा कुरआन पलगं के नीचे था इसलिये बकरी खा गयी और यही पत्ते अगर किसी शेर के पास होते तो बकरी तो क्या बकरा भी नहीं खा सकता । (सलवात) अगर शेर के पास होता बाक़ी इन्शाल्लाह कल ... मैंने ये सिर्फ़ हल्की सी लाईट, फ़्लेश लाईट जो कैमरे से निकलती है... बाक़ी कल पूरा एलबम । हुज़ूर कलेजा पक गया है हम ही ने एहतेराम किया है कुरआन का हम ही एहतेराम कर रहे हैं कुरआन का हम ही एहतेराम कर रहे हैं आले मोहम्मद की वजह से आज कुरआन-कुरआन है । वरना नाविल मिलती आप को कुरआन न मिलता । नाविल भी मैंने यूँ ही नहीं कहा है इसका भी सबूत दूगाँ आप के सामने, और हमसे इस कुरआन का वास्ता नहीं । बस... अहलेबैत, अहलेबैत, अरे ! अहलेबैत के सदक़े मे ही कुरआन रह गया है । वह मुसलमान अहलेबैत को क्या समझेगा जो कि कुरआन के मानी से वाक़िफ़ नहीं और वह कुरआन क्या समझेगा जो अहलेबैत के दर पर नहीं आया । कुरआन तो ढोंग हो गया था । यज़ीद का शेर याद कीजिये जिसके हाथों पर लाखों ने बैअत की थी और वह ये शेर पढ़ता था । कैसी वही ? कैसा फ़रिश्ता, कैसा मुल्क, कैसी किताब, ये तो मोहम्मद ने ढोंग रचाया था । माअज़ अल्लाह अपने बच्चों के

लिये । ठीक है कुरआन को ढोंग कहा यज़ीद ने, वही से इन्कार किया यज़ीद ने । तवज्जेह चाहता हूँ । वही से इन्कार किया कि वही नहीं आयी जिब्रील नहीं आये, आसमान से कोई किताब नाज़िल नहीं हुई । ये कुरआन कलामे इलाही नहीं है कलामे मोहम्मद है और किस लिये लिखा मोहम्मद ने अपने बच्चों के लिये.... तो एक बात तो साबित हो गयी कि यज़ीद को कुरआन में भी अहलेबैत नज़र आये थें । (सलवात)

अहलेबैत ही नज़र आये थे । इसी शेर का जवाब है कर्बला । हुसैन ने कहा हमारे लिये दीन लाये थे कि हम को दीन के लिये लाये थे । भेज दे लश्कर और आज़मा ले अगर हमारा नाना हमारे लिये दीन लाया था तो जब हम पर वक़्त पड़ेगा तो हम दीन छोड़ देगें और अगर दीन के लिये हमको लाया था तो जब दीन पर वक़्त पड़ेगा तो हम जान दे देंगें और दीन को बचा लेंगें । हुसैन ने दीन बचा लिया । ये इसी की यादगार है । ये मुहर्रम जिस की छुरियाँ कलेजे पर चलती हैं । ये अज़ादारी, ये काले कपड़े, ये गिरया व बुका, ये मज़लूम का ताज़िया, ये अलम, ये मुसलमान अज़ादारी जो करता है इसमें शिया सुन्नी की कोई बात नहीं है । अज़ादार की बात है और वो लोगों को खलती है और जब खलती है तो कुरआन कुरआन कहते हैं । तुम क्या जानो ? ये मजिलसें याद कुरआन हैं । ये मजिलसें मुहाफ़िज़े कुरआन हैं । ये मजिलसें तफ़्सीरि कुरआन हैं । ये मजिलसें शरह्ये कुरआन हैं । यहाँ बैठने वाले बच्चे तक कुरआन के मानी समझते हैं । बड़े-बड़े मदरसों में बैठने वाले नहीं हैं । इसीलिसे मजिलसें भी दर्सगाह हैं । इन्शाल्लाह एक-एक बात का जवाब होगा । कोई जवाब दिया नहीं जायेगा इन्शाल्लाह खुद ब खुद होता चलेगा । आप बताईये कर्बला की शहादत न होती तो आज कुछ होता ? ये मस्जिदें होतीं ? ये मीजार होते ? ये अज़ानें होतीं ? ये जलसे होते ? ये मुक़र्रीन होते ? क़सम ख़ोदा की कोई जामे इस्लाम से वाक़िफ़ न होता । तारीख़ लिखती तो बस इतना लिखती कि आज से चौदह सौ बरस पहले मक्का में एक शख़्स पैदा हुआ था जिस का नाम मोहम्मद था । जिसने एक दीन ईजाद किया था जिस को लोगों ने मानना शुरू

किया मगर पचास बरस में लोगों की समझ में आगया कि ये वह दीन नही है और दीन छोड़ दिया । इससे ज़्यादा न मिलती तारीख़ । इक्यावनवाँ बरस नसीब न होता इस्लाम को । वफ़ाते पैग़म्बर से ये इक्सठ से चौदह सौ बरस हो गये । ये शहादत हुसैन का सदक़ा है ये मुहर्रम आकर यादगार बन जाता है । ये मुहाफ़िज़े कुरआन बन जाता है । ये हुसैन का ग़म, ये बहते हुए आँसू कर्बला मे हाफ़िज़ाने कुरआन थे । आलमाने कुरआन थे, उमरे साद खुद बड़ा आलिम था । मगर कुरआन ने उसे क्या फ़ैज़ पहोंचाया, और हुर ऐसा ना ख़्वान्दह था कि उसे कुछ भी नहीं मालूम था । बहादुर था, सिपाही था, लड़ने चला आया, मुल्क "रे" की लालच मे मगर जब लगाम फ़रस पर हाथ डाला और हुसैन ने कहा - हुर तेरी माँ तेरे मातम में बैठे, तो काँप कर पीछे हट कर कहा फ़रज़न्दे रसूल पूरे मूल्के अरब में कोई मुझे ये जुमला कहता तो इन ही लफ़्ज़ों में उसे जवाब देता । मगर आप से कुछ नहीं कह सकता इसलिये कि आप की माँ पर सिवाये दुरूद व सलाम के । हुज़ूर ये मेरा अक़ीदा है कि यही जुमला हुर को जन्नत में ले जायेगा अगर अहलेबैत में से किसी एक की भी अज़मत दिल में होती है तो जहन्नुम जा ही नही सकता वह खैंच लेते है और यही जुमला था जो हुर को सारी रात तड़पा रहा था ख़ैमे के सामने शबे आशूर टहलता ही रहा । बेटा, भाई, गुलाम बार-बार पूछता था हुर क्या बात है ? बेटा कहता क्या बात है बाबा ? गुलाम कहता आक़ा क्या बात है ? छोटा भाई कहता था भाई ! क्या बात है ? ये परेशानी ये इज़्तेलाज उधर तो छोटी सी फ़ौज है । तो ख़ामोश जब सुब्ह होने लगी तो हुर ने कहा क्या समझते थे कि मैं लश्कर के ख़ौफ़ से टहल रहा था । कहा- फिर ! कहा मै तो जन्नत और जहन्नुम के बीच टहल रहा था । कहा फिर क्या फ़ैसला किया ? कहा जन्नत । जाओ उमरसाद से कह दो । कह दो ! मैं जा रहा हूँ हुसैन से माफ़ी माँगने उमरसाद दौड़ा-दौड़ा हुर के पास आया हुरमुला आया कहाँ जा रहा है ? लाखों का लश्कर लिये हुए अगर एक जा रहा है तो जाने दो ख़ुशामद काहे की । इससे आप समझें कि उधर बहत्तर थे और इधर लाखों फिर भी कितनी हैबत थी कि एक की कमी बरदाश्त न थी । हुर ने

कहा कोई सवाल नहीं है कोई सवाल रुकने का नहीं है । नबी के नवासे के क़दमों पर सर रख कर माफ़ी मागूँगा । उमेसाद ने कहा : मुल्क "रे" नहीं लेगा कहा : क्या बकता है ? मै जन्नत जा रहा हूँ तू मुल्क "रे" ही दे सकता है बस, और हुसैन जन्नत दे सकते है । मै जन्नत लेने जा रहा हूँ । कहा हुर ! यज़ीद तेरे बच्चों को क़त्ल करेगा । तेरा घर गिरा देगा । हल चलवायेगा । कहा कोई परवाह नही है जब नबी का घर बरबाद हो रहा है तो मेरा घर रसूल अल्लाह से ज़्यादा है ! ये कह कर हुर ने घोड़े को ऐड़ लगाई । चला बेटा भी साथ गुलाम भी साथ जब आगे बढ़ा तो रुक गया बेटे ने कहा : बाबा ! क्यों रुक गये ? कहा मेरे लाल कैसे जाऊँ ? मेरे दोनो हाथ तो रूमाल से बाँध दे । अरे ! ये हाथ मैने घोड़े की लगाम पर डाला था । बेटे ने दोनों हाथ रूमाल से बाँधे । हुर आगे बढ़ा । फिर रुक गया बेटे ने कहा बाबा अब क्यों रुक गये । कहा मेरे लाल ख़ैमो से क्या आवाज़े आ रही है ? कहा अलअतश, अलअतश, अलअतश बच्चे कह रहे है प्यासे है हुर ने कहा मुझसे ये आवाज़ें नही सुनी जाती । अबा मेरे चेहरे पर डाल दे । मै कैसे मुँह दिखाऊँगा । अरे ! ये किसके बच्चे प्यासे है जो साक़ी-ए-कौसर है । ये किसके बच्चे प्यासे है जिन्होनें मेरे लश्कर को सेराब किया । अबा डाल ली चेहरे पर आगे बढ़ा । बेटे ने कहा- अल्लाहो अकबर कहा मेरे लाल ! क्या देखा ? कहा बाबा अन्सारे हुसैन आ रहे है कहा बाबा मरहबा कह रहे है मरहबा । कहा- आक़ा ने भेजा है इस्तिक़बाल के लिये । कहा- हाँ । हुर रोने लगा इस करम पर हुसैन के । आगे बढ़ा बेटे ने कहा- अल्लाहो अकबर कहा ! कहा मेरे लाल अब क्या देखा । कहा कमरे बनी हाशिम आ रहे है । बाबा शबीहे पैग़म्बर आ रहे है बस अब हुर का आलम न पूछिये कि एक मरतबा इसने कहा अल्लाहो अकबर, कहा बेटा अब कौन आ रहा है ? बाबा अब मौला खुद आ रहे है । ये सुनना था कि घोड़े से कूद पड़ा और कहा मेरा बाजू पकड़ मुझे ले चल जैसे इमाम सामने आयें बता देना ! बेटे ने कहा- बाबा मन्ज़िल सामने है । झुक कर क़दमो पर सर रखा नबी के नवासे क्या मेरी ख़ता माफ़ हो सकती । हुसैन झुके बाजू पकड़ कर क़दमों से उठाया,

सीने से लगाया । भाई ! हुर मैंने माफ़ किया, मेरे ख़ुदा ने माफ़ किया । कहा माफ़ कर दिया । कहा हाँ माफ़ कर दिया । कहा मरने की इजाज़त दे दीजिये । कहा अभी कैसे इजाज़त दे दूँ । तू तो हमारा मेहमान है । बस ये सुनना था कि तड़प गया । आक़ा ! मै मेहमान हूँ कि आप ? कहा जहीं चल ख़ैमो मे बैठ । कहा आक़ा ख़ैमेगाह तक न ले जाईये । कहा क्यों ? कहा बच्चों से शर्म आ रही है, औरतों से हिजाब आ रहा है । मौला बस यहीं रहूँगा । इजाज़त दे दीजिये । हुर ने इजाज़ज ली तो पहले अपने बेटे से कहा : मेरे लाल तू आगे आ, कोई बाप चाहेगा कि उसकी ज़िन्दगी में उसका जवां बेटा मर जाये । लेकिन कर्बला के जज़बात ही कुछ और है । कहा जा मेरे सामने हुर का बेटा आया । बस अज़ादारों मजलिस तमाम । बहादुर बाप का बहादुर बेटा । मैमने पर हमला किया मैसरे पर हमला किया । क़ल्बे लश्कर पर हमला किया । उम्रे साद ने कहा किससे लड़ रहे हो ये हुर का बेटा है । इसे घेर कर क़त्ल करो लीजिये चारों तरफ़ से हुर का बेटा घिर गया । जब घोड़े पर न सम्भला गया तो दो आवाजें दीं । इमाम को आवाज़ दी आक़ा ! मेरा सलामे आख़िर क़ुबूल कीजिये और बाप को पुकारा बाबा मै अकेला घिर गया हूँ । ज़रा मेरे पास आ जाईये हुर असपे दो रकाबा पर सवार हुआ तलवार निकाली । ऐ कूफ़ीयों ! ऐ शामीयों ! बताओ मेरा बेटा किधर है । लोग हंस रहे है मज़ाक़ उड़ा रहे है । और हुर ग़ैज़ में हमलावर है कि एक मरतबा कान में आवाज़ आयी हुर इधर आ तेरा बेटा इधर है । आवाज़ पर दौड़ा हुर जब क़रीब पहोंचा तो अजीब मन्ज़र देखा, देखा कि हुसैन बैठे हुए है । बेटे का सर रानो पर रखें हुये है । दुआऐं दे रहे है । बेटे का ग़म भूल गया । घोड़े से कूदा । आक़ा आप क्यों आये ? जवाब सुनिये और मै मजलिस को तमाम करूँ । हुसैन ने कहा, क्या कहा ? तूने । मै न आता तो क्या तुझे जवान का जनाज़ा उठाने भेजता ! ऐ आक़ा ! हुर को तो ये जवाब दिया, जब अली अकबर ने सलाम कहा तो कौन था जो आप के जवान का जनाज़ा उठाने को आता ।

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तीसरी मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन
किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने मिल्लत !

सरवरे कायनात ख़त्मी मरतबत जनाब मोहम्मद मुस्तफ़ा ने इस हदीस में इरशाद फ़रमाया है कि ऐ मुसलमानों मैं तुम में दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ । एक अल्लाह की किताब और दूसरे अपनी इतरत । और ये दोनों एक दूसरे से जुदा नहीं होगें, अलेहदा नहीं होगें, यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें । और अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनों से तमस्सुक रखना, इन दोनों से वाबस्ता रहना । इन दोनो की पैरवी करना ।

इस हदीस के ज़ेल में "कुरआन और अहलेबैत" के मौज़ू पर जो गुफ़्तगू आपके सामने जारी है वह कल इस मन्ज़िल पर पहोंची थी कि कुरआन मजीद जो नाज़िल हुआ लौहे महफ़ूज़ पर फिर लौहे महफ़ूज़ से वही कुरआन रफ़्ता-रफ़्ता जिब्राईल के ज़रिये ज़मीन पर नाज़िल हुआ । सीना-ए-पैग़म्बर पर और पैग़म्बर इस्लाम ने इस कुरआन मजीद को अपने असहाब, अज़वाज, कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन सबके सामने पढ़ कर सुनाया । तिलावत फ़रमायी और उसे जमा करने का हुक्म भी फ़रमाया पैग़म्बर ने । और पैग़म्बर की निगरानी में कुरआन जमा भी हुआ... और मौलाये कायनात अली इब्ने अबी

तालिब ने कुरआन मजीद जमा फ़रमाया और तश्रीह शाने नज़ूल और मुताबिक़ नज़ूल जमा फ़रमाया । जैसा मैंने कल अर्ज़ किया मौलाये कायनात ने जो कुरआन जमा किया वह नज़ूल के मुताबिक़ था जिस तरह से कुरआन नाज़िल हुआ था । उसी तरह से मौला ने जमा किया था और इस कुरआन में हाशिये पर मौला ने शाने नज़ूल ये आयत क्यों नाज़िल हुई, इस आयत से मुराद कौन है ? किस लफ़्ज़ से मुराद कौन है ? ताकि ग़लतफ़हमी न हो । कुरआन से गुमराही न हो, बल्कि हिदायत ही हिदायत हासिल हो । जमा फ़रमा कर ऊँट पर बार करके पेश किया । जिसे मुसलमानों नें उस वक़्त क़बूल नहीं किया और उसके बाद फिर कुरआन को ख़लीफ़ये अव्वल के ज़माने में ज़ैद बिन साबित के ज़रिये जमा कराया गया था । जिन्होने हड्डियों पर सूरहः और आयतें लिखीं, चमड़े पर सूरहः आयतें जमा कीं, काग़ज़ फ़राहम हुआ तो काग़ज़ पर लिखा और लैफ़ खुरमा पर यानी खजूर के पत्तों पर भी आयतें लिखीं । इस तरह ज़ैद बिन साबित ने बहुक्म ख़लीफ़ये अव्वल और बफ़रमाईश ख़लीफ़ये दोएम कुरआन को जमा किया सन् चौबीस हिजरी में तीसरे ख़लीफ़ा ने लोगों को जमा किया और जमा करने के बाद कहा कि कुरआन जमा किया जायेगा । आज जो कुरआन हमारे पास है ख़्वाह शिया हो या सुन्नी जो भी मुसलमान हो और जो भी कुरआन है ये तीसरे दौर का जमा किया हुआ कुरआन मजीद है यानी तारीख़ से ये बात साबित हो गयी कि न ये कुरआन वह जमा शुदा है जो पैग़म्बर ने अपनी ज़िन्दगी में लिखाया था वह कातिबीने वही ने लिखा था । न ये कुरआन वह कुरआन है जो ख़लीफ़ये अव्वल के हुक्म पर ज़ैद बिन साबित ने जमा किया था । बल्कि ये तीसरा कुरआन है । कुरआन वही है इससे ये न कहियेगा कि ताहिर साहब ने कहा कि सब कुरआन अलग-अलग हैं । जमा की बात कर रहा हूँ । आप के समने और ये कुरआन वह है जो तीसरे दौर में जमा किया गया । अल्लामा जलालुद्दीन स्योती "तारीख़-उल-ख़ोलफ़ा" और "इत्तेक़ान फ़ी शरह ऊलूम-उल-कुरआन" में और दूसरे ओलमा ने भी ये तहरीर फ़रमाया है । जिसके हवाले मौजूद हैं कि ख़लीफ़ये सोएम ने ये हुक्म दिया जमा करने वालो को

कि इस तरह से जमा करो कि बड़े-बड़े सूरहः पहले हों और छोटे-छोटे सूरहः बाद में जमा हों । ये दलील है कि ये कुरआन वही है जो तीसरे दौर में जमा किया गया था । क्योंकि बड़े-बड़े सूरहः पहले है । जैसे सूराए बक़राः है आख़िर में सूरहः वन्नास है । ये कुरआन तीसरे दौर का जमा किया हुआ कुरआन है जबकि आप को मालूम है अच्छे तरीक़े से कि तीसरे ख़लीफ़ा की मौत के बाद चौथे ख़लीफ़ा मौलाये कायनात अली इब्ने अबू तालिब हुऐ । (सलवात) ज़ाहिर है जब लोगों ने बैंअत की और अली इब्ने अबू तालिब को ख़लीफ़ा तसलीम कर लिया तो अली के लिये बहोत आसान थी ये बात कि उन्होने जो कुरआन जमा किया था उसको नाफ़िज़ कर देते । इसको कहते अब ये पढ़ा जायेगा कुरआन और यही मुसलमानो में रायज रहेगा और मुझ से पहले जो तीसरे ख़लीफ़ा ने जमा किया है वह कुरआन राएज नहीं रहेगा । वह कुरआन नहीं चलेगा और ये कुरआन न होता जो आसमान से नाज़िल हुआ था । तो अली पर वाजिब था कि अपना कुरआन पेश करते । लेकिन चूँकि अली इब्ने अबू तालिब भी इस कुरआन को अल्लाह की किताब, अल्लाह का कलाम मान रहे थें लेहाज़ा उन्होनें अपना कुरआन नाफ़िज़ नहीं किया। ये बात ये साबित करती है कि अली के नज़दीक कुरआने मजीद जो इस वक़्त जारी है जैसे तीसरे ख़लीफ़ा के दौर का न इसमें कोई इज़ाफ़ा हुआ ज इसमें कोई कमी ये बात ज़रा ग़ौर से सुन लिजिये चूँकि शिया वोह है जो मौलाये कायनात अली इब्ने अबू तालिब पर एतमाद व एतबार रखता है और मानता है इसीलिये शिया कभी तहरीफ़े कुरआन के क़ायल नहीं रहे शियों के बड़े-बड़े उलमा इन्शाअल्लाह वक़्त आयेगा जब तहरीफ़ की गुफ़्तगू आपके सामने होगी तो अर्ज़ किया जायेगा अभी तो जमा-ए कुरआन की बात होगी आज जो रिसाला लिखता है जो किताब लिखता जो मुक़र्रिर जाता है तक़रीर करने के लिये जिसे लाउडिसपीकर मिल जाता है वह शियों को काफ़िर साबित करने के लिये सबसे पहले कहता है कि ये इस लिये काफ़िर है कि इनका ईमान इस कुरआन पर नहीं है ये लोग आली वाले कुरआन को मानतें है इस कुरआन को नहीं मानते है ।

बयाज़े उस्मानी को नहीं मानते तो सफ़ाई देना तो हमारा हक़ है हमने अली वाला कुरआन देखा ही नहीं इसलिये कि अली ने हमको दिखया ही नहीं जो कुरआन था अली के अहदे ख़िलाफ़त में वह हमने तस्लीम किया हम बिल्कुल मुनकिरे कुरआन नहीं है लेकिन ये फ़तवा याद रखियेगा कि चूँकि शिया कुरआन में तहरीफ़ के क़ायल नहीं है और ये कहते है कि ये पूरा कुरआन नहीं है । इसमें आयतें कम हो गयीं हैं या इसमें आयतें बढ़ा दी गयी है लेहाज़ा ये काफ़िर है । सिर्फ़ इसलिये मैंने आपके सामने इस मौज़ू जो बाद में पढ़ना है आज अर्ज़ कर दिया है । ये कुफ़्र का फ़तवा है ।

शियों के काफ़िर होने की दलील है कि ये कुरआन को अल्लाह की किताब नहीं मानतें है मोहरिफ़ मानतें है, तहरीफ़ मानते है । इसका मतलब ये है कि जो कुरआन में तहरीफ़ का क़ायल हो वह काफिर है । आज कहूगाँ आज के बाद नहीं कहूगाँ क्योंकि अब मुझे वह पेश करना पड़ेगा कि कौन कौन तहरीफ़ का क़ायल है । आज तो जमा कुरआन की बात है तो जमा कुरआन की मन्ज़िल में लिखा है कि तीसरे ख़लीफ़ा ने इस कुरआन को जमा किया और किसी एक आदमी को इसकी ज़िम्मेदारी नहीं सौंपी जैसे कि ख़लीफ़ा अव्वल ने ज़ैद बिन साबित को ज़िम्मेदारी सौंपी थी और वह कुरआन जो ख़लीफ़ा दोएम के ज़माने मे जारी था । जो ज़ैद बिन साबित ने जमा किया था इसके लिये रवायत मिलती है कि वह दो शख़्सीयतों के पास था । मैंने कल आपके सामने अर्ज़ किया था यानी उम्मुल-मोमनीन के पास था और उम्मुल-मोमनीन आयेशा के पास था । एक-एक नुस्ख़ा मदीने में मौज़ूद था । जो ज़ैद बिन साबित का जमा किया हुआ कुरआन था लेकिन फिर तीसरे ख़लीफ़ा ने कुरआन जमा कराया । कोई बात नहीं सवाब का काम है । एक मजलिस होती है, दो मजलिसें हो गयीं, एक अशरा होता है दस अशरे हो गये, एक कुरआन रमज़ान में ख़त्म होता दस कुरआन ख़त्म कर लें । इसमें सवाल नहीं है लेकिन तमाम कुतुबे इसलाम इस बात पर मुत्तफ़िक़ है कि सिर्फ़ जमा ही नहीं किया बल्कि ज़ैद बिन साबित के जमा किये हुए कुरआन को भी मगंवाया और जिसके पास ज़ैद बिन साबित

का जमा किया हुआ कुरआन मिल जाता था वह अकसर काग़ज़ पर होता था तो जला दिया जाता था । और अगर चमड़े या हड्डी पर होता तो सिरका मिलाकर धोया जाता था । अल्लामा जलालुद्दीन स्योती ने इसे क़बूल किया है और बड़े ज़ोर शोर से लिखा है । दीगर उलमा ने भी लिखा है तफ़सीर "दुर्रे मन्शूर" में भी मौजूद है अल्लामा फ़ख़रूद्दीन राज़ी ने भी तहरीर फ़रमाया है मुक़द्दमा-ए-कुरआन में कि ख़लीफ़ा सोउम ने कुरआन मजीद जलवाया, और धोया भी जिसका ज़िक्र सहीह बुख़ारी जिल्द ३ सफ़ा १४० मिशकात शरीफ़ सफ़ा १८५, शरह बुख़ारी २१४ अज़ालत-उल-ख़ोफ़ा जिल्द २ सफ़ा २१, इत्तेक़ान जिल्द १ सफ़ा ६१ में है । अब जो लोग कहते है कि अली ने जो कुरआन लिखा था वो उम्मत को देना चाहिये था । तो क्या अली अपना कुरआन भी जलवा देते, धुलवा देते । (सलवात)

ये हमारे ऊपर बड़े ज़ोर व शोर से बात कही जाती है कि अली जमा किया था क्यों न नाफ़िज़ किया, जब ख़लीफ़ए अव्वल ने कुरआन जमा कराया ज़ैद बिन साबित से जमा कराया और इसके नुस्ख़े भेजे तो उन नुस्ख़ों को जमा किया । ज़रा तवज्जोह फ़रमायें बहुत बारीक है लेकिन कहने की गुन्जाईश इस लिये है कि जब अहलेबैत की बात हम करते हैं और अहलेबैत पर मज़ालिम हम बयान करते हैं तो लोग ये समझते हैं कि चूँकि हम अहलेबैत के चाहने वाले हैं इस तास्सुब में ये बात कह रहे हैं मगर कुरआन वाले तो सारे मुसलमान हैं कुरआन को सब तस्लीम करते है, अब इस कुरआन को जलाया भी गया और कुरआन को सिरके से धुलवाया भी गया । और इसरार के साथ.... क्यों ? ये एक सवाल है ठीक हे आपने जमा किया था कुरआन और सिलसिले से जमा किया था । बड़े सूरे फिर मन्झले सूरे फिर छोटे सूरे इस तरीक़े से जमा था, हुकूमत थी, इक़्तेदार था, असर था, इसके नुस्ख़े करा कर हर तरफ़ भेजे जा रहे थे, काफ़ी था । वो जो ज़ैद बिन साबित ने जमा किया था उसको धोया क्यों ? ये बात दो बातों से ख़ाली नहीं है । तवज्जोह फ़रमाईयेगा मेरी बात पर । या तो इस कुरआन में और उस कुरआन में कोई फ़र्क़ था, कुछ फ़र्क़ था शायद ! मैं नहीं कह रहा हूँ कि था । वजूह पर

गुफ़्तगू हो रही है हम बहैसियत मुसलमान के सोंच रहे हैं और चूँकि कुरआन का मामला है तो भी हम शिया है न सुन्नी पहले तो मुसलमान हैं (सलवात) लेहाज़ा आप फ़िक्र से काम लें । इस कुरआन में और उस कुरआन में अगर कोई फ़र्क़ न था सिवाये तरतीब के तो उस कुरआन को जलाया क्यों गया ? मिटाया क्यों गया ? और एक नुस्ख़ा जनाब अब्दुल्लाह बिन मसूद के पास था जो सहाबीये पैग़म्बर थे और कूफ़ा में इनका क़याम था तो अब्दुल्लाह बिन मसूद को भी ये पैग़ाम भेजा गया कि जो मुसहफ़ आप के पास हे जो कुरआन आपके पास है जो ज़ैद बिन साबित का जमा किया हुआ है । वो फ़ौरन आप मदीने भेज दें और जब हाकिमे कूफ़ा ने अब्दुल्लाह बिन मसूद को बुला कर कहा : "अज़ालत-उल-ख़फ़ा" में मोहद्दिस देहलवी ने लिखा है तो ख़लीफ़्ये वक़्त ने आप से कुरआन का नुस्ख़ा मंगवाया है तो आपने फ़रमाया कि मैं इसकी तिलावत करता हूँ मैं इसको क्यों भेजूँ ? क्या मैं बग़ैर कुरआन के हो जाऊँ ? उन्होने कहा नही हुक्म आया है कि कुरआन आप वहाँ भेज दें तो आपने फ़रमाया कि मैं हरगिज़ इस हुक्म को मानने को तैयार नहीं हूँ । क्योंकि जो हुक्म कुरआन में न हो वह हुक्म ख़लीफ़ा को देने का हक़ ही नही है (सलवात) और ये अब्दुल्लाह बिन मसूद की दलील इतनी मज़बूत थी कि हाकिमे कूफ़ा कुछ कर न सके और फिर पैग़ाम भेज दिया कि वह कुरआन देने पर तैयार नहीं हैं तो हुक्म पहोंचा कि उन्हें गिरफ़्तार करके मदीना भेज दिया जाये चुनान्चे अब्दुल्लाह बिन मसूद को गिरफ़्तार करके कूफ़े से मदीने भेजा गया । ये गिरफ़्तारी किस बात की है ? कि उनके पास कुरआन है । (सलवात) गिरफ़्तारी किस बात की है मैं तो कुछ कह नहीं सकता छेटा आदमी हूँ । बड़ों-बड़ों की बात है और बड़े-बड़े की बातों में यही बड़ी मुश्किल होती है लेकिन आदमी का दिमाग़ तो काम करता ही है- आख़िर क्या बात है ? वारन्ट जारी हो । अरेस्ट का वारन्ट जारी हुआ तो क्या ख़ता थी ? गुनाह क्या था ? अक़ीदे का इन्कार किया था । अब्दुल्लाह बिन मसूद ने बस बात से इन्कार किया था । कौन सा शदीद जुर्म किया था जिस पर हुक्मे गिरफ़्तारी भेजा गया और वह गिरफ़्तार हो कर

आये । वह भी ऐसे होशियार कि गिरफ़्तार होकर अकेले ही आये कुरआन नहीं लाये क्यों इसलिये कि वारन्ट शख़्सीयत के ख़िलाफ़ था । किताब के ख़िलाफ़ जारी हो ही नहीं सकता । तो आ गये जब पहोंचे है मदीने में गिरफ़्तार हो कर तो ख़लीफ़ा सोउम ने मस्जिदे नबवी में मिम्बरे रसूल पर बैठे हुए थे पूछा ये कौन है ? कहा यही अब्दुल्लाह बिन मसूद है । आपने कहा था तो हम गिरफ़्तार कर लाये है कहा बड़ा तू बदबख़्त है कि मैंने तुझसे कुरआन मागाँ तूने देने से इन्कार किया । कहा बदबख़्त वह है तो कुरआन देने से इन्कार करे. ...या... सहाबीयों की बात है । हमसे आपसे क्या मतलब है ? या वह है जो कुरआन जलाये (सलवात) देखिये अल्लामा जलालुद्दीन स्योती न लिखते तो कभी न पढ़ता मेरी ज़बान दुहराते हुए काँप रही थी लेकिन जब जलालुद्दीन का क़लम न काँपा और पढ़ने में मेरी आँखें न काँपी तो सुनाने में ज़बान क्यों काँपे (सलवात)

ये है मन्ज़िल अब इससे आप मुलाहेज़ा फ़रमायें मैं तो सिर्फ़ आपके सामने .... कि आपको नहीं ख़बर कि कुरआन जमा करायें कहा हमें ख़बर है कहा फिर आप यें कुरआन पढ़िये जो हमने जमा कराया है कहा वो तो अव्वल ने जमा कराया था। इसका मतलब ये है कि चार ख़िलाफ़तें हैं और चार ख़िलाफ़तों में तीन कुरआन हैं और एक नबूवत है । एक नबूवत और चार ख़िलाफ़तें और चार कुरआन के नुस्ख़े । तवज्जोह फ़रमाईयेगा । एक वो है जो कातिबीने वही से नबी ने लिखाया एक, दूसरे वह जो अली ने जमा किया दो, तीसरा वह जो ख़लीफ़ाये अव्वल ने ख़लीफ़ये दोएम की फ़रमाईश पर ज़ैद बिन साबित से जमा करवाया तीन, चौथा ये जो आज सबके पास है । अब इसको मैं क्या करूँ कि कुरआन चार लिखे गये और जारी चौथा ही है । इसे क्या कहिये । (सलवात) ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । क्या...? सवाल पूछता हूँ मुसलमानो से जो रसूल अल्लाह ने कुरआन जमा कराया था कातिबीने वही के ज़रिये क्या माज़अल्लाह वह कुरआन ग़लत था कहा नहीं अज़तग़फ़िरुल्लाह, वह कुरआन था । जो ख़लीफा अव्वल ने ज़ैद बिन साबित से कुरआन जमा कराया । क्या माज़अल्लाह कुरआन नहीं था कुछ और था कहा नहीं-नहीं तौबा-तौबा वह भी

कुरआन था । जो अली ने लिखा, वह कुरआन नहीं था ? कहा नहीं ! नहीं !! वह भी कुरआन था, और जो तीसरे ख़लीफ़ा ने जमा किया कहा वह भी कुरआन था तो ये चारों कुरआन है जारी चौथा है तवज्जोह चाह रहा हूँ । इसका मतलब ये कि कुरआन तरतीब से चार मिले उम्मत को तो चौथे पर अमल करती है तो ख़लीफ़ा भी अगर मुक़द्दर से चार मिलें तो जैसा कुरआन पढ़ रहें हो चौथा वैसे ही चौथे ख़लीफ़ा की शरीयत पर अमल करो । (सलवात) क्या फ़र्क़ है और इस वक़्त जो कुरआन हमारे पास मौजूद है इसमें छः हज़ार छः सौ छियासठ आयतें है । जिस का कुरआन चाहें आप देख लें । छः हज़ार छः सौ छियासठ आयतें, पाँच सौ चालिस रूकू है और एक सौ चौदह सूरहः है और पारे तीस हैं मगर ये पारे उम्मत के बनाये हुए हैं । न अल्लाह के, न रसूल के, न अली के, न ज़ैद बिन साबित के, न तीसरे ख़लीफ़ा के ये तो शायद बाद में कुरआन फाड़ा गया है तब पारा-पारा हुआ है । (सलवात) वह भी गुफ़्तगू आयेगी एक दिन इन्शाअल्लाह अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । इस कुरआन मजीद में एक हज़ार आयतें "वाअदे" की है जो अल्लाह ने वादे फ़रमायें है एक हज़ार आयतें "वईद" की है । एक हज़ार आयतें "क़सस" की है जिन में क़िस्से अम्बिया बयान किये गये है । और एक हज़ार आयतें "अम्र" की है जिन में अल्लाह ने अपने अहकाम बताये है । और एक हज़ार आयतें "नहीं" की है जिनमें अल्लाह ने किसी चीज़ से अपने बन्दो, मुसलमानों को मना किया है, रोका है । एक हज़ार आयतें इमसाल की है दो सो पचास आयतें तहरीम की है ढ़ाई सौ आयतें तहलील की है, सौ आयतें तस्बीह की है और छियासठ आयतें मुतफ़र्रिक़ है । इस तरह से छः हज़ार छः सौ छियासठ आयतें कुरआन में मौजूद है । (सलवात) हम को हमारे उल्मा ने ये तालहीम दी है कि जो बुज़ुर्ग उल्मा गुज़रे हैं जिनमें चन्द नाम आप के सामने पेश कर रहा हूँ । पहले आप सुन लें । बहोत अहम बात है क्योंकि इसकी ज़रूरत आप को इस अशरे के बाद पड़ेगी । क्योंकि मुझे मालूम है कि जहाँ हम पढ़ कर चले जाते हैं तो बहोत दिनों तक बहसें चलती हैं । (सलवात) हाफ़िज़-उल-अख़बार हज़रत अबू जाफ़र सानी, अल्लामा मोहम्मद

बिन हुसैन बिन मूसा इब्ने बाबू ये कुम्मी, अल्लामा सदूक़ फ़क़ीह, मोहद्दिस अलनौमी सन् ३८१ हिजरी अपनी किताब "एत्तेक़ादात" में साफ़ लफ़्जों में लिखा है कि हमारा अक़ीदा ये है कि ये किताबुल्लाह है । ये कुरआन अल्लाह की किताब है और ये कुरआन मोकम्मल इसमें एक हरफ़ की भी तहरीफ़ नहीं हुई है । और ये कुरआन हमारे नज़दीक वही कुरआन है जो नबी पर नाज़िल हुआ था । इसमें न कोई इज़ाफ़ा हुआ है और इसमें न कोई कमी हुई है । हज़रत शेख़ तायेफ़ा अबू जाफ़र मोहम्मद बिन हसन बिन अली तूसी फ़क़ीह व मुफ़स्सिर अलमतूफ़ी सन् ४६० हिजरी अपनी किताब अलबयान तफ़सीर "तबयान" में फ़रमातें है कि शियों पर कुरआन की तहरीफ़ का इल्ज़ाम लगाना इत्तेहाम है । झूठ है हम इस कुरआन को अल्लाह की किताब समझते हैं और हमारे फ़िरक़े के तमाम अक़ाएद की असास कुरआन मजीद पर है हम इसकी तहरीफ़ के क़ायल नहीं हैं ये दो हवाले मैनें पुराने दिये हैं जबकि सात आठ दस हवाले हैं और इस वक़्त जो आलिमें दौरां हैं आयतुल्लाह उल उज़्मा अक़ाये ख़ुई मदज़िलहू उन्होने भी कुरआन मजीद की तफ़सीर लिखी है "अलमीज़ान" जिस का नाम है और तफ़सीर के मुक़द्दमे में भी आक़ाये ख़ुई ने तहरीर फ़रमाया है कि हम तहरीफ़ के क़ायल नहीं है और ये नहीं कि हम क़ायल नही हैं बल्कि हमारे यहाँ दलील पेश की गयी है । पहली दलील ये है कि ख़ुदा वन्दे आलम कुरआने मजीद में ख़ुद ईरशाद फ़रमाता है *"इन्ना नहनुनेज़लना ज़िक्र"* हमने इस ज़िक्र को नाज़िल किया । *"व इन्ना लहू लाहाफ़िज़ून"* और हम इसके मुहाफ़िज़ हैं तो हमारे उल्मा की दलील ये है कि जब कुरआन एलान कर रहा है कि अल्लाह कह रहा है कि हम मुहाफ़िज़ है तो इससे बड़ा कौन होगा । जो अल्लाह के कलाम को बदल सकेगा । (सलवात) ख़ुदाने कुरआन मजीद की हिफ़ाज़त का एलान किया *"इन्ना नहनुनेज़लना ज़िक्र"* हमने इस ज़िक्र को नाज़िल किया । हमने कुरआन को नाज़िल किया *"व इन्ना लहू लाहाफ़िज़ून"* और हम ही इस किताब की हिफ़ाज़त करने वाले हैं । तो हिफ़ाज़त इस बात की की जाती है जिसके लुटने का डर हो, चोरी होने का डर हो, बैग में पैसे दिये और कहा ज़रा

हिफ़ाज़त से ले जाईयेगा, ज़ेवर दिया ज़रा हिफ़ाज़त से ले जाईयेगा । चलिये हम हिफ़ाज़त के साथ चलते हैं । हमेशा हिफ़ाज़त का लफ़्ज़ इसके लिये इस्तेमाल किया जाता है जिसके ज़ाया होने का डर हो, तो इस आयत से दो बातें साबित हैं । एक ये कि मुसलमान से ये ख़तरा है कि वह कुरआन में चोरी भी करेगा, डाके भी डालेगा । (सलवात) और कुरआन को बदलने की कोशिश भी करेगा । लेकिन हम मुहाफ़िज़ हैं ये बता दिया कि हम मुहाफ़िज़ हैं । तो ख़ुदा जिस चीज़ की मुहाफ़ेज़त का एलान फ़रमाये उसमें अगर कोई किसी चीज़ की कमी का क़ायल हो तो अल्लाह की कुदरत में कलाम है । अल्लाह की ताक़त में कलाम है। लेहाज़ा अल्लाह ने फ़रमाया कि हम इसके मुहाफ़िज़ हैं । और दूसरी दलील हमारे उल्मा ने ये दी है कि अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ये कुरआन वह कुरआन न होता जो नबी पर नाज़िल हुआ था तो हमारे आईम्मा इसको कभी क़बूल न करते और उन पर वाजिब था कि अस्ली कुरआन वाज़ेह करें... लेकिन आईम्माए ताहेरीन का कोई दूसरा कुरआन पेश न करना और इसी कुरआन के ज़रिये हुक्म देना, मनाज़िरे तय करना, अहकाम बताना, ये दलील है बारह इमामतें दलील है कि ये कुरआन अल्लाह की किताब है । लेहाज़ा हमें इससे इन्कार की गुन्जाईश ही नहीं है । चौथी बात ये है कि अल्लाह कुरआन में ये ईरशाद फ़रमाता है कि अगर तुम्हें ज़र्रा बराबर शक है कि ये कलाम अल्लाह का नहीं है तो एक छोटे से सूरहः की नक़्ल बना लो । हालाँकि ये चैलेंज अल्लाह ने काफ़िरों को दिया है, मुशरिक को दिया है मगर क़लम मुसलमान का पकड़ा है ये समझ लिया कि ये वह नहीं है जिस में पैवन्द लग जाये । एक आयत भी अगर झूठी बनायेगा तो वह कुरआन के मिस्ल नहीं बन सकेगी । लेहाज़ा ये तीसरी दलील है कि कुरआन में अगर इज़ाफ़ा हुआ होता तो पता चल जाता । अगर हीरों में एक भी पत्थर आ जाता है तो मालूम हो जाता है लेहाज़ा अल्लाह मुहाफ़िज़ है । अल्लाह कहता है कि इसकी मिसाल बन नहीं सकती । लेहाज़ा ये कुरआन वही कुरआन है जो पैग़म्बरे इस्लाम पर नाज़िल हुआ । अब जो भी कुरआन आप के पास है वह कुरआन यही कुरआन है और अल्लाह

की किताब है । सिर्फ़ इतना है कि जमा करने में इधर का उधर.... जितना काम दिखा सकते थे उतना काम दिखा दिया (सलवात) मै आप के घर में घुसा चोरी की नीयत से और मैनें आप की अलमारी से ज़ेवर उठाये आपने कहा हूँ हूँ हूँ मैं घबरा गया सोचा ये जाग रहे है छोड़ दिया और भाग गया तो चोरी न हो सकी । क्योंकि आप हिफ़ाज़त कर रहे थे । मगर जगह बदल गयी । अलमारी से ज़ेवर ज़मीन पर आगया अब किसी ने कहा जनाब ! रिपोर्ट लिखवाईये । अरे क्या लिखवायें माल तो गया नहीं (सलवात) माल तो गया नहीं जब हमारा माल मौजूद है तो क्या हुआ। जब उठेगें तो अपनी जगह रख देगें । मौक़ा मिलेगा । तवज्जोह चाहता हूँ । तो अह्लेबैत ने इसलिये परवाह न की कि मदनी मक्की अरे गड़बड़ करने पर तुले हुए तो इतना ही कि इसमें न बोलेगें । (सलवात) देखिये अली नहीं बोले, इमाम हसन नहीं बोले, इमाम हुसैन नहीं बोले, मगर सारे असहाब बोले । ये क्या ? ये आयत तो मक्का में नाज़िल हुई थी । ये सूरहः तो मदीने में नाज़िल हुई । ये मक्का की आयत मदीने में कैसे रख दी गयी । कुछ लोगों ने कहा अरे ये तो मदीने में नाज़िल हुई थी फ़्लाँ सूरे मे थी । ये मक्की में कहाँ से आ गयी । तवज्जोह फ़रमाईयेगा । अब मै आप को एक बयान सुनाता हूँ ।

अल्लामा मशरक़ी, मुसलमानो में एक मशहूर मारूफ़ आलिम गुज़रे है । अल्लामा मशरक़ी ख़ाकसार तहरीक वाले । उन्होने पूरे हिन्दोस्तान में ग़ैर मुनक़सिम हिन्दोस्तान में ख़ाकसार की तहरीक चलायी थी । उन अल्लामा मशरक़ी ने भी कुरआन मजीद पर एक किताब लिखी । उस किताब के मुक़द्दमे में वह लिखते है कि आज मुसलमानों की कमज़ोरी, मुसलमानों का आपसी इख़्तेलाफ़, मुसलतानों की बे दीनी, मुसलमानों की मज़हब से अदम दिल चस्पी की वजह कुरआन है । इसलिये कि कुरआन जमा करने वालों ने इसे बेतुके पन से जमा किया । ये मै नहीं कह रहा हूँ । अल्लामा मशरक़ी की लफ़्ज़ें है कि जिस का तारीख़ी तवाज़ुन भी नहीं है । मसलन जो आयत ओहद में नाज़िल हुई वह बद्र से पहले मौजूद है । लेहाज़ा अगर हिस्ट्री से आप टैली करे कुरआन को तो तारीख़ से कुरआन

नहीं मिलता । जो आयत मदीने में नाज़िल हुई वह मक्के के सूरे में मौजूद । उन्होनें कहा इसमे तारीख़ी ग़लती भी है और मन्तक़ी ग़लती भी है । कि बहस कुछ है और नतीजा कुछ है । दस आयतों में एक बहस है और ग्यारहवीं आयत पर नतीजा है जो किसी और बहस का है तो वह कहते है कि इस बेतरतीबी से इतना कनफ़्यूज़न पैदा हो गया है कि अच्छे से अच्छा क़ुरआन से इसलाम नहीं समझ सकते । (सलवात) आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया लेहाज़ा परेशानी हो गयी और उम्मत में इस तफ़रक़ा मौजूद कि इतना आयतों को उलट पलट कर दिया । यहाँ की आयत वहाँ । वहाँ की आयत यहाँ कि सयाक़ व सबाक़ इबारत ही मालूम नहीं होता । और तक़रार बाज़ आयतों की इतनी कर दी कि मालूम होता है कि एक आयत किसी ने पढ़ दी और दूसरे ने पढ़ दी, तीसरे ने पढ़ दिया । जिसने जब पढ़ दी लिख दिया । और ये भी उन्होने लिखा है अल्लामा मशरक़ी ने । मक़सद ये है कि कहते है कि ये क़ुरआन अब ऐसी किताब है जिसको पढ़कर सिवाये कनफ़्यूज़न के कुछ नहीं मिलता । ज़ेहन परेशान हो जाता है इस क़ुरआन को पढ़ कर। आयत कुछ आ रही है सिलसिला कुछ आता है । अल्लाह आदम की बात कर रहा है ईसा की बात आ गयी । ईसा की बात कर रहा है नूह की बात आ गयी । नूह का तज़किरा कर रहा है यूसुफ़ का क़िस्सा छिड़ गया । यूसुफ़ का क़िस्सा हो रहा है ज़करिया की बात आ गयी । तो अल्लामा मशरक़ी लिखते है कि दिमाग़ परेशान होता है कि ये कैसी किताब है ? किताब तो अल्लाह की है इसमें शक नहीं है अल्लामा मशरक़ी को सिर्फ़ जमा करने वाले मुसलमान का हाथ लगा तो कनफ़्यूज़न हो गया । तो जिन लोंगों ने इस्लाम जमा किया हो उनसे पहला चौथा हो गया तो क्या हैरत की बात है । (सलवात) क्या परेशानी है ? अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें अब एक बहोत अहम कह दी आज । कल जो मुझे पढ़ना है आज से सिलसिला शुरू कर दिया है अल्लामा जलालुद्दीन स्योती ने तहरीर फ़रमायर है "इत्तेक़ान फ़ी उलूम-उल क़ुरआन" में कि जब तीसरे ख़लीफ़ा के सामने क़ुरआन जमा करके पेश किया गया तो उन्होनें क़ुरआन पढ़ने के बाद कहा कि इसमें बहोत सी ग़लतीयाँ है ।

तवज्जोह फ़रमाईयेगा । इस कुरआन में बहोत सी ग़ल्तीयाँ जिन को अरब जो अह्ले ज़बान है, ये जुमला समझिये । अरब जिनकी ज़बान है अरबी खुद ही ठीक कर लेगें । क्यों ? इसलिये कि अरबों की मादरी ज़बान है । अल्लाह मियाँ की अम्मा ही नही तो मादरी ज़बान कहाँ से आये ? क्योंकि मादरी ज़बान तो है नहीं अल्लाह के कुरआन की । अम्मा ही नहीं, मादर ही नहीं तो ख़ोदा की ज़बान मादरी कैसे हो गयी ? कुछ समझ रहे है आप ! यानी अरब फ़क़हाये अरब इसको ठीक कर लेगें । तब लोगों ने कहा नहीं ! या ख़लीफ़तुलमुस्लेमीन अगर कुरआन में ग़ल्तीयाँ रह गयी तो बड़ा ग़ज़ब हो जायेगा इसे ठीक करा लीजिये । कहा जाने दो । (सलवात) ये लफ़्ज़ें न मिलें तो मै सूली पर चढ़ने को तैय्यार । देखिये तफ़्सीरुल बाबुल तावील जिल्द-१ सफ़ा-५१७ और किताब इत्तेक़ान जिल्द-१ सफ़ा-७२, अब इससे आप चन्द नतीजों पर ग़ौर कर लें । यानी जमा कराने के बाद खुद मुतमईन नहीं । ख़लीफ़ा सोउम का जमा किया हुआ कुरआन है । लेकिन खुद ख़लीफ़ा सोउम इस कुरआन से मुतमईन नहीं है । और यही कुरआन चौथे दौर में उल्मा ने जारी किया और मुतमईन । जिसने जमा किया मुतमईन नहीं और जिसका कुरआन लिया नहीं गया मुतमईन । इसका क्या राज़ है ? (सलवात) इसका क्या राज़ है ? सिवाये इसके कि जो मुतमईन है वो वाक़िफ़ है क्योंकि इल्मे कुरआन रखता है और जो ग़ैर मुतमईन है उसने जिससे जमा कराया है उन पर इत्मेनान नहीं है । (सलवात) तीसरे ख़लीफ़ा का अदम इत्तेमाद और चौथे ख़लीफ़ा का एतमाद ये बता रहा है कि तीसरे को उम्मत से मिला है और चौथे को अल्लाह से बराहे रासत मिला है । (सलवात) आप ने ग़ौर फ़रमाया । एक आदमी पढ़ता है और कहता है कि इसमें ग़ल्तीयाँ हैं । और जब लोगों ने कहा कि ठीक करो । तो कहा जाने दो यानी इसका मतलब ये कि ग़ल्त कुरआन ही चलने दो। अब मेरी बात मुकम्मल हो गयी... यानी ज़ैद बिन साबित के जमा किये हुए कुरआन को किसी ने ग़ल्त नहीं कहा, कातिबीने वही के लिखे हुए कुरआन को किसी ने ग़ल्त नहीं कहा, अली जब कुरआन जमा करके लाये तो कहा या अली आपसे कुरआन नहीं लेगें । मगर ये नहीं कहा

कि आपने कुरआन ग़लत जमा किया है । तो न कातिबीने वही के लिखने में ग़लती, न ज़ैद बिन साबित के जमा किये हुए कुरआन में ग़लती, न अली के जमा किये हुए कुरआन में ग़लती । और जारी वह है जिसमें ग़लती तवज्जोह फ़रमाईयेगा । इसका क्या राज़ हो सकता है ? ये अभी नहीं खुलेगा शायद आख़री मजलिस में खुले । (सलवात) शायद ! अब आप तसलसुल को मुलाहेज़ा फ़रमायें कि इसमें बहोत सी ग़लतीयाँ है । अब हो तो क्या हो इसलिये कि जो सही था वो या तो धो दिया गया या जला दिया गया या बकरी को खिला दिया गया । (सलवात) और जो जमा हुआ जो कुरआन जमा हुआ उसको ख़िलाफ़त पर भरोसा नहीं और ये इशारे ख़लीफ़ा के मौजूद है कि इस कुरआन मे बहोत सी ग़लतीयाँ है जिन को अरब बाद में ठीक करते रहेंगें । क्या वजह है कि जो ठीक है वह जलाया जाये और जो जमा हुआ है और ये मालूम है कि इसमें ग़लतीयाँ है वह जारी किया जाये । (सलवात) तवज्जोह फ़रमाई आप ने ? नहीं ! अभी तवज्जोह नहीं फ़रमायी । एक कुरआन रसूल ने अपनी ज़िन्दगी में लिखवाया जो ग़लत नहीं था । किसी ने ग़लत नहीं कहा था या नहीं । ये बहस हम नहीं कर रहे है हम तो थे नहीं वहाँ पर खड़े हुए । हम तो तारीख़ और रवायत पर बहस कर रहे है और हदीस पर रसूल अल्लाह ने अपनी ज़िन्दगी में जो कुरआन चौदह कातिबीने वही से लिखाया था जिस में एक मावियां भी थें इसी कुरआन को भी किसी ने ग़लत नहीं कहा और हम को देखिये हम ख़फ़ा है उनसे लेकिन झूठी बात नहीं कहते इसका मतलब ये कि दियानतदार भी हम ही है कुरआन के मामले में । इसको भी किसी ने ग़लत नहीं कहा । तवज्जोह चाह रहा हूँ । और तीसरे ख़लीफ़ा ने जो कुरआन जमा किया इसको खुद उन्होनें ग़लत कहा । अब इस सिलसिले में जनाबे आयेशा ने क्या कहा ? अब्दुल्लाह बिन उमर ने क्या कहा ? जुबैर ने क्या कहा ? दूसरे असहाब ने क्या कहा ? वह सिलसिला इन्शाअल्लाह कल से शुरू होने वाला है अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । उन्होनें कहा साहब फिर शिया क्यों मानते है ? शिया इस कुरआन को कैसे मानते है ? जिसको जमा करने वाला खुद ग़लत कह रहा है ? तवज्जोह

उन्होने कहा हाँ साहब ! ये बड़ा चक्कर यही कमाल है कि आप ग़ल्त कहते है और शिया मान रहें है वही कुरआन, कोई कमी नही है । उन्होने कहा ये तो हैरत की बात है । हैरत न कीजिये । अल्लाह का दो रिकत नमाज़ पढ़ कर शुक्रिया अदा कीजिये । मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ कि क्योंकि अली को चौथा बना दिया उम्मत ने हुज़ूर ये कुरआन अगर चौथी मन्ज़िल से न गुज़रता । हमारे लिये क़ाबिले एतबार न होता । (सलवात) अब आप समझे "इन्नाल्लाहा अलहाफ़ेज़ून" इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हम है । तुमने ख़िलाफ़त के ज़रिये हमारी किताब बदलना चाही । चौथा भी हमने अपना बनवा कर कुरआन को कुरआन कहला दिया । (सलवात) दो जुम्ले आप को याद है पिछले किसी अशरे में तफ़सील से पढ़ चूका हूँ कि मुसलमान जो कलमा पढ़ता है वह भी अली वाला और कुरआन भी अली वाला । मैं क्या कह रहा हूँ । और जो कुछ अली वाला नहीं वह सब कुछ घोटाले वाला है (सलवात) इसी में घोटाला जो कुछ अली के ज़रिये उम्मत को नहीं मिला, इसी में झगड़ा, इसी में इख़्तेलाफ़, इसी मे इस्लाम की शक्ल नज़र नहीं आती । चौथा बना दिया अली क्यों बन गये चौथे बनाने से क्या होता है बने क्यों ? मैं कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । बने क्यों ? कहा बना रहे है तो बना जाता हूँ । और किस अन्दाज़ से सही हुआ वह इन्शाअल्लाह कल । क्योंकि ये सारे मुअर्रेख़ीन मानते है कि कुरआन मजीद में जो ज़ेर ज़बर है और पेश है और तशदीदें है । ये सब अबू असवद दोईली की लगाई हुई है । अच्छा तो एक कुरआन अबू असवद ने भी लिखा और अली को दिखाया क्योंकि चौथे ख़लीफ़ा थे और जब अली ने कहा सही है अब इसकी नक़्लें भेजो तो भेजी गयीं । अब बताओ तुम्हारे पास कुरआन बे ज़ेरो व ज़बर वाला है कि ज़ेर व ज़बर वाला है । अगर बे ज़ेर व ज़बर वाला है तो उनका है और अगर ज़ेर व ज़बर वाला है तो अली का है । (सलवात) अली वाला है । अच्छा अबु असवद ने आकर अली से कहा या अली मौलाये कायनात ! अरब कुरआन ग़ल्त पढ़ रहे है ज़ेर की जगह ज़बर, ज़बर की जगह पर ज़ेर पढ़ रहे है । मानी ज़ेर व ज़बर हो जाते है कहा अबू असवद लगा दो एराब तो उन्होने कहा आप बे नुक़्ता पढ़ रहे है पहले

ही नुक़्ते को छोड़ दिया । वह इन्शाल्लाह बाद में बात आयेगी कि नुक़्ते की क्या अहमीयत है । छोड़ दिया तो बे नुक़्ते हो गये । तो कहा अबू असवद ये काम तुम को सुपुर्द करता हूँ कि तुम मैय एराब के कुरआन लिखो, और लाकर मुझे दिखाओ । अबू असवद ने लिखा और अली ने तस्दीक़ की तब जारी हुआ । तो ये ख़लीफ़्ये सोउम के ख़िलाफ़ नहीं है । वह तो बेचारे ख़ुद ही कह रहे थे कि लोग ठीक कर लेंगें। वह कहिये कि ठीक करने में एक शिया निकल आया । (सलवात) एक शिया निकल आया अबू असवद दोईली शिया है । उन्होने कहा कैसे कह दिया अरे भई जैसे आप हमें कहते है । अरे भई वह तो ऐसे कट्टर थे कि सिफ़्फ़ीन में अली का साथ देने में शहीद हो गये और यही शिया की सबसे बड़ी पहचान है । मै कुछ कह गया । यही सब से बड़ी पहचान । तो आप ने मुलाहेज़ा फ़रमाया । तो अर्ज़ ये कर रहा था कि हमें अब इस कुरआन पर कुल्ली एतमाद है, कुल्ली भरोसा है । और उल्मा का क्या ख़्याल है, शिया उल्मा का मैनें ख़्याल आप को सुना दिया है और आईम्मा का क्या ख़्याल है वह भी मैनें आपकी ख़िदमत में अर्ज़ कर दिया है । आलमे वक़्त की बात भी मैने आपको सुना दी कि शियों में कोई भी इस कुरआन में ज़ेर ज़बर का फ़र्क़ नहीं समझता नुक़्ते का भी फ़र्क़ नहीं समझता और दूसरों का क्या ख़्याल है कुरआन के मुताल्लिक़ वह इन्शाअल्लाह कल से शुरू होगा सिलसिला । एक दिन लगे, दो दिन लगे, तीन दिन लगे वह तो देखा जायेगा । बहरहाल कुछ तैय नहीं है क्योंकि रवायतें तो बहोत हैं अगर पढ़ना चाहूँ तो पूरा अशरा ख़त्म हो जायेगा लेकिन अभी और बातें भी कुरआन और अहलेबैत के बारे में बताना है । लेहाज़ा चन्द पर ही इक्तेफ़ा की जायेगी । (सलवात) नुक़्ते की जगह बदल जाने से ज़ेर व ज़बर बदल जाने से जज़्म व तशदीद बदल जाने से कितना फ़र्क़ हो जाता है मानों में लेहाज़ा ये काम मौलाये कायनात अली इब्ने अबू तालिब ने किया और इस कुरआन की ज़िम्मेदारी अली ने अपने बाद हसन पर छोड़ी और हसन ने हुसैन पर छोड़ी, और हुसैन ने शहादत के बाद कुरआन पढ़ कर बताया कि हम से पूछो कि कुरआन क्या है ? चौथे इमाम जब शाम के बाज़ार में खड़े

थे चारों तरफ़ तमाश बीनो का मजमा था । हाथों में हथकड़ी पैरों में बेड़ीयाँ, गले में ख़ारदार तौक़, और इसलिये बाज़ार में रोते गये है कि यज़ीद ने कहा है कि हमें दरबार सजाना है, उमरा व रोउसा को बुलाना है ज़ैनुल आबेदीन महारे नाक़ा लिये हुये क़यामत की धूप थी सैदानियाँ बे कजाओं के नाक़ों पर बालों से मुँह छुपाये हुये शोहदा के सर नैज़ों पर कि एक शख़्स मस्जिद से निकला जब वह क़रीब आया तो उसने कहा अल्लाह का शुक्र है जिसने तुम्हें इस हाल में पहोंचाया बस इमाम ने कहा भाई ! क्या कह रहा है तू ? कहा तुमने हुकुमते वक़्त पर ख़ुरूज किया है तुम्हारा ये हाल हुआ है । ख़ोदा का शुक्र अदा करो । कहा तू तो हाफ़िज़े कुरआन है । घबरा गया । एक क़ैदी हथकड़ी पहने हुऐ हिजाज़ का रहने वाला, शाम का रहने वाला, ऐसे कैसे कह रहा है मै हाफ़िज़े कुरआन हूँ । तुमने कैसे कहा मै हाफ़िज़े कुरआन हूँ ? कहा मुझे इल्म है जब ही तो मैनें कहा और हाफ़िज़ ही नहीं हमारा दोस्त भी है । अब तो और भी परेशान हुआ । कहा क्या बातें कर रहे हो ? कहा हाफ़िज़े कुरआन हो ? कहा हूँ । कहा आयते ततहीर पढ़ी है ? कहा हाँ पढ़ी है । कहा आयए मोअद्दत याद है ? कहा याद है ! इन्नमा याद है ? कहा याद है मगर उन आयतों का तुमसे क्या ताअल्लुक़ है ? ये आयतें तो सिर्फ़ मदहे अहलेबैत में नाज़िल हुई है कहा भई ! हम कौन है ? कहा अहलेबैत से मुराद आले रसूल है कहा हम ही आले रसूल है । कहा तुम्हारा नाम ? अली इब्नुल हुसैन है कहा हुसैन कहाँ है ? कहा सामने नैज़े पर देख जो इसने सर उठाया तो देखा नैज़े की नोक पर एक नूरानी सर है जो कुरआने मजीद की तिलावत कर रहा है ! बस ये देखना था कि क़दमों पर गिर पड़ा कहा आप इमामे वक़्त है कहा हाँ मैं इमामे वक़्त हूँ । कहा मौला मुझे माफ़ कर दीजिये मैनें नहीं पहचाना । कहा जब ही तो मैने कहा इसका मतलब ये कि दोस्त न पहचाने इमाम को । इमाम सबको पहचानता है । नाक़ा से आवाज़ आयी सैय्यदे सज्जाद ये तो कोई चाहने वाला मालूम होता है । कहा हाँ फूफी अम्मा ये मोहिब्बे अहलेबैत है । कहा फिर बेटा इससे कहो कुछ चादरें ला दे कुछ मक़ने ला दे । इसलिये कि दरबार में जाना है । उसने पूछा ये

बीबीयाँ कौन है ? कहा ये अली की बेटियाँ है । नबी की नवासियाँ है । दौड़ा हुआ घर पहोंचा घर की औरतों से कहा जल्दी चादरें लाओ जल्दी मक़्ने लाओ । औरतों ने कहा इतनी चादरें क्या करेगा ? कहा तुम्हें कुछ ख़बर भी है जिनके घर से परदे ने परवान पाया अरे ! वह बीबीयाँ बे परदा आयी है । जज़ाकुम रब्बकुम । खुदा आपको किसी ग़म में न रूलाये सिवाये ग़में अहलेबैत के । अज़ादारों ! लिखा है कि वह चादरें ले कर बीमार के पास आया मौला मै ये चादरें ले आया कहा बाँट दे इन चादरों को । इसने एक-एक चादरें नाके पर फेंकना शुरू किया कि शिम्र की नज़र पड़ी । ताज़ियाना लेकर क़रीब आया बीबीयों से चादरें छीनी और हाफ़िज़े कुरआन से कहा चादरें क्यों बाँट रहा है...? इसने कहा कुरआन में अल्लाह ने परदे का हुक्म दिया है । ऐ शिम्र वाये हो तुझ पर जिनके घर से परदा निकला वह बीबीयाँ बे परदा । ताज़ियाने पड़ने लगे, एक मरतबा जनाबे ज़ैनब को जलाल आगया कहा ओ शिम्र ! क्या तू हमें ज़बरदस्ती दरबार में ले जायेगा । अगर ज़ैनब न चाहे तो कोई ताक़त ले जा नहीं सकती एक मरतबा कानों में रोने की आवाज़ आयी सर उठा कर देखा तो सरे हुसैन से आसूँ निकल रहे थे... आवाज़ दी भय्या ! क्यों रोये ? कहा ज़ैनब तुम्हें जलाल आगया तो मेरा वादा पूर ना होगा । ऐ बहन ज़ैनब सब्र से काम लो । ऐ ज़ैनब दरबार में चली जाओ । उम्मते आसी का परदा रहा जाये ।

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

चौथी मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने मिल्लत !

सरवरे कायनात ख़त्मी मरतबत जनाब मोहम्मद मुस्तफ़ा सलल्लाहो अलैहे वाले ही वसल्लम ने ईरशाद फ़रमाया है कि ऐ ! मुसलमानों ! मैं तुममे दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ एक कुरआन और दूसरी मेरी इतरत । ये दोनों एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक की मुझ से हौज़े कौसर पर मिलें और अगर चाहते हो कि मेरे बाद तुम गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना । इन दोनों से ताअल्लुक़ रखना और इनसे वाबस्ता रहना इस हदीस के ज़ेल में कंरआन और अहलेबैत के मौज़ू पर आप के सामने गुफ़्तगू जारी है इसमें कल आप की ख़िदमत में अर्ज़ किया था कि किस किस तरह से कुरआन मजीद को जमा किया गया और आज जो कुरआन हमारे सामने हैं इस को बयाज़े उस्मानी के नाम से याद किया जाता है और तीसरे ख़लीफ़ा के दौर में ये कुरआन जमा किया गया बड़ें सूरे पहले छोटे सूरे बाद में कुरआन जमा करके जब ख़लीफ़ा सोउम के सामने पेश किया तो उन्होनें उसे देख कर इरशाद फ़रमाया की इसमें बहोत सी ग़लतीया हैं जिनको अदीब अरब वाले और ज़बान दाँ बाद में ठीक कर लेगें । जब उन लोंगों ने कहा कि आप ही ठीक करवायें कुरआन में ग़लती रहना मुनासिब बात नही है फ़रमाया कि जाने दो । ये मैं ने

हवाले के साथ जलालूद्दीन स्योती ने इस वाक़ये को "तारीख़-अल-खोलफ़ा" में लिखा है "इत्तेक़ान फ़ी उलूम-अल-कुरआन" में भी लिखा है। "अज़ालत-उल-ख़ोफ़ा" में मोहद्दिदस देहलवी ने इसे लिखा है। फ़ख़रूद्दीन राज़ी ने भी इसे "मुक़द्दमा-ए-कुरआन" मे तहरीर फ़रमाया है। बहोत से हवाले हैं। ये इस्लाम का बहुत ही अहम वाक़या है कि अवाम के सवाबदीद पर अरबों के सवाबदीद पर ये बात छोड़ी गयी कि वह इस कुरआन को दुरुस्त करे। इसके बाद उनका इन्तेक़ाल हो गया और क़त्ल वाक़य हो गया। और तमाम तारीख़ें लिखती हैं कि ये क़त्ल का वाक़या अट्ठारहवीं ज़िलहिज्जा को वक़ू पज़ेर हुआ। इसके बाद लोगों ने मौलाये कायनात अली इब्ने अबू तालिब से इसरार किया और अली के हाथों पर अह्ले मदीना ने बहैसीयते चौथे ख़लीफ़ा के बैअत की। ये एक अजीब इत्तेफ़ाक़ है कि अट्ठारह ज़िलहिज्जा को पैग़म्बर ने अली की ख़िलाफ़त का एलान किया था। और अट्ठारह ज़िलहिज्जा को ही उम्मत ने इसे तस्लीम किया था। (सलवात) बहरहाल मेरा मौज़ू दूसरा है आप जानते हैं कि मै मौज़ू में मौज़ू मिलाने का आदी नहीं हूँ। इससे लोगों की तबियत नामौज़ू हो जाती है। (सलवात) तो इस तारीख़ में जब अली के हाथों पर बैयत हुई तो अली ने बुनियादे हुकूमते इस्लामी ही कुरआन समझी। हर फ़ैसला कुरआन से फ़रमाया और कुरआन की तरफ़ दावत दी, और मौलाये कायनात ने दौरे ख़िलाफ़त में ख़ुतबा भी दिया, मिम्बर पर भी तशरीफ़ ले गये, नमाज़ भी पढ़ाई और दरसे कुरआन भी दिया। जो अब तक मुमकिन न हो सकता था। (सलवात) और इसमें आयते कुरआनी इरशाद फ़रमाते थे। मौला इसकी तशरीह फ़रमाते थे इसकी शरह बयान फ़रमाते थे और जब लोग मौलाये कायनात के पास आते थें तो आप उन लोगों को कुरआन मजीद की आयात और उस के रमूज़ भी बतलाते थें। ज़ाहिर है ये कुरआन मजीद चौथे दौर से भी गुज़रा और अली इब्ने अबु तालिब ने इसे जारी व सारी रखा। ये गारन्टी है। ये ज़मानत है इस बात की कि कुरआन वही है जो रसूल अल्लाह पर नाज़िल हुआ था। अब रवायत नहीं मिलती अपनी तरफ़ से भी नहीं कह सकता कि तीसरे

ख़लीफ़ा ने ये बात कह दी थी कि इसकी जो ग़लतीयाँ है उम्मत ठीक कर लेगी तो सवाल ये पैदा होता है कि उम्मत ने ठीक किया हो या न किया हो इमामत कैसे ग़लत बात रहने देती कुरआन में । मौलाये कायनात के गुज़र जाने के बाद इसमे कलाम ही नहीं इसमें शक ही नहीं कि ये अल्लाह का कलाम नही है । आपके सामने मैने क़ौले ख़लीफ़ये अव्वल पेश किया । कल मैने क़ौले ख़लीफ़ये सोउम पेश किया । आज आपके सामने क़ौल ख़लीफ़ा चहारुम पेश कर रहा हूँ । मैं कुछ न कहूँगा ज़बान से मुसलमान समझदार है । अपनी नजात का मामला है वह खुद ही फ़ैसला करेगा । (सलवात) नहजुल बलाग़ा मे कुरआन मजीद के लिये दो मक़ामात पर और दो खुत्बों में मौलाये कायनात ने तश्रीह से बताया कि कुरआन क्या है ? इसका मतलब ये कि अभी तक तो ये झगड़ा था कि जमा हो कि न हो और जो रहे वो सिरके से धो दिया जाये या जला दिया जाये । जब अली मिम्बर पर आये तो आप ने फ़रमाया मुसलमानो ! तुम्हें मालूम भी है कि ये कुरआन क्या है और एक तक़रीर फ़रमायी है । कुरआन पर अली इब्ने अबू तालिब ने इस तक़रीर का पहला जुमला ये है कि मुसलमानो इस कुरआन का ज़ाहिर खूबसूरत और हसीन है, जाज़िब है, जाज़िब नज़र है और अमीक़ बातिन बहोत अमीक़ है बहोत गहरा है इतना गहरा कि कोई इसकी थाह नहीं पा सकता (सलवात) अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । कुरआन एक ही है लेकिन मौला ये बता रहे है कि एक कुरआन का ज़ाहिर और एक कुरआन का बातिन । हर एक इन्सान का एक ज़ाहिर होता है एक बातिन होता है । इन्सान के ज़ाहिर व बातिन में तो फ़र्क होता है लेकिन कुरआन के ज़ाहिर व बातिन में फ़र्क नहीं हो सकता । कुरआन जिस पर नाज़िल हुआ उसके ज़ाहिर व बातिन में फ़र्क नहीं था । और कुरआन जिस की किताब है उसके ज़ाहिर व बातिन में फ़र्क नहीं और जो कुरआन के मुहाफ़िज़ हैं उनके भी ज़ाहिर व बातिन में फ़र्क नहीं । तो कुरआन के ज़ाहिर व बातिन में कैसे फ़र्क ? कितनी मुश्किल से गुज़रे हैं मौला ये साहबान नज़र ही समझ सकते हैं । ज़रासा जुम्ला इधर से उधर हो जाता तो लोग कहते कि अली ने कहा कि कुरआन का ज़ाहिर और

है बातिन और है । मगर अली ने कहा ज़ाहिर खुशनुमा है, खूबसूरत है, जाज़िब है लोगों को अपनी तरफ़ खींचता है और कुरआन का बातिन बहोत अमीक़ है, बहोत गहरा है, जिसकी थाह लगाना तुम्हारे लिये नामुमकिन है । (सलवात) तो एक है ज़ाहिर कुरआन एक है बातिन कुरआन इन मुसलमानों के पास है तो ज़ाहिर ही ज़ाहिर है बातिन का सवाल ही नहीं है । इसलिये कि अली कहते है बातिन इसका अमीक़ है बातिन इसका गहरा है क्या बतायें जैसे आप बम्बई में चले जायें चौपाटी पर समन्दर का ज़ाहिर कितना हसीन है, मौजें उठ रही है, लहरें आ रही है, नीला पानी छया हुआ है । लोग मन्ज़र देखने जाते है तो बस ज़ाहिर देख कर पलट जाते है । अब चौपाटी पर कोई सोंचे कि देखें ये समन्दर कितना है तो डूब तो सकता है उभर नहीं सकता । (सलवात) डूब सकता है उभर नही सकता, गोया इन अलफ़ाज़ में मौलाये कायनात उम्मत को बता रहे है कुरआन पढ़ना तुमको सवाब मिलेगा । कुरआन का पढ़ना तिलावते कुरआन का सवाब है । कुरआने मजीद पढ़ने का ही सवाब नहीं है कुरआन देखने का भी सवाब है । कुरआन देखने का ही सवाब नहीं कुरआन सुनने का भी सवाब है यानी कुरआन अल्लाह की ऐसी किताब है जिसका पढ़ना भी सवाब है जिसका देखना भी सवाब है और जिसका सुनना भी सवाब है । और कोई ये नहीं कहता कि मानी हमारे समझ में नहीं आते, तो सुनने से क्या फ़ायदा ? जब मानी समझ में नहीं आते तो पढ़ने से फ़ायदा ? जब मानी समझ में नहीं आते तो देखने से फ़ायदा ? तवज्जोह चाहता हूँ। कहा फ़ायदा अरे फ़ायदा सवाब है तुम ख़ाली देखो तो । कुरआन को देखो तो । अगर देख लोगे जो सवाब मिल जायेगा । तुम सुनो तो कुरआन को । बहोत सख़्त अहकाम है कुरआन के बारे में कि जहाँ कुरआन की तिलावत हो रही हो वहाँ आवाज़ बलन्द न करो । और जहाँ-जहाँ मुसलमान हों हलका बगोश हो जायें । यानी कान लगा कर कुरआने मजीद को सुनें और अदब, क़ायदे, तहज़ीब के साथ और जहाँ कुरआन रखा हो उस पर नज़र डालो, नज़र करना भी सवाब, सुनना भी सवाब, देखना भी सवाब । देखने से क्या होता है ? बहोत सवाब रखा है शरीयत ने

। रसूल अल्लाह की हदीस है कि कुरआन का देखना भी सवाब, सुनना भी सवाब, पढ़ना भी सवाब है । और कोई चीज़ बताई है पैग़म्बर ने कि जिसका देखना सवाब है । मुझे नहीं मालूम । ख़लीफ़ा अव्वल ये कहा करते थे कि मैंनें नबी से बार-बार सुना है कि अली के चेहरे पर नज़र इबादत है । (सलवात) यानी दो चीज़ो पर नज़र करना इबादत क़रार पायी । कुरआन का देखना इबादत और अली का चेहरा देखना इबादत । तो जब कुरआन का सुनना इबादत है तो अली की बात सुनजा भी इबादत, है न ! पैग़म्बर बता रहे हैं कि समझो कुरआन और अहलेबैत में क्या राबता है ? अरे भाई ! नहीं समझ सकते हो तो अली का चेहरा ही देखो । (सलवात) अब मैं आप से एक बात अर्ज़ करूँ कि सवाब तो बहोत कमाया क्योंकि जब अली मस्जिद में आते तो सब देखते थे । मैदान में आते थें तो सब देखते थे । बद्र में देखा, ओहद में देखा, ख़न्दक़ में देखा कितना सवाब कमाया होगा ? जी नहीं ये आप की गलतफ़हमी है । ग़लतफ़हमी इसलिये कि सवाब ईमान के साथ होता है । अगर घनश्याम दास कुरआन देखे तो सवाब मिलेगा ? जार्ज स्टोलन कुरआन देखे तो सवाब मिलेगा ? कहा उसे क्यों मिलेगा ? क्यों नहीं मिलेगा ? कहा देख रहा है मगर ईमान नहीं है । मालूम हुआ कि ईमान के साथ देखना सवाब है । कुरआन सुनने का सवाब उसे मिलेगा जिसे ईमान हो कुरआन पर यही मामला अली का है । अली को देखने का सवाब उसे मिलेगा जिसे ईमान है अली पर । अली के फ़ज़ायल पढ़ने का सवाब उसे मिलेगा जिसे ईमान है अली पर, सुनने का सवाब उसे मिलेगा जिसे ईमान है अली पर । (सलवात) अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें फ़रमाते हैं इसका ज़ाहिर हसीन है । इसका ज़ाहिर खुशनुमा है, जो जाज़िब है, खैंचता है यही वजह है कि इस्लाम के तिहत्तर फ़िरक़े इस कुरआन पर मर रहे हैं । कैसे न मरें । बहुत हसीन है कुरआन और हसीन तर बना कर छपा जाता है । जितने ख़त्तात लिखते हैं और इसके चारों तरफ़ बाडर बनाये जाते है । कैसे कैसे कुरआन है । जवाहरात से लिखे गये हैं । मोतियों से फूल पत्तियाँ बनाई गयी है । चारों तरफ़ सोने की लकीरें बनाई गयी है । नक़्क़ाश

ने नक़्श खींचा है और ख़त्तात ने ख़त लिखा है । कैसे आर्ट के साथ कुरआन छपा गया है । कितना हसीन इशारा अली ने किया था । आज जो कुरआन उठा कर देखिये हसीन है । लोग कहते हैं कि फ़लाँ साहब के पास कुरआन है । फलाँ म्यूज़ियम में कुरआन है और फलाँ जगह पर कुरआन रखा है आपको मालूम है सोने के वर्क़ पर लिखा हुआ है कुरआन । हाँ सोने के वर्क़ पर आपने देखा है ? कहा हाँ देखा है फ़िरोज़े की रोशनाई से फूल बने है । मोती की रोशनाई से फूल बने है... जवाहरात को कूट कर पत्ती बनाई गयी है । ये औरंगज़ेब ने लिखा है । ये जहाँगीर ने लिखा है । ये फ़लाँ ने लिखा है । आज मुसलमान भी कुरआन के गिर्द जवाहरात जमा करते है । अब ज़ाहिर है इतना जवाहर निगार होगा तो नज़र लफ़्ज़ों पर जमेगी या फूलों पत्तीयों पर । (सलवात)

मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । आप ने कुरआन लिया और कहा भई क्या आर्ट है क्या रंग है, मिस्री आर्ट सुब्हान अल्लाह क्या फूल पत्ती कहा देखिये क्या नाज़ुक पत्तियाँ बनाई हैं क्या उम्दा फूल बनायें है । सब हाशिये में तो घूम रहें है फूल पत्ती देखना सवाब नहीं है कुरआन देखना सवाब है । मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ और फिर वह मोहतरम है क्योंकि वर्क़ कुरआन का है एहतेराम है आज भी नज़र कुरआन के हाशिये पर घूम जाती है । और मतन नहीं देखता कोई । यही हाल इस्लाम का है । पहोंचे बज़्में नबी में ये बैठे है वह बैठे हैं ये भी बैठे है, वो भी बैठे है। अमा ! रसूल अल्लाह क्या कह रहे है वह भी तो सुनों । (सलवात) वह भी तो सुनो कितना हसीन है कितना खूबसूरत है और गहराई बातिन कुरआन का कितना अमीक़ है.... सुब्हान अल्लाह । हुज़ूर । आदमी डर जाता है । घबराता है। किस बात पर अपनी ना वाकफ़ियत पर । आप गये चौपाटी पर पानी मौजें ले रहा है पानी लहरा रहा है । देख कर अच्छा लगा । कितना गहरा है ! क्योंकि जिसे सतह दिखाई देती है उसे गहराई नहीं दिखाई देती । तो अगर अब आप को दरिया उबूर करना है अगर समन्दर आप को पार करना है तो क्या करेंगें आप उन्होने कहा कि बड़ा गहरा है जाईयेगा नहीं । गट्टे-गट्टे नहीं है कि निकल

जाईयेगा घुटने-घुटने नहीं है कि निकल जाईयेगा, कमर-कमर नहीं है कि निकल जाईयेगा, गले-गले नहीं है कि पार कर लीजियेगा, गहरा कितना गहरा है अरे ! बहोत गहरा है तो अब कैसे जायें ? गहराई तक पहोंच नहीं सकते और पहोंचे तो पलट कर आ नहीं सकते । कौन समन्दर में डुब्की लगाये और लगायेगा तो वापस कब आयेगा । ग़ोता ख़ोर ग़ोता लगाते है तो सिलसिला ज़मीन क़ायम रखते है । आक्सीजन ले कर जाते है । तवज्जोह फ़रमाईयेगा रोशनी ले कर जाते है सिरा साहिल से मिला रहता है । ग़ोता लगाते है और निकल आते है और निकाल के भी क्या लाते है ? मोती ! इस समन्दर से मोती निकाल लिये कुरआन से एक मोती भी निकाला किसी ने आज तक ? क्यों ? इसलिये कि डूबें कैसे इसमें ? जायें कैसे ? अगर असहाब ग़ोता लगाते तो ग़ोता खा जाते । (सलवात) ग़ोता खा जाते । या रसूल अल्लाह आपने ऐसी किताब दे दी है जिसको किनारे से बैठे देखा करें । जिसको उबूर नहीं कर सकते । पैग़म्बर कहेगें ये बात नहीं है हम कश्ती बना कर छोड़े जा रहे है । (सलवात) ग़ौर फ़रमाया मेरे अहलेबैत की मिसाल कश्तीये नूह की है कश्ती भी नहीं कश्तीये नूह । तवज्जोह चाह रहा हूँ । मेरे अहलेबैत की मिसाल कश्तीये नूह की है । जो सवार हो गया वह पार हो गया । और जिसने कश्ती छोड़ी वह डूब गया जो डूब गया वह गया और जो गया वह गया । तवज्जोह चाह रहा हूँ । उन्होने कहा जी हाँ ! देखें है अहलेबैत के चाहने वाले कैसे कैसे है । अजी कैसे सही बेड़ा पार है आप कैसे न देखिये । आप कश्ती देखिये । मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । कश्ती देखिये अगर आपको पार करना है बेड़ा तो आजाईये कश्ती में । उन्होने कहा कश्ती में तो न आयेंगें क्यों न आयेगें कहा हमारा रसूल से ताल्लुक़ है वह तो नूह के बेटे का भी ताल्लुक़ था । नूह की ज़ौजा का भी ताल्लुक़ था । बचे ? कहा नहीं बचे नबी इशारा कर रहे है कि मेरे बाद ऐसा तूफ़ान उठेगा कि जिसमें डूब जाओगे । नहीं बचोगे । ख़ाली वही बचेगें जो मेरे अहलेबैत से तमस्सुक रखेगें । तो हुज़ूर समन्दर ही कुरआन को नहीं छोड़ गये । सफ़ीनये अहलेबैत भी छोड़ गये । तो इसी लिये हम अहलेबैत से वाबस्ता है ।

क्योंकि इसी समन्दर से गुज़रना जिसके लिये अली कहते है इसका बातिन बहोत ही अमीक़ है । इसका बातिन बहोत ही गहरा है । उन्होने कहा आपके चाहने वाले तो पहले । उनको देखा और उनको देखा । कुछ न देखिये । कश्तीये नूह है जनाब । तवज्जोह चाह रहा हूँ । कश्तीये नूह है । जब कश्तीये नूह है तो इसमें सब होगें । एक-एक जोड़ा सही । तवज्जोह चाह रहा हूँ । मगर होगें सब । अगर कश्तीये नूह न होती तो आज नस्ल बशरी न होती । और न जानवर ही होते । वह तो सब कश्तीये नूह की वजह से बचे । उन्होनें कहा मै सफ़ीनाये नजात बता जाता हूँ । ये सफ़ीना चलेगा तो इसमें बैठ जाना । कुरआन से फ़ैज़ हासिल कर लेना और अगर सफ़ीने से कूदे तो फिर गये । ये मन्ज़र आप रोज़ देख रहे है । ये जो इस सफ़ीने में आ जाता है उसका बेड़ा पार हो जाता है । अरे ! बहोत से ऐसे बद क़िसमत है कि माँ ने सफ़ीने ही में पैदा किया मगर ज़रा हाथ पैर निकले तो सफ़ीने से फान्द गये । फान्द गये तो डूब गये और डूब गये तो तबाह हो गये । (सलवात) ग़ौर फ़रमाया आपने । इस का बातिन बहोत ही अमीक़ है बहोत ही गहरा है । तो जिसका बातिन गहरा है तो उस बातिन के मानी कौन बयान करेगा ? जब तक कोई शरह कुरआन करने वाला न हो । जब तक कोई कुरआन के मानी बताने वाला न हो । जब तक कि कुरआन के मानी समझाने वाला कोई न हो तो कौन समझाये ? कहा पूछे-पूछे ! जो कुछ तूम पूछ्ना चाहते हो क़ब्ल इसके कि मै तुम्हारे दरमियान से उठ जाऊँ हुज़ूर अजब बात है । सारे सवालात देखिये । किसी ने पूछ । मेरे सिर में बाल कितने है ? किसने पूछ आसमान पर सितारे कितने है । किसी ने कोई सवाल बनाया किसी ने कोई बनाया । किसी ने कुछ पूछ । एक ने न पूछ कि इस कुरआन में क्या है ? मै कुछ कह गया । इसका मतलब ये कि अली कहते थे पूछे तो वो दुनिया की बात पूछ्ते थे । कुरआन की बात नहीं पूछ्ते थे । (सलवात) अगर कुरआन की बात पूछ्ते तो आज शरहे कुरआन मौजूद होती । आज तफ़सीरि कुरआन मौजूद होती । उन्होंने कहा । ये आप कैसे कहते है ? खुलफ़ाये ईस्लाम ने जाकर अली से पूछ । मैने तो नहीं देखा कि

किसी ने जाकर अली से पूछ हो । मैंने तो नहीं देखा कि किसी ने जा कर अली से पूछ या अली इस आयत के मानी बता दीजिये । एक वाक्या ला दीजिये । तवज्जोह चाह रहा हूँ । मेरे इल्म के ईज़ाफ़े का नहीं बनेगें आप । आज जब कोई मुश्किल आन पड़ी तो वह जान कर नहीं पूछ रहे हैं । मजबूरी ने पुछ्वाया तो मजबूरी तो आज भी या अली कहला देती है । ज़बान से बिदअत-बिदअत कहते हैं मगर जिसपर पड़ती है पुकारता अली को ही है । (सलवात) फ़रमाते है कि उसकी सतह बहुत ही हसीन है बहोत ही खूबसूरत है और उसकी गहराई, उसका बातिन बहोत ही अमीक़ है । इसके बाद इरशाद फ़रमाया है कि ये एक ऐसा क़िला है कि जो इसके हिसार में आ जाये उस कुरआन के क़िले सुतून इतने मुस्तहकम हैं कि जिन को कोई मुनहदम नहीं कर सकता । आप मुलाहेज़ा फ़रमायें मौलाये कायनात का खुतबा फ़रमा रहे है कि कुरआन मजीद ऐसा क़िला है मिसाल दे कर समझा रहे हैं कि जिसकी दीवारें जिसका सुतून जिसके आसार इतने मुस्तहेकम हैं कि कोई नही हिला सकता है, न कोई उन्हें मुन्हदम कर सकता हैं, न कोई उन्हें बदल सकता है । ये पाँचवीं दलील है इस बात पर कि कुरआन वही जो नाज़िल हुआ । इसलिये कि अली कहें कि इसका सुतून मुनहदम नही हो सकता । तो सभी मिलकर कहें कि फ़लाँ सुतून मुनहदम हो गया । तो यक़ीन नहीं आ सकता क्योंकि अली इब्ने अबू तालिब फ़रमाते है कि ये वोह किताब है जो ऐसा क़िला है कि जिसके सुतून मुनहदम नहीं हो सकते । फिर फ़रमाते हैं कि ऐसा बाग़ है जिसमें हर तरह के फूल मौजूद है, हर तरह का मेवा मौजूद है । ये वह बाग़ है कि जो कभी नहीं मुरझायेगा । पस मुरदा नहीं होगा । । कभी खुश्क न होगा । तो मौला कुरआन की मिसालें बयान फ़रमा रहे है । ताकि तुम को इत्मेनान रहे कि कुरआन बाक़ी रहेगा । न कुरआन को कोई मुन्हदम कर सकता है न कुरआन के सूतून को कोई गिरा सकता है । न गुलज़ारे कुरआन मजीद पर कभी ख़िज़ाँ आ सकती है । (सलवात) और इसके बाद एक अजब जुमला फ़रमाया कि ऐसा मसाएब है कि जिसकी सोहबत में जो बैठ जायेगा वह अपने तरफ़ के मुताबिक़ या रहबरी ले कर उठेगा या

गुमराही ले कर उठेगा । (सलवात) आगया मै मन्ज़िल पर यानी मौला फ़रमाते है कि कुरआन वह मरकज़ है कि जहाँ से तुम आओ और आकर बैठो, कुरआन पढ़ो, कुरआन देखो, कुरआन समझो और कुरआन से बातें करो मगर ज़रफ़ के मुताबिक़ यहाँ दो रिएकशन बताये । सोहबते कुरंआन के । तवज्जोह चाह रहा हूँ । यानि कुरआन की सहाबियत, कुरआन की दोस्ती, कुरआन के पास बैठना, मौवज्जब सवाब है । मगर ज़रफ़ चाहिये । अगर ज़रफ़ से सालेह है तो हिदायत पायेगा और अगर ज़रफ़ सालेह नहीं है तो कुरआन से ही गुमराह हो जायेगा । अब मुलाहेज़ा फ़रमायें । कब कहा था ? कब फ़रमाया था ? और आज आप देखलें कि जितनी तबलीग़ है वह भी कुरआन से है और जितनी गुमराही है वह भी कुरंआन से है कुरआन की आयतों से ही उम्मत को गुमराह किया जाता है और जो पूछते है कि कुरआन में दिखाओ। एक चीज़ बहोत माँगी जाती है कुरआन से, बताईये कौन चीज़ है ? पहेली बूझिये । सबसे ज़्यादा मुसलमान तक़ाज़ा करते है ओलमाये इस्लाम से कि कुरआन में दिखाओ । चौदह सौ बरस हो गये कोई दिखा नहीं पाया ? वह कौन चीज़े है ?आपके ज़ेहन में नहीं आरही है या मस्लेहतन आप कह नहीं रहे है । वह है दाढ़ी ! तवज्जोह चाह रहा हूँ । भई सबसे ज़्यादा है कि नहीं । कुरआन में कोई चीज़ नहीं पूछी जाती तब उलमा तम्बीह करते है कि मुस्लमान दाढ़ी रखो, कहते है कुरआन में दिखाओ, कहते है या नहीं , भई कुरआन में कहाँ है ? अब आलम और मौलवी कहते है अरे भई कुरआन में है । है तो दिखाओ । तवज्जोह चाह रहा हूँ । कहा हम दिखा नहीं सकते, मगर है अरे भई दिखा नहीं सकते मगर है तो कैसे है ? कहा कुरआन कहता है हर खुश्क व तर कुरआन में मौजूद है तो कैसे हो सकता है कि दाढ़ी का हुक्म न हो कुरआन में, फिर आयत बताईये ? कहा आयत नहीं मालूम ज़रा मुलाहेज़ा फ़रमाईये अपने चेहरे का हुक्म कहाँ है कुरआन में है वो बता नहीं पाता आलिमेदीन, तो इस्लाम का चेहरा क्या बयान करेगा । (सलवात) इस्लाम का क्या चेहरा बतायेगा । शेव करने वाले मेरी मजलिस का फ़ायदा न उठायें मै बताये देता हूँ । क्योंकि ताहिर साहब ने कहा

लेकिन जो कहता है वह कहता है । है मगर हमें आयत नहीं मालूम इसका मतलब ये कि सतह पर सब कुछ नहीं रखा है गहराई में भी है । और आज पूछते हो जब अली कह रहे थे तब पूछा होता । जो कुछ तुमको पूछना हो । क्यों न पूछ लिया कि मौला दाढ़ी कुरआन में कहाँ है ? एक है भी तो फ़िरऔन की है और वह भी जनाब मूसा वह भी नोची है मैं कुछ कह गया । (सलवात) वह भी नोची है, कुरआन में है, उन्होनें कहा है तो ज़रूर शरीयत का हुक्म है बेशक हुक्म है हम भी मानते है, सुबूत कुरआन से उम्मत मांगती है और सुबूत नहीं मिलता । कुरआन की आयत न भी मिले तो हुक्मे शरीयत नहीं बदलता । मै कुछ कह रहा हूँ । जो लोग दाढ़ी मून्डते है किसी वजह से दाढ़ी पर बहस नहीं है और जो रखता ही नहीं दाढ़ी उसकी पकड़ूगाँ क्या ? मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । तवज्जोह रखियेगा । मै तो दाढ़ी वालों से बात कर रहा हूँ । सब दाढ़ी रखते है मगर कुरआन में दिखा नहीं पाते । आप हम क्यों दाढ़ी रखते है कहा हुक्म है इसका मतलब ये कि बहोत से ऐसे हुक्म है जो नहीं है मगर हुक्म है हदीस में । अब हमसे न पूछना कि अज़ादारी की आयत दिखाईये कुरआन में । पहले आप दाढ़ी की आयत दिखाईये फिर हमसे आप अज़ादारी की आयत लीजिये । (सलवात) दिखाईये तो साहब ये लोग जो ग़में हुसैन में रोते है , अज़ादारी करते है थक रहे है न उसूले दीन है न फ़रोए दीन में है । उसूलेदीन शियों में पाँच सुन्नीयों में तीन । और रही कुरआन की बात तो इस सिलसिले में भी अज़ादारी । फ़रोएदीन में भी अव्वल नमाज़, दूसरे रोज़: तीसरे हज, चौथे ज़कात पांचवें खुम्स छ्ठे जेहाद, आख़िर तक इसमें भी अज़ादारी नहीं । अज़ादारी न उसूलेदीन में है और न फ़रोएदीन में, तो जो चीज़ उसूल में न हो, और जो चीज़ फ़रो में न हो वह कैसे मानी जाये । पक्की बात है । आज मैं सवाल करता हूँ । कुरआन किस में है ? न उसूलेदीन में है और न फ़रोएदीन में है । अरे वो तो कुरआन है उसूल में कहाँ है ? तौहीद, अदल, नबूवत, इमामत, क़यामत, कुरआन कहां है ? रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात, खुम्स, जेहाद, अमरबिल मारूफ़, नहीं अनिल मुनकर, कुरआन कहां है ? लफ़्ज़े कुरआन कहां है । कहा ? भई कुरआन से तो सब

कुछ है । तो भइय्या अज़ादारी से ही तो सब कुछ है । कुरआन है तो तौहीद है, कुरआन है तो अदालत है, कुरआन है तो नबूवत है, कुरआन है तो इमामत है, कुरआन है तो क़यामत है, कुरआन है तो नमाज़ है, कुरआन है तो रोज़ा है, कुरआन है तो हज है कुरआन है तो ज़कात है, कुरआन है तो खुम्स है, कुरआन है तो जेहाद है, कुरआन है तो अम्र बिल मारूफ़ है, कुरआन है तो नहीं अनिल मुनकर है, कुरआन है तो तवल्ला है , कुरआन है तो तबर्रा है, वह नहीं जो हम कहते है हम पर तो बैण्ड है हम तबर्रा कहें तो मुसलमान उठ कर चला जायेगा । रमज़ान में तरावीह रोज़ पढ़ेगा लेकिन नमाज़ नहीं छोड़ेगा । (सलवात) । रोज़ पढ़ेगा कुरआन को, हाँ , क्यों ? इसलिये कि कुरआन का बातिन बहुत गहरा है । कहाँ है ? उन्होने कहा : नहीं है ! तो सब कुरआन में है, आज नमाज़ अज़ादारी से है, रोज़ा अज़ादारी से है, अहकामे इसलाम अज़ादारी से है, रसूल अल्लाह का नाम अज़ादारी से है, अल्लाह की वैहदानीयत अज़ादारी से है । उन्होने कहा : अज़ादारी से कैसे है तो फिर क्या आप की वज़ादारी से है या आप की तरफ़दारी से है । अज़ादारी ने आप को वज़ादारी से हटाया है । वरना आप नबी के बाद अहलेबैत की सुनने को ही तैयार न थे, तो तसलसुले तारीख़ ये है कि आप ने न कुरआन की सुनी, और न अहलेबैत की सुनी, जिसकी चाही उसकी सुनी, सुनते सुनते जब यज़ीद तक पहुँचे तो वहाँ से कहने लगे । हम यज़ीद की नहीं सुनेगें । हम हुसैन की सुनेगें । तो आप की वज़ादारी बदली । हम अज़ादारी उस बात की कर रहे है कि आप वज़ादारी छोड़ने न पायें । बुरा कहा जा रहा है । ये कुरआन पढ़ कर नहीं कहा जा रहा है । हदीस सुन कर नहीं कहा जा रहा है । भई मैं क्या अर्ज़ कर रहा हूँ । ये अज़ादारी कहलवा रही है । ज़रा मेरी बात पर तवज्जोह फ़रमाईयेगा । ये अज़ादारी कहलवा रही है । हर फिरके का मुसलमान मजबूर है, मुहर्रम के दस दिन कुछ भी कहने पर, जो जी मे आये कहो । हमें उससे बहस नहीं है हम नहीं बिगड़ते, हम नहीं बुरा मानते, हम क्यों बुरा मानें, हम क्यों बिगड़ें, कोई अगर सफ़ीने से फांदाँ जा रहा है । (सलवात) । फांदाँ जा रहा है । हम क्यों बुरे बनें,

लोग कहते है साहब ज़रा समझदारी से आप उनके पीछे रहिये । सुब्हानअल्लाह , हम मश्विरा देने के लिये आयें हैं । हम क्यों रोकें । जब एक आदमी नाव से फांद रहा है और हम ने उस की कमर में हाथ दे दिया तो दो बातें हैं । रोक लिया तो रोक लिया, अगर भारी पड़ गया तो उस के साथ हम भी गये। सलवात । मैं कुछ कह गया । देखिये यही तवज्जोह है कि जो लोग खादारी खादारी कहतें है, वह खादारी नाव में किसी को रोक तो पाते नहीं खुद ही झोंके में चले जाते है । तो कैसा नतीजा ....? हमने तो यही देखा है और फिर गहरा उतना है समन्दर को पलट कर आने का सवाल ही नहीं है । अब आप मुलाहेज़ा फरमायें । बात आगयी सामने तो अर्ज़ करदी । तफ़्सील किसी मजालिस में इन्शाल्लाह अर्ज़ करूँगा कि अज़ादारी कुरआन में है कि नहीं । आज कुरआन की गहराई को कोई पहचानता नहीं और कुरआन की आयतें याद है, कुरआन, कुरआन पढ़ो । बेशक ! कुरआन पढ़ना सवाब है तो कुरआन पढ़ने का कोई क़ानून भी है कुरआन में । उन्होने कहा नहीं । कुरआन ने तो हुक्म दिया है । काहे का हुक्म है । कहा : कुरआन को ठहर ठहर कर पढ़ो । अह्लेबैत की बात नहीं कर रहा हूँ । मामला तो कुरआन का चल रहा है । कुरआन खुद ही कहता है मुझे ठहर ठहर कर पढ़ो, खुली हुई आयत है कुरआने मजीद में और कुरआन किस तरह पढ़ा जाता है । तवज्जोह चाह रहा हूँ । किस तरह पढ़ा जाता है । उन्होने ने कहा : किस तरह से, हाफ़िज़ जी एक रात में छः पारे पढ़ते है । तो उन्होने कहा जी छः हम बारह पढ़ते हैं उन्होनें कहा : हम बीस पढ़ते हैं उन्होने कहा हम पूरा कुरआन एक रात में पढ़ते हैं । उन्होने कहा : ये बेस्ट है । ज़रा सुनिये । फ़ज़ीलत इस की ज़्यादह है । जो ज्यादा मुख़ालिफ़े कुरआन है । (सलवात) फ़ज़ीलत उसकी ज़्यादह है जो ज़्यादह ज़ोरो शोर से कुरआन की मुख़ालफत करे । उन्होने कहा । नहीं ! नहीं !! हम समझ रहे है आप क्या कह रहे है ? हम तो कुरआन पढ़ने की बात कर रहे है । आप समझ कुछ रहे है । आप जाने हम तो कुछ नहीं समझना चाहते है । हम समझ गये रात भर में कुरआन पढ़ने की बात । क्या समझ गये । कहा : कुरआन कहता है ठहर-ठहर कर

पढ़ो कहा हम इतनी तेज़ी से पढ़ेगें कि किसी के समझ में न आये । अब ज़रा मुलाहेज़ा फ़रमाईये । तवज्जोह । ले आया आप को मन्ज़िल पर में जानता हूँ सीधे सीधे कौन आता है । घेर घुमाव से लाना पड़ता है । ज़रा आप इस मन्ज़िल पर मुलाहेज़ा फ़रमाईये । ज़ैद बिन साबित से इसलिये जमा कराया कि जो कुरआने मजीद कातिबीने वही ने लिखा है वह पसन्द न था । तवज्जोह फ़रमाईयेगा । जब ज़ैद बिन साबित ने कुरआन जमा कर दिया तो तीसरे ख़लीफ़ा ने इस कुरआन को फिर से जमा कराया । भई एक बात पूछ्ना चाहता हूँ । ख़लीफ़ा दोऊम सोऊम के ज़माने में रमज़ान में तरावीह की नमाज़ होती थी । इस में कितने पारे रोज़ । (सलवात) कितने पारे रोज़ पढ़े जाते थे । पूछ्यिेगा । अपने उलेमा से कि ताहिर साहब ने पूछ है । बताईयेगा नहीं इन्शाअल्लाह आप को ऐसा मशहूर मौलवी आज भी मिलेगा कि कोई कहेगा पांच, कोई कहेगा छः पारे । जब पारे गिना दे तो कहियेगा कि कितना पारा चढ़ता है । (सलवात) पारे थे ही कहाँ ? तो ये पारों के ज़रिये तरावीह में कुरआन को पढ़ना सुन्नत ख़लीफ़ा दोउम के ख़िलाफ़ है । तवज्जोह चाहता हूँ । अब जब ख़लीफ़ा सोउम का ज़माना आया । तरावीह हुई कि नहीं हुई । अगर वही कुरआन पढ़वाया जो ख़लीफ़ा दोउम में जारी था वह सिर्फ़ दो के पास था । उम्मुल मोमनीन आयेशा के पास और उम्मुल मोमनीन हफ़्सा के पास तो क्या ये पढ़ाई थी तरावीह (सलवात) सवाल है और कुरआन से मुताल्लिक़ सवाल है । अहलेबैत का कहीं नाम भी नहीं है । कुरआन मजीद के मुताल्लिक़ पूछ्यिे जाकर, कि ये बताईये कि उस वक़्त कौन पढ़ाता था । कहा नहीं ! नहीं !! उस वक़्त भी हाफ़िज़ाने कुरआन थे । वह पढ़ाते थे, कौन सा उन्हें हिफ़्ज़ था । जो ज़ैद बिन साबित ने लिखा था । तवज्जोह चाह रहा हूँ और वह पढ़ाया करता था माहे सेयाम में या जो तीसरे ख़लीफ़ा ने जमा कराया था, और जो ये मौजूद है । ये पढ़ाया जाता था । अरे साहब कुरआन पढ़ाया जाता था तो कौन सा ? जो हज़रत माविया लिखते थे वह, जो ज़ैद बिन साबित ने लिखा था वो ? अलहम्दो लिल्लाह अली वाले का सवाल ही नहीं । उन का तो सवाल ही नहीं, वह मन्ज़रे आम पर आया ही

नहीं । अब उन तीन कुरआनों मे कौन सा कुरआन पढ़ाया जाता था । पहले ख़लीफ़ा के ज़माने में ज़ैद बिन साबित वाला पढ़ाया जाता होगा । अच्छा... उस के बाद अर्ज़ किया तीसरे ख़लीफ़ा ने जमा किया था वो पढ़ाया जाता होगा । तो तरावीह हड्डी ले कर पढ़ायी जाती थी । तवज्जोह चाह रहा हूँ या चमड़ा हाथ में लेकर, या पत्ते हाथ में लेकर, ये कहाँ था सवाल है अक़्ल है, सोंचेगें, कहा : कैसी बात आप करते है । जो हाफ़िज़े कुरआन था वह पढ़ता था । आज भी हाफ़िज़े कुरआन तरावीह पढ़ाता है । बात, बड़े अदब के साथ, किसी को नागवार भी न गुज़रे और रात भर नींद भी न आये, तो हुज़ूर जो नमाज़ जारी करे, ख़लीफ़ा पढ़ाये दूसरा । ख़लीफ़ा की मौजूदगी में किसी को हक़ है पढ़ाने का, तो कहा : वो समझे नहीं । वह तो हाफ़िज़ पढ़ाता था । इसका मतलब ये है कि न पहले हाफ़िज़े कुरआन थे न दूसरे हाफ़िज़े कुरआन थे । (सलवात) ख़त्म हो गयी बात । बम्बई में आज कल शियों में हाफ़िज़ नहीं होते । अमाँ एक ही बात मानी तीनो ख़ोलफ़ा की तो इस पर भी ख़फ़ा । तवज्जोह चाहता हूँ । और हाफ़िज़ कौन था ? अली ! अली हाफ़िज़ ही नहीं थे मुहाफ़िज़ भी थे । और अली ने तरावीह पढ़ायी नहीं । अली ने तरावीह पढ़ायी ही नहीं । एक तारीख़ से नहीं साबित कर सकते और साबित कर दें तो ख़ते गुलामी लिख दूगाँ । इसका मतलब ये कि नबी की ज़िन्दगी में तरावीह न थी, और चौथे ख़लीफ़ा के दौर में तरावीह न थी, और बीच मे पहले ख़लीफ़ा के दौर में भी न थी । यानी रसूल अल्लाह एक, ख़लीफ़ा अव्वल दो, ख़लीफ़ा दोउम तीन, ख़लीफ़ा सोउम चार, ख़लीफ़ा चहारुम पांच, यही हैं न । रुश्दो हिदायत वाले । पांच में सिर्फ़ दो के दौर में तरावीह तीन के दौर में तशवीह नहीं । रसूलअल्लाह ने नहीं पढ़ाई, ख़लीफ़ा अव्वल ने नहीं पढ़ाई, ख़लीफ़ा चहारुम ने नहीं पढ़ाई तो कुरआन का मुसल्लम होना साबित नहीं । मै क्या अर्ज़ कर रहा हूँ । कहाँ से पढ़ाते थे किस हड्डी से, किस चमड़े से, किस पत्ते से और अगर हाफ़िज़ भी थे तो कोई ऐसा भी था जिसे पूरा कुरआन हिफ़्ज़ था । तो इसी से क्यों नहीं लिखा लिया कुरआन । चन्दा क्यों मांगाँ ? (सलवात) तवज्जोह फ़रमाईयेगा । तो वह कुरआन क्या होगा

? क़सम ख़ोदा की अल्लाह ने जो फ़रमाया है कि मैं मुहाफ़िज़े कुरआन हूँ तो हिफ़ाज़त करने के लिये ज़रिया अहलेबैत को बनाया। नबी का ये कहना कि मै दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ। कुरआन और अहलेबैत । कुरआन और इतरत । कुरआन रह न जाता । कुरआन देखना नसीब न होता । कुरआन मिलता नहीं । अगर अल्लाह हिफ़ाज़त न करता । और हिफ़ाज़त करने के लिये उसने कहा : कुरआन तो एक ही है मुहाफ़िज़ बारह है। जो हर दौर में कुरआन की हिफ़ाज़त करेगें । और वो ये समन्दर है इल्म का जिस की गहराई तक कोई पहुंच नहीं सकता । ये वह क़िला है कि जिसमें आने वाला अमान पाता है और उसके सुतून कोई मुनहदिम नहीं कर सकता । ये वह बाग़ है कि जिस पर कभी ख़िज़ां नही आती । सुब्हान अल्लाह । आइन्दा मजलिसों में इन्शाअल्लाह अर्ज़ करूगाँ कि बाग़ किस ने साबित किया ? क़िला का इस्तहकाम किसने बनाया। इस की अमीक़ और गहराई को वाज़ेह किया । कुरआन की गहराईयों से मोती निकाल कर कौन लाया और किस ने दामन भरे । अरे एक मोती पर रात गुज़र गयी । और इब्ने अब्बास बस ये समझ लो कि जो सारे कुरआन में है । वो सूरः अलहम्द में है । जो सूरः अलहम्द में है वो बिस्मिल्लाह में है और जो बिस्मिल्लाह में है वह बाये बिस्मिल्लाह है । जो कुछ पाये बिस्मिल्लाह में है वो "बे" के नीचे नुक़्ते में है । और मै वो नुक़्ता हूँ । देखिये अली ने कुरआन को समेट कर नुक़्ता बनाया और अपने को नुक़्ता कर फिर कुरआन को फैला दिया । (सलवात) बस हुज़ूर ! आप की ज़हमत को मैंने तमाम किया । गुज़ारिश ये है कि कुरआन हम जानते हैं, हम जानते है कि कुरआन क्या है ? कुरआन का ऐहतेराम क्या है ? और हर वो मुसलमान जानेगा और समझेगा जिसकी नज़र में अज़मते अहलेबैत है । वैसे तूफ़ान और प्रोपोगेन्डा कि कुरआन, कुरआन, कुरआन अरे हुज़ूर, कुरआन तो है और आज भी है कुरआन और पढ़े भी जाते हैं और छपते भी है कुरआन, कुरआन हदिया भी होते है । कुरआन समझने की कोशिश भी लोग करते हैं । और कुरआन ही से हिदायत भी पाते हैं और कुरआन ही से लोग गुमराह भी हो जाते है । इस की बाक़ायदा

मिसालें इन्शाअल्लाह आप के सामने पेश की जायेंगीं । कुरआन तो है ही, लेकिन कुरआन समझाने वाले का फ़र्ज़ है अगर गहराई से वाक़िफ़ से पूछा जाये तो वह तह की बात निकाल कर लाता है । और अगर नावाक़िफ़ से पूछा जाता है तो तह ख़ाली मौजों की बात करता है और हुज़ूर मौजें कोई गिन नहीं सकता कुरआन की सतह को कौन पहचानेगा । लेहाज़ा बग़ैर अह्लेबैत के कुरआन नहीं समझ सकता । और जब कुरआन समझ में नहीं आ सकता बग़ैर अह्लेबैत के तो इस्लाम क्या समझ में आयेगा । अब इस सिलसिले को इन्शाअल्लाह कल से आप की ख़िदमत में अर्ज़ करूगाँ कि मौला के बहुत तूलानी ख़ुतबे हैं एक नहीं बल्कि दो ख़ुतबे हैं पूरा अशरा तमाम हो सकता है । अली ने जिस कुरआन की तारीफ़ बयान की है, लेकिन मुझे अभी दूर तक जाना है । (सलवात) तवज्जोह फ़रमाई आप ने । लेहाज़ा एक, एक मन्ज़िल से जल्द से जल्द अपने जादे को तय कर रहा हूँ । यानी गुज़ारिश ये है कि दीन को समझना आसान बात नहीं है । बेहतरी यही है कि नाव पर बैठ कर, सफ़ीने में बैठ कर उस समन्दर से गुज़रा जाये, इसलिये कि इस सफ़ीने का खेने वाला कौन है ? ये सफ़ीना जा कर कहाँ रुका कोहे जोदी पर जाकर रुका, और जब करबला से गुज़र रहा था ये सफ़ीनए नूह तो तूफ़ान आया । गर्दो आब में कश्ती फंसी, लिखा है कि कश्ती ने अब जो चक्कर खाना शुरू किया तो जनाबे नूह ने हाथ बलन्द किये । माबूद ! कश्ती डूब जायेगी । कहा : नहीं नूह ! ये करबला है यहाँ से मेरा कोई ख़ास बन्दा गुज़र नहीं सकता मगर जिसपर मुसीबत आये और अज़ीयत हो । ये करबला है । यहाँ सफ़ीनए आले मोहम्मद अपने ख़ून में डूबेगा । ये करबला है । करबला से जो भी गुज़रा है ख़ासाने ख़ुदा में से उसने अज़ीयत उठायी है । . उस वक़्त का ज़िक्र है कुरआन नाज़िल भी नहीं हुआ था । जनाब नूह से जनाब जिब्रील ने आकर कहा : यहाँ आख़री नबी का छोटा नवासा तीन दिन का भूखा प्यासा मारा जायेगा । और ये सुन कर जनाब नूह ने रोना शुरू किया । जब नूह

रोये तो कश्ती गर्दो आब से निकली तो उस दिन से मालूम है हुसैन पर गिरया मुसीबत से हो जाता है । हुसैन पर गिरया खुदा की इमदाद को मुसलमान के हक़ की तरफ़ मोड़ देता है । इसी लिये हम इस मज़लूम को याद करके रोते हैं । वह मज़लूम, करबला में तीन दिन का भूखा प्यासा शहीद कर दिया गया । और तन्हा नहीं कैसे-कैसे लोग, कैसे-कैसे अज़ीज़, कैसे-कैसे अक़रबा, हुसैन ने ख़त लिख-लिख कर बुलाया था । एक तरफ़ कहते थे साथ छोड़ दो मेरा साथ छोड़ दो । चले जाओ । और एक तरफ़ ख़त लिख कर बुलाते थे । जो ख़त भेजे हैं उसमें एक इब्ने मज़ाहिर को था । कौन हबीब इब्ने मज़ाहिर ? जिन के लिये लिखा है कि रसूल अल्लाह मदीने की गलियों से गुज़र रहे थे । एक बच्चे को उठा कर गोद में बिठा लिया । जेब से खुरमा निकाल कर दिया तो असहाब ने कहा : या रसूल अल्लाह हमने आपको किसी को गोद में बिठाते नहीं देखा । सिवाये हुसैनन के इस बच्चे में क्या सिफ़त है । जो मै देख रहा हूँ वो तुम नहीं देख रहे हो । तुमने देखा नहीं मेरा हुसैन जिधर से गुज़रता है ये बच्चा ख़ाक उठा कर सर पर रखता है । ये वो बचपने के दोस्त हैं, हबीब, जिनको नामा पहुंचा और उन्होने पढ़ा ज़ौजा ने पूछा किस का ख़त है ? कहा : हुसैन इब्ने अली का ख़त है । कहा : क्या लिखा है ? कहा : नुसरत के लिये बुलाया है । कहा : हबीब क्या ख़्याल है ? कहा : मैं क्या करूँ जा कर इसलिये कि उधर यज़ीद है इधर हुसैन हैं । कहा - सुब्हान अल्लाह इमामे वक़्त मदद के लिये बुलायें तुम कहो कि मुझसे क्या मतलब है ? लो मेरी चादर ओढ़ कर घर में बैठो । हबीब अपना अमामा मुझे दो मैं जाऊँगीं नुसरते इमाम के लिये ! हबीब ने कहा : नहीं मोमिना ! मै तेरा इम्तेहान ले रहा था । बस मैंने तेरा इम्तेहान ले लिया । मैं ज़रूर जाऊँगा । मगर ये बता दे कि तू मेरे बाद क्या करेगी ? अजब जवाब दिया उस मोमिना ने । कहा : मै ख़ाक फांक कर जी लूंगी । मगर तुम आक़ा की नुसरत का छोड़ना । और आप को मालूम है । जिस तरह से हबीब चले । घोड़े

को भेज दिया । गुलाम कहता है ऐ राहवार मै परेशान हूँ । अगर हबीब न आये तो मैं किसर पर सवार होकर नुसरते इमाम को जाऊँगा । बस एक मरतबा मदीने का रुख़ किया कहा आक़ा ये वक्त बतायेगा कि गुलाम भी आक़ा पर सबक़त करे नुसरत के लिये । ये कह कर घोड़े पर बैठ कर रवाना हुए । हुसैन रास्ते में थे कि एक मरतबा कुर्सी से बलन्द हुए । अहबाब से कहा आओ कहा । आक़ा क्या है ? कहा मेरे बचपने का दोस्त आ रहा है । कहा कहाँ आ रहे है.....? कहा । देखो कूफ़े से आ रहा है । लोगों ने देखा कि गर्द का तूफ़ान उठा और जब दामने गर्द चाक हुआ तो देखा कि हुसैन सामने खड़े हैं घोड़े से कूदे क़दमों पर सर रखा कहा आक़ा आप कहा हबीब हम तुम्हारे इस्तेक़बाल के लिये आये हैं । बस ये सुनना था कि हबीब तड़प गये । कि इमामे वक़्त और मेरे इस्तेक़बाल को आये । ऐ हबीब तुमको नहीं मालूम तुम्हारा क्या दर्जा है ? आगे बढ़ो तो पता चलेगा । जब अन्साराने हुसैन हबीब को ले कर ख़ैमा गाह तक चले तो फ़िज़्ज़ा दरे ख़ैमा पर आयी । पूछा कौन आया है । कहा । बचपने के दोस्त हबीब इब्ने मज़ाहिर आये हैं । फ़िज़्ज़ा ने जाकर ख़ैमे में कहा । पलट कर आयी हबीब कौन है ? लोगों ने आगे बढ़ा दिया इन बुजुर्ग का नाम हबीब है कहा हबीब इब्ने मज़ाहिर को अली की बेटी ज़ैनब ने सलाम कहा है । से सुनना था कि हबीब ने मुहँ पर तमांचे लगाये । अरे अली की बेटी और मुझे सलाम कहलाये । ऐ हबीब तुम ने बड़ी क़द्र की सलामे ज़ैनब की हम कैसे क़द्र न करे .... हुसैन ने मरते वक़्त कहा सैयदे सज्जाद से छुट कर जाना तो मेरे शियों को मेरा सलाम कहना । कहना जब ठंडा पानी पीना तो मेरी प्यास को याद कर लेना । बस अरबाबे करम मजलिस तमाम है तफ़सीलात में नही जाना है । सिर्फ़ इतना कहना है कि जब नमाज़ की इजाज़त का मसला आया तो जंग रोकने का मसला आया । एक मलऊन ने बढ़ कर नाज़ेबा कलमा कहा । बस हबीब ने कहा आक़ा ! आप के जद के साथ जन्नत मे नमाज़ पढ़ूगाँ । इमामत की शान

में गुस्ताख़ी बर्दाश्त नही कर सकता । हबीब मैदान में आये । उस मलऊन को वासिले जहन्नम किया । लश्कर से लोग निकल कर आते रहे ।

मक़ातिल में लिखा है कि चालिस सवार और तीस प्यादे तीन दिन की प्यास और भूख में वासिले जहन्नुम किये । फिर क्या था लश्कर चारों तरफ़ से टूट पड़ा वह ज़ईफ़ मुजाहिद तलवारें खाने लगा । नैज़े पड़ने लगे । आवाज़ दी आक़ा गुलाम का आख़री सलाम, हुसैन चले हबीब के सिरहाने पहुँचे । मुस्लिम बिन औसजा भी साथ आये । सुनें आप मजलिस तमाम है । मुस्लिम ने कहा भाई हबीब कोई वसीयत है । बस एक मरतबा हुसैन की तरफ़ इशारा किया, मुस्लिम बस एक ही वसीयत है मरते मरते हुसैन का साथ न छोड़ना ये कह कर आंखें बन्द कर लीं । रूह जन्नत को परवाज़ कर गयी । हुसैन ने दोस्त का जनाज़ा उठाया । बीबी ज़ैनब ने सफ़े अज़ा बिछाई । हबीब का मातम होने लगा । अहलेबैत रोने लगे ।

●●●

बस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पाँचवी मजलिस

ख़ुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने मिल्लत !

सरवरे कायनात ख़त्मी मरतबत जनाब मोहम्मद मुस्तफ़ा सलल्लाहो अलैहे वाआले ही वसल्लम ने ईरशाद फ़रमाया है कि ऐ ! मुसलमानों ! मै तुममे दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ एक क़ुरआन और दूसरी मेरी इतरत । ये दोनों एक दूसरे से जुदा न होगें यहाँ तक कि मुझसे कौसर पर मिलें । और अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना । इस हदीस के ज़ैल में "क़ुरआन और अहलेबैत" के मौज़ू पर गुफ़्तगू आप के सामने जारी है । वह कल तक इस मन्ज़िल पर पहुँची थी कि मैं ने आपके सामने ख़ुलफ़ाए इस्लाम में से सब के ख़्यालात और तज़किरे क़ुरआने मजीद के मुताल्लिक़ पेश किये थे क़ुरआन किस तरीक़े से जमा हुआ ? और ये कौन सा क़ुरआन है आज हमारे पास । इसके भी मुख़्तसर हालात मैने पेश करने का शरफ़ हासिल किया और ये चाहा कि इससे कि आप शिया हों या सुन्नी हों, हनफ़ी हों या शाफ़ई हों, मालिकी हों या हम्बली हों , देवबन्दी हों या बरेलवी हों, मुस्लमान हों या वहाबी, (सलवात) मुझे इससे बहस नहीं है बहरहाल कुछ चीज़ें ऐसी है जो आलमे इस्लाम में है कि जिस का न मानने वाला मुसलमान ही नहीं रहता । जैसे अल्लाह की वहदानीयत, तौहीद, अगर तौहीद का क़ायल नहीं है तो फिर ये सवाल ही नही पैदा होता कि वह किस

फ़िरक़े में है इसलिये फ़िरक़ें हैं इसलाम के, इस्लाम में फिरक़ों में रहने के लिये भी मुसलमान होना शर्त है । और जो बुनियादी अक़ायद हैं इस्लाम के इसमें अल्लाह की तौहीद, रसूल अल्लाह की रिसालत है क़यामत पर ईमान है और इसमें कुरआने मजीद भी है । हम जब भी मुसलमानों के सामने उनकी भलाई के लिये और उनके फ़ायदे के लिये कुछ चीज़ें अहम तारीख़ से पेश करते हैं । और बतलाते हैं तो शायद ऐसा महसूस होता है लोगों को कि हम उनकी मुख़ालफ़त करते हैं हम चूँकि अहलेबैत ताहेरीन के पैरो हैं अहलेबैत के चाहने वाले हैं चूँकि हक़ है चाहने का वो तो हम अदा नहीं कर सकते मगर बहरहाल हम दुनियां में मोहिब्बे अहलेबैत कहलाते हैं । हम ही अहलेबैत के चाहने वाले कहलाते हैं । और हम पर यह इल्ज़ाम दिया जाता है और ये इल्ज़ाम हमारे लिये मुफ़ीद है । इल्ज़ाम से तो आदमी घबराता है हम इल्ज़ाम से घबराते नहीं है ख़ुश होते हैं कम से कम क़यामत के दिन रसूल अल्लाह से ये तो कह सकेंगे कि जो मेयार आपने बतलाया था अहलेबैत के चाहने का वह तो अदा नहीं किया मगर कम से कम बहत्तर फ़िरक़े इस बात के गवाह है कि चाहने वाले थे तो हम ही थे । (सलवात) इसलिये मैने इस मौज़ू का इन्तेख़ाब किया आप के सामने बेरादराने इस्लाम के सामने, ख़्वाह वो किसी फ़िरक़े से ताअल्लुक़ रखता हो इस बात की ज़मानत देते हुऐ कि मै अपनी तरफ़ से कोई ऐसा जुमला नहीं कहूँगा कि जिससे किसी को अज़ीयत पहुँचे या जिसका मक़सद अज़ीयत पहुँचाना हो हमारी तक़रीर का मतलब किसी को अज़ीयत पहुँचाना नहीं होता बल्कि लोगों को जहन्नम की अज़ीयत से बचाना होता है (सलवात) हम सिर्फ़ तारीख़ के शवाहिद के साथ तारीख़ की दलीलों के साथ और वो भी हमने अपनी किताब का कोई नाम आपके सामने नहीं लिया और हमने जो चीज़े आपके सामने पढ़ीं और इन्शा अल्लाह पढ़ेंगें वो अजल्ला उलेमाए अहले सुन्नत के और इसमें भी बहुत इख़्तेलाफ़ है बहुत सी रवायतें हैं जिनको इमाम अबू हनफ़ीया के मानने वाले मानते हैं । इमामे मालिक के मानने वाले नहीं मानते हैं बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जिन्हे इमामे मालिक के मानने वाले मानते हैं

इमामे शाफ़ी के मानने वाले नहीं मानते है । बहुत सी चीज़े ऐसी है जिन्हे इमामे शाफ़ी के मानने वाले मानते है । इमामें अहमद बिन हम्बल के मानने वाले नहीं मानते है और बहुत सी चीज़े ऐसी है जिनको इमामे अहमद हम्बल के मानने वाले मानते है । लेकिन वहाबी नहीं मानतें है ये तो खुली हुई हक़ीक़त होगी कि ये जो वहाबी फ़िरक़ा है वो हनफ़ीयों में नहीं है शाफ़ी मे नहीं है, मालिकीयों में नही है, बल्कि वो हम्बली फ़िरक़ा है मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब हम्बली था, और हम्बली मसलक़ से ताअल्लुक़ रखता था और इसने हम्बली मुसलमानों के समने जो चीज़े पेश की वह वहाबियत कहलाती है और आप देखें कि दो सौ साल हुऐ मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा है लेकिन लोग वहाबी कलाते है हालाँकि वहाब इसके बाप का नाम था । इसका नाम नहीं था । इसके बाप का नाम वहाब था । वो था मोहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब और तमाम तारीख़ें लिखती है कि बाप, बेटे के ख़िलाफ़ था और बाप बेटे को मना करता था कि ऐसी बातें न करो जिससे इन्तेशार हो, तफ़रक़ा पैदा हो, रसूल अल्लाह सल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की अहानत न करो कुरआन की अहानत न करो । बाप ने बेटे को घर से निकाल दिया था । लेकिन एक सलतनत व हुकूमत, सऊदी हुकूमत की सरपरस्ती इसे हासिल हो गयी, और सबसे बड़ा हाथ तो अंग्रेज़ बहादर का था जो हर जगह रहता है । इन्शा अल्लाह वक़्त आयेगा तो इसे भी आप के सामने अर्ज़ करूगाँ । इस वक़्त तो सिर्फ़ इतनी गुज़ारिश करना है कि एक तसव्वुरे इस्लाम में आ गया है और इस तसव्वुर की बुनियाद कुरआन क़रार पाई । यानी अल्लाह ने जो कुछ लिखा है हम इस पर अमल करते है और ये तमाम रस्म व रवाज, ये तमाम चीज़े, नज़र व नियाज़ और ये मजलिस व मातम, ये मीलाद शरीफ़, ये मिठाई बांटना, ये फूल चढ़ाना औलियाओं के मज़ार पर, और इस तरीक़े से शमा जलाना इन सब चीज़ों को हम ग़लत समझते है । ये सब चीज़े कुरआन में नहीं है, बस कुरआन, कुरआन तो वो मन्ज़िल आ गयी जो इन्शा अल्लाह बाद में पेश की जायेगी । किसी मजलिस में इस वक़्त तो सिर्फ ये अर्ज़ करना है कि जिस कुरआन का

इतना हुल्लड़ है उस पर कितना ईमान है ? (सलवात) मैंने कल आपके सामने मौलाए कायनात अली इब्ने अबी तालिब अलै० के चन्द टुकड़े पेश किये थे जिससे इस बात को मुसलमानों के सामने साबित किया था कि मौलाये कायनात जिनको मुसलमानों ने अपना चौथा ख़लीफ़ा तसलीम किया इसलिये अली अलै० उनसे इन्कार के बाद तो कोई गुन्जाईश ही नहीं । लोग कहते है शिया, शिया, शिया-सुन्नी की क्या बात है ? शिया पहला मानतें है और सुन्नी चौथा जो अली अलै० को पहला नहीं मानते, वो शिया नहीं और जो अली को चौथा नहीं मानते वो सुन्नी नहीं नतीजा ये निकला कि जो अली को न माने वो न शिया है न सुन्नी । ख़त्म हो गयी बात । (सलवात) लेहाज़ा मैंने मौलायेकायनात का कलाम पेश किया ताकि शिया भी उसे क़बूल कर सकें और अहले सुन्नत भी इसे क़बूल कर सकें कि हमारे चौथे ख़लीफ़ा का क़ौल है कि कुरआने मजीद का ज़ाहिर जो है वो खुशनुमा है, और हसीन है और इसका बातिन बहुत अमीक़ है ,और फिर मौलाये कायनात की ज़ात वो है कि जब भी कुरआन का मसला आया ख़्वाह दौरे ख़लीफ़ये अव्वल हो ख़्वाह दौरे ख़लीफ़ये दोऊम हो । ख़्वाह दौरे ख़लीफ़ाये सोऊम हो जब भी कुरआन की किसी आयत का मसला आता है तो अली इब्ने अबि तालिब के पास गये बग़ैर हल नही होता, और इसीलिये अजल्ला, उलेमाये अहले सुन्नत में से बहुत से जलीलुलक़द्र आलम है, सिब्ते इब्ने जौज़ी जिन्होने शरह नहजुल बलाग़ा का लिखने का शरफ़ हासिल किया है उनका एक बड़ा ही तारीख़ी और क़ीमती जुमला है कि इन्होने कहा है कि हमने तारीख़ में यह देखा है कि अली इब्ने अबु तालिब अलै० दीन के मामलात में, कुरआन की आयत के मामलात में, सीरते रसूल के मामलात में, हदीस के मामले में, नज़ूल के मामले में, कुरआन के मामले में पूरी उम्र किसी के मोहताज नहीं थे यानी अली को कभी किसी सहाबी से नहीं पूछना पड़ा कि ये आयत क्यों नाज़िल हुई थी ? कहाँ नाज़िल हुई थी ? कब नाज़िल हुई थी ? या कुरआन मजीद में इस आयत का क्या मतलब है । और इससे ज़्यादा क़ीमती जुमला ये लिखा है कि कोई भी असहाब व अज़वाज में ऐसा न था कि जो

अली अलै० का मोहताज न हो । मानी कुरआन में (सलवात) यानी कुरआन के सिलसिले में अली को कुछ पूछना न था, और कोई भी इल्म कुरआन पर हावी नहीं था जो अली अलै० से पूछे बग़ैर कुरआन समझ सकता इसका मतलब ये कि कुरआन बग़ैर अली के समझ में आ ही नहीं सकता । तो जिनके सामने नाज़िल हुआ जब उनकी समझ में न आया तो बग़ैर अली के तो आज कल के मदरसों में पढ़े हुऐ क्या समझेगें कुरआन बग़ैर अली के (सलवात) । और मैने आपसे अर्ज़ किया कि जितनी भी तफ़्सीरें कुरआने मजीद की । बेशक बहुत काम किया है कुरआने मजीद पर, सिर्फ़ शियों ने ही नहीं किताबें लिखीं है, न शियों ही ने तफ़्सीरें लिखीं बल्कि अजल्लाऐ , उलेमाये सुन्नत ने भी बड़ी तफ़्सीरें लिखी है । बड़ी मेहनत की है । बड़ी ज़ख़ीम तफ़्सीरें । हम हमेशा हक़ की बात करते है न किसी की तरफ़दारी करते है, और न किसी की मुख़ालेफ़त करते है लेकिन चाहे उलेमाये फ़ख़रूद्दीन राज़ी की तफ़्सीर उठा ले चाहे उलेमा जलालुद्दीन स्योती की तफ़्सीर उठा लें "दुर्रे मंशूर" और चाहें अपने दौर में आ जायें यानी अब्दुल माजिद दरियाबादी की तफ़्सीर उठा लें । कोई भी दुनियां की तफ़्सीर जो उर्दू में लिखी गयी हो । फ़ारसी में लिखी गयी हो । अरबी में लिखी गयी हो । अंग्रेज़ी में कुरआन पर नोट्स लिखे हों । एक तफ़्सीर आपको नहीं मिलेगी, जो इब्ने अब्बास के हवालों से ख़ाली हों । यानी हर मुफ़स्सिर जब किसी आयत की तफ़्सीर बयान करता है तो क़ाला इब्ने अब्बास ज़रूर कहता है, यारोया इब्ने अब्बास, इब्ने से रवायत है, इब्ने अब्बास ने कहा है, और इब्ने अब्बास की जितनी रवायतें है तवज्जोह चाहता हूँ वो सब मौलाये कायनात अली इब्ने अबि तालिब अलै० से है (सलवात) । यानी इब्ने अब्बास के बग़ैर कुरआन की तफ़्सीर कोई आलिम मुकम्मल कर ही नहीं सकता, और इब्ने अब्बास ने जब भी रवायत की है तो मौलाये कायनात से रवायत की है कि मुझसे अली ने इस आयत की ये तफ़्सीर बयान की है । मुझसे अली ने इस लफ़्ज़ के मुताल्लिक़ ये फ़रमाया है, मुझसे अली ये कहते थे, इस रवायत के मुताल्लिक़, एक सोंचने की बात है , फ़िक्र करने की बात है कि इब्ने अब्बास ने अली

से ही क्यों पूछ ? और सबने इब्ने अब्बास से ही क्यों पूछ ? ये एक बैकर है, तवज्जोह चाह रहा हूँ । जिससे कोई फ़िरक़ा कोई निकल नहीं जा सकता, बग़ैर इब्ने अब्बास के कोई तफ़्सीरि कुरआन नहीं लिख सकता और इब्ने अब्बास बग़ैर अली के तफ़्सी बयान नहीं कर सकते । अब तफ़्सीर बिरयि तो हराम है । वो जिसका जी जिस आयत का जो चाहे तफ़्सीर करे वो इन्शा अल्लाह तफ़्सील से किसी और मजलिस में ज़िक्र आयेगा । आज तो सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना मक़्सूद है कि जितने भी उलूम इस्लामी, जितने भी इस्लाम में इल्म है जिनके पढ़ने वाले जिनके लिखने वाले, जिनके चाहने वाले, आज उलेमाये इस्लाम कहते है । शिया उलेमा हों, अहले सुन्नत के उलेमा हों और उन उलेमा में चाहे हनफ़ी मसलक के उलेमा, चाहे मालकी मसलक के उलेमा, चाहे शाफ़ई मसलक के उलेमा हों, चाहे हम्बली मसलक के उलेमा हों और हुज़ूर हद ये है कि चाहे वहाबी मसलक के उलेमा हों । जब कुरआन की बात करेगें तो बग़ैर अहलेबैत के किसी का काम चल ही नहीं सकता और कुरआन की ही बात नहीं जितने उलूम है किन किन उलूम के माहिर है । भई ठीक है । मै भी आलिम हूँ मै भी आलिम हूँ । आज पहली बार कह रहा हूँ, लेकिन बी० ए० एल० एल० बी० हूँ । तवज्जोह चाहता हूँ । मै कुरआन का आलिम नहीं हूँ, मै हदीस का आलिम नहीं हूँ मै उलूम इस्लामी का आलिम नहीं हूँ । मैने बी० ए० एल० एल० बी० किया है । क़ानून जानता हूँ आप कान्सट्टीट्यूशन ऑफ़ इण्डिया की बात कीजिये । कम्पनी एक्ट पर बात कीजिये । कम्पनी लॉ पर बात कीजिये मुझसे, आप इण्डियन सिविल कोर्ट पर बात कीजिये, आप प्रोसीज़र पर बात कीजिये, आप क्रिमिनल लॉ पर बात कीजिये, क्रिमिनल प्रोसीजर पर बात कीजिये मैने पढ़ा है लेकिन इस्लामी ऊलूम के बारे में नहीं । इस्लामी ऊलूम जो कहलाते है जो सिर्फ़ व नहो है । यानी अरबी की ग्रामर जिसे कहते है । ये सिर्फ़ व नहो कहलाती है । अरबी की ग्रामर इल्म फ़ुक़ह यानी मसाएल, नमाज़ कैसे पढ़ें, रोज़ा कैसे रखें ? वाजबात क्या है ? मेहरमात क्या है ? उनके अहकाम क्या है ? ये फ़िक़ही मसाएल इल्म फ़िक़ह भी इस्लामी इल्म कहलाता है । इल्म मानी और बयान

यानी अहादीस के मानी क्या है ? और हदीस किस तरह बयान की जाती है । कुरआने मजीद की आयतों के मानी क्या है ।इल्मे बयान में भी आता है । और इल्म तफ़्सीर में भी आता है । कुरआने मजीद की तफ़्सीर क्या है । इल्म हदीस इसलाम का बहुत बड़ा इल्म है यानी कौन सी हदीस सही है कौन सी हदीस ग़लत है । कौन सी हदीस मुश्तरिक है कौन सी हदीस मुनफ़रद है कौन हदीस में शामिल है कौन सी हसन है कौन सी मसनून है । कौन सी वाज़ेह है एक पूरा इल्म है । इल्म हदीस जिसे कहते है और इसी के साथ साथ इल्म अदब भी इस्लाम का इलम है । इसलिये कि अदब के बग़ैर कुरआन भी नहीं समझ सकता । हदीस ही नहीं समझ सकता जब तक कि आदमी अरबी अदब से वाक़िफ़ न हो न कलामे पैग़म्बर समझ सकता है न कलामे खुदा समझ सकता है । (सलवात) इल्म मन्तिक़ भी एक इल्म है और भी इस्लामी इल्म है । और इस्लामी मन्तिक़ दूसरी फ़लसाफ़ी से जुदा है प्लैटो की भी फ़लासफ़ी है । दूसरे भी फ़िलासफ़र दुनियां में गुज़रे है । लेकिन इस्लाम का भी एक फ़लसफ़ा है । फ़लसफ़े इस्लाम भी पूरा एक इल्म है । जितने उलूम है यानी उन सबको किसी न किसी से, किसी न किसी से उसने उसको, उसने उससे सीखा है... आज चौदह सौ बरस में किसी भी मज़हब का किसी फ़िरक़े का आलिम उलूमें इस्लाम जब पढ़ने बैठता है तो उसे रसूल अल्लाह तक जाना ही पड़ता है बीच से नहीं पढ़ सकता । आज पन्द्रहवीं सदी शुरू हो गई यहाँ से भी आप इस्लाम की बात करेंगे तो रावियों का ज़िक्र आयेगा । इल्म रजाल का तज़किरा आयेगा । इल्में बयान और मानी का तज़किरा आयेगा । इल्मे नहों और सर्फ़ का तज़किरा आयेगा । और सबसे अहम लुग़त है जिसमें अलफ़ाज़ के मानी मोइयिन होते है कि अहले अरब उस लफ़्ज़ के क्या मानी लेते है । किस लफ़्ज़ के कितने मानी है और फिर कुरआन मजीद में अल्लाह ने उस लफ़्ज़ को किस मानी में सर्फ़ किया है । फिर कुरआने मजीद की एक आयत दूसरी आयत की शरह करती है और उस बाद सबसे अहम इल्म है वह इल्म कुरआन है यानी कुरआने मजीद में जो आयतें है उन में कुछ आयतें जो सामने की है कि जिन

का तरजुमा हमारे और आप के लिय काफ़ी है । कुछ आयतें ऐसी हैं जो मुताशेबाहात है । यानी जिन को हर मुसलमान, मुसलमान ही नहीं हर आलिम नहीं समझ सकता । और उस की तावील हर एक नहीं जानता और ये नहीं कि पुसत हिमती की वजह से कह रहा हूँ । खुद कुरआन में अल्लाह ने फ़रमाया है कि उस की तावील कौन जानता है । सिवाये अल्लाह के । उसके रसूल के । उनके जो रासखून फ़ी इल्म है । ये नहीं कहा जिन में इल्म है बल्कि ये कहा कि जो इल्म में है । (सलवात) रासखून फ़ी इल्म हमारे बुज़ुर्गों ने पहले के ज़ाकरीन बड़ी अच्छी मिसाल दी है । कटोरे में पानी और पानी में कटोरा । तवज्जो फ़रमाई आपने । अगर कटोरे में पानी हे तो इल्म है और पानी में कटोरा है तो रासखून फ़ी इल्म है । फ़र्क़ ये है कि कटोरे में है तो इतनी प्यास बुझायेगा जितना कटोरे में पानी है । लेकिन अगर कटोरा पानी में है तो लाखों आते जायेगें निकाल निकाल कर पिलाते जायेंगे । (सलवात)। अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । कि ये जितने उलूम है । मेरी बात पर हरगिज़ यक़ीन न कीजियेगा । मैं वकील हूँ । केस लड़ने में क्या से क्या कह जाऊँ । तवज्जो चाहता हूँ । मेरी हर बात को अपने मज़हब के आलिम से सुनियेगा । पूछ्यिेगा कि मैने ये बात सुनी है । सही है या ग़लत । नतीजा न बयान कीजियेगा । पहले बात पूछ्यिेगा । ये वाक़ेया सही है या ग़लत तवज्जो चाहता हूँ । जितने उलूम हैं उन सब का सिलसिला बढ़ते, बढ़ते दौरे रसूल और दौरे अली में पहुँता है । ज़रा तवज्जोह फ़रमाइयेगा । और कोई भी सिलसिला ऐसा नहीं है जो सिवाये अली के किसी से मिलता हो । बहुत बड़ी बात कह रहा हूँ । (सलवात)। उलूम के नामें मैने आप को सुना दिये जितनी रवायतें है जितनी तहक़ीक़ है जितनी दुनियाऐ इसलाम की किताबें है । जितनी तफ़सीरें है वह सब मुनतही होती है सिर्फ़ और सिर्फ़ उन शख़्सीयतों पर जो अली इब्ने अबी तालिब के शागिर्द थे । एक सवाल ये पैदा होता है कि ये सब अली से क्यों पूछते थे ? (सलवात)। क्यों पूछते थे ? ज़रा ग़ौर कीजिये । मैने जो बात कही वह आपने सरसरी तौर पर सुनी । सिलसिला मिलता है ज़मानाए रसूल और ज़मानए अली से । अगर वफ़ात रसूल

के बाद कहता तो बात की कोई अहमीयत नहीं थी । रसूल अल्लाह की ज़िन्दगी मे भी जिसने कोई इल्मी बात पूछी तो अली से पूछी । भई नबी की ज़िन्दगी में अली से रवायत क्यों चल रहीं है । वहाँ तो पहले उन शागिर्दों को नबी से पढ़ना चाहिये था । और नबी पढ़ाते और नबी के बाद कुछ और बाक़ी रह जाता । पढ़ते तो अली से पढ़ते । नबी का नाम क्यों नहीं आता ? अब तो या नबी से इसलिये नही पूछा कि उन को कोई पढ़ा लिखा ही नहीं समझता था । (सलवात)। अस्तग़फ़िरुल्लाह । ज़रा आप बतायें हालाँकि ऐसा नहीं है इल्म सीनए पैग़म्बर में था । ऐसा कहाँ मुमकिन है ज़रा आप तवज्जोह फ़रमाईयेगा । मै क्या कह रहा हूँ । लेकिन रवायत के सिलसिले को अली पर ख़त्म कर देना और नबी तक न पढ़ना क्या मानी रखता है । हम नहीं मानेगें । हर हर इल्म का तज़किरा नबी पर मुनतहिम हो जाना चाहिये । यानी स्टाप लाईन वह है हम से हमारे बाप ने कहा । उन से उन के बाप ने कहा । उन से उन के बाप ने कहा । उन से उन के बाप ने कहा । और उनसे उन्होनो ने कहा तो अली ने कहा । उस बाद एक जुमला और बढ़ाईये और अली ने कहा कि मुझसे नबी ने ये कहा । (सलवात)। देखिये मै क्या अर्ज़ कर रहा हूँ । थोड़ी देर आप को परेशान करूँगा यानी जो भी उलूम इसलाम मे है उन की इन्तेहा तो नबी पर होना चाहिये । ये नीचे से सिलसिला चलते चलते अली पर क्यों ठहरता है ये इब्ने अब्बास अली से पूछ रहे है । अरे जो जो रवायत बयान करता है । क़ाल अली, क़ाल अली, और क़ाल रसूल कहाँ गया ? मै क्या अर्ज़ कर रहा हूँ और जबकि नबी ज़िन्दह है । सिलसिला उलूम इस्लाम का नबी से क्यों नहीं मिलता ? ज़रा ग़ौर फ़रमाईयेगा । उन्होने कहा : साहब आपका क्या अक़ीदा है ? हमारा अक़ीदा अलहम्दो लिल्लाह ठीक है हमारा अक़ीदा ठीक है । क्या हुआ है ? अली पूछो, अली ने बताया तुम तो नबी ? अरे पूछा होगा । लिखा नहीं है कहीं किताब में । मै क्या अर्ज़ कर रहा हूँ । सिलसिले तो अली पर तमाम है विलायत का सिलसिला अली पर तमाम जितने औलिया है उन से पूछ लीजिये । आप हज़रत ख़्वाजा अजमेरी से पूछ लीजिये । हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया है उनसे पूछ

लीजिये बाबा शिकरगंज से पूछ लीजिये जितने विलायत के सिलसिले है कहाँ ख़त्म होते है । अली पर, नबी क्या हो गये ? (सलवात) नबी क्या हो गये ? इल्मे लुग़त का सिलसिला है अली पर तमाम, नबी क्या हो गये ? इल्मे सर्फ़े नहू का सिलसिला है अली पर तमाम, नबी क्या हो गये ? इल्मे तफ़्सीर का मसला है अली पर तमाम, नबी क्या हो गये ? परेशान ! मैंने तो कहा कि मै परेशान करूँगा, कहा , कलमा - अश्शहदोअन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह और जब आप आलिम बनने चले तो जाकर अली पर ठहर गये । आगे बढ़ते ही नहीं । आगे क्यों नहीं बढ़ते ? कहा हम क्या करें ! चौदह सौ बरस के बाद ये कही, पहले कहते तो बढ़ जाते । अब कहाँ से बढ़ें ? परेशान न होईये परेशान न होईये ये सब सिलसिला नबी से मिला है । अली का नाम इसलिये आता है कि नबी ने कहा मैं शहरे इल्म हूँ, और अली उसका दरवाज़ा है । (सलवात) ज़रा ग़ौर फ़रमाईये आप । मैं शहरे इल्म हूँ, अली दरवाज़ा है, तो दरवाज़े पर वही मिलेगा जो शहरे इल्म में होगा । तो अली से जो मिला वह माले नबी का है । तवज्जो चाह रहा हूँ । लेकिन कहा दरवाज़े से लेना सायल कहाँ आता पर है ? दरवाज़े पर, अल्लाह की राह में दे दो अल्लाह तुम्हारा भला करेगा । कुछ दे दो, बाबा हमें कुछ दे दो दरवाज़े तक है तो सायल है और अगर सायल कोई घर में घुसा, कौन है ! तवज्जोह चाह रहा हूँ । दरवाज़े पर रुक जाने वाले को सायल कहते है । घर में घुसने वाले को चोर कहते है । डाकू कहते है । (सलवात) ज़रा कोई सवाल ले कर किसी के घर जाये, और दरवाज़े से अन्दर दाख़िल हुऐ कैसे आ गये ? क्या बात है ? दस पैसे लेने आये है । चलो बाहर अगर पैसे लेना है तो दर मिलेगें । चोरी करना है तो अलग बात है । तवज्जोह फ़रमाईयेगा । नबी ने कहा मैं याहरे इल्म हूँ, अली दरवाज़ा है जिसे इल्म चाहिये दरवाज़े पर भीख मांगे दरवाज़े पर भीख मिलेगी । कहा जी हाँ दरवाज़े पर भीख मिलेगी । तो सवाल ये है कि आलिम कौन है ? आलिम कैसे समझें ? आलिम किसे कहें ? आलिम किसे माने ? जो दरे अली पर नज़र आये वह आलिम और जो अली के दरवाज़े पर न जाये उससे बड़ा जाहिल कौन ? (सलवात) अब मै

इस्लाम के तमाम फ़िरक़ों के मुस्लमानों से नहीं उलेमा से पूछता हूँ कि कुरआन कहाँ से लाये ? अगर दरवाज़े से लाये तो इल्मे नबी वाला कुरआन है । कहा हमने नबी से नहीं लिया । उन्होने कहा । फिर चोरी की, डाका डाला, (सलवात) कहाँ से लाये, तवज्जोह, कुरआन जी हाँ कुरआन मै बैठा कुरआन पढ़ रहा था । अरे बड़े मोमिन है ताहिर साहब । कुरआन पढ़ रहे है । कहाँ से लाये । मस्जिद से उठा लाया । हाँय ! हाँय !! ये क्या किया आपने ? अरे भई अल्लाह के घर से लाया, मस्जिद से लाया । आप भी ले आईये बहुत से रखे है । पढ़िये उन्होने कहा क्या बात कर रहे है नाजाएज़ है, हराम है, पूरा कुरआन ख़त्म कर दिया अब आप कह रहे है कि हराम है । तवज्जोह चाह रहा हूँ । क्यूँ बग़ैर माँगे लाये । वक़्फ़ था मस्जिद के लिये । लाये पढ़ा, सवाब कुछ न मिला । आपके घर से ले आये । उन्होने कहा । हराम है, नाजायज़ है क्योंकि आपने मुझसे इजाज़त नहीं ली । अरे अल्लाह की किताब है आप उसके कौन ? कहा जी किताब अल्लाह की है लिखा हमने है, किताब अल्लाह की है ख़रीदी हमने है, हमारा कुरआन अच्छ आप का । अरे भई अल्लाह का नहीं, हाँ, हाँ वही अल्लाह वाला हमारा । क्यों ? पचास, पचीस रूपये में ख़रीदा, तो इतने बड़े मालिक बन गये आप कि आप की इजाज़त बग़ैर अगर कुरआन पढ़ूँ तो सवाब न मिले । और नबी ने जिस को कुरआन का मुहाफ़िज़ बनाया । उसके बग़ैर कुरआन पढ़ोगे इतना अज़ाब होगा । क़यामत में (सलवात) मामूली बात नहीं है हुज़ूर, तवज्जोह चाहता हूँ कहाँ से लाये ? कहा मस्जिद से लाये किस की इजाज़त से लाये ? कहा किी की इजाज़त नहीं ली । हराम । तो अब क्या हुआ । सवाब नहीं मिलेगा । ख़ैर सवाब नमिला तो मेहनत गई ।उसने कहा । अज़ाब होगा । ये अजीब बात है । कुरआन पढ़ने में अज़ाब हुआ । कहा मालिक कुरअरान से इजाज़त नहीं ली । तो जिल्द का जो मालिक है । उसी बग़ैर इजाज़त कुरआन का पढ़ना हराम तो जो मानी का मालिक हो । अपनी तरफ़ से नहीं कह रहा हूँ । रसूल अल्लाह फ़रमां गये । या अली ! मेरी लोगों से तन्ज़ील पर हुई और तुम से लड़ाई तावील पर होगी । तिहत्तर फ़िरक़ों के आलिमो से पूछ कर

हमको बताना । तन्ज़ील किसे कहते हैं ? तावील किसे कहते है ? तन्ज़ील कहते हैं क़ुरआन के नाज़िल होने को तावील कहते है आयत के मानी बताने को । अब समझ लो जो भी अली से लड़ेगा तावील पर लड़ेगा । नबी कह गये हैं । और फ़रमाते है मुझ से तन्ज़ील पर हुई । ग़ौर करो । मैं क्या कह रहा हूँ । रात भी लेट कर सोंचना पहले लोग लड़े नबी से तन्ज़ीले क़ुरआन पर । आयत न आये । सूरह न आये । नबी क़त्ल हो जाये । नबी मार डाला जाये । ताकि क़ुरआन का सिलसिला रुक जाये । जब नाकाम हो गये और तन्ज़ील को न रोक सके और क़ुरआन ने एलान किया "अयौमो अकमलतो लकुम दीनकुम" तो घबरा गये । पूरा क़ुरआन आगया कहा हाँ पूरा क़ुरआन आ गया । तुम्हारा कोई बस न चला तो कहा हाँ हमारा कोई बस न चला कहा मुसलमान हो कर तावील पर लड़ोगे । तावील पर लड़ोगे । क्या फ़रमाया ? कहा फिर ग़ौर से सुनिये । या अली मुझ से लड़ाई तन्ज़ील पर हुई तुम से लड़ाई तावील पर होगी । अब जो अली से लड़ता नज़र आये तो न ख़िलाफ़त पर लड़ रहा है, न इमामत पर लड़ रहा है, न माल पर लड़ रहा है, न दौलत पर लड़ रहा है, मानीये क़ुरआन पर लड़ रहा है । (सलवात) क़ुरआन की आयतें पढ़ पढ़ कर मुसलमानों को मरऊब करते हैं । अल्लाह तआला जल शानहू फ़रमाते हैं किस से फ़रमाते हैं ? इतना ही बता दो । किस से फ़रमाते हैं ? तुमसे कब फ़रमाया अल्लाह तआला जल शानहू ने ने तुम ने कब अल्लाह तआला जल शानहू की आवाज़ सुनी ? तुम्हारे पास कब जिब्राईल आये ? कब अल्लाह तआला जल शानहू ने क़ुरआन तुम्हारे सीनों में रख कर ताला डाला ? (सलवात) किसने ताला डाला ? मैंने सुना हे कि लोगों से बयान किया है कि ख़ुदाया फ़रमाता है । अल्लाह तआला ये फ़रमाता है । कहाँ फ़रमाते हैं क़ुरआन में कौन से क़ुरआन में कहा जो नबी पर नाज़िल हुआ । जो क़ुरआन नबी पर नाज़िल हुआ । इसमें फ़रमाते हैं पढ़ रहे हो इजाज़त ली है किस से ? अली से, अरे छोड़िये हम उनको मानते ही नहीं ।तो आप को क़ुरआन की आयत पेश करने का हक़ भी नहीं, आप नहीं पेश कर सकते क़ुरआन की आयत । अली वाला ही क़ुरआन पढ़ सकता है । अली

वाला ही मानी बयान कर सकता है, अली वाला ही तफ़सीर लिख सकता है, कहा साहब ये कैसी बात करते हैं ? कोई भी कुरआन पढ़ सकता है । सबके लिये है अली की इजाज़त से सब के लिये है बग़ैर इजाज़त तो कहा हमने जितने कुरआन पढ़े सब बेकार गये । नहीं गये क्योंकि तुम्हारे बुजुर्गों ने एक ही अक़्लमन्दी की बैयत कर ली । (सलवात) आप ने मुलाहेज़ा फ़रमाया । कुरआन, कुरआन, कहाँ से लाये कुरआन ? अल्लाह तआला ये फ़रमाते हैं आप फ़रमाते हैं ? मानी बताईये । मैं पढ़ता हूँ...

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम अलम, क्या फ़रमाते हैं अल्लाह तआला। ये तो हमें नहीं मालूम ! फिर आप को क्या हक़ है कि कहते हैं कि कहते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं अमाँ शुरू के ही हरूफ़ के मानी नहीं मालूम तुमको । तुमको नहीं मालूम तो किस को मालूम थे । अरे भई !इतनी बड़ी तारीख़े इस्लाम है ढूढ़ँ कर लाओ, एक रवायत पढ़ दो । मजलिस मढ़ना छोढ़ दूगाँ । ख़लीफ़्ये अव्वल फ़रमाते है कि अलम से मुराद ये है , दोउम फ़रमाते हैं, सोउम फ़रमाते है । अरे सब की ज़िन्दगी जमा करने मे ही गुज़र गई ख़र्च करने की नौबत ही कहाँ आई (सलवात) ख़र्च करने की नौबत ही कहाँ आई ? "काफ", "ये", "ऐन", "साद", क्या मानी ? अरे ये तो हुरूफ़े मक़तात है ? मक़तात के क्या मानी है ? क्या अल्लाह ने कुछ इशारे किये है । किस से ? उम्मत ही से तो, समझे इशारे, अल्लाह का इशारा समझे, हमारी समझ में नहीं आया । तो फिर किया किससे इशारा, ये इशारा कर रहा हूँ मिम्बर पर बैठ कर, कहा : क्या चाहते है ? अरे भई क्या चाहते है ? क्या मक़सद है साहब, इशारा कर रहा हूँ, अरे भई किसको कर रहे हैं ? किसी की तो समझ में नहीं आ रहा है ! हाँ, अच्छ तो पहले आपने उनको बता दिया होगा । तवज्जो चाहता हूँ इशारा उस पर कामयाब होता है जिसको इल्म हो । कुरआन शुरू किया इशारों से, ये तुमको इशारा किया कि ले कर भाग न जाना । दरवाज़े पर आकर अली से पूछना । (सलवात) अलम, के मानी कहा वह मक़तात है । अगर वक़्त मिला तो दो चार आयतों के मानी भी

पूछूगाँ । किस का हवाला, इब्ने अब्बास का, इब्ने अब्बास को किसने बताया । कहा : अली ने, अली का नाम लेने की इजाज़त नही है । कुरआन की मन्ज़िल पर एक नुक़्ता भी आगे नहीं पढ़ सकता । बग़ैर अहलेबैत के कुरआन को कोई समझ ही नही सकता । बग़ैर अहलेबैत के और अली अव्वल अहलेबैत, इब्ने अब्बास आये कहा । या अली जी चाहता है आप से कुछ तफ़्सीर सुनें, कहा बैठ जाओ । आओ बैठ जाओ, और उसके बाद बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम की तफ़्सीर बयान करना शुरू की, तमाम अजल्ला उलेमाये अहलेसुन्नत लिखते हैं कि अली ने बिस्मिल्लाह की तफ़्सीर बयान कर रहे थे कि नमाज़े सुबह का वक़्त आगया । सारी रात गुज़र गई । रात ख़त्म हो गई । तफ़्सीर ख़त्म नहीं हुई तो इब्ने अब्बास ने कहा मौला अभी और बाक़ी है । कहा अभी अगर रात और तूलानी हो जाये तो अभी और तफ़्सीर बयान करूँगा । कहा या अली हम बिस्मिल्लाह ही नहीं समझ सकते । तवज्जोह तो कुरआन क्या समझेगें ? बड़े पते की बात कही इब्ने अब्बास ने , तो अली ने कहा ये दूसरा मामला हो गया । कल उम्मत कहेगी जो किताब समझ में नहीं आती वो किताब किस काम की । कहा समझना चाहते हो तो समझ लो जो कुछ सारे कुरआन में है वो अलहम्द में है । जो कुछ अलहम्द में है वह बिस्मिल्लाह में है और कुछ बिस्मिल्लाह मे है वो बाये बिस्मिल्लाह में है जो कुछ बाये बिस्मिल्लाह में है वो इस नुक़्ते में है जो बे के नीचे दिया जाता है । और मै वो नुक़्ता हूँ । आप समझे कुरआन को समझना हो तो मुझे देखो । मुझे देखते जाओ कुरआन समझते जाओ । (सलवात) देखते जाओ, हाँ ! मै वो नुक़्ता हूँ ! जो बे के नीचे दिया जाता है । बात आगयी है तो अर्ज़ करदूँ । हुज़ूर बे का ऐसा हरूफ़ है, हरूफ़े तहज्जी में अल्लिफ़ से लेकर ये तक बग़ैर नुक़्ते वाले हरूफ़ में जीम है ख़े है जीम के पेट में नुक़्ता ख़े के उपर नुक़्ता अगर आप नुक़्ता न रखे तो हे पढ़ लेगें और हे भी नहीं बड़ी हे लोग कहते है न छेटी हे बड़ी हे समझे आप और उन्होने कहा : अच्छ ! आगें बढ़ जाईये आगे बढ़ेगें सीन, शीन, शीन पर तीन नुक़्ते सीन ख़ाली यह भी अजीब बात है सीन तीन नुक़्ते से ख़ाली है तवज्जोह फ़रमायें

कहा सीन ख़ाली है तो अगर नुक़्ते न होंगे शीन पर तो सीन पढ़ ली जायेगी । साद ज़ाद ज़ाद पर अगर नुक़्ता न होगा साद पढ़ ली जायेगी । रे ज़े अगर ज़े पर नुक़्ता न होगा तो रे पढ़ ली जायेगी । इसी तरीक़े से दाल, ज़ाल अगर ज़ाल पर नुक़्ता न होगा तो ज़ाल पढ़ ली जायेगी । ऐन ग़ैन, ग़ैन पर नुक़्ता न होगा तो ऐन पढ़ ली जायेगी लेकिन अगर बे पर नुक़्ता न होगाा तो कुछ पढ़ ही नहीं सकते (सलवात) कुछ पढ़ ही नहीं सकते अल्लाह ने कुरआन भी बे से शुरू किया और बे को नुक़्ते से पहचनवाया और अली ने कहा कि बता दो मैं वो नुक़्ता हूँ तवज्जोह चाहता हूँ । अब ये तो यहाँ बम्बई है ख़त्तात हज़रात है बड़े बड़े ख़ुशनवीस है बड़े बड़े कातिब है लिखने का भी इल्म है ऐसे ही नहीं ख़ुशख़त लिख देते है बल्कि इल्म है ये अल्लिफ़ कैसे बनता है और सब नुक़्तों से ही बनता है अल्लिफ़ भी नुक़्तो से बनता और बे भी नुक़्तों से बनता है तवज्जोह चाह रहा हूँ । किसी कातिब से पूछीयेगा कि बे कितने नुक़्तों से बनता है तो कहेगें कि बे की कशिश ग्यारह नुक़्तो की है यानी जब ग्यारह नुक़्ते मिलेगें तो बें बनेगें । लेकिन पढ़ी नहीं जायेगी जब तक बारहवाँ नुक़्ता नीचे न होगा । (सलवात) ग़ौर फ़रमाया आप ने ग्यारह नुक़्तो से बे बनती है और नुक़्ता रख्वा है अली कहते है मैं वो नुक़्ता हूँ जो बे के नीचे दिया है । बता दिया कि जब तक सिलसिलाये इमामत मे न आओगे कुरआन तुम्हारी समझ में न आयेगा । फ़रमाते है वो नुक़्ता हूँ जो बे के नीचे दिया जाता है । इल्म को समेट दिया अली ने नुक़्तों के बग़ैर कोई पढ़ सकता है कहा नहीं साहब ! बग़ैर नुक़्तो के तो नहीं पढ़ सकते बग़ैर अली नुक़्ता कैसे हो गये .....? पूरा नुक़्ता एक में कैसे समायेगा । तो हुज़ूर एक नुक़्तें में कुरआन नहीं समा सकता आप का भेजा भी इतना बड़ा नहीं कि कुरआन समा जाये मुफ़स्सिर का भी भेजा इतना बड़ा नहीं कि पूरा कुरआन समाले । अगर नुक़्ते मे कुरआज सिमट नहीं सकता तो आप कुरआन पढ़ भी नहीं सकते आँख बन्द करके कुरआन पढ़िये आंख खोलने दीजिये कि कुरआन पढ़े क्यों ? देख नहीं सकते काहे से देखते पूरे मुहँ से देखते पूरे जिस्म से देखते आँख से पूरी आँख से पूरे बादाम से हाँ

नहीं पुतली से तवज्जो से सुनें कह रहा हूँ कि पूरा कुरआन पुतली से पढ़ते है नुक्ता ही तो है (सलवात) नुक़्ता ही है अरे भई नुक़्ता ही तो है नुक़्तें के बराबर तो है पुतली और खुदा न करे ये पुतली फैल जाये (सलवात) ज़रा आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कि नुक़्तों से हुरूफ़ बनते है और हरूफ़ से आयतें बनती है आयतों से सूरे बनती है और सूरों से कुरआन बनता है । अली ने कहा मुझे पहचानो कि जबतक अहलेबैत का दामन हाथ में नही होगा जब नुक़्ताये ब से राबता नहीं होगा । कुरआन समझ में न आयेगा । न कुरआन के मानी कोई समझ सकता है न कुरआन के कोई मतलब समझ सकता है । और अगर किसी को हक़ है मानीये कुरआन बयान करने का । नबी के बाद तो वह ज़ाते अली है और इसीलिये पैग़म्बर ने फ़रमाया या अली मरी लड़ाई तन्ज़ील पर हुई तुम्हारी लड़ाई तावील पर होगी । ये आज तक अली से लड़ाई चल रही है । ये कुरआन की तावील पर है । बस मै ख़त्म कर रहा हूँ गुफ़्तगू को । ये जितने कुरआन की आयतें पढ़ पढ़ कर अली के ख़िलाफ़ बोलते हैं उन्हें बोलने दीजिये । ये तावील पर अली से लड़ रहे है । और नबी कह चुके है मुझसे लोग तन्ज़ील पर लड़े तुम से तावील पर लड़ेगें जो तन्ज़ील पर लड़े वह भी काफ़िर और जो तावील पर लड़े वह भी काफ़िर । (सलवात) तहफ़्फ़ुज़े कुरआन, हिफ़ाज़ते कुरआन, इन्शाल्लाह मैने अपनी साईड को मुकम्मल कर दिया है । कि हमने तहरीफ़े कुरआन के क़ायल है न कुरआन में कमी के क़ायल है ।न हम कुरआने मजीद में ईमान में ज़र्रा बराबर भी शक रखते है । अब और क्या हाल है ।ये कल से शुरू करूगाँ । दो-दो, तीन-तीन बातें, तीन-तीन, चार-चार वाक़्यात, जितने भी हो सके । वह आप की ख़िदमत में अर्ज़ करूगाँ ताकि मुसलमान को अन्दाज़ा हो कि जिस कुरआन, कुरआन का प्रोपोगेन्डा करके आले मोहम्मद के ख़िलाफ़ गुफ़्तगू की जाती है उस कुरआन का क्या मक़ाम है बस ये अर्ज़ करूगाँ, कभी आप मेरी बात का यक़ीन न कीजियेगा । हमेशा अपने आलिमेदीन से ज़रूर पूछियेगा और अगर ग़ल्ती हो तो मेरी भी इस्लाह फ़रमा दीजियेगा । मै ज़िद्दी हटी नहीं हूँ । मै आपको समझाने नहीं आया हूँ । बम्बई में बहुत से आलिम रहते है इसलिये

समझने आया हूँ । (सलवात) ये मैंने क्यों कहा ? ये मैंने इसलिये कहा कि बम्बई में जो बातें सुनने में आती है वह कही भी सुनने में नही आती । मैं कुछ कह गया । पता नहीं बम्बई के लोगों का ज़ौक़े इल्मी ही सारी दुनियां से ज़्यादा है या कोई और वजह है ? ख़ैर ज़ौक़े इल्मी ज़्यादा हो या न हो । माल तो बहरहाल बम्बई में हिन्दुस्तान भर से ज़्यादा है । अच्छा ! तो चूकिं यहाँ की पब्लिक मालदार है । इसीलिये नई नई तफ़्सीरि सुनने में आती हैं । क्योंकि तावील जब भी बिगड़ी माल ने बिगाड़ी है । (सलवात) आज कहाँ कुरआन होता, अगर अहलेबैत ने तहफ़्फ़ुज़े कुरआन न किया होता । अगर करबला वालों ने अपनी कुरबानी न पेश की होती । अगर करबला वालों अज़मते कुरआन को बचाया न होता । तो मुसलमानों में आज न हाफ़िज़े कुरआन होते न क़ारीये कुरआन होते । न मानी कुरआन होते । न तरजुमाये कुरआन हाता । न ढूँढ़ने से अलफ़ाज़े कुरआन मिलते । ये सदक़ा है । हुसैन इब्ने अली का जिन्होने करबला के मैदान में अपना भरा घर लुटा दिया । और कहा कि कुरआन में बड़े सूरे भी है । मन्झले सूरे भी है । आओ देखो हम जिनको साथ लाये है उनमें ऐसे बुज़ुर्ग भी है जिनके हाथों में रेशा पड़ा हुआ है और ऐसे नौजवान भी है कि जिन के जनाज़े को देख कर लोग रोते है और एक ऐसा शीरख़्वार बच्चा भी है जिसके गले पर तीर का वाक़या सुन कर दूसरी क़ौमों के भी दिल दहल जाते है । हुसैन कुरआन अहलेबैत ले कर आये और सुब्हे आशूर से ले कर अस्रे आशूर तक एक एक कुरबानी पेश की । कल मैने हबीब इब्ने मज़ाहिर का तज़किरा आप के सामने अर्ज़ किया था । किस तरह ज़ईफ़ मुजाहिद ने अपनी जान दी उनमें एक सहाबी और है जिनका नाम जुहैरक़ैन, ये जुहैरक़ैन कौन थे । ये जुहैरक़ैन मुसलमान थे । मगर तरफ़दारे अहलेबैत न थे । जुहरेक़ैन जा रहे थे कूफ़े और शाम की तरफ़ रास्तें में ख़ैमा नस्ब होते थे । हुसैन के क़ाफ़िले के थोड़ी दूर पर उनका काफ़िला चल रहा था । जब एक मंन्ज़िल पर उन्होने अपना ख़ैमा नस्ब किये इधर नबी के नवासे के ख़ैमे नस्ब हुऐ और रात आयी तो किसी ने दरवाज़े पर आकर आवाज़ दी । "जुहरेक़ैन" । कहा : कौन है ? कहा मैं हुसैन

का फ़रस्तादा हूँ । कहा आपका नाम ? मुझे अली अकबर कहते हैं । अब जो अली अकबर ख़ैमे मे दाख़िल हुऐ तो जुहैर खड़े हो गये । शबीहे रसूल कहा बाबा ने आप को याद किया है ? ज़ोहरेक़ैन सोचंने लगे कि अन्दर से आवाज़ आई क्या सोच रहे हो ? कहा : कुछ नहीं मैं सोंच रहा हूँ कि नबीज़ादा मुझे क्यों बुला रहा है ? इमामे वक़्त हैं मत सोचों जाओ । जुहरेक़ैन गये । इमाम हुसैन ख़ैमे के सामने बैठे हुऐ हैं । जुहैर को आते देखकर खड़े होगये । शाने पर हाथ रखा । अलग जा कर कुछ कहा : बस एक हीबात कही जुहैर रोन लगे । क़दम छूये कहा : कहा अभी हाज़िर होता हूँ । पता नहीं इमाम ने क्या कहा शायद ये कहा हो जुहैर कहाँ अलग अलग जा रहे हो तुम्हारा नाम भी फ़र्दे शुहदा मे शामिल है । जुहरेक़ैन आये ज़ौजा से कहा : तू कूफ़ा चली जा और गुलाम को साथ ले जा । मैने सारी जायदाद, सारी ज़मीन सारा मकान मैने तुझे हिबा किया । कहा: तुम कहाँ जा रहे हो ? कहा : मैं ते ख़िदमते इमाम मे जा रहा हूँ । कहा : सुब्हानअल्लाह जुहैर अरे मैंने तुम को भेजा और और तुम हुसैन की गुलामी करके अली से सुरखुरू हो जाओ । और मैं बीबी ज़ैनब की कनीज़ी से महरूम । मैं भी चलूँगीं साथ ज़ौजा को लिया । गुलाम ने कहा : आक़ा मैने ज़िन्दगी भर ख़िदमत की मैं साथ न छोड़ूगाँ जुहरेक़ैन का गुलाम भी साथ आया अब ये काफ़लये हुसैन में शामिल हो गये । जब शबे आशूरा आयी और इमाम ने खुत्बा दिया और खुत्बा देने के बाद असहाब निकले । ख़ैमो से तो जुहैरेक़ैन अपने ख़ैमे मे आये कहा : ऐ मेरी ज़ौजा जा गुलाम के साथ कूफ़ा चली जा । कहा : क्यों ? कहा : चली जा कहा क्या बात है ? अच्छा छोड़ो ! मैं चली जाऊँगी पहले ये बताओ कि इमाम ने क्या बात कही कि तुम सब रोने लगे । कहा : इमाम ने चिराग़ गुल किया था । इमाम ने जाने की इजाज़त दे दी थी । कहा : वह हम ने सुना और जुहैर मुबार हो तुम्हारा नाम भी मैने सुना कि शुहदा मे है और कल तुम शहीद हो कर मेराज पाओगे ।मगर वह बात बताईये जिस पर तुम रोने लगे । और इतनी बलन्द आवाज़ में रोये कि हम बीबीयाँ न सुन पायें कि इमाम ने क्या कहा । कहा : वही तो कहने आया हूँ कि तुम गुलाम के साथ चली जाओ

। कहा : इमाम ने हुक्म दिया है कि अपनी अज़वाज़ को भेज दो । हुक्म नहीं दिया है । फ़रमाया इमाम ने कि मेरी शहादत के बाद खैमो आग लगा दी जायेगी । सैदानियों के सर से चादरें छीनी जायेगीं । अरे मेरे अहलेबैत असीर करके कूफ़े ले जाये जायेगें । लेहाज़ा तुम अपनी औरतों को अगर चाहो तो भेज दो । बस एक मरतबा क़दमों मे तड़पने लगी । सुब्हान अल्लाह तुम जा कर गला कटवाओ और शहादत हासिल करो । अरे बीबी ज़ैनब के बाजू में रसन बधें और मैं जा कर कूफ़े में जायदाद सम्भालूँ । ऐ जुहैर ये नहीं होगा । अरे हम भी शहज़ादियों का साथ नहीं छोड़ेगें । चुनान्चे ज़ौजए जुहैरेक़ैन इसी तरह असीर हो कर करबला से कूफ़ा पहुँची । जब जुहैर के आइज़्ज़ा. को मालूम हुआ कि जुहैरेक़ैन की ज़ौजा भी असीर हो कर आयीं है तो उन्होने कहा आप उतर आईये नाके से हम आपको इज्ज़त व एहतेराम से ले चलेगें । हमने इब्ने ज़ियाद से इजाज़त ले ली है । जुहैरेक़ैन की ज़ौजा ने कहा वाये हो तुम्हारी रिश्तेदारी पर अरे नबी की नवासी, अली की बेटी रसन बस्ता है । ये बीबी कभी साथ न छोड़ेगी । और असीरी की मुसीबतें बर्दाश्त करेगें।

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

छठी मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने मिल्लत !

सरवरे कायनात ख़त्मी मरत्तब जनाब मोहम्मद मुस्तफ़ा सलल्लाहो अलैहे वआले ही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि ऐ ! मुसलमानों ! मै तुममे दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ एक कुरआन और दूसरी अपनी इतरत । और ये दोनों एक दूसरे से जुदा न होगें यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें । और अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से वाबस्ता रहना इन दोनो की पैरवी करना । इस हदीस के ज़ैल में कुरआन और अहलेबैत के मौज़ू पर गुफ्तगू आप हज़रात के सामने जारी है । उस प्रोपोगन्डे के ख़िलाफ़ जिसमे आम तौर पर मुस्लमानों को बिरादराने इस्लाम को बाज़ उलेमाये इस्लाम ये समझाने की कोशिश करते है कि अहलेबैत के चाहने वालों का कोई राबता, कोई ताअल्लुक़ कुरआने मजीद से नहीं है । ये बात सही नही है । इसलिये कि कुरआन कोई समझ ही नहीं सकता बग़ैर अहलेबैत के और अहलेबैत और कुरआन का ताअल्लुक़ कोई जुदा नहीं कर सकता । इस ज़ैल में मैने आप की ख़िदमत में अजल्ला उलेमाए शिया के अक़्वाल तहरीफ़े कुरआन के सिलसिले में अर्ज़ किये । और चन्द दलाएल भी आप की ख़िदमत में पेश किये । इस से ये बात साबित हुई कि बेहम्दोलिल्लाह हमारा पूरा

फ़िरक़ा कुरआन को अल्लाह की किताब समझता है । कुरआन पर ईमान और ईमाने कामिल रखता है । और ये कुरआन में किसी तरह की कमी या ज़्यादती के या तहरीफ़ के क़ायल नहीं है । जबकि बाज उलेमाये इस्लाम हमें कुफ़्र का फ़तवा देते हैं । ये एक अजीबो ग़रीब बात है कि हमारे उलेमा ने कभी किसी फ़िरक़े को इजतेमाई तौर पर कुफ़्र का फ़तवा नहीं दिया । इसलिये कि हमारे अक़ायद में रसूल अल्लाह और अहलेबैत का फ़रमान मानना ज़रूरी है । हम से ये कहा गया है कि जो भी कलमा पढ़े *अशहदो अन्ना ला एलाहा इल्लाल्लाह* कहे जो भी *अशहदो अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* कहे । और जो भी ज़िब्ह खाये और अपने को मुसलमान कहे । तो तुम इसको मुसलमान समझना । तो हम किसी को काफ़िर नहीं कहते । न हमारे उलेमा ने कभी किसी को काफ़िर का फ़तवा दिया लेकिन हमको सब काफ़िर कहते हैं । और काफ़िर कह कर हमको अलेहदा भी कर देते हैं । और कहते हैं कि ये काफ़िर हैं । इसमे जो चीज़ आजकल बड़े ज़ोरो शोर से चल रही है कि ये तहरीफ़ कुरआन के क़ायल हैं । ये कुरआन को नज़ूले कुरआन नहीं समझते । तो मैनें आप के सामने पांच मजलिसों में मुसलसल ये अर्ज़ किया कि ..... आईम्मये मासूमीन ने, मौलाये कायनात ने, अली इब्ने अबू तालिब ने कुरआन की अज़मतो विक़ार और कुरआन का एहतेराम कितना फ़रमाया है आज से मैने ये वादा किया था और वादा पूरा करूँगा सिर्फ़ एक टुकड़ा रह गया है वह मै आपके सामने अर्ज़ करूँ हमारे यहाँ कुरआन के सिलसिले में इल्मे कुरआन खुद अपनी जगह एक मौज़ू है । आईम्मये मासूमीन से लेकिन एक मौज़ू आदाबे कुरआन भी है । और एक मौज़ू फ़ज़ाएले कुरआन भी है । । आदाबे कुरआन में ये हैं कि कुरआन को बग़ैर वज़ू नहीं छूना चाहिये इसलिये कि सूरे वाक़या में अल्लाह ने फ़रमाया है कि देखो इसको छूओ नहीं । जब तक कि पाक न हो । *ला मस्सहू इल्ला अलमोहतरून* कुरआन की आयत है सूरये वाक़ेया में इसको नहीं छू सकता जो पाक न हो । तो तहारत कुरआन को छूने के लिये ज़रूरी है । और तहारत भी दो क़िस्म की होती है । एक नजासत का दूर करना एक है वज़ू । दोनों तहारतों में फ़र्क़ है। जिस तरह से हम

ख़ाली तहारत से हम नमाज़ नहीं पढ़ सकते बग़ैर वज़ू के उसी तरीक़े से हम ख़ाली तहारत से कुरआन नहीं छू सकते बग़ैर वज़ू के । हुक्मे शदीद है कुरआन को बा वज़ू पढ़ना और बा वज़ू कुरआन को छूना और फ़ज़ायल में कुरआने मजीद में ये इरशाद फ़रमाया गया है कि देखो रोज़आना कुरआने मजीद की तिलावत ज़रूर करना । वह एक सूरे ही सही। लेकिन कोई दिन तुम्हारा कुरआन की तिलावत से नाग़ा न जाये । दूसरे ये इरशाद फ़रमाया है कि अपने बच्चों को भी इसकी तालीम देना ज़रूरी क़रार दिया गया है । और इसका जो सवाब मौलाये कायनात ने फ़रमाया है फ़रमाते हैं जो शख़्स भी किसी को कुरआन की तालीम देता है । कुरआन शरीफ़ पढ़ना सिखाता है । कुरआन किसी को पढ़ाता है तो एक आयत में दस दस हज़ार हजों का सवाब मिलता है । (सलवात) और दस हज़ार उमरों का सवाब यानी अगर कोई दस हज़ार उमरे करे और बजा लाये तो सवाब उसे मिलेगा जो एक कुरआन मजीद पढ़ाने में सवाब है और दस हज़ार बार कोई ज़कात दे तो उस का जो सवाब है वह कुरआन मजीद पढ़ाने का सवाब है । तो इतना सवाब बताया गया है कुरआन की तालीम का कुरआन पढ़ाने का और दूसरों को दर्से कुरआन देने का । आदाब कुरआन में बताया गया है कि कहीं कुरआन की तिलावत हो रही हो तो ख़ामोशी से सुनो इसलिये कि अल्लाह का कलाम है । अगर कोई आदमी तुम से बात कर रहा हो और तुम किसी और से बात करने लगो तो उसको कितना नागवार लगेगा । कुजाकि अल्लाह ने कुरआने मजीद में तुम से कलाम किया है । लेहाज़ा जब अल्लाह का कलाम सुनाया जा रहा हो तो निहायत अदब, क़ायदे और एहतेराम के साथ कुरआने मजीद को सुनना । यानी तहारत की भी शर्त लगाई और अदब व ऐहतेराम की भी शर्त लगाई । ये है हमारे यहाँ कुरआने मजीद का तसव्वुर । अब उस के बाद अपना वादा पूरा करता हूँ । ख़ोदा न ख्वास्ता मेरा मतलब किसी की मुख़ालफ़त नहीं है । लेकिन ये जो कुतुब इस्लामी में लिखा है जिसे मै आप के सामने पेश करने जा रहा हूँ हवाला दूगाँ और आप जा कर इसे पढ़ें नहीं पढ़ सकते तो जाकर अपने उलेमा से पूछिये । मक़सद किसी की बुराई

नहीं है । सिर्फ़ जब आप ये सुन चुके हैं कि तहरीफ़े क़ुरआन का क़ायल काफ़िर है । यानी हम सब काफ़िर है । तो हमने एलान कर दिया कि हम तहरीफ़े क़ुरआन के क़ायल नहीं हैं । हमारे उलेमा ने एलान कर दिया है । लेकिन ये फ़तवा देने वाले अदावते अहले शिया, और तक़रीर करने वाले ये भी नहीं सोचते कि जो फ़तवा दे रहे हैं कि वह कहाँ कहाँ पहुँच रहा है । (सलवात) तो अज़ाब व सवाब बगरदने रावी हमारा फ़तवा नहीं है ।फ़तवा मैंने आप को सुना दिया । अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । किताब "इतक़ान फ़ी उलूम अल क़ुरआन" में अल्लामा जलालुद्दीन स्योती की दूसरी जिल्द के सफ़ा २५ पर तहरीर फ़रमाते हैं कि जनाब अब्दुल्लाह इब्ने उमर यानी ख़लीफ़ा दोउम के फ़रज़न्द कहते हैं कि ज़हब मिनहू क़ुरआना कसीर यानी क़ुरआन का बड़ा हिस्सा क़ुरआन से निकाल दिया गया (सलवात) ये जनाब अब्दुल्लाह इब्ने उमर तीसरे ख़लीफ़ा के बाद तक हयात थे ।मावियां के दौर तक हयात थे । तो ये फ़रमाते थे कि बहुत बड़ा हिस्सा क़ुरआने मजीद का क़ुरआने मजीद से निकाल दिया गया है । यानी क़ुरआन मजीद में जो दूरूद की आयत है *"इन्नल्लाहा वा मलाएकते यसल्लूना अलान्नबी या अय्योहल लज़ीना आमेनू सल्लू अल्लाहे व सल्लेमू तसलीमा"* उम्मुल मोमनीन ने फ़रमाया कि इस आयत के आख़िर मे *"व अलीयुल लज़ीना यसल्लूना अल सफ़ूफ़ आला अव्वला"* यानी रसूल के साथ उन पर भी भेजो जो रसूल के साथ जमाअत में पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ते थे और ये कम कर दिया गया है । और जब जनाब उम्मुल मोमनीन से किसी ने पूछा कि ये सब कब से कम हो गया । आयत से तो फ़रमाया कि तीसरे ख़लीफ़ा ने जो जमा क़ुरआन किया उस में जहाँ सैकड़ों आयतो की तहरीफ़ की वहाँ इसकी भी तहरीफ़ कर दी (सलवात) तवज्जो फ़रमाई । इन्शाल्लाह गुफ़्तगू बाद में होगी पहले आप सुन लें । क़ुरआन लिखने का हुक्म दिया । उम्मुल मोमनीन ने अपने ग़ुलाम को कहा कि तुम क़ुरआन लिखो और जब तुम हाफ़िज़ आला अलस्सलवात पर पहुँचना तो मुझसे पूछ लेना ग़ुलाम ने कहा मैंनें इस आयत तक क़ुरआन लिख दिया है तो उम्मुल मोमनीन आयेशा ने कहा : सलवात अलवस्ता के बाद सलवात

अलअस्र भी लिख दो । इसलिये कि पैग़म्बर से जिसने ये आयत इस तरह से सुनी है और ये लफ़्ज़ तीसरे ख़लीफ़ा ने कुरआन से निकलवा दिया है । (सहीह मुस्लिम जिल्द १ सफ़ा २२६) लेहाज़ा इसका कामिल होना ज़रूरी है । यानी इसका मतलब ये है कि कुरआन के सिलसिले में पूरी तरह से इख़्तेलाफ़ और एक मिसाल आप के सामने सुनाता हूँ । इसके बाद एक-एक दो-दो मिसालें और गुफ़्तगू आगे बढ़ाता हूँ (सलवात) ख़लीफ़ा दोएम फरमाते हैं ख़लीफ़ा दोएम ये कहा करते थे कि सुरए अलहम्द जो यूँ नाज़िल हुआ। ग़ैर अलमग़ज़ूब अलैहिम व ग़ैर अलज़ालीन सही बुख़ारी पारा १८ सफ़ा ४३ । तवज्जो फ़रमाई आपने यानी वलज़्ज़ालीन नहीं बल्कि वग़ैरूलज़ालीन और मौलाये कायनात ग़ैरूलमग़ज़ूबे अलैहिम वलज़्ज़ालीन पढ़ा करते थे । हमारे पास आयतों से साबित है । जो है वो पढ़ा । तो आप ये फ़िक्र फ़रमायें कि कुरआन में वह क्यों नहीं है जो वह पढ़ा करते थे तो दो बातों से बात ख़ाली नहीं है कि माअज़अल्लाह वह ग़लत पढ़ते थे या मआज़अल्लाह ग़लत जमा किया गया मआज़अल्लाह मैनें कह दिया है मुझ पर क्या इलज़ाम है । (सलवात) आप अब मुलाहेज़ा फ़रमायें । पहली बात जो मैंने आपके सामने पेश की । वह पहली बात ये है कि अब्दुल्लाह इब्ने उमर ने फ़रमाया कि ज़हबुल कुरआने कसीर यानी कुरआन मजीद से कसीर तादाद में कुरआन निकाल दिया गया । कुरआन हटा दिया गया । मैं तफ़सील सारी बयान कर चुका हूँ । तफ़सील जमा कुरआन की आप के ज़ेहन में होगी और ये अजीबो ग़रीब बात है कि जितनी रवायतें तहरीफ़े कुरआन की मिलती गयीं उनका इलज़ाम न कातिबीने वही पर है जिसमें माविया भी था । याद है आप को वह मजलिस, और न ज़ैद इब्ने साबित से ख़लीफ़ये अव्वल ने जमा कराया इस कुरआन के लिये है । जिसमे तहरीफ़ की गयी । यानी न कातिबीने वही ने तहरीफ़ की और न ज़ैद इब्ने साबित ने तहरीफ़ की । ये सारी तहरीफ़ की रवायतें इसी कुरआन के मुताअल्लिक़ हैं जो आज आप के घर में है और ये बात ज़ाहिर है कि तीसरी ख़िलाफ़त के बाद चौथी ख़िलाफ़त मौलाये कायनात अली इब्ने अबी तालिब तो अली चूकिं हमारे पहले इमाम भी (सलवात) और इससे बढ़ कर एक

हवाला सुनाऊगाँ । एक आवाज बलन्द (सलवात) । "अज़ालतुल खुफ़ा" जिल्द दो सफ़ा २४१ में मोहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि उम्मुल मोमनीन आयेशा ने फ़रमाया कि उसमान ने कुरआन में इतनी तहरीफ़ की कि तहरीफ़ के सबब क़त्ल हुए । अब मालिके अशतर को कुछ न कहियेगा । (सलवात) चार हवाले मैने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया । तमाम बिरादराने इस्लामी से दस्त अदब जोड़ कर ये गुज़ारिश करूगाँ कि वो इस मसले पर ग़ौर करें कि आज उलेमा से पूछें कि ये कुरआन मोहरिफ़ है कि नहीं यानी कुरआने मजीद में तहरीफ़ हुई है कि नहीं । अपने आलिमे दीन से पूछें, जो पेश नमाज़ है उनसे पूछें कि ये कुरआन जो हमारे पास है । मोहरिफ़ है, तहरीफ़ शुदा है, इसमे तहरीफ़ हुई है । और जवाब पहले सुन लें । अगर वो कहें कि तहरीफ़ हुई है तो सीधा सा सवाल पूछ लिजियेगा कि किसने की ? अह्लेबैत ने की या अह्लेबैत के मानने वालों ने की । और एक रवायत, जहाँ किसी भी अली वाले ने कुरआने मजीद में कोई तहरीफ़ की हो, पूछ कर ला दीजियेगा । मै हवाले के और सात हवाले में आपको दूगाँ कि जिसमें अजल्ला उलेमाये अहले सुन्नत ने इक़रार किया है कि तीसरे दौर में जो कुरआन जमा किया गया इसमे तहरीफ़ हुई । इसमें ज़हबुल कुरआने कसीर की रवायत अब्दुल्लाह इब्ने उमर की मैने आपको सुनाई । तफ़सीर दुर मन्शूर स्योती जिल्द ५ सफ़ा १७९ में है कि हज़रत अली इब्ने काब सहाबी फ़रमाते हैं सूरे अहज़ाब सूरे बक़र: के बराबर था और अब कुल तिहत्तर आयते बाक़ी रह गयीं हैं । किताबुल इत्तेक़ान जिल्द २, सफ़ा २५ पर है कि बीबी आयेशा ने फ़रमाया कि सूरये अहज़ाब नबी के ज़माने में सूरये बक़र: के बराबर था इसमें २०० आयात थीं । अब घटकर इतना सा रह गया है । वैसे हमारे लिये बड़ी खुशी की बात है कि आयए ततहीर भी उसी सूरे मे है (सलवात) इसी सूरे मे है आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया इसी की बात मेरा दिल परेशान हो गया कि इस कुरआन को मानें या न माने खुदा कहता है कि हम इसके मुहाफ़िज़ हैं । उम्मत कहती है हुआ करे अल्लाह इसका मुहाफ़िज़ । कम करने वालों ने कमी कर दी है कुरआन में, सूरों से आयतें निकाल दी और बड़ी तादाद में कुरआन

मजीद से आयतें निकालीं । ज़हबुल कुरआने कसीर, कसीर जो है आपके पास वो क़लील है तवज्जो चाह रहा हूँ । कसीर का मतलब ही है कि जब बड़ा हिस्सा निकाल दिया गया । कुरआन से तो छोटा हिस्सा रह गया । इतना हिस्सा रहने पर ३१३ आयतें मदहे अहलेबैत में हैं । इतना रहने पर, आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । तो गुज़ारिश सिर्फ़ इतनी है कि तहरीफ़ कुरआन यानी कुरआने मजीद के सिलसिले में ये बयानात किस बात की शहादत देते हैं ? ये आप ग़ौर करें । ये अली का मसला नहीं है कि आप समझें कि हम अली की मोहब्बत में कह रहे हैं । ये जनाब कुरआन का मसला है अगर कुरआन ही पर ईमान न होगा तो न अल्लाह पर ईमान रहेगा न रसूल पर रहेगा । और ये सारी तहरीफ़ तीसरी ख़िलाफ़त तक बताई जाती है । इसके बाद से तहरीफ़ की कोई रवायत किसी किताब से फ़राहम नहीं होती कि आगे बढ़ कर किसी ने तहरीफ़ कर दी । कुरआन पर तीर चलाने की है, जलाने की है तहरीफ़ की कोई रवायत नहीं है । इसका मतलब ये है कि जो कुछ बदला गया है इन रवायतों के तहत बक़ायदा असहाबे कराम वो है तहरीफ़ें कुरआन, लेहाज़ा इस्लाम के तिहत्तर फ़िरक़ों में सिवाये असना अशरी फ़िरक़े के जो तहरीफ़ के क़ायल नहीं है, किसी के नज़दीक कुरआन मुकम्मल नहीं है लेहाज़ा हम चूकिं मुकम्मल समझते हैं इसलिये हम इस कुरआन से दलील क़ायम कर सकते हैं । और आप जब कोई दलील हमारे ख़िलाफ़ लायेगें तो हम कहेगें मुमकिन है इसमे हो । (सलवात) और यहाँ एक बहुत अहम वाक़ेया लिखा है । आप बराबर सुनते हैं कि जनाब अबूज़र ग़फ़्फ़ारी मस्जिदे नबवी में कुरआने मजीद की चन्द आयत की तिलावत फ़रमाते थे जिसकी शिकायत ख़लीफ़्ये सोउम से की गयी । अबुज़र जो सहाबिये रसूल हैं असहाब का मामला है, हम आप तो बोल नहीं सकते । ख़ाली किताब में पढ़ सकते हैं बयान कर सकते हैं सुन सकते हैं और रात भर जाग सकते हैं । (सलवात) इससे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते । हमारे आपके बस में क्या है चौदह सौ बरस के बाद के हम मुसलमान क्या बोल सकते हैं साहब इस मामले में लेकिन मसला ये है कि चन्द आयात.... जो दौलत के जमा करने के

ख़िलाफ़ में और सरमाया करने के ख़िलाफ़ में । इनको बैठ कर ज़ोर ज़ोर मस्जिद में पढ़ा करते थे जिसकी शिकायत ख़लीफ़्ये सोउम से की गयी । ये उमर अबूनसर ने लिखा है कि जा कर लोगों ने कहा कि अबूज़र ये आयतें हर रोज़ पढ़ रहे हैं तो अबूज़र को ख़लीफ़्ये वक्त ने बुलवाया और कहा : सहाबीये रसूल आप ये आयतें क्यों पढ़ते है ? तो कहा : क्या आयते कुरआन में नहीं हैं ! कहा : हैं । कहा : तो फिर आप हमें कुरआन पढ़ने से रोकते हैं ? तवज्जोह फ़रमायें । मेरीबात पर इन्होने कहा : हम कुरआन पढ़ने से नहीं रोकते हैं ?कुरआन तो बहुत हैं । कुछ और पढ़िये इन्होने कहा कुछ और तो जब पढ़ें जब ये आयात कुरआन में नहों । कहा :मगर यही आयात क्यों पढ़ते हैं ? कहा : आप हमें इन आयतों के पढ़ने से रोकते क्यों है ? बस इतना ही वाक़ेया है और इसके बाद अबूज़र को मारा पीटा गया । ख़ैर वो सब बातें छोड़िये, इख़्तेलाफ़ बढ़ेगा । क्योंकि ये मुसलमानों के सामने बयान करते हुऐ अच्छा नहीं लगता कि सहाबी, सहाबी को मारे । (सलवात) इसलिये मै इसकी तफ़्सीलात में नही जाऊगाँ हालाँकि पूरार वाक़ेया उमर अबू नसर ने किताब अबूज़रे ग़फ़्फ़ारी मे लिखा है लेकिन वो मेरा मौज़ू नहीं है । मौज़ू तो कुरआन हैं । अब जो मैं ने तहरीफ की रवायतें पढ़ी और ख़लीफ़्ये दोउम के बेटे को ये कहते सुना के कसीर कुरआन निकाल दिया गया है । कुरआन से और ख़लीफ़्ये अव्वल व दोउम से ये कहते सुना कि हम ग़ैरिलमग़ज़ूबे अलैहिम व ग़ैरिज़्ज़ाल्लीन पढ़ते थे और कुरआन में हमने वलज़्ज़्वालीन लिखा देखा । तवज्जोह फ़रमाईयेगा । तो हमारे कान खड़े हुऐ के कुछ हो गया हो या न हो गया हो । कुछ करने की कोशिश ज़रूर की गयी है । (सलवात) और वोह परेशानी जो हमारे ज़ेहन में थी कि ज़ैद बिन साबित के पूरे कुरआन लिखने के बाद, ख़लीफ़्ये सोउम ने फिर से कुरआन क्यों जमा कराया । एक ज़ेहनी परेशानी और कोफ़्त थी कि भई जब ख़लीफ़्ये अव्वल की फ़रमाईश दोउम की फ़रमाईश पर और ख़लीफ़्ये अव्वल के हुक्म पर ज़ैद इब्ने साबित ने चमड़े पर, हड्डियों पर, पत्ते पर काग़ज़ पर लिख दिया । कुरआन और वोह कुरआन, मौज़ूद था और

इसकी नक़ूल दूर दूर तक भेजवा दिये गये थे तो फिर से जमा करने की क्या ज़रूरत थी ? तवज्जेह फ़रमाई आपने मेरी बात । क्यों जमा किया गया अगर जमा भी किया गया था तो इस कुरआन को मिटाया क्यों गया ? सिरके से धोया क्यों गया ? काग़ज़ और पत्ते जलाये क्यों गये ? हड्डियों और चमड़ों पर से मिटाया क्यों गया ? तो अब क़ानूने शहादत ये कहता है कि दोनो कुरआन एक थे तो दोनो चलते । हर्ज क्या था । और अगर फ़र्क़ नहीं किया गया था, तो पिछ्ले को मिटाया क्यों गया ? और पिछ्ले को धोया क्यों गया ? उन्होने कहा : साहब ये बात तो समझ मे नहीं आती कि तहरीफ़ क्यों की ..... ! तो ये रवायात ? ज़रा ग़ौर फ़रमायें । अब जो मैने अबूज़र का वाक़ेया पढ़ा तो बात दिल में गड़ गयी कि कुछ गड़बड़ हो रही होगी कुरआन में । कुछ उलट फेर किया जा रहा होगा कुछ आयतें घटाई जा रही होगीं । तो अबूज़र ने जिन आयतों के लिये ख़तरा था कि कहीं ये कुरआन से न निकाल दी जायें । मस्जिद में ज़ोर ज़ोर से याद दिलायें कि ये कुरआन है। तवज्जेह । तो सबने कहा : हाँ ! ये कुरआन है । अच्छा पढ़ रहे थे । ये तो आज भी उलेमा करते हैं कि सूरये अलहम्द के बाद कोई सूरा कौसर पढ़ता है, कोई सूरे इन्ना अन्ज़लना पढ़ता है । मगर एक ही सूरा और एक ही आयत कोई बार बार पढ़े तो इसमे बिगड़ने की क्या बात है ? ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । और दरबार मे बुला कर सवाल करने की क्या ज़रूरत है कि आप यही आयतें क्यों पढ़ते हैं ! कहा : बस मै जा रहा हूँ । ये जुम्ला बता रहा है कि तुम आयतें निकाल रहे हो । ये न निकलवा देना (सलवात) अब मेरी मन्ज़िल आगई... उमर अबू नसर लिखता है कि जब जनाब अबूज़र ग़फ़्फ़ारी ने ये पूछा कि आख़िर ये आयतें पढ़ने के लिये ममानीयत क्यों है तो जवाब सुनियेगा ? फ़रमाया । उन आयतों से हमारे ख़िलाफ़ उम्मत में ग़लत असर पड़ रहा है । अब यहाँ मैं परेशान हो गया अगर कोई इलज़ाम लगाता मैं गला पकड़ लेता । लेकिन खुद फ़रमा रहे हैं कि उन आयतों से हमारे ख़िलाफ़ असर पैदा हो रहे हैं ये तो दलील है कि वह वक़्त आ गया कि मुसलमान कुरआन के ख़िलाफ़ अमल करने लगा । और सिर्फ़ यही नहीं कि अमल करने लगा उन आयतों

को पढ़ने से रोकने लगा । निकल जाती आयतें । अबूज़र ने कहा : हम पढ़े जायेगे और यही पढ़े जायेगें । कहा आप को ये नहीं पढ़ने देगें । कहा हम यही पढ़ेगें । भई ये असहाब में ज़िद्दम ज़िद्दा अच्छी नहीं लगती । उन की ज़िद कि हम आयतें पढ़ना छोड़ेंगे नहीं और उनकी ज़िद कि पढ़ने देगें नहीं । तवज्जोह चाहता हूँ । उन्होनें कहा : इनको निकाल दो मदीने से । अबूज़र खुशी खुशी चले गये मदीने से । मगर आयत पढ़ना नहीं छोड़ी । बता दिया घर छोड़ सकते है मगर कुरआन नहीं छोड़ सकते । मैं कुछ कह गया । (सलवात)

अब वह तीसरी बात आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । जिसमे ये इरशाद हुआ कि सबब क़त्ल तहरीफ़े कुरआन क़रार दिया । इतना कुरआन बदला कि उम्मत ने ख़फ़ा हो कर क़त्ल कर दिया । ये पुरानी बातें है । हमें कहाँ पड़ना है इख़्तेलाफ़ में , बहुत मन्ज़िलें है लेकिन बयान नहीं करूगाँ । मै तो मौज़ू के दायरे में रहना चाहता हूँ । अब आप आज ये फ़ैसला करें कि सबब क़त्ल तहरीफ़े कुरआन था तो क़त्ल साबित है लेकिन जब सबब क़त्ले तहरीफ़े कुरआन थ तो उसका मतलब ये कि उम्मत ने या उम्मत के लोगों ने इस बुनियाद पर क़त्ल किया कि कुरआन बदला । तवज्जोह चाह रहा हूँ । और अहलेबैत को इस सज़ा मे क़त्ल कर दिया कि कुरआन बदलने नहीं देते (सलवात) कुरआन बदलने नहीं देते ये शहादतें एक मामूली इन्सान की अक़्ले सलीम के लिये चैलेन्ज है कि जिस से मुसलमान को ये तसव्वुर पैदा हो जाये कि तारीख़ से ये शहादत मौज़ूद है कि ये लोग वह थे जो कुरआन बदलना चाहते थे, और अहलेबैत वह थे जो कुरआन को बदलने नहीं देते थे । क्यों ? आले मोहम्मद से दुश्मनी हुई इस का सबब भी मालूम हो गया कि नबी ने कहा था कि उन से जगं तावील पर होगी । नबी तावील कह रहे है । यहाँ मालूम हुआ कि तहरीफ़ पर ही हो रही है । (सलवात) मुझे आप की ख़िदमत में ये अर्ज़ करना है कि ये हवाले बताते है कि उस वक़्त के माहौल में कुरआन मजीद की रद्दो बदल की सई पहल की जा रही थी । अब आप मुझसे सवाल करेंगे कि मुझे मालूम है कि जब आप ही अपनी ज़बान से पढ़ रहे है कि उन्होनें ये कहा, उन्होनों ने ये कहा,

और उन्होनों ने ये कहा उसी आयत में वह था और उस आयत में ये था । और उन्होने ये कहा सफ़े अव्वल के नमाज़ियों पर भी (सलवात) उन्होने कहा ग़ैरिलमग़ज़ूबे अलैहिम व ग़ैरिज़्ज़ालीन भी था। अब जो नहीं है आप तो मानते हैं रवायत को कि नहीं । कहा हम मानते हैं और न हम पर मानना वाजिब है । आप बतायें मानेगें कि नहीं, बोलिये । उन्होने कहा : उम्मुल मोमनीन फ़रमा रही है कैसे नहीं मानेगें मगर दूसरी शक्ल ये है कि जिन के लिये फ़र्मा रही है । उनको भी मानते हैं तीसरा मसला ये है कि ख़ुदा बीच मे बैठा है । लहू लहाफ़ेज़ून, हम इसकी हिफ़ाज़त करने वाले है, तो ये कैसे बचा कुरआन । अब हम क्या पढ़ें ? हम पूछ रहे हैं , उलमाऐ अहले सुन्नत से पूछ रहे हैं कि सूरह अलहम्द में ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम वलज़्ज़ालीन या ग़ैरिलमग़ज़ूबे अलैहिम व ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़ें । क्या पढ़ें ? जवाब ला कर दीजिये । बहुत हम को काफ़िर बना कर गये है । बड़े बड़े फ़लसफ़ी, सूरे अलहम्द में क्या पढ़ें ? पूछ कर आईये और ये पूछिये आप क्या पढ़ते हैं ? कहा हम तो ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम वलज़्ज़ालीन पढ़ते हैं । क्यों नहीं ख़लीफ़ा दोएम की पैरवी करते हैं । वह ग़ैरिलमग़ज़ूबे अलैहिम व ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़ते थे । आप क्या पढ़ते है । हम भी वलज़्ज़ालीन क्यों पढ़ते हैं । रसूल अल्लाह ने वलज़्ज़ालीन पढ़ा । अली ने वलज़्ज़ालीन पढ़ा । हुसैन ने वलज़्ज़ालीन पढ़ा तो जब हमारे इमाम वलज़्ज़ालीन पढ़ें तो वही कुरआन मे है । आप बताईये आप बताईये । कहा ठीक है वह इस से पढ़ते थे औरों ने तो नहीं पढ़ा । अभी मेरी मन्ज़िल बहुत आगे है । तो आप हाथ क्यों बांधते हैं । हाथ क्यों बाँधते है नमाज़ में । उन्होने कहा : जब ख़लीफ़ा दोउम के ज़माने में ईरानी गिरफ़्तार हो कर आये दरबार में तो वह सब हाथ बाँधे हुऐ थे तो ख़लीफ़ा ने कहा : तुम सब हाथ क्यों बाँधे हो । कहा : हमारा दस्तूर है कि जब हम किसी हाकिम या बुज़ुर्ग के पास जाते है तो आदतन हाथ बाँध लेते हैं तो कहा बड़ा अच्छा दस्तूर है लेहाज़ा अब नमाज़ में हाथ बाँधा करो, तो जब हाथ बाँधिये तो ग़ैरूज़्ज़ालीन भी पढ़िये । (सलवात) अगर नमाज़ में ख़लीफ़ये दोउम की पैरवी वाजिब है, अरे हाथ बाँधने में क्या रखा है ? अस्ल

तो तिलावत है । उन्होनें कहा हम तो वलज़्ज़ालीन ही पढ़ते हैं, तो पढ़ते वही हैं जो अली पढ़ते थे । (सलवात) वही पढ़ना पड़ता है जो अली पढ़ते थे, तो तिलावत में अली की पैरवी और शक्ले नमाज़ में ख़लीफ़्ये दोउम की पैरवी । तो ये तैय हो गया कि उठने में किसी की पैरवी हो जाये मगर जब कुरआन का मामला आयेगा तो पैरवी अहलेबैत की ही करना पड़ेगी । (सलवात) कुरआन वही पढ़ेगा, मुस्लमान जो अली ने पढ़ा था और जब रवायत मौजूद है कि वह ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़ते थे तो वाजिब है । अब तक तो आप को मालूम नहीं था अब आज मैने मजलिस में पढ़ दिया है । हवाला जा कर पूछ लीजियेगा । और जब मिल जाये तो आज से ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़ियेगा । उन्होने कहा : बड़े चक्कर में डाल दिया है । अजी चक्कर की क्या बात है ? जिसकी पैरवी करना वाजिब है । इसी तरह तिलावते कुरआन भी करना चाहिये । जब क़िरात में पाबन्द हैं कि "ज़ाल" को "दाल" पढ़ते हैं । मैं क्या अर्ज़ कर रहा हूँ तो फिर अलफ़ाज़ में ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़िये । हाँ हाँ पढ़िये, अच्छा, न पढ़िये, फ़तवा ला दीजिये मुझे । कल दीजियेगा कि ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़ सकते हैं । लिखे किसी माई के लाल में हिम्मत हो । और जब नहीं पढ़ सकते तो कहिये कि तुम हम को पैरवीये ख़लीफ़ा दोएम से रोक रहे हो । कैसे सुन्नी आलिम हो । (सलवात) अब एक पेचिदा मसला है मअज़अल्लाह, मअज़अल्लाह ख़लीफ़्ये दोउम तो कुरआन के ख़िलाफ़ तो नहीं पढ़ सकते । उनके पास कुरआन होगा जो ज़ैद बिन साबित से जमा कराया होगा । या जो कातिबीने वही ने लिखा होगा । उसमे अमीर मावियां भी शामिल है । देखिये जाईये अभी । उन्होने कहा : जी हाँ, हाँ शामिल हैं । उनमे तो उन्होने कहा ग़ैरुज़्ज़ालीन लिखा होगा । तवज्जो चाहता हूँ । क्योंकि ख़लीफ़ा दोएम के कुरआन में ग़ैरिज़्ज़ालीन लिखा था अब वलज़्ज़ालीन । ये किसने बदला भाई । ये किसने बदला ? हो सकता है तीसरे ख़लीफ़ा ने, अच्छा, अच्छा तीसरे ख़लीफ़ा को कुछ न कहियेगा मेरे सामने । क्योंकि वह बेचारे कह गये कि इसमें ग़ल्तियाँ है । (सलवात) वह कह गये कि इसमें ग़ल्तियाँ हैं जिन्हें मेरे बाद अरब ठीक कर लेगें । तफ़्सीरलबाब अल तावील

जिल्द १ सफ़ा ५१७ । अब मैं अरबों के पीछे पड़ता हूँ कि अरबों ने क्यों नहीं ठीक किया । अब देखिये दूसरी मुश्किल आ गई । मिस्र से कुरआन छपे तो वलज़्ज़ालीन वाला, सउदी अरब से छपे तो वलज़्ज़ालीन वाला, वहाबी छपवायें तो वलज़्ज़ालीन, उन्होने कहा साहब ये तो बड़ी मुश्किल है । सब वलज़्ज़ालीन छाप रहे हैं तो अगर वलदज़्ज़ालीन छापें तो मआज़अल्लाह ख़लीफ़ा दोएम कुरआन पढ़ते रहे । अरे ग़ैरिज़्ज़ालीन होगा । ये वलज़्ज़ालीन पढ़ते थे । इसका मतलब ये कि जो लिखा था वह अली पढ़ते नहीं थे । जो अली पढ़ते थे वह लिखा नहीं था । ये तीसरी मन्ज़िल फंसा दी और और वह चौथे और परेशानी बढ़ा दी । हम चाहते हैं कि सम्भाल लें । सब सम्भलते ही नहीं, एक को सहारा तो दूसरा निकला, दूसरे को सहारा तो तीसरा निकला जाता है । (सलवात) हम क्या करें ? तो रहा होगा ग़ैरिज़्ज़ालीन । और जब रहा होगा तो नबी ने पढ़ा होगा । बड़ी मुश्किल हो गई हुज़ूर । रसूल अल्लाह भी ये सूरह पढ़ते थे नमाज़ में और सूरये अलहम्द का पढ़ना वाजिब क़रार दिया गया । उसके बाद चाहे सूरह बक़रः पढ़ो चाहे सूरह कौसर पढ़ो, लेकिन ये ज़रूर पढ़ो, और बग़ैर इसके नमाज़ होती नहीं और इसी में झगड़ा, मैं क्या कह रहा हूँ । तो जो नमाज़ पढ़ने वाले थे उन्होने क्या सुना ? और जमात में क़यामत ये है कि सूरह अलहम्द में रसूल ने कहा पूरी तरह से ख़ामोश होना चाहिये । कोई कुछ पढ़े नहीं । और पेश इमाम से कहा कि इतने ज़ोर से पढ़ना कि आख़री सफ़ तक आवाज़ जा सके, तो नबी पढ़ते थे और सब सुनते थे । अब ये बताओ कि नबी वलज़्ज़ालीन पढ़ते थे या ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़ते थे । तो ये हो सकता है कि ख़लीफ़ा दोएम नबी के क़रीब रहते हों तो वह ग़ैरिज़्ज़ालीन सुनते थे लेकिन आख़िरी सफ़ तक पहुँचते पहुँते वलदज़्ज़ालीन हो जाता है । (सलवात) बताईये आप मैं वल्लाह बहुत परेशान हूँ । किसी की शान में गुस्ताख़ी कर नहीं सकता । हमारी ज़बान वह नही है जो बोली जाती है । इसी आयत से, इसी रवायत से, ये काले कपड़े पहनना जहन्नुमी । अमाँ छोड़ो । तवज्जोह चाह रहा हूँ । कोई फ़िक्र की बात नहीं । हम अपने सहारे जन्नत जा रहे हों तो फ़िक्र भी करें । हम मेहनत करके नहीं जा रहे है जन्नत

। हम तो भीक मांग कर ले रहे है । (सलवात) हमारी छोड़िये । भीक मिल जायेगी । चले जायेगें । और मांग भी उससे रहे है । जिसकी जन्नत है । ये मालिके जन्नत है । हमारी तो छोड़ दो । ये बताओ कि काफ़िर से मुस्लमान अगर बन जाये । अब सुनिये फ़तवा है । चूंकि शिया तहरीफ़ कुरआन के क़ायल है, लेहाज़ा काफ़िर है । अब तौबा करते हैं । कुफ़्र से, हमको मुस्लमान बना लो । मगर क्या पढ़ें ग़ैरिज़्ज़ालीन या वलज़्ज़ालीन कुरआन में था तो वलज़्ज़ालीन तहरीफ़ है और तहरीफ़ करने वाला काफ़िर है । (सलवात) इनशाअल्लाह इन मुफ़्तीयों के छक्के न छुड़ा दूँ तो ताहिर मेरा नाम नहीं । ये भूल जायेंगे फ़तवा देना । (सलवात) भूल जायेगें । भाईयो जा कर कहो कि काफ़िर में एक मुसलमान होने को तैयार है नाम ताहिर जरवली है । मगर वह एक ही सवाल पूछता है कि ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़े या वलज़्ज़ालीन पढ़े । उन्होने कहा भई वलज़्ज़ालीन पढ़े । कहा : क्या फ़ायदा होगा मुसलमान हो कर मुसलमान तो वह है जो असहाब की पैरवी करे । मुसलमान तो वह है तो खुलेफ़ा के बताये हुऐ कुरआन को मांने । उन्होने कहा कि उसमे तो नास है । तो कहा : जहाँ नास है वहाँ सत्यानास । (सलवात) तवज्जोह फ़रमाईये क्या पढ़ें , वलज़्जालीन या ग़ैरिज़्ज़ालीन । भई कुरआन में तो .... वलाज़्जालीन छ्पा है, ग़लत छ्पा है, ताज कम्पनी वाले ज़्यादा जानते हैं या मिस्र का प्रेस ज़्यादा जानता है । इराक़ वाले ज़्यादा जानते हैं कि वह जिन्होनें नबी के साथ नमाज़ पढ़ी और जिन पर सलवात नाज़िल हुई । देखिये जोड़ से जोड़ बिठा रहा हूँ । उम्मुलमोमनीन ने फ़रमाया कि सलवात वाली आयत है अलल्लज़ीन यसल्लूना सफ़े अव्वल भी था । तो क्या ख़लीफ़्ये दोउम सफ़े अव्वल में नहीं बैठते थे । उन पर खुद सलवात भेजिये । तुम फ़तवा दो मगर हमने उन पर फ़तवा थोड़े दिया । हमने तो आप पर दिया । तो हमने तहरीफ़ कुरआन की नहीं । उन्होनें कहा : ये हमें मालूम नहीं था । नहीं मालूम था तो आईन्दा सोंच समझ कर फ़तवा दीजियेगा । क्यों कि जब आप स्ट्राईकर मारते है गोट पर तो अपनी गोट को भी देखते रहियेगा कि कहीं पाकिट में न चली जाये । (सलवात) आँख बन्द की मुँह खोल कर फ़तवा दे

दिया । ये न देखा कि फ़तवा की ज़द में कौन कौन आ रहा है । मआज़अल्लाह होगें शिया काफ़िर कोई बात नहीं । उन का पूछने वाला ही कोई नहीं । और जो है वह किसी का फ़तवा मानता ही नहीं । क्योंकि वह ख़ुद इमाम है । मै क्या कह रहा हूँ । अच्छा ! कमालकी बात ये है कि हम किसी को कुफ़्र का फ़तवा देते नहीं ताकि इजतेहाद हमारा न रहे । इस्लाम के किसी फ़िरक़े में इज्तेहाद नहीं है मुझे एक बात याद आ गयी । तो सुन लीजिये । चार मसलक, इमाम अबू हनीफ़ा का मसलक, और इमाम शाफ़ई का मसलक, इमाम अहमद बिन हम्बल का मसलक और इमाम मालिक का मसलक, कहा : हाँ है । चारों में इज्तेहाद ख़त्म । न इमाम अबू हनीफ़ा के किसी आलिम को इमाम अबु हनीफ़ा के किसी फ़तवे को दुबारा जारी करने का हक़ है और न इज्तेहाद करने का हक़ है । दरे इज्तेहाद बन्द । तवज्जोह चाह रहा हूँ । मालिकयों में दरे इज्तेहाद बन्द,शाफ़ियों में दरे इज्तेहाद बन्द, हम्बलियों में दरे इज्तेहाद बन्द । अगर हम्बलियों में दरे इज्तेहाद बन्द न होता तो मोहम्मद बिन अब्दुलवहाब फ़िरक़ा न बनाता । वहाबी कौन कहता है । सब हम्बली कहते है । मगर दरवाज़ये इज्तेहाद बन्द । शियों मे खुला हुआ है । कमाल की बात है । चारों में कोई मौजूद नहीं । और इज्तेहाद की इजाज़त नहीं । इमामत पर एक जिन्दा बैठा है और इजाज़त । (सलवात) इज्तेहाद किया ? अभी एक साल पहले, शाह फ़हद ने तमाम उलेमाये इस्लाम को रियाज़ में जमा किया और जमा करने के बाद मीटिंग की और कहा कि मै आप से ये ख़्वाहिश करता हूँ कि आप दरवाज़ये इज्तेहाद को खोलिये । इमाम बन्द कर गये, कौन खोले ? तो लोगो ने कहा हमारे यहाँ इज्तेहाद नहीं है । हम कैसे इज्तेहाद करेगें । उन्होने कहा : नहीं इज्तेहाद तो आप को करना पड़ेगा । उन्होने कहा : क्यों ? कहा आप देख रहे है इज्तेहाद का असर । एक मुजतहिद खुमैनी ने क़यामत बरपा कर दी । अब हमारी समझ में आ गया । हमारे मुजतहिद को देखा तो मुजतहिद बनाने लगे । जैसे कल हमारे इमाम को देख कर इमाम बनाते थे । (सलवात) अल्लाहो अकबर उधर, अरे साहब ग़ैरिज़्ज़ालीन पढ़िये अब दूसरा छिड़ा सवाल, ख़लीफ़ये अव्वल

क्या पढ़ते थे ? ख़लीफ़ा सोउम क्या पढ़ते थे ? चहारुम का तो मालूम ही है कि वलज़्ज़ालीन पढ़ते थे । ये आप कैसे कह सकते हैं ? मैने नहीं कहा । सही बुख़ारी शरीफ़ में, किताबुस्सलात में बहुत वाज़ेह हदीस लिखी है कि अनस कहते है जब अली के हाथ पर बैअत हुई और अली मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ाने के लिये आये तो मैने असहाब को ये कहते हुऐ सुना कि बरसों बाद वैसी नमाज़ पढ़ने को मिली जैसी मोहम्मद के पीछे पढ़ते थे । (सलवात) बस ! दामने वक़्त में गुन्जाईश नहीं है । इसकी बहुत अहम कड़ी है । वह इन्शाअल्लाह कल मजलिस में । शुरू ही में, इजतेहाद बन्द, अब बड़ी मुश्किल फंस गयी । फ़तवा भी तो नहीं दे सकते हमको कुफ़्र का फ़तवा देने का हक़ क्या है ? आप मुजतहिद ही नहीं है और यहाँ अलहम्दोल्लिाह मुजतहिदों की कमी नहीं है । (सलवात) ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । उन्होने कहा : फ़तवा तो नहीं देते मगर... मगर क्या ? अच्छ तो इतना बता दीजिये कि इमामे अबूहनीफ़ा से पहले इजतेहाद की इजाज़त थी । कहा : उस वक़्त तो कोई मुजतहिद था ही नहीं । रसूल अल्लाह को लेकर इमाम अबूहनीफ़ा तक कोई मुजतहिद ही न हुआ । कहा : कोई मुजतहिद न था । तो क़त्ले हुसैन के जवाज़ का फ़तवा किस बुनियाद पर दिया गया ? ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । उन्होनें कहा वो तो यज़ीद ने हासिल किया था, किस से हासिल किया था ? कहा उलेमा से ! क्या फ़तवा ? उन्होनें लिखा कि चूंकि हुसैन यज़ीद के हाथ पर बैअत से इन्कार कर रहे हैं लेहाज़ा वाजिबुल क़त्ल हैं । अच्छा । ये मामला है कि जो ख़लीफ़तुल मुसल्लेमीन के हाथों पर बैयत करने से इन्कार करे वह वाजिबुल क़त्ल है । उन्होने कहा लेहाज़ा हुसैन वाजिबुल क़त्ल हैं । ये यज़ीद पहला ख़लीफ़ा है । अमाँ नहीं साहब ! ये तो बहुत बाद का है किस से ख़िलाफ़त मिली है । कहा ! बाप से । कहा ! बाप के हाथ पर हुसैन के बाप ने बैयत की थी । कहा ! नहीं ! तो फिर वो वाजिबुल कत्ल क्यो न थे ? क्या इनके बड़े भाई ने बैयत की थी ? कहा: नही ! तो वो वाजिबुल कत्ल नहीं थे कहा: नही भाई वो तो यज़ीद था । हाँ तो बचे रहियेगा । आप न बन जाईयेगा । दामन समेटे रहियेगा । यानी बग़ैर नस्से कुरआनी

फ़तवा दे वह यज़ीदी आलिम है । आज तुम जो हम को काफ़िर कह रहे हो । नस्से क़ुरआन लाओ । हदीसे रसूल लाओ और नहीं लाते तो तुम भी दरबारे यज़ीद के आलिम हो । (सलवात) तवज्जो ! मैं पूछूगाँ कि जिन्होने फ़तवा क़त्ले हुसैन दिया । क्यों दिया ? कहा : यज़ीद ने दिलाया, काहे से दिलाया यज़ीद ने । पैसे से, तो आज भी बड़े पैसे वाले यज़ीद हैं । जब इतना बता दिया हुसैन के क़त्ल का फ़तवा दिया उन्होनें, यज़ीद से रक़म ले कर दिया, तो कहा और खुल जाओ कि तुमने जो फ़तवा हम को काफ़िर होने का दिया वह किस से पैसे ले कर दिया (सलवात) किस से पैसे ले कर दिया, हाँ ! हुज़ूर ! इस का क़त्ल वाजिब । कहा: वाजिब, और जब सैय्यदे सज्जाद पहुँचे तेरे सामने दरबार में । फ़तवा क्या होगये ? तवज्जो चाह रहा हूँ । हुसैन तो मदीने में आज़ाद थे, उनका बेटा तो हथकड़ियाँ पहने हुऐ है । बेड़ियाँ पहने हुऐ है । गले में तौक़ पहने हुऐ है । तेरे दरबार मे मौजूद, माँग बैयत, कहा : नहीं मागूँगा यज़ीद ने सैय्यदे साजेदीन से बैयत नहीं माँगी । फ़तवे क्या हो गये ? मुफ़्तीयान शरह मतीन क्या हो गये ? वह उलेमा कहाँ गये जिन्होनें हुसैन के क़त्ल का फ़तवा दिया और सैय्यदे सज्जाद के क़त्ल का फ़तवा न दे सके । जब यज़ीद से किसी ने कहा कि क्यों नहीं बैयत माँगते । कहा: क्या करूँ ? क्या दूसरी करबला बनाऊँ शाम में ! यज़ीद की समझ मे आ गया कि इमामत से जब तलबे बैयत होगी तो करबला होगी, अमाँ यज़ीद समझ गया । तुम कैसे यज़ीद हो कि समझ में नहीं आया ? (सलवात) ! कैसे यज़ीद हो ? अच्छ । बैयत की बात थी तो कहा शाने कटायेगें बैयत नहीं करेगें । जनाज़े पामाल हो जायें बैयत नहीं करेगें । तीन दिन भूखे रहेगें । बैयत नहीं करेगें । प्यासे रहेगें बैयत नहीं करेगें । हुसैन के साथी क्या समझते थे ? क्या समझते थे करबला, वो तो शबे आशूर मालूम हुआ । जब हुसैन ने चिराग़ गुल कर दिये । जिस को जाना हो वह चला जाये । और चिराग़ रौशन किया तो लोगों के चेहरे चांद की तरह चमक रहे थे । हबीब तुम नहीं गये, ज़ुहैर तुम नहीं गये । तो खड़े हो कर सरहाने हुसैन के कहा : मौला क्या कहा ? आप इमामे वक़्त है । आप को छोड़ कर कैसे जा

सकते है ? नही जाते, सत्तर मरतबा मारे जायें हमारी लाशें जलाई जायें, हमारी ख़ाक फ़िज़ा में मुन्तशिर कर दी जाये और फिर अल्लाह हमें पैदा करे तो उनही क़दमों में रहेगें । इसका नाम ईमान है । इसे ईमान कहते है । हुसैन ने कहा : तुम्हारा नाम भी है फ़र्दे शुहदा में हबीब, ज़ुहैर तुम्हारा नाम भी है, मुस्लिम तुम्हारा नाम भी है । रावी कहता है कि हुसैन जिस जिस का नाम लेते थे उस का चेहरा खिल उठता था । और एक दूसरे को मुबारकबाद देते थे । मुबारक हो तुम्हारा नाम भी फ़र्दे शोहदा में शामिल है । अल्लाहो अकबर, असहाब पर हुसैन ने फ़ेहरिस्त रोक दी । एक शहज़ादा उठा, हाथ जोड़ कर आक़ा ! क्या फ़ेहरिस्त ख़त्म हो गई ? कहा : क्यों मेरे लाल, क्या बात है ? कहा : आक़ा मेरा नाम नहीं है । पूछा : तुम्हारे नज़दीक मौत कैसी है ? कहा : आज के दिन शहद से ज़्यादा शीरीं, कहा : क़ासिम ! तुम्हारा नाम भी है और तुम्हारे छोटे भाई अली असग़र का नाम भी है । बस हुज़ूर ये सुनना था कि हाशिमी ख़ून रगों में जोश मारने लगा । खड़े हुऐ अली असग़र, का नाम भी शुहदा में, अली असग़र तो घुटनियों के बल चल नही पाते । कहा : आक़ा क्या अशक़िया ख़ैमो में आ जायेगें । कुछ इस तरह तड़प कर क़ासिम ने पूछा कि हुसैन ने कहा : क़ासिम मैं अली असग़र को मैदान में ले जाऊँगा । क़ासिम बैठ गये । मैं अर्ज़ करूगाँ कि क़ासिम बीबीयों ने सुन लिया होगा तो वक़्ते अस्र बहुत याद करेगीं । अल्लाहो अकबर, रात कटी, सुब्हे आशूर हुई । एक एक करके क़त्ल गाह में जाने लगे । हुसैन सब के जनाज़े उठा कर लाते रहे । क़ासिम पहुँचे आक़ा । मुझे भी इजाज़त, क़ासिम ठहर जाओ । तुम मेरे भाई की निशानी हो, ख़ैमे मे आये तो उम्मे फ़रवा ने पूछा । क़ासिम अभी तक गये नहीं, एक मरतबा जनाबे उम्मे फ़रवा ख़ैमे में दाख़िल हुईं तो क्या देखा कि क़ासिम ज़ानू पर सर रखे हुऐ बिलबिला बिलबिला कर रो रहे हो । माँ का दिल दहल गया । गले से लगा लिया मेरे लाल ! क्यों इतना बिलक कर रो रहे हैं । कहा ! अम्मा क्या करूँ । आक़ा मरने की इजाज़त नहीं देते । कहा : क़ासिम बाप की वसीयत याद है । एक तावीज़ बांधा था, और कहा था कि ऐ क़ासिम ! ऐसा वक़्त आये कि

अक़्ल काम न करे तो मेरी ये तावीज़ खोल कर पढ़ लेना । कहा : अम्मा याद आया । तावीज़ खोला । उसमें कोई दुआ लिखी होगी । कोई नक़्श लिखा होगा । आयते कुरआनी होगी । मगर तावीज़ खोला तो कुछ न था । एक छोटा सा ख़त था । भाई का ख़त भाई के नाम, लिखा था : भईय्या हुसैन.... जब करबला में कुरबानियाँ पेश हो रही होगीं मैं न होऊगाँ । ऐ मेरे भाई हुसैन । क़ासिम को मेरी तरफ़ से अल्लाह की बारगाह में भेज देना । जज़ाओकुम रब्बोकुम । लिखा है कि क़ासिम या तो रो रहे थे या खुश हो गये । ख़िदमते इमाम में आये । सलाम किया : कहा : क़ासिम फिर आ गये । मैं कह रहा हूँ । तुम मेरे भाई की यादगार हो । ठहर जाओ । कहा आक़ा कुछ कहने नहीं आया हूँ । कहा फिर क्यों आये हो ? कहा : एक अमानत लाया हूँ । कहा : क्या अमानत है ? ख़त आगे बढ़ा दिया अब जो हुसैन ने भाई हसन की तहरीर देखी तो इतना रोये कि ज़मीन आँसूओं से तर हो गयी । क़ासिम को गले से लगा लिया मेरे लाल ! तुम ने मुझे मजबूर कर दिया । आवाज़ दी भईय्या अब्बास आओ, अली अकबर आओ, क़ासिम रन को जा रहे हैं । अली अकबर ने रकाब थामी । अब्बास ने बाज़ू पकड़ा । क़ासिम को घोड़े पर सवार किया । क़ासिम मैदान की तरफ़ चले । उम्मे फ़रवा दरे ख़ैमा की तरफ़ आ गई । मैदान दिखाई नहीं देता । मगर फ़िज़्ज़ा क़रीब आ गयीं । बीबी मुबारक हो । कहा : क्या है ? फ़िज़्ज़ा ने कहा : खूब लड़ रहा है । कहा : तुमने कैसे जाना, कहा : सुनिये अब्बास मरहवा कह रहे हैं । हुसैन मरहवा कह रहे है । ख़ैमे चली गयीं । शुक्र का सजदा किया । अरज़क़े शामी के चारों बेटों को जब वासिले जहन्नुम किया तो बल खाता हुआ सामने आया जब एक वार में वह भी वासिले जहन्नुम हुआ तो उमरे साद घोड़े पर बैठ कर निकला । कहा : किस से लड़ रहे हो । अरे ये बच्चे शेर के बच्चे हैं । इन्हें घेर लो । लीजिये लश्कर चारों तरफ़ से बढ़ा तीर चलने लगे । नैज़े पड़ने लगे । क़सिम एक बारीक कुर्ता पहने हुऐ खून प्यासे का बहने लगा । जब घोड़े से ज़मीन पर आये । आवाज़ दी चचा, चचा, मेरी मदद को आईये । बस बस ! अज़ादारों मजलिस तमाम है सिर्फ़ हुसैन का एक जुम्ला सुन लें और मै मजलिस

तमाम करूँ । हुसैन घोड़ें पर बैठे दौड़े अब्बास साथ, अली अकबर साथ, किधर है मेरा क़ासिम ! कहा : आक़ा इधर है । जब वहाँ पहुँचे । क़ासिम के जनाज़े को देखा एक अजब जुम्ला कहा "मुझे आने में देर हो गयी" आप समझ गये । इधर के घोड़े उधर, उधर के घोड़े इधर । अरे जिस्मे नाज़नीं पामाल हो गया । वा क़ासिमा ।

●●●

बस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सातवीं मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने मिल्लत !

सरवरे कायनात ख़त्मी मरतबत जनाब मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने इस हदीस में इरशाद फ़रमाया है कि ऐ मुसलमानों ! मैं तुम में दो वज़नी चीज़े छोड़े जा रहा हूँ । एक कुरआन और दूसरे अपनी इतरत । ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक कि मुझे हौज़े कौसर पर मिलें, और अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना । (सलवात) ये पैग़म्बरे इस्लाम की मश्हूर, व मारूफ़ हदीस है । इस सिलसिले में इस मौज़ू पर यानी "कुरआन और अहलेबैत" के मौज़ू पर गुफ़्तगू जारी है । जो इन मन्ज़िलों से गुज़र रही है कि हमको काफ़िर होने का फ़तवा दिया जाता है कि हम काफ़िर हैं । और ये कहा जाता है कि हम तहरीफ़े कुरआन के क़ायल हैं । हम कुरआने मजीद पर ईमान नही रखते हैं जबकि मैनें इब्तेदाई दूसरी तीसरी और चौथी मजलिस में आप के सामने मुक्कमल सुबूत फ़राहम कर दिया । बेहमदोलिल्लाह हम कुरआन पर ईमान रखते है । और हमारा कुरआन बिस्मिल्लाह से शुरू होता है । बल्कि हमतो नुक़तये बिस्मिललाह से शुरू करने के क़ायल है और वन्नास तक के

कुरआन मजीद के क़ायल हैं । वन्नास मैंने इसलिये कहा कि तफ़सीर दुर्रे मन्शूर जिल्द ६, सफ़ा २१६ में है कि इब्ने मसूद और सही बुख़ारी पारा २०, सफ़ा ११७ में है कि अब्दुल्लाह इब्ने उमर उन दूसरों को, *कुल आऊज़ोबे रब्बिल फ़लक़*, और *कुल आऊज़ोबे रब्बिन्नास* को कुरआन का जुज़ क़रार नहीं देते । बल्कि किसी कुरआन में लिखा देखते थे तो काट देते थे । और कहते थे ये दो तावीज़ थे । जो रसूल अल्लाह के लिये आये थे । कुरआन के सूरे नहीं है कल गुफ़्तगू इस मक़ाम पर रुकी थी कि हमें तहरीफ़े कुरआन का क़ायल बताया जाता है । हमको कुरआने मजीद के सिलसिले में मश्कूक बताया जाता है । हाँलाकि ऐसा नहीं है । जब हमने जायज़ा लेना शुरू किया । कुतुबे इस्लामी का, उलेमाये इस्लाम का, इस कुरआने मजीद के सिलसिले में क्या ख़्याल है और साबेक़ीन का क्या ख़्याल है ? तबा ताबेईन का क्या ख़्याल है ? और असहाब का क्या ख़्याल है ? अभी तो गुफ़्तगू ख़िलाफ़ते राशिदा के अन्दर ही चल रही है ।

कल मैंने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया था । कुछ और हवाले आप के सामने पेश करूँगाँ- अज़ालतुल खुफ़ा में शाह वलीउल्लाह मोहद्दीस देहलवी ने पहली जिल्द में सफ़ा पच्चीस पर लिखा है कि जो कुरआन ख़लीफ़ये दोउम ने ज़ैद इब्ने साबित के ज़रिये जमा कराया था । वही कुरआन ख़लीफ़ये दोउम के दौरे ख़िलाफ़त में जारी व सारी रहा, और साढ़े दस बरस में ख़लीफ़ये दोउम ने कुरआने मजीद की इस्लाह और कुरआने मजीद की दुरुस्तगी और कुरआने मजीद की तसीह में काफ़ी मेहनत की और इनका तरीक़ाये कार ये था कि वोह असहाब को बुलाते थे । हुफ़्फ़ाज़ को बुलाते थे, क़ारीयाने कुरआन को बुलाते थे । और इनसे पूछते थे कि ये आयत किस तरह से नाज़िल हुई और इसमें बहस मोबाहसा होता था और मनाज़िरा होता था । जो लफ़्ज़ें है "अज़ालतुल खुफ़ा" में वह मैं आप के सामने पढ़ रहा हूँ । शाह मोहद्दिदस देहलवी ने लिखा है कि अगर हक़ इस कुरआन के साथ होता जो ख़लीफ़ये अव्वल ने जमा किया था तो आयत को रहने देते थे, और अगर हक़ उनके ख़िलाफ़ होता था तो

आयत को निकाल देते थे यानी हक़ का ताईय्युन नहीं हुआ था । हक़ का मदार गवाही पर था । असहाब की गवाही दलीले हक़ थी इल्मे ख़लीफ़तुल मुसल्लेमीन खुद दलीले हक़ नहीं था । (सलवात) ये जुम्ला अज़ालतुल खुफ़ा का बतलाता है जो कुरआन ज़ैद इब्ने साबित ने जमा किया था वोह जमा तो हो गया था लेकिन उम्मत इस पर जमा नहीं थी । तवज्जो फ़रमाईये । मैनें बहुत क़ीमती जुम्ला कहा है । ख़िलाफ़त पर इजमा हो गया था । लेकिन कुरआन पर इजमा नहीं हुआ था। (सलवात)

लोग कहते हैं न कि इस्लाम में इजमा है । उम्मत जिसपर जमा हो जाये । ख़िलाफ़त पर तो उम्मत जमा हो गयी लेकिन कुरआन पर जमा नहीं हई और कुरआन में इख़्तेलाफ़ रहा साढ़े दस बरस तक बहस मोबाहसा होता रहा, और साढ़े दस बरस तक कुरआन की तसहीह होती रही । दूसरी बात जो मुझे अर्ज़ करना है इस सिलसिले में मुस्लमान इस बात पर ग़ौर करे इसका मतलब ये है कि ख़लीफ़्ये रसूल को ये हक़ भी हासिल है कि वो कुरआन में तस्हीह कर सके, और लोगेां से इस सिलसिले में गवाही तलब कर सके । अगर हक़ ख़िलाफ़त न होता । अगर ख़लीफ़तुल मुसल्लेमीन को ये हक़ न होता तो कहते हैं जैसा कि ज़ैद इब्ने साबित ने जमा किया है इसको क़बूल कर लो लेकिन एक और मुश्किल सवाल पैदा हो जाता है । कि जब ख़लीफ़्ये दोउम ने कुरआन को दुरूस्त किया तो क्या ख़लीफ़्ये अव्वल के ज़माने में जो कुरआन चलता रहा दुरूस्त न था । (सलवात) इसका तो ये मतलब ये हो सकता है कि जो आयत बाद में दुरूस्त की गयी हो इस आयत पर पहले ग़लत अमल हो गया हो तो इस अमल का ज़िम्मेदार कौन होगा ? क्योंकि कुरआन में अहकामे इस्लाम हैं सारे अहकाम इस्लाम के तो जो कुरआन ज़ैद इब्ने साबित ने जमा किया । साढ़े दस बरस तक इसकी तस्हीह चलती रही और बड़ी एहतियात बरती ख़लीफ़ा ने लिखा है इस मामले में वो बहुत बाउसूल थे । ख़याल करते थें । सही बात भी थी ये इनका फ़र्ज़ था । इसलिये कि ख़लीफ़तुल मुसल्लेमीन थे और कुरआन ही ग़लत चलता उनकी

ज़िम्मेदारी थी इसकी इसलाह की । इसको दुरूस्त किया और ये नहीं कि अपनी मर्ज़ी से दुरूस्त किया यहाँ तक कि रवायत में है कि एक आयत के लिये वो खुद फ़रमाते थे । कि आयये रजम कुरआन में थी और मैने खुद पढ़ी है और मैने खुद रसूल अल्लाह से आयये रजम सुनी है । लेकिन जब उनको गवाही न मिली यानी दो गवाह नहीं मिले कि हाँ हमने सुनी थी तो अपने इल्म पर इन्होने कुरआन में दाख़िल नहीं कराई । सही बुख़ारी जिल्द २, सफ़ा १११ इतने दयानतदार भी थे कि अपने इल्म से कुरआन में इज़ाफ़ा नहीं किया यक़ीन था कि ये कुरआन की आयत है मगर चूकिं गवाही नहीं मिली इसलिये वो आयत कुरआन में शामिल नहीं की गई है । (सलवात)

यहाँ फ़िक्र करने की बात है कि कुरआने मजीद में ख़लीफ़तुल मुसल्लेमीन को ये हक़ हासिल है कि वो गवाही ले कर असहाब से पूछ कर मालूमात हासिल करते । कुरआन को दुरूस्त करते । यानी दूसरे दौर में भी कुरआन ज़ेरे तामीर रहा मरम्मत भी होती रही । और दुबारा तामीर भी होता रहा । तो अब फ़िक्र करने की बात ये है कि जिस उम्मत के पास पूरा कुरआन न था और रसूल कहते हैं कि छोड़े जा रहा हूँ तो अब फ़िक्र ये है कि किसके पास छोड़े जाता हूँ ? (सलवात) किसके पास छोड़े जाता हूँ । नबी कहते हैं मुसलमानों मैं तुममें दो चीज़े छोड़े जाता हूँ दूसरी के लिये झगड़ा है कि सीरत को छोड़ा मैं झगड़े वाली बात पढ़ता ही नहीं । पहले टुकड़े के लिये कोई इख़्तिलाफ़ नही सब कहते हैं कि रसूल ने फ़रमाया इन्नी तारेकुम फ़ी कुमुस्सक़लैन, किताबुल्लाह तो किताब का नाम लिया किताब छोड़े जा रहा हूँ और मुश्किल ये कि किताब मिल नहीं रही है ज़ैद बिन साबित से जमा कराई जा रही है । साढ़े दस बरस तक इसकी तस्हीह हो रही है । और जब साढ़े दस बरस तक कुरआन जमा किया गया तो ख़लीफ़ये सोएम ने उसे फिर से लिखवाया । (सलवात) ये वो बातें हैं जो मुसलमात है । ये किसी फ़िरक़े पर किसी फ़िरक़े का चार्ज नहीं है । बल्कि तमाम अजल्ला उलेमाये अहलेसुन्नत इन हक़ायक़ को तस्लीम करते है । इसलिये कि किसी की ज़ात से मुताअल्लिक़ बात हो तो झगड़े में हो सकती है । तो उम्मत का मामला नही था

। हज़ारों इसके रावी है कि हम से ये आयत पूछी । हम से ये आयत पूछी । हम ने कहा : ये आयत क्यों नहीं । तो जो रसूल अल्लाह छोड़ गये थे । वहा कहाँ है । एक फ़िक्र करने की बात है । रसूल ने कहा तुम मे कुरआन छोड़े जा रहा हूँ तो वह कुरआन कहाँ था ? जो छोड़े जा रहे थे । (सलवात)

छपवाया था छपवाकर छोड़ा था, लिखवाकर छोड़ा था तो उलेमाये इस्लाम कहते हैं कि यहाँ छोड़ने का मतलब ये है कि मैंने कुरआन तुम तक पहुँचा दिया और तुम्हारे ज़ेहनों में छोड़ दिया। तुम्हारे हाफ़िज़ों में छोड़ दिया । ज़रा बात ग़ौर फ़रमा लिजिये । और उस साढ़े दस बरस में तरावीह भी शुरू हुई और आख़िर दौरे ख़िलाफ़त तक कुरआन दुरूस्त होता रहा तो अगर तसीह दसवीं बरस हुई तो नौ बरस तरावीह में कुरआन ग़ल्त ही पढ़ा गया । (सलवात) इसलिये कि उस कुरआन की आयत हैं कि इन्नल्लाहे मलाएकतहू यसल्लूना अलान्नबी या अय्योहल लज़ीना आमेनू सल्लू अलैहे व सल्लेमू तस्लीमा । तो चूकिं या अय्योहल लज़ीना आमेनू है तो मैं अदब से हाथ जोड़ कर पूछ्ना चाहता हूँ कि आप जो मोमनीन इमाम बाड़े के अन्दर बैठे हैं उन ही के लिये ये आयत हैं जो बाहर बैठे हैं उनके लिये नहीं है ये आयत । (सलवात) आयत तो सब के लिये है । अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । तीन चार तन्क़ीदें क़ायम हुई है कि पहले दो बरस में कुरआन का वजूद था ही नहीं, जब जमा कराया गया और जब ज़ैद इब्ने साबित ने कुरआन जमा किया लोगों से पूछ पूछ कर तो साढ़े दस बरस में कुरआन को जमा किया गया । अब यहाँ से दो रवायतें सूरये अलहम्द के लिये सुन लिजिये। तफ़सीर दुर्रे मन्शूर स्योती में पहली जिल्द के सफ़ा नं० १६ पर तहरीर है, अल्लामा जलालुद्दीन स्योती फ़रमाते हैं कि रवायात कसीरा से यह बात साबित है जहाँ एक रावी होता है वहाँ नाम लिख देते है और जहाँ जिस बात के बहुत से रावी होते हैं वहाँ लिखते हैं । रवायात कसीरा से ये बात साबित होती हैं कि ख़लीफ़ये अव्वल व दोउम सूरये अलहम्द में जो सूरा आज है वो आप के ज़ेहन में है ।

माशाअल्लाह सब नमाज़ी हैं । नमाज़ में पढ़ते हैं । सूरये अलहम्द में इया क-अनाबुदो व इया क-अनस्तईन के पहले क्या है ? अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन अर्रहमानिर्रहीम मालिके यौमिद्दीन, फिर जाकर कुरआन देख लिजिये । वैसे याद तो किया है आप ने । नमाज़ पढ़ना है तो सूरे पढ़ना है । रवायाते कसीरा से ये बात साबित है कि ख़लीफ़्ये दोउम मालिके यौमिद्दीन के बजाये मलके यौमिद्दीन पढ़ते थे । मालिक नहीं, मल्क ये लिखा है तो अब सवाल ये है कि साढ़े दस बरस तक मलके यौमिद्दीन पढ़ा गया और आज सब मालिके यौमिद्दीन पढ़तें हैं तो वह साढ़े दस बरस की तसहीह किधर चली गयी । तवज्जोह चाह रहा हूँ । और यही नहीं ! *एहद नासेरतलमुस्तक़ीम* इसी तफ़सीर स्योती सफ़ा १४ पर कि हुआ *एहद नासेरतलमुस्तक़ीम* मे सेरात को " स्वाद" से नहीं "सीन" से पढ़ते थे । और आज कुरआन में "स्वाद" से है । तो इसका मतलब ये है कि जो कुरआन है, इसमें मालिके यौमिद्दीन नहीं है इसमें सेरात, "स्वाद" से लिखा है "सीन" से नहीं है, और ये तो हम सोंच भी नहीं सकते कि वो कुरआन ग़लत पढ़ते होगें । (सलवात) सोंच भी नही सकते कि इतने बड़े पैग़म्बर के सहाबी जिन्होनें नबी के साथ पढ़ी हो । जिन्होने जमा कुरआन के लिये पहले दौर में कहा हो ज़ैद इब्ने साबित से कुरआन जमा कराया हो । वह ग़लत कुरआन पढ़ेगें । इसका मतलब ये है कि इस कुरआन में मालिके यौमिद्दीन के बजाये मल्क लिखा और सेरात "स्वाद" के बजाये "सीन" से लिखा था । मैं इनको कुछ नहीं कहूगाँ । मेरी मजाल ही नहीं मैं कैसे कहूगाँ ? मैं तो इन मुसलमानों से पूछता हूँ कि तुम्हें क्या हो गया है कि आज नमाज़ों में सूरह इस तरह से पढ़ते हो जिस तरह से वह नहीं पढ़ते थें । ये कैसी पैरवी है ? (सलवात)

भई जब ये रवायत सुन ली और देख ली और आज मैने सुना भी दी अब जा कर अपने उलेमा से पूछिये अगर आप ख़लीफ़्ये दोउम को मानते हैं तो मालिक यौमिद्दीन पढ़ेगें तो हम आप के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ेगें इसलिये कि आप की नमाज़ में सूरये अलहम्द मुताबिक़ ख़लीफ़्ये दोउम नही है और आगे बढ़िये । क़िरात इसीलिये

वाजिब है कुरआन पढ़ने में कि जो हम लफ्ज़ें हैं, हम आवाज़, उनमें फ़र्क़ हो जाये "स्वाद" सेरात "सीन" की आवाज़ और है अरबी में और "स्वाद" की और है और आज जितने क़ारियाने क़िरात करते हैं वो भी इस बात की क़िरात करते हैं कि कुरआन में "स्वाद" से लिखा है । लफ्ज़ "स्वाद" है अरबी में । इसीलिये मैं भी "स्वाद" कह रहा हूँ कोई साहेब लफ्ज़ी गिरफ्त न करलें तवज्जेह फ़रमाई आपने तो गुज़ारिश ये है कि सूरये अलहम्द वो सूरह है जिसके बग़ैर आदमी मुसलमान, मुसलमान नहीं रह सकता । वैसे तो हुक्म ये है कि अक़्लन कम से कम हर हदीस है । सरवरे कायनात ख़तमी मरतबत जनाब मोहम्मद मुस्तफ़ा की कि हर मुसलमान को कम से कम रोज़ाना अक़्लन पचास आयतें कुरआन की तिलावत करना चाहिये और हुज़ूर ने फ़रमाया कि जो रोज़ाना पचास आयतें कुरआन की तिलावत करेगा तो अल्लाह की रहमत उसके घर पर नाज़िल होगी । और जिस घर में पचास आयतें कुरआन की तिलावत की जायेगीं । सही बुख़ारी शरीफ़ में है, तिलावत की जायेगी उसका घर आसमान पर ऐसा चमकेगा, जैसे ज़मीन पर से सितारे चमकते दिखाई देतें हैं । वैसे मलायका को इसका घर चमकता दिखाई देगा । जिस घर में रोज़ाना पचास आयतें कुरआन की तिलावत की जायेगीं । फिर एक हदीस में इरशाद फ़रमातें हैं कि जिस घर में कुरआन की आयात तिलावत की जायेगी उस घर में कभी गुरबत, अफ़्लास दिखाई न देगी । इस घर में कभी मसाएब और मुसीबत नहीं आयेगी । (सलवात) इसका मतलब ये है कि हम इलाज दूसरी ढूढँते हैं और ईलाज हमारे यहाँ जुज़दान में लपेटा रखा हुआ है । (सलवात) लाकर घर में रखा हुआ है । फिर पैग़म्बरे इस्लाम ने फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना कुरआन मजीद की तिलावत करेगा इसमें जितनी आयतें पढ़ेगा इसमें जितने हरफ़ हैं, अल्लाह हर हरफ़ पर दस दस हसने अता फ़रमायेगा । ये फ़ज़ायले कुरआन पढ़ रहा हूँ । (सलवात)

आख़िर में एक अजब बात कही मगर शर्त ये है कि कुरआन को आँखों से देख कर पढ़ना । अगर तुम ने ग़लत कुरआन पढ़ा तो अज़ाब भी उतना ही होगा । ये हदीस मैंने अज़ाब वाली देखी

तो शुरू से तो मै बड़ा खुश चला आ रहा था और तैय कर लिया था कि पढ़ूगाँ पढ़ता हूँ अलहम्दो लिल्लाह, मिसाल की बात नहीं पढ़ते, पढ़ते, ये सवाब है वो सवाब है, । हज का सवाब है, ये उमरे का सवाब है, जो अगर ग़लत पढ़ा तो अज़ाब भी उतना ही है । आप ने कहा ग़लत क्यों पढ़ेगें छपा हुआ कुरआन ले लेगें अगर ग़लत लिखा होगा तो छापने वाले पर अज़ाब हमसे क्या मतलब ? हमतो सही पढ़ रहे है । मगर जब ये रवायत देखी तो होश उड़ गये कि मालिके यौमिद्दीन पढ़ें या मल्के यौमिद्दीन पढ़ें । जब सेरात मुस्तक़ीम पर पहुँचे तो परेशान हो गये । "स्वाद" से पढ़ें या "सीन" से पढ़ें अगर "स्वाद" से है सेराते मुस्तक़ीम और "सीन" से पढ़ा तो परेशानी में अगर "सीन" से है "स्वाद" से पढ़ा तो परेशानी कहाँ आपने मौज़ू छेड़ दिया परेशानी में पड़ गये । आप अलहम्दो लिल्लाह परेशानी में नहीं पड़ेगें । क्योंकि मुसलमान तो कलमा पढ़ कर मुतमईन हो जाता है बाक़ी परेशानी उसके सर आती है मुसीबत तो किताबें पढ़ने वाले की है आप अब क्या करें ? उन्होने कहा : नहीं साहब जैसा लिखा है वैसा पढ़िये तो क्यां मआज़अल्लाह वो जैसा लिखा था वैसा नहीं पढ़ते थे । कहा : ये कौन कह सकता है किसकी मजाल है तो यूँ कहिये तब इस तरह लिखा था अब इस तरह लिखा है अब ये सवाल है कि तीसरे दौर में "सेरात" "स्वाद" से लिखा था या "सीन" से लिखा गया और तीसरे दौर में मालिके यौमिद्दीन लिखा गया कि मल्के यौमिद्दीन लिखा गया । कहा : क्या पता ! क्या था तो कन्फ्यूज़न । नबी की इस हदीस से शुरू हुआ ज़ेहन मुसलिम में नबी ने कहा मुसलमानों ! मैं तुम में दो वज़नी चीज़े छोड़े जाता हूँ एक कुरआन ! तो उन्होने नबी का दामन पकड़ लिया । कहा छोड़ा कुरआन किसके पास छोड़ा कुरआन । या रसूलअल्लाह छोड़े जा रहे है तो पता भी बता दीजिये कि कहाँ छोड़े जा रहे है । (सलवात) तवज्जोह फ़रमाईयेगा ।

लोग कहते है कि आपने इस हदीस को अहलेबैत की शान में बना लिया । हम और हमारी क्या शान है कि हदीस में शान बना लेगें हम तो इस हदीस को ये समझते है कि ये कुरआन की शान है

देखो मै तुम में दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ एक कुरआन, बस कुरआन की शान में है ये हदीस जो उन्होने कहा कि अपनी इतरत, इतरत की शान थोड़े बताई है वो तो कुरआन का एडरेस बताया है । (सलवात) वो तो पता बताया है कि हम मुम्बई आये कुरआन की तिलावत करना थी कुरआन घर पर भूल आये हमने आपसे पूछा-कुरआन कहाँ मिलेगा ? आपने कहा चले जाईये "हैदरी कुतुबख़ाना" में मिल जायेगा । तो पता ये है नबी ने कहा : मैं कुरआन छोड़े जा रहा हूँ ये न पूछना कहाँ मिलेगा ? इतरत को मैं छोड़े जा रहा हूँ और ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । क्या मानी इसके, इतरत के पास जाओगे तो कुरआन मिलेगा कहीं और न मिलेगा । (सलवात) और ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें कब तक नहीं होगें पहले दौरे ख़िलाफ़त तक नहीं होगें, इसके बाद हो जायेगें, दूसरे दौरे ख़िलाफ़त तक नहीं होगें इसके बाद हो जायेगें । तीसरे दौरे ख़िलाफ़त तक न होगें उसके बाद हो जायेगें । चौथे दौरे ख़िलाफ़त जुदा न होगें उसके बाद हो जायेगें । हौज़े कौसर तक, यानी कहा : कभी जुदा न होगें कौसर तक जायेगें दोनो । कुरआन और अहलेबैत बग़ैर जुदा हुऐ इसका मतलब ये है कि, मुसलमानों में कौसर तक वही पहुँच सकता है जो दोनो से वाबस्ता हो । (सलवात) दोनो जुदा नहीं होगें । अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । आप कहा कीजिये जुदा न होगें हम ने तो जुदा कर दिया । कहा : जुदा कर दिया तो क्या हुआ? बहस में पड़ गये के मालिके यौमिद्दीन पढ़ें या मलके यौमिद्दीन है । बहस में पड़ गये कि सेरात "स्वाद" से है या "सीन" से । बहुत परेशान किया मैने आपको, पाँच दस मिनट और, आज कुरआन में क्या है ? भई आज तक तो सब जगह मालिके यौमिद्दीन है । तो फिर ये सुन्नी कुरआन नहीं है । ये सुन्नी कुरआन घबराईयेगा नहीं ये सुन्नी कुरआन नहीं है, फिर मालिके यौमिद्दीन कौन पढ़ता था । कहा : अली तो मालिके यौमिद्दीन पढ़ते थे । सेरात, कहा · "स्वाद" से पढ़ते थे । तो ये शिया कुरआन है । आँ !! शिया कुरआन कैसे ? अरे भई । जिस कुरआन में वह लिखा हो जो अली पढ़ते थे वो शिया हुआ । और वह कुरआन जिस में लिखा था जो ख़लीफ़ा दोएम पढ़ते थे वो सुन्नी हुआ

। और आज कुरआन एक है । (सलवात)

आज कुरआन एक है इसका मतलब ये है कि मेरी तक़रीर सुनने के बाद शिया तो ये कुरआन छोड़ेगा नहीं । मै क्या कह रहा हूँ ? अगर किसी जाहिल । मै हर सुन्नी को नहीं कह रहा हूँ । सुन्नीयों मे भी तबक़े है । ऐसे भी सुन्नी है जो काबा के मुतावल्ली बने है, और ऐसे भी सुन्नी है जिन्हे कहतें है तुम काफ़िर हो । तुम हज नही कर सकते तुम मदीने नहीं जा सकते । भई इन्क़ेलाब में बहस चल रही है हिन्दुस्तान के एक बहुत बड़े आलिम को गिरफ़्तार कर लिया, पकड़ लिया उन की किताब ज़ब्त कर ली । उनके कुरआन को ज़ब्त कर लिया, उनको मदीने नहीं जाने दिया । मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब को, जो बरेली के इतने बड़े आलिम के करोड़ो मुसलमान जिन के मानने वाले हिन्दुस्तान में है । है कि नहीं । हाँ ! इस पर इन्क़ेलाब में मज़ामीन चल रहे है । जुलूस भी निकला । यहाँ किस बात पर जुलूस निकला । जो समझदार सुन्नी मुसलमान है । उन्होने एहतेजाजी जुलूस निकाला । उस हुकूमत के ख़िलाफ़ निकाला । जिस हुकूमत ने एक फ़िरक़े के आलिम को गिरफ़्तार किया । सिर्फ़ इसलिये कि उस फ़िरक़े के अक़ीदे इसी फ़िरक़े के अक़ीदों से मिलते । निकाला जुलूस कि नहीं । इसीलिये हम मोहर्रम में जुलूस निकालते है । फ़र्क़ ये है कि आपने सउदी हुकूमत के ख़िलाफ़ निकाला हमने यज़ीदी ज़ेहनीयत के ख़िलाफ़ निकाला । आपने पोते के ख़िलाफ़ निकाला हमने दादा के ख़िलाफ़ निकाला । (सलवात) आप बताईये । ख़ैर अब जो मरासले इन्क़ेलाब में छप रहे है वो कहते है कि ये जुलूस ग़लत निकला । मालूम हुआ, कि एक मुसलमान ऐसा भी है जो हमेशा जुलूस से घबराता है । इधर कोई जुलूस निकला और उसके कान खड़े हुऐ । और न जाने क्यो यक़ीन हो जाता है कि हमारे ख़िलाफ़ होगा । (सलवात)

ये चोर की दाढ़ी मे तिनका क्यों ? कोई भी जुलूस निकला आपने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा । सवाल ये है कि किसी आलिम को आप गिरफ़्तार करेगें । ठीक है । वह आप के मसलक पर नहीं है या

तो कह दीजिये कि हज सिर्फ़ एक फ़िरक़ा करेगा और बैठ कर मनाज़िरा कर लिजिये कि कौन करेगा ? किस का हक़ ज़्यादा होगा । उन्होने कहा हज सारे मुसलमानों का, वो तो है सब मुसलमानों का, हम कब कहते है कि एक फ़िरक़ा जाये । मगर आप ये कह रहे है कि जो हमारे मसलक का नहीं है वह न आये । क्यों ? हम मक्का के मोतावल्ली है । मोतावल्ली आप को किसने बनाया ? अंग्रेज़ों ने । (सलवात) देखिये सऊदी को समझा दीजिये कि वह काबा में फ़िरक़ा वारियत न फैलाये । इसलिये कि फ़िरक़े की बात आयेगी तो सिर्फ़ शिया ही जायेगा हज को - क्यों ? इसलिये कि इसके मौला की जन्म भूमि है । (सलवात) काबे में हमारा पहला इमाम पैदा हुआ काबा पर हमारा हक़ पैदाईशी है । और सब का ग़सबी है । (सलवात) तवज्जोह फ़रमाई आपने । सवाल ये पैदा होता है कि आप ने बैन्ड कर दिया । नहीं जा सकते मदीने । इसके ख़िलाफ़ लोगों ने एहतेजाज किया । क्यों कि ये अमल ख़िलाफ़े इस्लाम है । कमाल है, कमाल है । मुनाफ़िक़ तवाफ़ कर सकता है । मुनाफ़िक़ शरीके नमाज़ हो सकता है । तवज्जोह चाहता हूँ । और मुसलमान का एक फ़िरक़ा जिसको कुछ खुश अक़ीदा कहते है । बरेलवियों को खुश अक़ीदा कहा जाता है । अब आप बताईये इसका क्या ईलाज है । ये खुश अक़ीदा मुसलमान । यानी आप बद अक़ीदा, क्या मानी ? उन्होनें कहा उन दो फ़िरक़ों ने इसलाम को बरबाद किया । एक खुश अक़ीदा सुन्नीयों ने एक खुश अक़ीदा शियों ने, तो इसलाह बद अक़ीदा ही कर रहे है । मगर सवाल ये है कि क्या फ़र्क़ है ? कहा : ये लोग अहलेबैत को चाहते है । कहा : आप ? कहा : हम असहाब की पैरवी करते है । अच्छा आईये कुरआन में "सीन" से सेरात, मालिक का अल्लिफ़ हटाईये । मल्क लिखिये । कहा : वह नहीं लिख सकते । कहा : सारे कुरआनों में मालिके यौमिद्दीन लिखा है तो ये किसकी कारीगरी है । साढ़े दस बरस तक मुल्क रहा तवज्जोह चाह रहा हूँ , और साढ़े दस बरस तक "सीन" से सेरात रहा ये "स्वाद" से कब हो गया । ये मालिक कब हो गया ? और किसने किया ? कब किया ? फिर ये रवायतें सुनने वाले क्या कर रहे थे ?

क्यों करने दिया ? जब अली ने मस्जिदे नबवी में मुसलमानों को नमाज़ पढ़ाई और मालिके यौमिद्दीन कहा तो किसी माई के लाल में हिम्मत नहीं थी कि अली को टोके, क्यों न अली को टोका ? (सलवात)

क्यों नही टोका कि या अली ये तो मल्क पढ़ा जाता था । आप मालिक कैसे पढ़ रहे हैं ? किसी ने कुछ न कहा । अजब लोग हैं । "सीन" से पढ़ें तो पढ़े लेते हैं । मल्क पढ़े तो पढ़े लेते हैं । आज क्या पढ़ते है ? कहा : आज तो मालिक ही पढ़ते हैं, आज तो मालिक ही पढ़ते हैं । आज क्या पढ़ते हैं ? आज तो "स्वाद" से ही सेरात पढ़तें हैं किस वजह से ! अली की वजह से, तो फ़िरके तुम्हारे कुरआन अली का । (सलवात) और आयतें इन्शाअल्लाह पेश करूगाँ । वह सूरये जुमा है । वह भी परेशानी है । सही बुख़ारी के सफ़ा १२५ में है कि हज़रत उमर सूरह जुमा में फ़ासअवानी ज़िक्रअल्लाह के बजाये फ़ामज़वाली ज़िक्रअल्लाह पढ़ा करते थे । अब बताईये । सूरये अलहम्द का झगड़ा था ही । ये सूरये जुमा का भी झगड़ा । पंजगाना तो गई-गई , जुमा की भी गई । (सलवात) तवज्जोह चाहता हूँ । आज मुसलमान क्या पढ़ता है ? कहा : वही जो लिखा है । क्या लिखा है ? कहा : वही जो अली पढ़ते थे । देखिये पत्थर रख रहा हूँ । हटा दे कोई । हुज़ूर औल फ़ौल बकना तो और है । तारीख़ की दलील लाओ । क्योंकि आज पढ़ते हो । जो अली ने जुमा के सूरे मे पढ़ा । सूरये जुमा में, क्यों नहीं वह पढ़ते हो जो ख़लीफ़ये दोउम पढ़ते थे । अरे साहब ! कैसी बातें करते हैं । अली को ख़लीफ़ा मानते हैं । ख़त्म हो गया, बात माने झगड़ा ख़त्म । तवज्जोह चाह रहा हूँ । इत्तेहादे बैनुल मुसल्लेमीन वाले सुन्नी, इत्तेहाद चाहते हैं । इत्तेहाद तो हो गया । चाहने की क्या बात, पूरा कुरआन वही ले लिया जो अली ने दिया । ठीक है अली ने सोचा जो हमने लिखा वो ले नहीं रहे है । तो लिखाओ । पढ़ें दस बरस ।तसीह करो । लेकिन पास होगा हमारे ज़रिये । और फिर जो सूरह जिस तरह पढ़ें कि क़यामत तक वैसा ही छ्पा करेगा । (सलवात)

वही छपेगा तो हुज़ूर कातिबाने वही ने कुरआन लिखा । ज़ैद बिन साबित ने कुरआन लिखा । ख़लीफ़ा दोउम ने साढ़े दस बरस तक तसहीह की । ख़लीफ़ा ने उसे फिर से जमा किया । इसे धोया गया । इसे मिटाया गया । हड्डियों पर से, चमड़े पर से, और जो आज कुरआन है उम्मत के पास वो अली की नज़र से गुज़रा हुआ । कमाल ये है कि खुद अली ने नज़र भी न डाली । अबू असवद तुम लिखो लिख कर मुझे दिखाना । या मौला । अपना लिखा दे दीजिये । कहा : नही दूगाँ । जब तुम ने इन्कार कर दिया तो क्यों लाऊँ ? कहा : शागिर्द से लिखवाऊँगा । ज़ेर और ज़बर लगवाऊँगा । नुक़्ते रखवाऊगाँ । पास करूँगा । और क़यामत तक वही रहेगा जो मेरा पास किया हुआ है । ज़रा आप मुलाहेज़ा फ़रमायें मैं क्या कह रहा हूँ । अब कल से नुक़्तें और ज़ेर ज़बर की बहस होगी । (सलवात) आप ज़रा इस मन्ज़िल को देखें । अबू असवद ने कहा : मौला ! लोग कुरआन ग़लत पढ़ते है । शिया भी कितना अक़्लमन्द होता है मैं क्या करूँ ? अल्लाह ने शियों को ज़ेहन ही ऐसा दिया है । तो ये तो अल्लाह की अदालत के ख़िलाफ़ है कि एक फ़िरक़े को अच्छा ज़ेहन दे और दूसरे को.... अस्तग़फ़ेरुल्लाह जो सोचें वो काफ़िर तवज्जे चाहता हूँ । अल्लाह ने एकसा ज़ेहन दिया है सबको यहाँ विलायते अली अलैहिस्सलाम ने असर कर दिया । (सलवात) आप ने मुलाहेज़ा फ़रमाया । कहा : या अली ! चौथा दौरे ख़िलाफ़त, बैयत हुई है, पहला ख़ुतबा है । अली आये हैं । ख़ुतबा दे रहे है । नमाज़ पढ़ा रहे है । अबू असवद खड़े हुऐ हैं । या अली कहा : क्या है ? कहा : लोग कुरआन ग़लत पढ़ते है ये नहीं कहा कुरआन ग़लत लिखा है । कहा : लोग ग़लत कुरआन पढ़ते है । मैं क्या कह रहा हूँ ? यही तों बात है कि ग़लत पढ़ते है । अब लिखा ग़लत है । इसलिये ग़लत पढ़ते है, या सही लिखा है । फिर भी ग़लत पढ़ते है । अब आप बताईये । ग़लत लिखा है तो किसी और पर इल्ज़ाम है और लिखा सही है और पढ़ने वाला ग़लत पढ़ रहा है तो पढ़ने वालों पर इलज़ाम आयेगा । सवाल है कि नहीं कहा वह तो है । अब आप हमें बताईये कि मौला ने क्या पढ़ा ? तो फिर क्या बात है । एराब लगा दूँ । एराब लगा दिये

गये । ज़ेर, ज़बर, पेश, जज़्म, कब ऐतबार करेगें लोग । कहा : मत घबराओ । लगाओ ऐराब, हमे दिखाओ, हम तस्दीक़ करेगें हम तस्हीह करेगें । अबू असवद कुरआन लिख कर लाये और अली को दिखाया अली ने देखा, देखने के बाद कहा : ठीक है बस वही ठीक चला आ रहा है । ज़रा ग़ौर फ़र्माइए, आप । मौला आप ही लिख दीजिये । कहा : मै तो लिख चुका हूँ वही ले आईये । तो फिर दो कुरआन हो जायेगें । एक सही और एक ग़लत नहीं । तवज्जोह फ़रमाई आपने । क्योंकि उस कुरआन में मालिक की जगह मल्क होगा और इस कुरआन मे मालिक होगा । इसमें सेरात "सीन" से होगा । इसमें "स्वाद" से होगा । लोग कहेगें शिया कुरआन चाहिये । शिया कुरआन ? हाँ ! वही जिसमें स्वाद से सेरात है सुन्नी कुरआन । जिसमें सीन से सेरात है । ये झगड़ा चलता कि नहीं ? और जहाँ सीन और शीन झगड़ा आता वहाँ न जाने कितने नुक़्ते बदल जाते और कितना इमला बदल जाता । अब अली ने कहा : सही करो, ठीक करो, लाओ, दिखाओ, तारीख़ में लिखा है कि जब अबू असवद ने एराब लगाये तो मजमा लग गया । अबू असवद लाओ हम नक़्ल करेगें खुद लोगों ने नक़्ल किया अबू असवद से और नक़्ल करके ले गये । अलहम्दो लिल्लाह, शुक्रअल्लाह कि आज हर सुन्नी के पास वही कुरआन है । जों अली ने सही किया और न किसी से गवाही ली । न किसी सहाबी से मश्वरा लिया । उन्होने बताया कि चन्दे का कुरआन और होगा । और अल्लाह का दिया और होता है । (सलवात)

शियों को हटाओ, निकालो, काफ़िर है, कुरआन को हटाओ, कुरआन कैसे हटायें, अरे वो भी अली वाला है । हम भी अली वाले है काबा भी अली वाला है । कुरआन भी अली वाला है । अल्लाह भी अली की ही मदद करता है । नबी भी अली की ही तारीफ़ करते है तो अली के बुग़्ज़ में किस किस को छेड़ोगे । (सलवात) किस किस को छेड़ोगे । इसका मतलब ये कि बहुत अहम मोड़ पर गुफ़्तगू आ गई है । कि जो कुछ आलमें इस्लाम में हुआ वो सिर्फ़ मुख़ालेफ़ते अहलेबैत में हुआ । अली ने कहा : रवायात बिगाड़ दो, हदीस गढ़ लो सोने में जितना चाहे पीतल मिला दो या पीतल पर सोने का पानी फेर लो

। हम नहीं परवाह करेगें । खोल लो कारख़ाने ढाल लो सिक्के पढ़ों हदीसे बनाओ रवायतें हमको क्या परवाह मगर हम कसौटी पर । कसौटी देखेगें। तवज्जोह चाह रहा हूँ । लोग कहते है कि जब बैयत के ज़रिये ख़िलाफ़त नहीं होती तो अली ने क्यों तस्लीम की ? आज सुनो अली ने उम्मत के लिए ख़िलाफ़त तस्लीम नहीं की थी कुरआन की तसहीह के लिये ख़िलाफ़त कुबूल की थी। (सलवात) और आज जो मुसलमान कुरआन की तिलावत करता है और हर हर हरफ़ पर दस दस हसनें पाता है । हदीस सुना दी मैने शुरू में, ये अली का सदक़ा है । क़सम खुदा की अगर अली कुरआन मजीद को दुरूस्त न कर देते "सीन, स्वाद" और "सीन" व "शीन" का झगड़ा चलता तो बजाये सवाब के अज़ाब ही होता रहता । तो वह कुरआन सवाब रखता है जो अली के साथ है। इसलिये पैग़म्बरे इस्लाम ने कहा था । कि अली कुरआन के साथ है और कुरआन वह अली के भरोसे पर, हसन के भरोसे पर, अपनी बेटी फ़ात्मा के भरोसे पर उसकी औलाद के भरोसे पर । वरना हमें मालूम है कि तुम कितने बड़े कारीगर हो । (सलवात)

अब मुलाहेज़ा फ़रमायें यहाँ तक तहरीफ़ लफ़्ज़ी की बहस थी । तहरीफ़ की दो क़िस्में है । तहरीफ़े लफ़्ज़ी और तहरीफ़े मानवी । ये तो कुछ नहीं हैं ये तो लफ़्ज़ों का झगड़ा है । जो मैने तीन दिनों में सुनाया मुख़्तसर करके दूध नहीं पिलाया । बालाई, जमी जमाई । वरना सैकड़ों हवाले है । कहाँ तक आप का वक़्त सर्फ़ करूँ । चुन चुन कर मैने सुना दिये कि कोई न बचा जो कुरआन के मामले में फंसा न हो । दामने अहलेबैत पाक है, एक ही कुरआन अली ने सुनाया, वही नबी ने सुनाया, वही फिर अली ने सुनाया, वही बीबी फ़ात्मा ने पढ़ा, वही कुरआन हुसैन ने पढ़ा, वही कुरआन आज तक मौजूद है। उन्होनें कहा : जी हाँ ! वह तो है । ठीक है आले रसूल थे । आप तो गुलामाने रसूल है । बे शक । गुलाम नहीं है अली के । गुलाम के गुलाम है अली के । हम गुलामाने अली है हमारी माँयें बीबी और बहने बीबी फ़ात्मा की कनीज़ें है । फ़िज़्ज़ा की कनीज़ें है हम को कनीज़ की कनीज़ी का शरफ़ हासिल है । उन्होने कहा हाँ

। फ़ात्मा की कनीज़ होती । फ़िज़्ज़ा की ? जी हाँ फ़िज़्ज़ा ! कौन थी फ़िज़्ज़ा ? जिसने चालीस बरस तक कुरआन में बातें की । अल्लाहो अकबर तमाम तारीख़े लिखती है कि जनाब फ़िज़्ज़ा ने क़सम खाई थी कि अपनी मर्ज़ी से अपनी लफ़्ज़े नहीं बोलूगीं । जो जो बात करेगा । कुरआन की आयतें पढ़ पढ़ कर जवाब देती थीं । और लोग सुब्हान अल्लाह, कारीगर का अलफ़ाज़ मैने यूँ नहीं कहा है । बग़ैर सोचें समझे नहीं बोलता हूँ । तारीख़ है कि असहाब बैठते थे । बैठ कर सवाल बनाते थे । ऐसा सवाल बनाओ कि फ़िज़्ज़ा आयत न पढ़ सकें । बड़े बड़े बैठते थे । बड़े बड़े और ये कहते थे । यू पूछे वो पूछे । इस पर तो कोई आयत न मिलेगी । ढूँढे से और फ़िज़्ज़ा हर सवाल का जवाब कुरआन की आयत पढ़ कर देती थीं तुम कहते हो अहलेबैत वाले क्या जाने । अहलेबैत की कनीज़ के इतना भी न जान पाता । (सलवात) बस एक जुमला सुनिये दिमाग़ तो मेरा ऐसा ही है । मै क्या करूँ ?ख़ुद अपने दिमाग़ से परेशान हूँ । जब मैने ये रवायत पढ़ी कि लोग बैठ कर ऐसा सवाल बनाते थे कि फ़िज़्ज़ा आयत न पढ़ सकें । तो मैने कहा ये कैसे मोमिन बिल कुरआन थे ।

कुरआन कहता है कि कोई ख़ुश्क व तर ऐसा नहीं है जो कुरआन में न हो । और वह इस फ़िक्र में है कि कोई ऐसी बात पूछे, जो कुरआन में न हो । अच्छा हुआ ख़िलाफ़त की बात नहीं पूछी । (सलवात) वरना फ़िज़्ज़ा कुरआन से जवाब देतीं । अल्लाहो अकबर । और वही फ़िज़्ज़ा जिस ने चालीस बरस तक कुरआन से जवाब दिया ऐसी आलमा, ऐसी कुरआन का इल्म रखने वाली, ऐसी मानिये कुरआन की समझने वाली कि हर एक सवाल का जवाब कुरआन की आयत पढ़ कर देती । कहा : देखो मै क्यों पढ़ रही हूँ । समझो । अरे तुम्हारे बड़ो बड़ों के पास मुक़दमा जाता है तो तुम गवाहियाँ मांगते हो । लाओ दिखाओ किसी आयत को याद है । अरे हमसे ले लो कुरआन, तुम्हारे पास नहीं है हमसे ले लो । फ़िज़्ज़ा तुझे कहाँ से मिला । कहा : इसी घर में तो छोड़ गये थे । (सलवात) इसी घर में तो छोड़ गये थे । वह फ़िज़्ज़ा जो हर बात का जवाब कुरआन की हिदायत से देती थीं । वह कनीज़ है उस घर की । और उसे फ़ख़्र है

कि वो उस घर की कनीज़ है । और फ़िज़्ज़ा को अल्लाह ने इतनी तूलानी उम्र दी कि पूरे पंजतन का दौर गुज़रा । तवज्जोह चाहता हूँ । और करबला में भी वही फ़िज़्ज़ा है । बीबी ज़ैनब के साथ वही फ़िज़्ज़ा है । क़ैद खाने में भी वही फ़िज़्ज़ा है । मदीने में भी वही फ़िज़्ज़ा पलट कर आई । अरे कुछ नहीं है तो फ़िज़्ज़ा से पूछ लो ।

कौन फ़िज़्ज़ा जिसने माँ की ख़िदमत की । जिसने बेटों की ख़िदमत की । जिसने हसनैन को झूला झुलाया । जिसने हसनैन के लिये चक्की पीसी । जिसने बीबी फ़ात्मा के घर में झाड़ू दी । जिसने हसनैन के कपड़े धोये । जिसने हसनैन के लिये जौ की रोटियाँ पकाई । वह फ़िज़्ज़ा करबला में है और बार बार आ रही है । और जा रही है । कितनी ज़ईफ़ हो गयी थीं । जनाबे फ़िज़्ज़ा मगर उस ज़ईफ़ी के बावजूद तीन दिन की भूख, तीन दिन की प्यास और ख़िदमत में मसरूफ़ हैं । यही फ़िज़्ज़ा जिन्होने अहलेबैत को रुख़सत किया और जब भी बनी हाशिम से कोई निकलता था । फ़िज़्ज़ा दरे ख़ैमे तक आती थीं । आख़िरी खुदा हाफ़िज़ फ़िज़्ज़ा कहती थीं । अल्लाहो अकबर । और वही फ़िज़्ज़ा है कि जब कोई घोड़े से गिरता था तो बीबी ज़ैनब को जा कर ख़बर देती थीं । बीबी ज़ैनब आप के लाल घोड़े से ज़मीन पर आ गये । बीबी ज़ैनब क़ासिम घोड़े से ज़मीन पर और यही फ़िज़्ज़ा थीं जो लम्हे लम्हे की ख़बर ला कर देती थी । और कहती थीं कि बीबी अली अकबर शहीद हो गये । क़ासिम शहीद हो गये । और यही फ़िज़्ज़ा दरे ख़ैमे पर थीं जिसने आकर बताया कि बीबी अलम को झटके लग रहे है । बीबी इस्लाम का अलम सरनगूँ हो रहा है ।

फिर दौड़ कर आई बीबी अलम सम्भल गया है । फिर दौड़ी बीबी अलम फिर झुक गया । फिर दौड़ कर आयीं न घबराओ अलम फिर सम्भल गया । एक मरतबा आकर कहा । बीबी ग़ज़ब हो गया । अलम ज़मीन पर आ गया । अब्बास घोड़े से ज़मीन पर आ गये । ऐ बीबी ज़ैनब हुसैन सिधारे, अली अकबर साथ गये । नौहये हुसैन फ़िज़्ज़ा ने सुनाया । बीबी आप का भाई कहता गया है । अब्बास

तुम्हारे मरने से हुसैन की कमर टूट गई है । अब्बास तुम्हारे मरने से राहे चाह व तदबीर मसदूद हो गई । हाँ अज़ादारों, हाँ हुसैन का मातम करने वालों । मातमे हुसैन अब्बास का हक़ था । मगर जिस के दोनो शाने क़लम कर दिये गये । इसीलिये हम दोनों हाथों से मातम करते है । आक़ा । आप अपने भाई का मातम न कर सके । लेकिन पूरी क़ौम क़यामत तक मातम करती रहेगी । जज़ाकुम रब्बेकुम हाँ ! आप रोयेंगे और बहुत रोयेगें । क्योंकि अब्बास अलमदार का मातम है । जब ये ख़बर ख़ैमा गाह मे पहुँची तो लिखा है कि हुसैन के वापस आने तक सत्तर बार बीबी ज़ैनब दरे ख़ैमा तक आयीं । फ़िज़्ज़ा देख कर आओ । मेरा भाई वापस आया कि नही । फ़िज़्ज़ा सकीना कहाँ है ? अतफ़ाले हुसैन कहाँ हैं ? अल्लाह, अल्लाह हुसैन चले । जनाब अब्बास की शहादत फ़ुरात पर जाने में नहीं हुई । तमाम मक़ातिल लिखते है कि जब अब्बास ने आवाज़ दी कि ... है किसी में दम है ! कि मुक़ाबले में आये । मै हुसैन के बच्चों के लिये पानी लेने आया हूँ । तो लिखा है कि मैमना भी अपनी जगह से भाग गया । मैसरा भी भाग गया । क़ल्बे लश्कर भी भाग गया ।

और जब अब्बास फ़ुरात के किनारे पहुँचे, जहाँ चार हज़ार पहरेदार घाट पर पहरा दे रहे थे । तो आलम ये था कि जैसे ही लोगों ने कहा : अब्बास आ रहे है तो रास्ता साफ़ हो गया । पहरेदार फ़ुरात छोड़ कर भाग गये । अब्बास ने घोड़ा फ़ुरात में डाल दिया। मश्कीज़ा सकीना का पानी में डूबो दिया । आप जानते हैं, सूखी हुई मश्क । वो भी चार दिन की सूखी हुई । वो भी करबला की गरमी में । बहुत देर लगती है मश्कीज़े को तर हो कर पानी क़बूल करने में । और इतनी देर आलम क्या है मश्कीज़ा फ़ुरात में है और नज़र मैदाने करबला की तरफ़ । मीर साहब ने इस मन्ज़र को लिखा है कि-

लरज़ा पड़ा था रोब से हर नाबकार को ।

रोके था एक शेरे जरी दस हज़ार को ।।

किसी की हिम्मत नहीं थी । एक मरतबा घोड़े की गरदन में लगामें

डाल दीं । ऐ अस्पे बावफ़ा, तू भी प्यासा है । तू पानी पी ले । घोड़े ने अब्बास को मुहँ उठाकर देखा । मै पानी पी लूँ ..... और आक़ा आप प्यासे हैं । आक़ा ख़ैमे मे सकीना प्यासी है । झूले में अली असग़र तड़प रहा है । दुनियां इस घर के पले हुऐ जानवरों का मुक़ाबला नहीं कर सकती । गुलामों और कनीज़ों का क्या सवाल है ? बढ़े चुल्लू में पानी लिया, हाथ उठाया, लश्करे शाम को बताने के लिये कि देखो फुरात पर अब्बास का क़ब्ज़ा है, पानी को देखा, फेंक दिया, न जाने पानी में किसकी शक्ल नज़र आ गयी ? प्यासी भतीजी का चेहरा नज़र आया होगा । अब मश्कीज़ा ले कर निकले फुरात से । उमरे साद ने कहा ग़ज़ब हो गया । सक़्क़ा ने पानी भर लिया । देखो अगर पानी पहुँच गया तो तुममे से एक भी ज़िन्दा न बचेगा । जब प्यासे ऐसा लड़ रहे हैं । अगर क़रीब जाने की हिम्मत नहीं तो दूर से तीर तो चला सकते हो। कमानदारों का लश्कर आगे बढ़ा, तीरों का मेंह बरसने लगा । हमीद कहता है । कि अब्बास की तरफ़ जो तीर चले तो ज़मीन पर साया महसूस होता था । और शेर का क्या है कि मश्कीज़ा दांतो से थामे हुऐ एक हाथ में नैज़ा एक हाथ में अलम दांतों में मश्कीज़ा और जब तीरों की बारिश हुई, तो मश्कीज़े पर झुक गये सारे तीर अपने सर पर लिये । कि एक तीर पहलू से आकर मश्कीज़े पर लगा ।

मश्कीज़े को छेदता हुआ अब्बास के पहलू में लगा । दिल का खून पानी में मिलकर बहने लगा । जज़ाकुम रब्बोकुम । खुदा आप को किसी ग़म में न रूलाये सिवाये ग़मे अहलेबैत के ऐ अज़ादारों । ये कह कर अब्बास ने देखा की पानी बह गया फिर फुरात का रुख़ किया । अब फुरात के किनारे लश्कर आ चुका था । फिर भी किसी में जुर्रत न थी कि सामने से आजाये । पुश्त से किसी ने वार किया । दाहिना हाथ कट कर ज़मीन पर गिरा । अब्बास ने बायें हाथ में मश्को अलम सम्भाला । फुरात की तरफ़ बढ़े । किसीने बायें हाथ पर वार किया । वह हाथ भी कट कर ज़मीन पर गिर पड़ा फिर भी हिम्मत, फुरात की तरफ़ बढ़ रहे है । और कह रहे है ऐ अस्पे बा वफ़ा

मुझे फुरात तक पहुँचा दे ताकि मै पानी भर लूँ और सकीना तक पहुँचा दूँ कि एक मरतबा सर पर गुरज़ लगा । सम्भला न गया । अलमदारे लश्करे हुसैनी ज़मीन पर आया । बस एक तसव्वुर और मजलिस तमाम । हुसैन चले चूकिं पहले शाने कटे थे इसलिये हुसैन को शाना मिला । हाथ उठाया आँखों से मलने लगे । हुसैन को याद होगा... ऐ अब्बास । ऐ अब्बास । ये वही हाथ है जो बाबा ने इक्कीसवीं रमज़ान की रात को मेरे हाथों में दिये थे आज वो हाथ हुसैन को कटे हुऐ मिले । ऐ अब्बास !

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आठवीं मजलिस

ख़ुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने मिल्लत !

सरवरे कायनात ख़त्मी मरतबत जनाब मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने इस हदीस में इरशाद फ़रमाया है कि ऐ मुसलमानों ! मैं तुम में दो वज़नी चीज़े छोड़े जा रहा हूँ । एक कुरआन और दूसरे अपनी इतरत । ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें, और अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनों से वाबस्ता रहाना इन दोनो से तमस्सुक रखना इन दोनो की पैरवी करना । इस हदीस के ज़ेल में मुसलसल गुफ़्तगू "कुरआन और अहलेबैत" के मौज़ू पर जो आप की ख़िदमत में अन्जुमन इमामिया के इस अशरे की सौ साला यादगार में जारी है । इसमें आपकी ख़िदमत में नज़ूले कुरआन की तफ़्सीर पेश करने की कोशिश की गयी और उसके बाद जमा कुरआन पर आपके सामने गुफ़्तगू हुई कि किस किस तरह से कुरआन जमा किया गया । कई अक़ीदे तहरीफ़े कुरआन पर आपके सामने गुफ़्तगू की गई । जो कल इस मन्ज़िल पर पहुँची कि लफ़्ज़ी इख़्तेलाफ़ भी कुरआन में मौजूद है । यानी जो आयत इस वक़्त क़ुरआन में मौजूद है । उसमें क्या तग़य्युर और क्या तबद्दुल हुआ । इस सिलसिले में कल तक आपके सामने गुफ़्तगू की गई । गुफ़्तगू मुकम्मल नही हुई । मैने अर्ज़ किया कि बे शुमार हवाले अजल्लाये

उलेमाये अहले सुन्नत ने अपनी कुतुब में लिखें है इससे ये बात साबित होती है कि अक्सर व बेश्तर असहाब और खुलफ़ाये राशेदीन में से भी ख़लीफ़ाये दोएम ने भी इस बात का इज़हार किया कि कुरआने मजीद मे कमी व बेशी हुई है। कुछ आयतें कम कर दी गईं । कुछ आयतें बदल दी गईं । चूंकि अभी और आगे जाना है । इसलिये मौज़ू को मुकम्मल करने के लिये सिर्फ़ एक हवाला और आप की ख़िदमत में पेश किया जायेगा । जिससे आप को अन्दाज़ा हो कि कुरआन मजीद में किस क़द्र तब्दीली की रवायतें मौजूद है । ये रवायात किताबुलइत्तेक़ान जिल्द १, सफ़ा ७२ पर मौजूद है जिस में अल्लामा जलालुद्दीन स्योती ने तहरीर फ़रमाया है ।

रवायात से पता चलता है कि ख़लीफ़ाये दोएम ने इस बात का इज़हार फ़रमाया कि कुरआने मजीद में दस लाख सत्ताईस हज़ार कलमात थे। और अब सिर्फ़ सत्तर हज़ार नौ सौ चौतीस रह गये । यानी थोड़ी बहुत तब्दीली नहीं हुई है । थोड़ी बहुत कमी व ज़्यादती नहीं हुई है । कहाँ दस लाख सत्ताईस हज़ार कलमात और कहाँ सिर्फ सत्तर हज़ार नौ सौ चौतीस कलमात। इसका मतलब मामूली तहरीफ़ के क़ायल नहीं । बल्कि नौ लाख उन्चास हज़ार छ्यासठ कलमात नहीं रहे। और ये ज़ाहिर है कि मै आप के सामने अर्ज़ कर चुका हूँ कि जमा कुरआन की मन्ज़िल में कि कुरआन वो है जो अली इब्ने अबी तालिब ने जमा किया । एक कुरआन वो है जो ख़लीफ़ाये दोउम की फ़रमाईश पर दौरे ख़लीफ़ाये अव्वल में ज़ैद इब्ने साबित ने जमा किया और तीसरा कुरआन वो है जो ख़लीफ़ाये सोउम ने लोगों से जमा कराया । यानी कि ये तीन कुरआन है । जो जमा कुरआन के सिलसिले में रवायात मिलती है ज़ाहिर है चूँकि ख़लीफ़ाये दोउम, ख़लीफ़ाये सोउम से पहले थे इनके इन्तेक़ाल के बाद ख़लीफ़ाये सोउम ने कुरआन जमा कराया जो आज आप के सामने मौजूद है । तो ये इरशाद इनका और ये फ़रमाना इनका तीसरे कुरआन के मुताअल्लिक नहीं है बल्कि पहले कुरआन के मुताअल्लिक़ है जिसे कातेबीन वह्यी ने जमा किया था । या दूसरे कुरआन के मुताअल्लिक़ है जिसको ज़ैद

इब्ने साबित ने जमा किया था । तो कुरआने मजीद में दस लाख तेईस हज़ार कलमात थे और अब सिर्फ़ सतहत्तर हज़ार नौ सौ चौतीस कलमात रह गये हैं ।

यानी तक़रीबन साढ़े नौ लाख कलमे कम हो गये । ज़ैद इब्ने साबित ने जो कुरआन जमा किया । इस कुरआन में दस लाख कलमें कम हैं, और वही कुरआन है जो जारी रहा । एक बात तो मुझे ये अर्ज़ करना है चूंकि तरावीह ख़लीफ़ये दोएम के दौर से जारी हुई और इनकी सुन्नत और इनका इरशाद आज तक मुसलमानों में जारी है । तरावीह में एक लफ़्ज़ टेक्निकल है जो इस्तेमाल किया जाता है । जिस का नाम है ख़त्मे कुरआन । यानी तीस दिन के अन्दर तरावीह होगी । माहे रमज़ान में और एक कुरआन ख़त्म होगा । सवाल ये पैदा होता है कि ये कुरआन जो होगा सिर्फ़ सतहत्तर हज़ार कलमात का होगा । दस लाख का नहीं होगा । (सलवात) मेरी बात पर ग़ौर फ़रमाईयेगा । मक़सद किसी पर ऐतराज़ नहीं ख़ाली फ़िक्र की बात है ये कि लफ़्ज़े ख़त्मे कुरआन क़ह ही नहीं सकते । फ़ातेहे मे भी होता है । कि फ़लां साहब का इन्तेक़ाल हुआ है दस कुरआन ख़त्म होगें बीस कुरआन ख़त्म होगे अरे भई ! ख़लीफ़ये दोउम फ़रमाते हैं कि दस लाख सत्ताईस हज़ार कलमात और सिर्फ़ सतहत्तर हज़ार रह गये । जब तक वो साढ़े नौ लाख न पढ़े जायें ख़त्म कहाँ से होगा । (सलवात) एक बात, दूसरी बात ये है कि जब इसी बात का एहसास और इतना शदीद एहसास कि मिम्बरे मस्जिदे नबवी से बैठ कर फ़रमाया कि मुसलमानों ! दस लाख बाईस हज़ार कलमे थे कुरआन में और अब सिर्फ़ सतहत्तर हज़ार रह गये तो फिर मुसलमानों को इस बात की फ़िक्र क्यों न हुई कि वो साढ़े नौ लाख कलमें भी शामिल किये जायें कुरआन में ।

और ये बेहतरीन वक़्त था कि उन दस लाख कलमों को अली से ले कर कुरआन को पूरा किया जा सकता था क्योंकि अली ये कह रहे थे मैने जो कुरआन लिखा है वोह मुकम्मल है इसका मतलब ये है कि कुरआन का नाक़िस रहना मन्ज़ूर है मगर अली से कलामे

ख़ुदा लेना मन्ज़ूर नहीं है । (सलवात) कहा ये जाता है कि इन शियों के पास चालिस पारों का क़ुरआन है तीस पारे है और दस पारे बाद में आयेगें और दस पारों पर हम काफ़िर हो गये । (सलवात) दस पारों पर हम काफ़िर हो गये । और ये साढ़े नौ लाख कलमात की रवायात आपके सामने रखी है । (सलवात) साढ़े नौ लाख कलमें क़ुरआन से कम हो गये तो सवाल ये है कि ये ख़ाना पूरी क्यों न की गई ? और यहाँ पर आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कि इस रवायात से यह साबित है कि वोह क़ुरआन जो ज़ैद इब्ने साबित ने लिखा था वो मुकम्मल नहीं था । नाक़िस था । इसलिये ख़लीफ़ये दोउम ग़लत बात तो कहेंगें नहीं । ज़ाहिर है बराबर क़ुरआन सुना । वहीं रसूल पर नाज़िल हुई रसूल अल्लाह ने सुनाया । हर वक़्त साथ के उठने वाले तो इन्होने शुमार किया होगा । कि दस लाख कलमे थे क़ुरआन में और ये कलमात कम कर दिये गये । इन कलमात की ख़ानापूरी की क्या फ़िक्र की गई । क्या हम ये तस्लीम करें कि ये साढ़े नौ लाख कलमात कम रह गये और फिर तमाम तारीख़े इस्लाम और तमाम हदीस की किताबें इस बात पर ख़ामोश हैं कि ख़लीफ़ये सोउम ने जो जमा क़ुरआन का हुक्म दिया इसमें वो साढ़े नौ लाख पूरे हो गये । ये भी नहीं है अब सवाल ये है कि जब रसूल अल्लाह ने फ़रमाया था कि मै तुम मे दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ एक क़ुरआन और दूसरे अपनी इतरत तब इरशाद फ़रमाया था कि हमें क़ुरआन काफ़ी है और जब क़ुरआन जमा हुआ तो इरशाद फ़रमाया कि साढ़े नौ लाख कलमे कम हैं तो जो चीज़ ख़ुद ही पूरी नहीं है वो किफ़ालत क्या करेगी । (सलवात)

आपने ग़ौर फ़रमाया और यही नहीं दो सूरों के मुताल्लिक़ भी रवायात है कि वो दो सूरे क़ुरआन में नहीं है और वो दो सूरे कौन से है ? ये रवायत है इनसे जिन पर सिफ़्फ़ीन का फ़ैसला छोड़ा गया और जिनको नुमाईन्दा बना कर मुसलमानों ने भेजा । किताबुल इत्तेक़ान जिल्द १ सफ़ा ६६ में है कि अशरी कहते है कि क़ुरआने मजीद में वो सूरे नहीं लिखवाये ख़लीफ़ये सोउम ने एक सूरा हफ़्द और दूसरा सूरा ख़ला । कहते है कि मुझे याद है कि ये दो सूरे

जिब्राईल ले कर नाज़िल हुऐ थे रसूल अल्लाह के ऊपर लेकिन ये सूरे कुरआन मजीद में शामिल नहीं किये गये । तो अब कमी कि पूरी फेंहरिस्त मैने आपके सामने पेश करदी । अब सवाल ये पैदा होता है कि अगर ख़ोदा न ख़्वास्ता कुरआन मुकम्मल ही नहीं है तो बग़ैर किसी ऐसी ज़ात के या बग़ैर किसी ऐसी शख़्सीयत के कि जिसके पास मुकम्मल कुरआन न हो दीने इस्लाम कैसे मुकम्मल होगा ? और फिर कमाल ये है कि जब हम कुरआने मजीद में पढ़ते है तो पहले खुदा ये फ़रमाता है कि हमने इस ज़िक्र को नाज़िल किया और हम ही इस ज़िक्र के मुहाफ़िज़ हैं । खुदा कह रहा है कुरआन में कि हम मुहाफ़िज़ है रवायतें कह रही है के आयतें कम हैं । इस का मतलब ये है के अल्लाह भी अगर अपने कलाम की हिफ़ाज़त करना चाहे तो कम करने वाले इतने बहादुर है कि अल्लाह मियाँ मुँह देखते रह जायें और वह आयते चुरा कर ले जायें (सलवात)

यहाँ अक़ीदे का मसला सामने आता है । ये बिजली का मीटर है , मशीन है । यही खुदा के बनाये हुये आपरेटर्स है फ़रक़ होता है । वह मशीन गरम हो जायेगी अगर पंखा न चलेगा और ये मजलिस जितनी गरम होगी उतनी अच्छी होगी (सलवात) खुदा कहता है कि हम अपनी किताब के खुद मुहाफ़िज़ है । हम इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं, और एक आयत में इरशाद फ़रमाता है कि कोई कुरआन में आगे से, पीछे से कोई कमी नहीं कर सकता । न किसी आयत के आगे से न किसी आयत के पीछे से कोई लफ़्ज़ निकाला जा सकता है । और फिर फ़रमाता है कि हमारी किताब में न कोई हरफ़ दाख़िल कर सकता है और न कोई हरफ़ निकाल सकता है। इसके मानी क्या हुए ? इसके मानी क्या है इधर रवायात है कि आयतें कम कर दी गईं । इधर रवायायात में है कि लफ़्ज़े बढ़ाई गईं । फिर सुनाये देता हूँ । गुलाम से कुरआन लिखने को कहा और कहा कि जब यहाँ पर पहुँचना तो हम से पूछ लेना और लफ़्ज़ बढ़ाया गया । इतनी रवायतें सुनाई कि घटया गया । आज मैने क्लाईमेक्स पर पहुँचा दिया बात को । साढ़े नौ लाख कलमें ख़लीफ़ये दोएम के

फ़रमान के मुताबिक़ कम हो गये, और ख़ुदा कहता है न कम हो सकते हैं और न ज़्यादा हो सकते है। अब फ़ैसला मुसलमान को करना है कि ईमान क़ुरआन पर रखना है या फ़रमान पर रखना है । (सलवात) एक रवायत और सुन लिजिये तफ़सीर दुर्रे मन्शूर स्योती जिल्द ३ सफ़ा २०८ मे है कि वो ये फ़रमाते थे कि सूरे तौबा में बहुत आयतें थीं ये सूरह तौबा जो क़ुरआन में है ये तो एक चौथाई भी नहीं है आगे का जुम्ला सुनिये कहते है कि इस सूरये तौबा में बहुत से असहाब के नाम थे जिनको अल्लाह ने नाम ले कर बुरा कहा था । (सलवात) फिर अब्दुल्लाह इब्ने मसूद से रवायत है कि सूरये तौबा की आयतें इसलिये कम कर दी गईं कि इसमें सत्तर मुनाफ़ेक़ीन थे । (सलवात) अब उन सब रवायतों की पहले तस्दीक़ कर लीजियेगा उलमाओं से । मैं आलिम नहीं हूँ पढ़ा लिखा हूँ जो लिखा है वही पढ़ता हूँ । (सलवात)

जो लिखा है वही पढ़ता हूँ अपनी तरफ़ से नहीं पढ़ सकता हूँ. इतना क़ाबिल नहीं हूँ कि अपनी तरफ़ से पढ़ सकूँ जो लिखा है वो मैने आपको पढ़ कर सुना दिया ताकि बेरादराने इस्लाम ख़्वाह शिया हों ख़्वाह सुन्नी, मुझे इससे बहस नहीं है ये तो क़ुरआन का मामला है । भईया क़ुरआन ही न रहेगा तो हम मुसलमाज ही न रहेगें । (सलवात) और जब हम तुम मुसलमाज न रहेगें तो ख़लीफ़तुल मोमनीन कौन होगा । इमामुल मुसल्लेमीज कौन होगा ? मुस्लिम और मुसल्लेमीन होगें तो इमाम भी होगा । ख़लीफ़ा भी होगा । और मुसलमान जबही रहेगा । जब क़ुरआज रहेगा । और जब क़ुरआज ही न रहेगा । इन्होने कहा : वो तो है ये कौन कहता है कि क़ुरआन नहीं रहेगा । वो तो ये कहा की है मगर कम है । तो हम कब कहते है कि हम मुसलमान नहीं है मगर है कम है यानी दस लाख सत्ताईस हज़ार पावर के मुसलमान नहीं है । ख़ाली सत्तर हज़ार पावर के मुसलमान है । साढ़े नौ लाख पावर ही ख़त्म हो गई । (सलवात) हमारे पास तो बड़ी मन्ज़िलें है । आते है लोग और सुनता हूँ सबकी अज़ादारी कहाँ है क़ुरआन में इन्ही दस लाख मे है ये हमारा अक़ीदा नहीं है जवाब है लेहाज़ा जब कोई क़ुरआन का जाम ले तो

समझा दीजियेगा कि सब पढ़ना कुरआन न पढ़ना । एतराज़ न करना शिया फ़िरक़े पर क़यामत आ जायेगी और अगर करना हो तो साढ़े नौ लाख कलमे पहले ला कर रख देना फिर एतराज़ करना वो दस लाख कलमें हमें दे देना । फिर मातम, मजलिस, नौहे, सब आपको दिखा देगें । तो क्या इसमें ये था । ये न था तो कम क्यों किया कुरआन से । (सलवात)

कम क्यों किया लोग कहते है कि देखो इन कम्बख़्तों को के बाज़ असहाब को मुनाफ़िक़ कहते है कैसे मुनाफ़िक़ कहते है । वो आयतें ला दो सूरये तौबा की अरे वो सत्तर नाम ला दो फिर देखो कि कौन है । कौन नहीं है । क्या जानें । फिर कहदो कि हमारा अक़ीदा अक़ीदा नहीं है जवाब है कि अक़ीदा हमारा नहीं है हमारा अक़ीदा है कि जो कुछ है हमारा बस ये कुरआन है न ही इसमें कुछ कम हुआ न ही इसमें कुछ ज़्यादा न इसमें कोई कम कर सकता है न कोई ज़्यादा कर सकता है । ये अक़ीदा था । इतनी रवायतों मै चार दिनों से पढ़ रहा हूँ फ़िर भी मेरा अक़ीदा न बदला इसका मतलब ये है कि रवायतें से अक़ीदा बदलता है । अगर ईमान का दामन हाथ में न होता लेकिन अगर अली का दामन हाथ में है तो एक नहीं हज़ारों किताबें सही आ जायें । लेकिन अक़ीदे में फ़र्क़ न आयेगा । (सलवात) हम कुरआन को मुकम्मल समझते है । कहा आप कैसे मुकम्मल समझते है । हम दीन को कामिल समझते है । हम कुरआन को मुकम्मल समझते है । समझते ही नहीं है ये हमारा अक़ीदा है इसलिये अक़ीदा है कि कुरआन में खुद आयत मौजूद है । *अलयौमे अकमलतो लकुम दीनकुम* । आज के दिन हमने दीन को कामिल किया । अल्लाह कहे कामिल किया और नाक़िस हो जाये । अरे मेरे माबूद तू कहता है कामिल है मुसलमान कहता है नाकिस है । (सलवात) अल्लाहो अकबर *अलयौमे अकमलतो लकुम दीनकुम* आज के दिन हमने दीन को कामिल किया है और आज हम इस्लाम से राज़ी हो गये रज़ीयत लकुम इस्लामादीना । आज हम राज़ी हुऐ अब तक ख़फ़ा था । मै कुछ कह गया । (सलवात)

कहा ख़फ़ा नहीं था मेरी रज़ा जब होगी जब दीन कामिल होगा । आज मैने दीन को कामिल किया और अल्लाह राज़ी हो गया दीने इस्लाम से इस का मतलब ये कि हमारा मुसलमान होना काफ़ी नहीं है । अल्लाह का हमारे इस्लाम से राज़ी होना भी ज़रूरी है और वो राज़ी होता नहीं जब तक दीन मुक्कमल होता नहीं । अलयौम, यौम नहीं अलयौम, अलिफ,लाम, कोई ख़ास दिन । डे, वही डे जो अंग्रेज़ी में "दा" (THE) वह अलिफ, लाम, कोई है । अलयौम, इस मख़सूस दिन, ख़ास दिन, दीन कामिल हो गया और अल्लाह दीने इस्लाम से राज़ी हो गया । ये आयत कहाँ नाज़िल हुई ? नमाज़ में, पहाड़ पर, लेहाफ़ में, मस्जिद में, मिना में, मक्का में, मदीने में नही । गदीर के मैदान में । (सलवात) हाँ हुज़ूर । ख़ास तवज्जो का ख़्वास्तगार हूँ । हाथ जोड़ कर मुख़ातिब हूँ तमाम आलमे इस्लाम से ग़दीर में क्या हुआ ? ग़दीर में आयते नाज़िल हुई । यही आयत थी, कहा: नहीं । इससे पहले एक आयत है । *या अय्योहर रसूलो बल्लिग़ मा उनज़ेला इलैका मिन रब्बिक* । हाँ! ऐ मेरे रसूल तबलीग़ कीजिये । इसकी जो आपके रब की तरफ़ से आप पर नाज़िल किया जा चुका । किया जायेगा नहीं नाज़िल किया जा चुका । वा इनलम तफ़अलू । अगर आप ने ऐसा न किया । फ़मा बलग़ता रिसालतहु । आप ने कोई कारे रिसालत अंन्जाम नही दिया । आयत से ये बताया कि अलयौम क्या है ? तव्वजो चाहता हूँ । आयत बता दे कि कोई ऐसा हुक्म है जो नबी पर नाज़िल हो चुका हो । इसकी तबलीग़ का हुक्म मिल रहा हो और इस तहदये के साथ अगर ये हुक्म न पहुचाया तो गोया कुछ न पहुचाया तो जब नबी ने पहुँचा दिया तो अल्लाह ने कहा: आज मैने दीन को कामिल कर दिया । गोया कमाले दीन रुका था इस हुक्म पर (सलवात) । अल्लाह ने फ़रमाया कि आज मै राज़ी हो गया। इसलाम से, दीने इसलाम से। यानि वह हुक्म है तो इस्लाम है , वह हुक्म है तो अल्लाह दीन से राज़ी है (सलवात) ।

हाँ हुज़ूर! वह हुक्म क्या था ? वह किस तरह से पहुँचा । फ़रमाया । मैं तुममें दो चीज़े छोड़ रहा हूँ । दो चीज़े है । ये मौजू है । दो चीज़े वज़नी छोड़ रहा हूँ । एक कुरआन और, दुसरे अपनी इतरत

। इन दोनो से मोतमस्सिक रहना । हमारे एक हाथ में क़ुरआन है और एक हाथ में अहलेबैत का दामन और यूँ ही इन्शाअल्लाह हौज़े कौसर पर पहुँचेगें । लेकिन ग़दीर में जब पैग़म्बर ने ये हुक्म पहुँचाया तो एहतेमाम किया । मिम्बर लाओ कहा । इस सहरा और मैदान में मिम्बर कहाँ से आये? कहा: ऊँट के कजावे का बनाओ, ऊँट के कजावे का मिम्बर बना और पैग़म्बर ने आयत पढ़ी अभी मैं आ रहा था कि जिबरईल ये आयत ले कर नाज़िल हुऐ । *या अय्योहर रसूलो बल्लिग़ मां उनज़ेला इलैका मिन रब्बिक व अनलम तफ़अलू फ़मा बलग़ता रिसालतहु* । पूरा मजमा मुश्ताक़ कि वह कौन सा हुक्म है कि नबी न पहुचाये तो नबी न रह जाये । तो सुनाया हुक्म । तारीख़ कहती है कि एक मरतबा मिम्बर से झुके । हुक्म आया आसमान से, ज़मीन पर ये क्या ढूंढ रहे है ? और झुक कर दोनो हाथो से अली के बाजुओ को पकड़ा और पकड़ कर उठाया और कहा वह हुक्म ये है कि मन कुन्तो मौला हो फ़हाज़ा अली मौला सुनो । मै तो एक हाथ में क़ुरआन और दुसरे हाथ में इतरत का दामन ग़दीर के मैदान मे तो दोनो हाथों में अली । (सलवात) क्यों मेरे सरकार । ऐ सरकारे दोआलम, छड़ेगें । दो चीज़े क़ुरआन और इतरत और दिखायेगें सिर्फ़ एक चीज़ । आपके दोनो हाथों में अली है । आप चाहते तो कमर से पटका पकड़ कर एक हाथ से उठा लेते आप चाहतें हो एक हाथ से अली को उठा सकते थे । ये दोनो हाथों मे अली, क़ुरआन क्या हुआ ? (सलवात) क़ुरआन क्या हुआ ? या रसूल अल्लाह, किताब क्या हुई ? आपको तो दोनो चीज़े दिखाना चाहिये थी । एक चमड़ा ही ले लेते । जिस पर क़ुरआन लिखा होता । एक हड्डी ही ले लेते जिस पर क़ुरआन लिखा होता । एक पत्ता ही ले लेते जिस पर क़ुरआन की आयत लिखी होती । एक हाथ में क़ुरआन उठाते । एक हाथ में अली को उठाते । नबी कहते है कि यही समझाया है, जिसने अली को पाया उसने क़ुरआन को भी पाया और जिसने अली को न पाया उसने क़ुरआन को न पाया । (सलवात)

दोनों हाथों से अली को पकड़ा । फ़रमाया । मनकुन्तो मौला फ़हाज़ा अलीयुन मौला और ये रवायत हर किताब में है सही बुख़ारी

शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ में भी है। इब्ने माजह में भी है । मौता मे भी है । मिशकात में भी है । तमाम मोअर्रेख़ीन ने लिखा है । तबरी ने भी लिखा है । तबक़ात इब्ने साद ने लिखा है, कोई किताब छूटी नहीं है । जिसमें ग़दीर का वाक़या न लिखा हो अब पढ़ा नहीं किसी ने तो न पढ़ने की ज़िम्मेदारी नहीं है । लिखने वाले अपना फ़र्ज़ अदा कर गये । और लिख गये । दोनों हाथों पर बलन्द करके कहा मन कुन्तो मौला मैं जिस जिस का मौला था । कुन्तो । तवज्जोह फ़रमायें । देखिये । इस कुन्तो के लफ़्ज़ को । खुदा ने कहा : कुन्तो कनज़ा मख़फ़िया मैं छिपा हुआ ख़ज़ाना था । तवज्जो पैग़म्बर ने कहा : कुन्तो नबीया, मैं इस वक्त भी नबी था जब आदम आब व गिल के दरमियान थे । ये तीसरा " कुन्तो " है, मनकुन्तो मौला । जिस जिस का मैं मौला था । फ़हाज़ा अली मौला आजसे, फ़ौरन अभी अली इस का मौला है । आप ज़रा कानून की जकड़बन्दी देखिये । नबी ये नहीं कह रहे है । मैं जिसका मौला हूँ । अरे मैं जिसका अबतक मौला था । आज से उसके अली मौला है । इनको मानोगे तो मैं मौला रहूँगा इनको न मानोगे तो मैं मौला नही रहुँगा । (सलवात) अब आप तव्वजोह फ़रमायें कि अली को किस एहतेमाम से मौला बनाया । क़लम चले । बाईस माने है मौला के, मौला के बाईस माने है । और जब एक हदीस में एक अलफ़ाज़ के बाईस माने है तो कुरआन में एक एक अलफ़ाज़ के कितने माने होगें जब कलाम नबी में ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल होते है कि जिसके, बाईस बाईस माने होते है तो कलाम अल्लाह में बाईस बाईस सौ भी हो तो कम है । अब आप ये बतायें, कि जब आप हदीस न समझ सकें कि नबी ने लफ़्ज़ " मौला " किन लफ़्ज़ो में सर्फ़ किया । आप लफ़्ज़े सिराते मुस्तक़ीम कैसे समझते ? (सलवात)

अब तो फ़हमें हदीस की बात आ गयी । उन्होने कहा : बाईस माने है । मौला के ये माने है । मौला के वह माने है । और कमाल ये है कि कहते है कि मौला के माने गुलाम के भी है अच्छा तो नबी ने अली को अपनी जगह गुलाम बनाया । कहिये । मौला के

माने गुलाम के हैं, अच्छा । अब से पहले क्या था । जिस जिस का मैं गुलाम था । उस उस का आज से अली गुलाम है । ज़रा ग़ौर फ़रमायें । तो नबी किस के गुलाम थे ? गुलाम को अरबी में क्या कहते हैं ? गुलाम तो फ़ारसी लफ्ज़ है । जिस में खुदा कहता है कि बे नियाज़ है वह खुदा जो अपने "अब्द" को ले गया । यानि "अब्द" का लफ्ज़ खुदा ने रसूल अल्लाह के लिये इस्तेमाल किया । शबे मेराज नबी ने कहा : जिस का मैं गुलाम हुँ उसका अली भी गुलाम है । तुम इससे बैयत न माँगना (सलवात) ग़ौर फ़रमायें रसूल अल्लाह गुलाम थे । रसूल भी अब्द है मगर माबूद का । अली भी अब्द है मगर माबूद का । तो माबूद इसके क्या माने ? एक अब्द को ले गया और एक अब्द को छोड़ गया तो अब्द की जगह अब्द को छोड़ा । जिस बिस्तर से एक अब्द को उठाया । उसी बिस्तर पर दुसरे अब्द को सुलाया । कहा । यही तो समझाता हूँ कि मौला के जितने माने देखोगे मोहम्मद की जगह अली ही नज़र आयेगें । (सलवात) आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कि जिस जिस का मैं मौला हूँ उस उस के ये अली मौला है । फ़ालो आन, क्या है । ये कह कर उतर आये फिर क्या हुआ ? क्या सब घर चले गये भई तारीख़ कहती है नबी ने कहा : ख़ैमा लगाओ भई कमाल की बात है एलान किया खुले मैदान में फिर कहा ख़ैमा लगाओ और अली से जा कर कहो बैठो और मुसलमान तो बहुत है मुसलमान तो आप और हम हैं । असहाब से कहा मुसलमान तो असहाब थे । क्योंकि वो सामने बैठे थे और हज्जे आख़िर से वापिस आ रहे थे असहाब से कहा जाओ और अली के हाथ पर बैयत करो और मुबारकबाद दो । कोई भी तारीख़ ऐसी नहीं है जिसमें सवा लाख से कम असहाब लिखें हों । सवालाख में अली की गुलामी पर अली से बैयत की । वाह ! वाह ! क्या अच्छा गुलाम है । जो बजाये आक़ा के बैयत करने के सारे आक़ा चले आ रहे हैं । गुलाम के हाथों पर बैयत करने के लिये । (सलवात) उन्होने कहा इसमें अली का क्या शरफ़ है । बस नबी ने कहा गुलाम है ठीक है मै आया आपके पास मैने कहा मुबारक हो काहे की मुबारक, मौलाना किस चीज़ की मुबारकबाद, अरे भई टेलीग्राम आया है आपके वालिद का इन्तेक़ाल हो गया है

कहा : दिमाग़ सही है मेरे वालिद का इन्तेक़ाल हो गया है और आप कह रहे हैं कि मुबारक हो बात करने की तमीज़ है मैं ज़्यादा उर्दू नहीं जानता । तवज्जोह चाह रहा हूँ ।

मै क्या करूँ ? मैने कहा सलामअलैकुम आज रिज़लट आ गया कहा हाँ आप काहे में बैठे थे ? मैं तो अरबी में बैठा था हाँ ! जी हाँ ! रिज़ल्ट आ गया उन्होने कहा फ़ेल हो गये हाँ मुबारक हो दिमाग़ आपका सही है, मैं फ़ेल हो गया और आप मुबारकबाद दे रहें हैं इसका मतलब ये कि ग़म सदमा और नाकामी के मौक़े पर कोई मुबारकबाद नहीं देता मैने कहा : भई मुबारक हो तार आया है आपके यहाँ लड़का हुआ है अरे लाईये तार दीजिये जल्दी से अरे वो तो हो ही गया । जल्दी क्या है ? अरे वाक़ई सच कह रहे हैं आप ? यानी "मुबारकबाद" एज़ाज़ मिलने पर, माल मिलने पर, ओहदा मिलने पर, दौलत मिलने पर उसी को दी जाती है चलो ठीक है । नबी ने जो मौला कहा इसमे कोई शरफ़ न था ये सब बख़्ख़न बख़्ख़न कह रहे थे ? (सलवात) उसके बाद मैं एक सवाल करूगाँ और असहाब से पूछियेगा कि मौला के तो बाईस मानी है बख़्ख़न के कितने मानी हैं ? कहा बख़्ख़न के एक ही मानी हैं मुबारक हो । तो मौला के कोई ऐसा मानी ढूढ़िये कि जिस पर असहाबे कराम ने अली को मुबारकबाद देता हूँ । कि आपने मुबारकबाद दी हो (सलवात) आप कहेगें अब काहे की मुबारकबाद । मुबारकबाद की क्या मुबारक : इसलिये एक खड़ा हो गया और उसने कहा या रसूल अल्लाह ये आपने अपनी तरफ़ से कहा वहाँ आयत मौजूद है या रसूल अल्लाह बल्लिग़ और फिर पूछ रहे हैं ये कहीं आयत तो नहीं बना ली आपने । अरे क्या मतलब हुआ ? आपने अपनी तरफ़ से या खुदा की तरफ़ से कहा अल्लाह ने हुक्म दिया है या अय्योहरसूलो बल्लिग़ मा उनज़लोअलैक कहा अगर अल्लाह ने हुक्म दिया है तो अल्लाह से कहिये कि मुझ पर अज़ाब भेज और पत्थर आया इस पर गिरा और सवा लाख में एक लाख चौबीस हज़ार नौ सौ निन्यानबे ने देखा कि वहीं फ़िज़ा हो गया । इसकी मुबारकबाद देता हूँ कि अगर सारे

असहाब मुबारकबाद न देते तो पत्थर नहीं हिमालय पहाड़ आ कर गिरता सब ख़त्म हो जाते । (सलवात)

बस हुज़ूर आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया अर्ज़ ये है कि इन सब बातों की ज़रूरत क्यों पड़ी ? ये हदीस की बात थी । कल से आयात की बात होगी । मौला के बाईस मानी हैं । बाईस हज़ार सही लेकिन अली इन्ही मानों में अली रहेगें कि जिन मानों में नबी मौला मानेगें तो अली कसौटी हैं नबी को मानने की । अली को मानना नबी को मानने का सबूत है । एक होता है दावा एक होती है दलील । अश्हदवन्ना मोहम्मदन रसूलअल्लाह, का दावा है अश्हदवन्ना अलीयुन वलीउल्लाह, दलील है । (सलवात) दलील है क्यों कि नबी फ़रमा गये कि जिस जिस का मैं मौला हूँ उस उस का अली मौला हैं तो ये दलील है तुम मुझे मौला मानते हो । और सिर्फ़ मुझे मौला मानकर रह गये तो फिर दलील नहीं है दावा है । दावा बग़ैर दलील के साबित नहीं हो सकता । इसलिये बेरादराने इस्लाम । अब जबकि ग़दीर में नबी की जगह पर अली मौला हो गये और कुरआन भी हमको अली वाला ही मिला । उन्ही के ज़ेर ज़बर, उन्हीं के नुक़्ते, तो कल से जितनी मजलिसे रह गई हैं उनमें ये गुफ़्तगू होगी क्या बग़ैर अली के बग़ैर अह्लेबैत के कुरआन किसी को क्या दे सकता है । या रसूल अल्लाह अह्लेबैत की क्या ज़रूरत ? कुरआन पढ़ेगें कल आपने सवाब बयान किया मैने जानकर बयान किया था कि कुरआन पढ़ने का सवाब क्या है ? लेकिन वो साढ़े नौ लाख कलमें । (सलवात) तो अब ये याद रखियेगा बहुत तलाश करके और ढूढ़ के कल ये साढ़े नौ लाख वाली रवायत लाया अब जब बम्बई में कभी कोई कहे कि शिया तो ये करता है कुरआन में दिखाईये दिखा सकते हैं आप वो साढ़े नौ लाख कलमें ला सकते हैं ! आप वो ले आईये हम वो दिखा देगें लेकिन यक़ीन न कीजिये कि साढ़े नौ लाख कलमे ग़ायब हो गये । मै तवज्जो चाह रहा हूँ । कि ये जवाब बराये जवाब है जिनके पास कुरआन मुकम्मल होने की दलील नहीं है । मै कुछ कह कर रब्ते मसायब देना चाहता हूँ । और ये तकमील दलीले कुरआन की

मुसलमान ला नहीं सकता । ख़ेलाफ़त की दलील कहाँ से लायेगा । (सलवात) कहाँ से लायेगा ? बड़ी अहम बात है कुरआन को साबित कीजिये । कहने लगे : इस कुरआन पर तो हमारा भी ईमान है । हाँ ... तो वो दस लाख कलमात कहाँ से आयेगें वह इसी वक़्त कम रहे होगें तो किसने पूरे किये तवज्जो । तो ये कुरआन किसकी गोद से गुज़रा कि आज फिर अकमलतो लकुम दीनकुम की आयत मौजूद है । उन्होने कहा ठीक है । अली ने देखा होगा । देखा होगा । देखा और शार्गिद से लिखवाया और कहा ज़ेर, ज़बर, पेश, नुक़्ते सब लगा दो । लिख कर लाये ठीक है ले जाओ अब इसकी कापियाँ तक़्सीम करो अगर ये कुरआन जो छ्पता है अली का देखा हुआ न होता तो इसमें नुक़्ते न होते । ज़ेर ज़बर, पेश, तश्दीद और जज़्म न होते । बस यही होता । सुन लिया होता हर जगह आयात, हर जगह एराब, एराब की रवायत बता दूँ । सिवाये अबू असवद के किसी ने एराब न लगाया । दूसरे का नाम ले दो किसी इमाम, किसी ख़लीफ़ा का नाम दे दो कि जिसने लिखा हो एक ही रवायत तमाम आलमे इस्लाम में मिलती है कि अबू असवद ने एराब लगाये । बहुक्मे अली और अली ने तस्दीक़ की हाँ । अब ये कुरआन सही है ।

आज एराब और नुक़्तों का होना इसबात की दलील है कि ये कुरआन वही है जो अबू असवद ने लिखा था । अब मैनें पढ़ा अगर किसी को अली के हाथ से लिखे हुऐ कुरआन से ज़िद है तो ये न छूना। लाओ बहुत से हैं, अमाँ अगर कुछ न लाओ तो साढ़े नौ लाख कलमा ही ला कर दिखाओ । (सलवात) कहा : आँ !! ये अली का है हम तो सुनते थे कि ये बयाज़े उस्मानी है । वाह हम भी मानते हैं कि ये बयाज़े उस्मानी है । मगर अब जुम्ला सुनिये । उस्मान के ज़रिये जमा शुदा और अली के ज़रिये इस्लाह शुदा । (सलवात) जमा किया तीसरे ख़लीफ़ा ने और तसीह किया चौथे ख़लीफ़ा ने, किया कि नहीं चौथे ख़लीफ़ा को क्या हक़ था सही करने का । इन ही को तो हक़ था क्यों कि तीसरे ख़लीफ़ा कह गये थे कि इसमें ग़ल्तियाँ हैं । (सलवात) देखिये कैसे चूल से चूल बैठी है । तीसरे कह गये कि इसमें ग़ल्तियाँ हैं और ठीक होगीं जब मौला ने कहा ठीक कर दीजिये तो

कहा : जाने दो । किसके पास कहा था जाने दो । अली के पास जाने दो खुद बखुद ठीक हो जायेगा ।(सलवात) और वो कुरआन जो इस वक़्त मौजूद है । तसीह तीसरे ख़लीफ़ा की क्यों कि बड़े सूरे पहले मन्झले सूरे बीच में छोटे सूरे बाद में । यानी जो ख़िलाफ़त की तरतीब वही कुरआन की तरतीब लेकिन ये अजीब बात है कुरआन शुरू होता है बड़े सूरे से मगर ख़त्म होता है छोटे सूरे पर । ऐसे ही ख़िलाफ़त शुरू होती है बुजुर्गों से और ख़त्म होती है बच्चे पर । बच्चा मैने क्यों कहा ? बच्चा क्यो कहा....? इसलिये कि उलेमा कहते हैं अली का क्या कहना मगर बच्चे थे । छोटा सूरा थे । इसीलिये आख़िर में रखा । बड़ा सूरह पहले, छोटा सूरह चलो अच्छा है कि तरतीब में अली चौथे । मैं तो हमेशा शुक्र भेजता हूँ वरना क़यामत हो जाती । तो छोटा सूरा थे । असहाब में सबसे छोटे अली थे । दस बरस के सिन में सबको कलमा सिखाया था । तो छोटे थे सबसे सिन में आख़िर में आये एक अजीबोग़रीब बात कही । वह क्या । कहा : जब नमाज़ में मुसलमान खड़ा होता ळे तो छोटा सूरा ज़्यादा पढ़ता है । (सलवात)

मैं क्या अर्ज़ कर रहा हूँ । सूरये अलहम्द बड़ा और छोटा सूरा सूराये बक़रः क्यों नही पढ़ा । मेरा दिल चाहता है कि एक तजवीज़ चलाऊँ और उस तजवीज़ मे तमाम पेश नमाज़ों से कहूँ । सूरये बक़रः क्या कुरआन का सूरह नहीं है ? क्यों नहीं हैं ? तो फिर सूरये अलहम्द के बाद क्यों नहीं पढ़ते ? क्या मना है ? दिमाग़ ख़राब है । सूरये बक़रः पढ़ने लगें तो यूँ ही चार आदमी मस्जिद में आते हैं । आप चाहते हैं वह भी न आयें । तवज्जोह और अगर कहीं सुब्ह की नमाज़ में पढ़ने लगे तो दूसरी रकात आते आते नमाज़ ही क़ज़ा हो जाये । नहीं ! मगर बड़ों का एहतेराम तो चाहिये । अरे ये आप क्या बात कर रहे हैं । अरे ये आप क्या बात कर रहे हैं ? बड़ा छोटा कहाँ से ? अरे भई कुरआन से छोटा सूरा हो । बड़ा सूरा हो । तो कसरत से छोटे सूरे ही पढ़े जाते हैं । उन्होने कहा : साहब ख़लीफ़ा तो चार हैं । आप अली का ज़िक्र ज़्यादा करते हैं । तो आप भी छोटा सूरा ज़्यादा पढ़ते हैं । हम भी छोटा सूरा ज़्यादा पढ़ते हैं । (सलवात) परेशानी क्या है । हम भी पढ़ते हैं ? उसमें क्या परेशानी

है । उन्होने कहा : नहीं इसमें राज़ कुछ और है तो इसका भी राज़ कुछ और होगा । अल्लाह किसी दिन और ग़ौर कर लेगें । हम नहीं चाहते कि राज़ पर से पर्दा उठे हमतो ये सब मजबूरन पढ़ रहे हैं ताकि हमें बोलना न पड़े हमारे खुद बेरादराने इस्लाम अह्लेबैत के तरफ़दार इमाम हुसैन के अज़ादार, ऐसे लोगों का जवाब खुद दे दें कि भई ये जवाब दो । उन्होने कहा : इसका जवाब हमारे पास नहीं है । तो ऐसे सवाल न उठाओ कि जिसका जवाबुलजवाब न हो सके । और उम्मत में तफ़रक़ा न पड़ सके । मिल्लत में इन्तेशार न हो । कम से कम सब मुसलमान अपने अपने अक़ीदे के साथ सही मिलकर रह तो लो । अब इसके अन्दर न जाने कितनी साज़िशें होंगी और आपको मालूम है कि मैने अर्ज़ किया आप ने देखा कि किस तरह से सलूक किया गया । मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खाँ साहब के साथ और इसके बाद आज तो नहीं पढ़ा । इस मजलिस में यहाँ के बाद की जो मजलिस पढ़ता हूँ । आप देखें कि इन्होने नमाज़ जमात न पढ़ने पर जेल भेज दिया । मदीने जाने से रोक दिया और मैंने अर्ज़ किया था एक शिया आलम पहुँचे जन्नतुलबक़ी के पास कहा : दरवाज़ा खोलो । कहा : आर्डर नहीं है । कहा हम कहते हैं : खोल दो । तवज्जोह चाहता हूँ । तो जल्दी से टेलीफ़ोन किया : उन्होने कहा : खोल दो । खोल दो । और जन्नतुलबक़ी का दरवाज़ा खुल गया । कल मैं पढ़ चुका हूँ याकूब गली में आज इसलिये दोहरा रहा हूँ कि आज इन्क़ेलाब में छप गया । ये पता नहीं कि किसका एग्रीमेन्ट है कि कल रात मैंने पढ़ा और आज अख़बार में छपा । ये दूसरा इन्क़ेलाब है । (सलवात) और जन्नतुल बक़ी में हुसैन हुसैन भी हुआ । मातम भी हुआ । इसका मतलब ये है कि आज भी अगर हैबत है तो अह्लेबैत के मानने वालों से है । और ये मन्ज़िल कि वहाँ चादरें भी चढ़ाई गईं । इसीलिये तो निकाला था कि आप चादरवाले हैं । आप फूल वाले है । ज़रा आप ग़ौर फ़रमाईये । आप सऊदी से पूछिये कि कौज सी सियासत है कि अह्ले सुन्नत वल जमात के एक आलिम को सिर्फ़ इस अक़ीदे पर रोक दिया गया कि वो मज़ारों पर चादर और फूल चढ़ाने के क़ायल हैं और एक आलिम को इसलिये इजाज़त दे

दी भई जाओ । चादर चढ़ाओ फूल चढ़ाओ । फूल चढ़ाओ । तवज्जो चाहता हूँ । उन्होने कहा आप समझे नहीं है किसके कहने से खोला । मालूम है । आपको ? बताईये किसके कहने पर खोला । अरे वो ईरान के चीफ़ जस्टिस थे । ये क्या मामूली आलिम हैं । उनके मानने वाले भी लाखों हैं । उन्होने कहा मज़हबी मानने वाले हैं हुकूमत तो नहीं । रज़ा ख़ाँ साहब के पास । इसका मतलब ये है कि हुकूमत की हुकूमत सुनती है । मुसलमान की बात नहीं सुनती है । (सलवात)

आप मुलाहेज़ा फ़रमायें । मै सिर्फ़ इतना पूछता हूँ कि ईरान के चीफ़ जस्टिस चला गया, तो जन्नतुल बक़ी का दरवाज़ा खोल दिया गया । अगर आक़ाये खुमैनी पहोंच जायें । (सलवात) अब आप देखिये कि अहलेबैत की मुहब्बत बुड्ढों को जवान कर देती है तो फिर जवान के जोश को कौन रोकेगा । मुलाहेज़ा फ़रमाईये । ये है जोश हक़ीक़ी जो अली के नाम से मिलता है । जो पैरवीये अहलेबैत से मिलता है जो अहलेबैत के रास्ते पर गामज़न से मिलता है । और ये जज़बा ऐहतेजाज का किसने अता किया ? क़सम खुदा की मुसलमान को हर हुकूमत के सामने सर बसजूद होने का वतीरा है । ये हुसैन ने कहा : नहीं यज़ीद से जाबिर व ज़ालिम हुकूमत भी हो तो देखो हक़ के लिये गला भी कट जाये मगर आवाज़ बुलन्द करना ये हुसैन ने सिखाया है । ये जो हम मोहर्रम मनाते हैं ये मुकम्मल ऐहतेजाज है । ये ख़ामोश ऐहतेजाज है । इससे जज़बये एहतेजाज सही व सालिम रहता है और फिर यही नहीं । हुसैन ने कहा हम अपने साथ अहलेबैत को ले जायेगें । बहन को भी ले जायेगें । बहने भी साथ जायेगीं । अज़वाज भी साथ जायेगीं । औलाद भी साथ जायेगीं । ताकि हम करबला में गला कटा कर एहतेजाज करें । कूफ़ा व शाम में खुतबा पढ़ कर ऐहतेजाज किया । बस आप आमादा हो जायें । वक़्त तमाम । जनाबे ज़ैनब का कूफ़ा जाना और इब्ने ज़्याद के दरबार में खुत्बा पढ़ना । ये जाबिर और ज़ालिम हुकूमत के ख़िलाफ़ अज़ीम ऐहतेजाज था । और जनाबे सैय्यदे सज्जाद का शाम के दरबार में मिम्बर से खुत्बा पढ़ना ये जाबिर और ज़ालिम हुकूमत के ख़िलाफ़

ज़बरदस्त ऐहतेजाज था । सैय्यदे सज्जाद ने बतला दिया कि हथकड़ी से न डरना, बेड़ी से न डरना, तौक़ से न डरना । अल्लाह ने ज़बान को आज़ाद किया है लेहाज़ा हक़ बयान करना और यही नहीं । जनाबे सकीना का गिरिया बड़ा ऐहतेजाज रखता है । बस अज़ादारों आईये हम आप मिल कर आज इस यतीमा को रोलें । जिसका ताबूत अभी हमारी मायें बहने उठायेगीं । ऐ माओं और बहनो तुम्हारे बच्चों को खुदा सही व सालिम रखे कि तुम इस यतीमा और मज़लूम सकीना का ताबूत उठाने आई हो ।

जिसका क़ैद ख़ाने में जब इन्तेक़ाल हुआ तो ये मसला उठा था कि जनाज़ा कैसे उठेगा ? जज़ाओकुम रब्बोकुम । कौन सकीना । सकीना बिन्तुल हुसैन । हुसैन की लाडली बेटी । हुसैन की प्यारी बेटी दुनियां जानती है कि माँ बाप को लड़की से ज़्यादा मुहब्बत होती है । और फिर कमसिन बच्ची हो और फिर सकीना के ऐसी बेटी हो । जब हुसैन चलने लगे तो कहा । बाबा न जाईये । बाबा ! चचा गये तो वापस न आये । भईया अली अकबर गये तो वापस न आये । बाबा आप चले जायेगें तो मेरा कौन है । कहा : सकीना ! सकीना ! सब्र से काम ले । मेरा जाना ज़रूरी है । मै न जाऊँगा तो नाना की उम्मत बख़्शी न जायेगी । सकीना ने दामन छोड़ दिया । कहा जाईये बाबा । अगर लोगों की बख़्शिश का सवाल है तो मै दागे़ यतीमी उठा लूंगी, लेकिन बख़्शिश के रास्ते में हायल न होऊँगी मगर बाबा अगर हो सके तो मुझे नाना के रौज़े पर पहुँचा दीजिये । मुझे मदीने पहुँचा दीजिये । हुसैन ने गले से लगा लिया कहा नहीं । तेरा अभी इम्तेहान है । सब्र कर ये ही वजह थी कि शहादते हुसैन के बाद सकीना के कानों से गोशवारे छीने गये । ख़ून कुर्ते पर टपकने लगा, तो आवाज़ दी अगर मेरा चचा अब्बास ज़िन्दा होता तो किसकी मजाल थी कि मेरे कानों से गौहर छीनता, ख़ैमे जल गये, शामे ग़रीबाँ आ गई, जनाबे ज़ैनब ने बच्चों को जमा किया जमा करके शुमार किया तो देखा कि सकीना नहीं है तो कहा : उम्मे कुलसूम ग़ज़ब हो गया कहा : क्या हुआ ? कहा : सब है लेकिन सकीना नहीं है । बाबा सौप कर गये

थे कहा : चलिये तलाश करें । करबला का बन, शामे ग़रीबाँ का अन्धेरा, बीबी ज़ैनब चलीं, सकीना, सकीना, ऐ मेरी बेटी सकीना, कहाँ हो सकीना, कहा जाता है कि फ़ुरात की तरफ़ बढ़ीं तो आवाज़ दी अब्बास सकीना तो नहीं आयी । इधर एक नशेब से आवाज़ आयी इधर आओ ऐ मेरी बहन ज़ैनब दूसरी रवायत है कि सकीना के रोने की आवाज़ सुनी और जनाबे ज़ैनब बढ़ीं ।

क्या देखा कि सकीना एक लाशे बेसर से लिपटी बैन कर रही है ऐ बाबा शिम्र ने गोशवारे छीन लिये । ज़ज़ाकुम रब्बोकुम । हाँ अज़ादारों दो या तीन मिनट की ज़हमत । लिखा है... कि जनाबे ज़ैनब बैठ गईं आवाज़ दी सकीना, सकीना । अरे मेरी बेटी सकीना, ये किसके जनाज़े से लिपट कर बैन कर रही है । कहा फूफी अम्मा आपने नहीं पहचाना ये मेरे बाबा का जनाज़ा है । पूछा : पहचाना कैसे ? कहा : इस कटे हुऐ सर से आवाज़ आयी सकीना इधर आजाओ तसल्ली दी, दिलासा दिया, गले से लगाया, जले हुऐ ख़ैमो के क़रीब लाईं,ये सकीना हैं कभी ज़ैनब ने अपने से जुदा न किया जब काफ़िला करबला से कूफ़ा चला सकीना को गोद में बिठाया, कूफ़े से शाम काफ़िला चला ज़ैनब ने सकीना को अपने से जुदा न किया । क़ैद ख़ानये शाम आयीं अपने हिस्से का खाना सकीना को दे देतीं, अपने हिस्से का पानी सकीना को दे देती, सारी रात सकीना को गोद में लेकर बैठी रहती थीं । सकीना बाप को याद करके रोती थीं और ज़ैनब तसल्ली देतीं थीं । जब शाम का वक्त आता था। क़ैद खाने के ऊपर से तायर उड़ कर जाते थे । सकीना पूछती थी । फूफी अम्मा ये तायर कहाँ जा रहे हैं कहती थीं बेटा शाम हो गई अब ये बसेरे को जा रहे हैं । पूछती थीं कि फूफी अम्मा हम मदीने कब जायेगें । जज़ाकुम रब्बोकुम । हाँ अज़ादारों खूब गिरिया किया आपने । खूब रूहे फ़ात्मा को पुरसा दिया ।

हुज़ूर दसवीं सफ़र की रात आ गयी ये आज की ही रात थी यहाँ तो चिराग़ जल रहे है फ़र्श बिछा है वहाँ टूटा सा क़ैद ख़ाना आज पहली रात आई जब सकीना नमाज़े मगरिब व इशा के बाद रोते रोते

सो गयीं । सकीना जो सरे शाम सो गयीं तो बीबीयों ने एक दूसरे को इशारा किया । आज पहला दिन है कि सकीना लेट कर सो गयीं । बीबीयाँ बैठ गयी कि एक मरतबा सकीना उठी आवाज़ दी बाबा ! बाबा ! कहाँ गये बाबा ! फूफी के पास आयीं । फूफी अम्मा बाबा कहाँ गये ? माँ के पास आयीं अम्मा बाबा कहाँ गये ? सैयदे सज्जाद के पास आयीं अरे मेरा बाबा कहाँ गया ? । जनाबे ज़ैनब ने बढ़ कर गोद में उठा लिया सकीना बाबा करबला में शहीद हो गये । कहा : नहीं ! नहीं ! फूफी अम्मा बाबा अभी बैठे हुऐ थे । अभी मै बाबा की गोद में थी । अभी बाबा मुझे प्यार कर रहे थे । ऐ फूफी अम्मा अभी मैं बाबा से रो रो कर कह रही थीं कि बाबा मुझे साथ ले चलिये । बाबा मुझसे अब क़ैद ख़ाने की तकलीफ़ नहीं सही जाती ये कह कर रोने लगीं । एक मरतबा जनाबे ज़ैनब मुतवज्जेह हुई आवाज़ दी सैयदे सज्जाद जल्द आओ बीमार ने हथकड़ी बेड़ी सम्भाली । फूफी अम्मा क्या है ? कहा देखो सकीना का क्या हाल है ? सैयदे सज्जाद झुके । बाबा ले गये सकीना को गुल हो गया चिराग़ हरम अहलेशाम में । बीबीयों में कोहराम मचा जनाबे ज़ैनब की गोद में सकीना ने वफ़ात पाई माँ क़रीब आ कर बैठ गयीं। सकीना अली असग़र भी न रहे । सकीना तुमने भी साथ छोड़ दिया । बड़ी हसरत से सैयदे सज्जाद को देखा । बस हुज़ूर मजलिस तमाम कहा : सैयदे सज्जाद एक बात कहूँ ? मानोगे ! कहा :फूफी अम्मा जो आप फ़रमायें बस ! बस ! मेरी एक तमन्ना है कहिये क्या ? कहा यज़ीद का ऐहसान न लिया जाये । कहा नहीं ! नही ! फूफी अम्मा हम यज़ीद का ऐहसान नहीं लेगें । और क्या ज़रूरत फूफी अम्मा मेरी बहन शहीद है । ये शहीदे राहे ख़ोदा है । इसका कुर्ता ख़ून में डूबा हुआ है । शहीदों का लिबास इसका कफ़न है । दो ज़ानू क़िब्ला रुख़ हो कर बैठे बधें हाथो से मिट्टी हटाना शुरू की बीबीयाँ कहती है कि हमने देखा एक तैयार क़ब्र निकली । कहा फूफी अम्मा देखा आपने कहा : सैयदे सज्जाद उतर जाओ क़ब्र में मै सकीना को दे दूँ तुम दफ़न कर दो । कहा नहीं फूफी अम्मा बहन को मुझे दे दीजिये । मै बहन को दफ़न करूगाँ । कहा : क़ब्र में कौन रखेगा ? कहा फूफी अम्मा

देखिये तो .....

जब बहज को क़रीब ले कर आये क़ब्र से दो हाथ निकले लाओ ! लाओ ! मेरी बेटी को दे दो बाबा ने बेटी को लिया ।सकीना का नौहा व मातम जिन्दाने शाम की अन्धेरी रात.....

वा मोहम्मदा । वा अलिया ।

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नौवीं मजलिस

ख़ुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

ये हदीस जो मैने पेश की । जिस पर मुसलसल अन्जुमने इमामिया की सद् साला मजलिसों में कुछ अर्ज़ करने की कोशिश कर रहा हूँ कि सरवरे कायनात ने फ़रमाया कि ऐ मुसलमानों, मै तुम में दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ । एक अल्लाह की किताब और दूसरे अपनी इतरत । ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें । अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना । वाबस्ता रहना । इन दोनों की पैरवी करना । इसके ज़ेल में कुरआन और अहलेबैत के मौज़ू पर जो गुफ़्तगू मुसलसल जारी है । इसमें आपकी ख़िदमत मे मैने ये अर्ज़ किया कि कुरआन मजीद का एहतेराम और कुरआन मजीद की रुतबा शेनासी और कुरआने मजीद के मानी वही समझ सकता है जो अहलेबैत से वाबस्ता हो । इसलिये कि आज जो कुरआन हमारे पास मौजूद है । ये मौलाये कायनात अली इब्ने अबूतालिब की नज़र से गुज़र चुका है । नुक़्ते और एराब अबू असवद से लगवाये इसलिये जो चीज़ भी अली से होकर उम्मत तक पहुँचे । हमारा ईमान है कि वो सही और दुरुस्त है । लेकिन हम पर इलज़ाम देने वाले, हमको काफ़िर का फ़तवा देने वाले, हमको काफ़िर कहने वाले और कुरआने मजीद में तहरीफ़ का क़ायल बताने वाले खुद अपनी किताबों का मुतालेआ पहले करें और देखें मैने चन्द हवाले, बहुत कुछ से थोड़ा

बहुत आपके सामने पेश किया और ये कोशिश की गई कि बेरादराने इस्लाम को ये मालूम हो कि जिन्होने अहलेबैत को छोड़ दिया । उन्होने अल्लाह को क्या समझा और रसूल को क्या समझा और कुरआन को क्या समझा ? रसूल को क्या समझता ? और आप तो बराबर सुनते रहते हैं कि जो ताजदारे अम्बिया बन कर आया हो, जो ख़तमी मरतबत बन कर आया हो । जो अशरफुल अम्बिया बन कर आया हो, जिसे कुरआन कहीं मुज़म्मिल कह कर पुकारे, कहीं यासीन कह कर पुकारे, उसे मुसलमान अपना बड़ा भाई कह कर पुकारे । फिर उस किरदार पर, जो किरदार आज मुसलमानों का है और जो अहलेबैत से वाबस्ता हों, वो कहें कि हमने अल्लाह को नहीं पहचाना । जो हक़ था पहचानने का । हम ने रसूल को पहचाना जो हक़ था पहचानने का, न अहलेबैत को पहचाना जो हक़ था पहचानने का, न कुरआन की गहराईयों तक पहुँचा जो हक़ था पहुँचने का । इसलिये कि ये चीज़ें इतनी अज़ीम हैं कि अल्लाह को नहीं पहचाना किसी ने मगर उसके पैदा करने वाले अल्लाह ने और अहलेबैत ने, अहलेबैत को नहीं पहचाना किसी ने मगर अल्लाह के रसूल ने और अल्लाह ने । हम तो सिर्फ़ इस बात पर ईमान रखते हैं जो बात या अल्लाह ने कही या रसूल ने कही या अहलेबैत ने बताई । इसलिये कि अल्लाह क्या है ? हम नहीं जानते । मगर ये जानते हैं कि रसूल अल्लाह उसका सजदा करते थे । अहलेबैत सजदा करते थे इसलिये वजूद लाज़िम है । रसूल अल्लाह को हम नहीं पहचान सकते मगर कुरआन में अल्लाह ने उसकी मदह की है लेहाज़ा वो बशर था मगर ऐसा बशर था कि पूरा कुरआन उसकी मदह व सताईश में है । अहलेबैत को हमने नहीं पहचाना मगर अल्लाह ने कुरआने मजीद में आले मोहम्मद का तज़किरा किया । अहलेबैत की तारीफ़ की । रसूल अल्लाह ने कसरत से हदीसों में अहलेबैत का तार्रुफ़ कराया । अहलेबैत को पहचनवाया । अहलेबत की मदह की । यानी हमारा मसलक या अल्लाह की बात दुहराना है, या अहलेबैत की बात दुहराना, जब अल्लाह की बात आती है तो हम ये तलाश करते हैं कि रसूल अल्लाह ने क्या कहा और अहलेबैत ने क्या कहा । जब रसूल अल्लाह की

बात आती है तो हम ये ढूढ़ँते हैं कि अल्लाह ने रसूल अल्लाह के लिये क्या कहा ? और अहलेबैत ने क्या फ़रमाया है । रसूल अल्लाह ने क्या कहा है ? बरख़िलाफ़ इसके और इसलाम के तबक़ों में एक ही बात ढूँढ़ी जाती है कि असहाब ने क्या कहा तो जो कुछ असहाब ने रसूल अल्लाह के लिये कहा ।

अगर वो सही है । जो कुछ असहाब ने अहलेबैत के लिये कहा वो सही है, जो कुछ असहाब ने कुरआन के लिये कहा वो भी सही होगा । लेकिन आठ मजलिसों में आपको ये अन्दाज़ा तो हो ही गया कि अगरचा वह कहने वाले नबी के दौर के मुसलमान थे और सुनने वाले चौदह सौ बरस बाद के मुसलमान हैं लेकिन अभी भी इसलाम के ऐसे ख़द व ख़ाल ज़ेहन में नुमायाँ है कि उनकी समझ में नहीं आता कि कैसे कुरआन में रद्दो बदल हो जायेगा । कैसे कुरआन में इज़ाफ़ा हो जायेगा । कैसे कुरआन में कमी हो जायेगी । कैसे कुरआन में दस दस लाख हरफ़ ग़ायब हो जायेगें । (सलवात)

अब आज से जो गुफ़्तगू आपकी ख़िदमत में पेश करना है आज ये नवीं मजलिस है । दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं । अबकी अशरा असना अशरी है । बारह मजलिसों पर है । इसलिये कि सद सालह पर हो रहा है । (सलवात) तो इन चार मजलिसों में अर्ज़ करना है कि कुरआन अहलेबैत के लिये क्या कहता है । कुरआन ने आले मोहम्मद का तार्रुफ़ किस तरह कराया और कुरआन में अहलेबैत का कैसा तज़किरा मौजूद है । किस तरह से ज़िक्र मौजूद है और उसकी तहरीफ़ मुसलमानों ने किस तरह से की । तहरीफ़े लफ़्ज़ी की बात कल तक मुकम्मल कर दी । अब तहरीफ़े मानी की बात यानी कुरआन के मानी किस किस तरह से बदले । कुरआन की में जब मौला के लिये बाईस मानी बताये गये तो मैंने कल इशारा किया था । आपके सामने कि एक एक लफ़्ज़ के जाने कितने मानी हैं । लेकिन ये समझना ज़रूरी है कि कुरआन मजीद किस किस तरह मदह कर रहा है । तीन सौ तेरह आयतें कुरआने मजीद में ऐसी हैं जिनको तमाम मोफ़स्सेरीन और मोहद्दसीन अजल्ला उलेमाये अहलेसुन्नत ने

तसलीम किया है कि ये मदह अहलेबैत में है । फिर आप समाअत फ़रमालें कि अली की मदह में सिर्फ़ तीन सौ तेरह आयतें हैं । ये नही कह रहा हूँ कि तीन सौ तेरह आयतें हैं जिनको अजल्ला उलेमाये अहलेसुन्नत ने तफ़सीरों में लिखा है कि ये अली की शान में नाज़िल हुई । इसके मानी ये हैं कि ये तीन सौ तेरह आयतें वह थीं कि जिसके लिये उम्मत भर में ढूँढ़े कोई न मिला । (सलवात)

और तसलीम करना पड़ा कि ये मौलाये कायनात अली इब्ने अबू तालिब की मदह में हैं । (सलवात) । ये नहीं कह सकता कि इन चार मजलिसों में कितनी आयतें आपकी ख़िदमत में पेश की जा सकेंगीं । लेकिन एक अन्दाज़ा हो जायेगा । कुरआन शुरू होता है सूरये अलहम्द से और अलहम्द शुरू होता है बिस्मिल्लाहिरमार्निरहीम से और बे का नुक़्ता अली हैं । जब तक कि कोई नुक़्ते को नहीं पहचानेगा । बे की तमीज़ नही करेगा। बिस्मिल्लाह न पढ़ पायेगा । तो बिस्मिल्लाह ही ग़लत हो जायेगी । तो कुरआन कहाँ से सही होगा । और आज तक मोहावरा है मुसलमानों का कि आज आईयेगा हमारे भईया की बिस्मिल्लाह हैं । बिस्मिल्लाह किसे कहते है ? जब बच्चे को ईल्म का आग़ाज़ कराया जाता है । तो बिस्मिल्लाह से आग़ाज़ किया जाता है । यानी सारे मुसलमानों का अक़ीदा है कि अगर बिस्मिल्लाह न कराई तो इल्म न आयेगा । देखिये ये फ़ज़ीलत मौलाये कायनात ने जो शहरे ईल्म का दरवाज़ा है जो नुक़तये बाये बिस्मिल्लाह है । कि अली के बग़ैर ईल्म आता ही नहीं। अब ये दूसरी बात है कि आज से लोग बिस्मिल्लाह पढ़वाना छोड़ दें । (सलवात)

इसलिये कि ईमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी की तफ़सीर कबीर जिल्द एक सफ़ा १०७ इज्जतसमीबस्त मिनलकुरआन यानी बिस्मिल्लाह कुरआन का जुज़ नहीं । इसी किताब के सफ़ा १०२ पर है कि क़ाला अबू हनीफ़ा बिस्मिल्लाहे लैसे बिल्लाहे । इमाम अबू हनीफ़ा का क़ौल है कि बिस्मिल्लाह कुरआन की आयत नहीं है । बिस्मिल्लाहिर्रहमार्निरहीम कुरआन से अगर बिस्मिल्लाह ख़ारिज है तो अब एक सौ चौदह सूरों में से एक सौ तेरह सूरों से निकालना

पड़ेगी । (सलवात) और मौलाये कायनात से ले कर आख़री इमाम तक तमाम अहलेबैत ने कहा है कि सिवाये एक सूरये बाराअत का हर सूरये जुज़ बिस्मिल्लाह है । जिसमें दो सूरे बग़ैर बिस्मिल्लाह के मुकम्मल ही नहीं समझे जाते । तिलावते नमाज़ में एक सूरे अलहम्द दूसरे सूरये कुलहो अल्लाह क्योंकि खुदा ने ये फ़रमाया है कि हमने सबे आयात तुम को दे दी और ये सबे मसानी कहलाता है । सूरये अलहम्द और ये आयतें पूरी ही नहीं होती बग़ैर बिस्मिल्लाह के मिलाये हुऐ (सलवात) लेकिन अलहम्दो लिल्लाह क्या शिया, क्या सुन्नी, क्या हनफ़ी, क्या शाफ़ई, क्या मालकी, क्या हम्बली, क्या वहाबी, क्या बरेलवी जो भी क़ुरआन शुरू करता है बिस्मिल्लाह से । फ़तवा मौजूद है कि बिस्मिल्लाह जुज़े क़ुरआन नहीं है । मगर बग़ैर बिस्मिल्लाह के न कोई क़ुरआन छप पाता है, न बग़ैर बिस्मिल्लाह के कोई क़ुरआन पढ़ पाता है । ये है मौजिज़ये अली की ज़ात (सलवात)

ये मैंने सिर्फ़ आपको कोई ख़ास मसलेहत से सुनाया । अहलेबैत के मामले में जब लोग ये कहते हैं कि हमारे यहाँ नहीं है । ठीक है आपके है, आप पढ़ रहे है, हमारे वहाँ नहीं है, चूकिं हमारे यहाँ नहीं है लेहाज़ा हम तसलीम नहीं करेगें । हज़ारों रवायत, हज़ारों फ़ज़ायल, मौलाये कायनात के और अहलेबैत के हम बयान करते है ।उलेमा कहते हैं कि हमारे यहाँ नहीं है मालूम हुआ जो कुछ इस्लाम है वो इन्ही के यहाँ है । और जिसके पास इस्लाम है वो काफ़िर है क्योंकि नहीं है हमारे आलिम ने नहीं लिखा है । जो किसी फ़िरक़े का आलिम न लिखे तस्लीम नहीं करता । मुसलमान और किसी बात की अलिम नहीं करदे फ़तवा दे दे उसे कैसे तसलीम करेगा । भई हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा ने ये न कहा होता कि बिस्मिल्लाह जुज़े क़ुरआन नही है तो मुसलमान कह सकता था कि भई हमारे इमाम ने नहीं कहा है कि जुज़े क़ुरआन है । आप कहते हैं आपसे हम नहीं मानेगें लेकिन यहाँ तो इमाम फ़रमाते है कि जुज़्वे क़ुरआन नहीं है । मानना पड़ेगा कि नही है । नही है बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम आयत नहीं है बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम जुज़्ते क़ुरआन नहीं है । जुज़्वे सूरा नहीं है

। किसी सूरे का बिस्मिल्लाह जुज़ नहीं है । तो जब नहीं है तो किसी को पढ़ने का हक़ भी नहीं है । (सलवात) ग़ौर फ़रमाईये । अभी मेरी मन्ज़िल आगे है बड़ी नाजुक मन्ज़िलों से गुज़र रहा हूँ । इसलिये कि मुसलमान ख़फ़ा हो जायेगा । और मुझे मुसलामनों को ख़फ़ा भी नहीं करना है इसको सही बातें भी नहीं बताई गईं । ये भी एक क़यामत है । तो मैं इसलिये पढ़ता हूँ कि मेरे कहने पर यक़ीन न कीजियेगा । बल्कि अपने आलिम से पूछियेगा कि क्या फ़तवा है ? क्या ये फ़रमाया है कि बिस्मिल्लाह जुज़्वे कुरआन नहीं है । और जब नहीं है तो छपती क्यों है ? तवज्जो चाह रहा हूँ ।

क्यों छपती है ? उन्होने कहा भई वो छपती इसलिये है, कि वो छपती चली आ रही है । इसीलिये तस्लीम है ना । तवज्जोह । अगर अली के फ़ज़ायल जो आपकी किताब में नहीं है । आप सिर्फ़ इसलिये नहीं मानते कि आप की किताबों में नहीं है । बिस्मिल्लाह को कैसे मानते हैं । आपकी किताब में लिखा है कि जुज़्वे सूरा नहीं है लेहाज़ा तिलावत में बग़ैर बिस्मिललाह के सूरा पढ़ा जाये तो सुन्नी सूरा । और बिस्मिललाह के साथ पढ़ा जाये तो शिया सूरा । इसका मतलब ये कि एस सौ चौहद सूरों में एक सौ तेरह सूरे हमारे है और एक ही सूरह तुम्हारा है । (सलवात) यानी बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम जिससे आग़ाज़े कुरआन है । जब इस आयत ही का इन्कार है कि वो जुज़्वे कुरआन नहीं है तो जुज़्वे सूरा भी नहीं जुज़्वे कुरआन नहीं हालते निजासत में छुआ भी जा सकता होगा ? कहा : नहीं ! नही छू सकते क्योंकि इसमे लफ़्ज़ अल्लाह है । है एक अलग तो फिर क्या है ? बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम क्या है ? कहा : तस्मीया है पढ़ना चाहिये अल्लाह के नाम से शुरू करना चाहिये । मगर इस नीयत से न पढ़े कि ये जुज़्वे कुरआन है । बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम शुरू करता हूँ उस अल्लाह के नाम से जो रहमान है, रहीम है, ये कुरआन नहीं है तो जब क़यामत में अल्लाह से कहोगे तू तो रहमान है, तू तो रहीम है कहा : कहाँ है ? कुरआन मे है कहा : नहीं है । मैं तो उन कुरआन वालों के लिये रहमानो रहीम हूँ जो बिस्मिल्लाह को जुज़्वे कुरआन समझते हैं । जब तुमने मेरी रहमत और रहमानियत को जुज़्वे

कुरआन ही नहीं समझा तो इसपर अमल दर आमद कैसे हो । तुम्हारे साथ तो फिर क़हहार भी हैं आप तो जब्बार भी हैं । तवज्जोह और इसका वाक़िया मौजूद यानी कुरआन मजीद आसान चीज़ नहीं है हुज़ूर....! अल्लामा जलालुद्दीन स्योति, अल्लामा दुमैरी ने लिखा है कि एक ख़लीफ़तुल मुसलेमीन ने यानी वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुल मलिक ने कुरआन मजीद से किसी मामले में फ़ाल खोली कुरआन से अपने मुताल्लिक़ तो कुरआन में "ग़ज़ब" की आयत लिखी ।

फ़ख़्ख़ाबे कुल्ले जब्बार अनीद ग़ज़ब हो गया क्योंकि ग़ज़ब की आयत निकली इसलिये कुरआन को टांगा । और तीर कमान ले कर बैठा तीरों से पुर्ज़े पुर्ज़े कर दिया कुरआन । और शेर पढ़ता जाता था कि मैंने तुझसे फ़ाल निकाली और तूने ग़ज़ब की आयत निकाली यानी ये अक़ीदा है । कि खुद से निकली तो फिर अब देख मेरा ग़ज़ब दो शेर पढ़े जिनका तरजुमा है । ऐ कुरआन तू सरकशों को धमकाता है देख मैं सरकश जब्बार अनद हूँ । क़यामत के दिन जब खुदा के सामने जाना तो कह देना मुझे वलीद ने टुकड़े टुकड़े कर दिया है । अल्लामा स्योति ने कहा । ये आलम गुस्सों का था तवज्जोह । कुरआन के पुर्ज़े पुर्ज़े कर दिये सिर्फ़ इसलिये कि कुरआन से फ़ाल हमारे ख़िलाफ़ क्यों निकला ? अच्छा हुआ जो एक ही फ़ाल देखी वरना गुस्सा में कोई किसी से कम न था । जो तारीख़ की शहादतें हैं, तो अर्ज़ ये कर रहा था । बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम से कुरआन शुरू होता है अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन तमाम तारीफ़े उस अल्लाह के लिये है जो आलेमीन का पालने वाला है । ख़ालिक़ नहीं पालने वाला, पैदा करने वाला नहीं, अर्रहमार्निरहीम । यानी वह खुदा जो रहमान है और रहीम है । मालिके यौमिद्दीन मल्क नही है । क्या करूँ ? अबतो मालिक ही सब को पढ़ना पड़ेगा । मालिके यौमिद्दीन और यौमिद्दीन और यौमिद्दीन यानी क़यामत के दिन का मालिक है । क्यों ? इया कनाबुदो यानी हम तेरी ही इबादत करते हैं । वईया कनस्तईन और तुझ से ही मदद चाहते हैं । पूरे सूरे में यही आयतें पसन्द आयीं और मुसलमानों को सुनाई जाती हैं ।

क़ुरआन में अल्लाह क्या फ़रमाते हैं । अल्लाह फ़रमाते हैं कि कहो तेरी ही इबादत करते हैं । लेहाज़ा खुदा के सिवा किसी के सामने मत झुको । इया कनस्तईन । अरे, खुदा से कहते हो कि तुझसे ही मदद चाहता हूँ । तो फिर अब किसी से मदद हासिल मत करो । या रसूल अल्लाह मत कहो । या अली मत कहो । या लगा कर किसी को मत पुकारो । क्यों .....? ये शिरक है । ये कुफ़्र है । ज़रा से सूरे ही में कफ़्र का ज़िक्र आ गया । और इसके बाद ईरशाद फ़रमाया । ऐहदेनस्सेरातलमुस्तक़ीम - "स्वाद" से "सीन" से नहीं । इसके दो तरजुमे कुरआन में हैं । एक तरजुमा ये लिखा है कि सेरातुलमुस्तकीम की हिदायत फ़रमा । और एक तरजुमा ये लिखा है कि सेराते मुस्तक़ीम पर बाक़ी रख । ये आप कल जा कर सब कुरआन छान डालियेगा और इसमें तफ़रका ये है कि शिया उलेमा ने जो तरजुमा किये हैं उनमे लिखा है कि सेराते मुस्तक़ीम पर बाक़ी रख । और अजल्ला उलेमाये अहले सुन्नत ने जो तरजुमे किये हैं कि सेराते मुस्तकीम की हिदायत फ़रमा । ये बहुत ज़बरदस्त बहस है । शिया और सुन्नियों के बीच में । ख़िलाफ़त वग़ैरह क्या है वो छोड़िये । कुरआन में आईये । (सलवात)

अजल्ला उलेमाये अहले सुन्नत ये कहते हैं कि ये दुआईया कलमा है और इसमें सेराते मुस्तकीम के लिये दुआ है । लेहाज़ा तरजुमा ये हुआ कि मेरे माबूद हमें सेराते मुस्तकीम की हिदायत फ़रमा । और शिया उलेमा कहते है । नहीं हमे सेराते मुस्तक़ीम पर बाकी रख हम बहकने न पायें । दलील सुनिये । उलेमाये अहले सुन्नत ये कहते हैं कि अगर हम सेराते मुस्तक़ीम पर नहीं हैं तो कलमा कैसे पढ़ा ? वज़ू कैसे किया ? नमाज़ कैसे पढ़ी । क्या ये सब सेराते मुस्तक़ीम नहीं है । अगर हम ईमान क़बूल नहीं किया है तो इसके सामने कैसे हाज़िर हैं और इससे बढ़कर पत्थर हिमालय पहाड़ जो दलील है । वो ये कि ये रसूल अल्लाह भी पढ़ते थे । (सलवात) ये सूरा रसूलअल्लाह भी नमाज़ में पढ़ते थे । रसूल अल्लाह क्या माने लेते थे ? हिदायत फ़रमा तो जिसका रसूल ही सेराते मुस्तक़ीम पर न हो तो उसकी उम्मत क्या सेराते मुस्तक़ीम पर होगी (सलवात) मैं कहता हूँ इसमें

झगड़े की क्या बात है ? जो अपने को सेराते मुस्तक़ीम पर नहीं समझता उसे हिदायत की दुआ करने दीजिये । और जो अपने को सेराते मुस्तक़ीम पर समझता है उसे बक़ा की दुआ करने दीजिये । क्योंकि दुआ तो वहीं की जायेगी जो नीयत होगी । तवज्जोह । अब आप देखें कि इस मन्ज़िल पर जनाब हसन बसरी बहुत जलीलुलक़द्र हस्ती का नाम लिया है । जितने भी सुफ़ियाये कराम के सिलसिले हैं बेरादराने अहले सुन्नत में वह सब जा कर जनाबे हसन बसरी से मिलते हैं चाहे नक्शबन्दी हों, चाहे चिश्ती हों कोई भी सिलसिला हो ये जितने भी सिलसिलें हैं सब जा कर हसन बसरी पर ख़त्म होते हैं यानी मुसलमान हसन बसरी की अज़मत का इन्कार ही नहीं कर सकता जो इल्म का ख़ज़ाना और मारफ़त का ख़ज़ाना हसन बसरी ने उम्मत को अता किया उससे आज तक लोगों के अक़ीदे सम्भले हुऐ हैं । तो जनाब हसन बसरी फ़रमाते हैं कि सेराते मुस्तक़ीम से मुराद अली का रास्ता है । (सलवात)

सेरात मुस्तक़ीम अली का रास्ता है । क्योंकि अली ही वो हैं जो नबी के बाद दीन के रास्ते को मुस्तक़ीम रखने के ज़ामिन हैं । यहीं तक ग़नीमत था हसन बसरी फ़रमाते हैं कि जिस को सेराते मुस्तक़ीम पर चलना हो उसे अली की पैरवी करना पड़ेगी । क्योंकि अली के अलावा सारे रास्ते टेढ़े हो गये । (सलवात) फ़र्क़ मुलाहेज़ा फ़रमाया आपने । ख़ाली ये कहते हैं कि सेराते मुस्तक़ीम से मुराद अली का रास्ता है तो दूसरे भी कह सकते थे हाँ ! हाँ । बेशक अली का रास्ता सेराते मुस्तक़ीम है लेकिन बराबर हमारा मुस्तक़ीम है मगर हसन बसरी ने तो ये फ़रमा दिया कि नहीं बाक़ी रास्ते टेढ़े होगये कुछ तो कमी देखी । बहुत सी कमी इतनी बारीक होती है कि हर नज़र ताड़ नहीं सकती लेकिन हसन बसरी की नज़र ने ताड़ लिया और ऐलान कर दिया कि अगर निजात का रास्ता चाहते हो तो अली के रास्ते पर बाक़ी रहो । तवज्जोह । उन्होने कहा देखा आपने नौ दिन टहला कर आख़िर ताहिर साहब ने हम सब को कजरौ(टेढ़ा) ही साबित कर दिया मैने नहीं साबित किया हसन बसरी ने किया इसका मतलब ये कि बस शिया ही चले सेराते मुस्तक़ीम पर सुन्नी

बेचारे नहीं चल सकते ।वल्लाह ऐसी बात नहीं है सुन्नी भी चल सकते हैं और सुन्नी तो शिया से ज़्यादा महफ़ूज़ है । तवज्जोह फ़रमाईये । रास्ते के मामले में क्योंकि यहाँ अली पहले आये और बाद मे अभी और आना है। और वहाँ अली चौथे थे और आख़िरी किसी को आना नहीं मैं क्या कह रहा हूँ ? लेहाज़ा कोई सुन्नी मुसलमान चाहे कि अली हमारे चौथे ख़लीफ़ा थे तो हम अली के ही रास्ते पर चलेगें । आ गया सेराते मुस्तक़ीम पर (सलवात)

अब किधर से आया ? कहाँ-कहाँ से हो कर आया ? सीधा आया घूम कर आया इससे क्या मतलब । दो रकत नमाज़ शुक्र पढ़ लीजियेगा । कि अल्लाह ने आपको इतने दिन बाद पैदा किया कि आज भी सीधे रास्ते पर चल सकते हैं क्योंकि अली के बाद खुलफ़ये राशेदीन नहीं है । जनाब हसन बसरी फ़रमाते हैं कि देखो सेराते मुसतक़ीम से मुराद अली का रास्ता है । (सलवात) तफ़सीर मआलिमुल तन्ज़ील जो बम्बई मे छपी है के दसवें सफ़े पर तहरीर फ़रमाया कि हसन बसरी ने इसलिये कहा कि अली के अलावा दूसरे रास्ते टेढ़े हैं कि मिशकात : शरीफ़ में पैग़म्बरे इस्लाम की हदीस मौजूद है । मिशकात शरीफ़ जिल्द ८ सफ़ा १२८ में पैग़म्बरे इस्लाम की हदीस है ।इमाम राज़ी अपनी तफ़सीर में लिखते हैं कि पैग़म्बरे ने हज्जे आख़िर फ़रमाया मुसलमानों मैं देख रहा हूँ कि अनक़रीब मेरी वफ़ात के बाद उम्मत में फ़ितने उठेगें लेहाज़ा जब फ़ितने उठें तो तुम सब अली के साथ हो जाना क्योंकि अली ही सेराते मुस्तक़ीम हैं । अली ही तरीक़े वाज़ेह हैं (सलवात) अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें अली ही सेराते मुस्तक़ीम हैं सरवरे कायनात फ़रमाते हैं मिशकात शरीफ़ मे हदीस मौजूद है । तमाम तफ़सीरि मुआलिमुल तन्ज़ील की जिल्द अव्वल सफ़ा दो पर फ़रमाया कि हसन बसरी ने इसलिये कहा कि उनके सामने हदीस थी पैग़म्बर की जिसमे रसूलअल्लाह ने कहा अली सेराते मुस्तक़ीम हैं । यानी सीधा रास्ता अली हैं और लिखते हैं । एक हदीस और पैग़म्बर ने फ़रमाई वो हदीस ये है कि जो अली के साथ रह गया वो कुरआन के साथ है और जो कुरआन के साथ हुआ वो अली के साथ हुआ तो इस हदीस में नबी ने बतला दिया कि जो अली को छोड़

कर अपने को क़ुरआन वाला कहे समझ लेना पक्का झूठा है । (सलवात) फ़रिश्ते लिये जा रहे हैं फ़रिश्तों से पूछा इन्हें जहन्नुम में क्यों लिये जा रहे हो कहा इनकी जगह जहन्नुम है लेहाज़ा लिये जा रहे हैं हायँ-हायँ ! ये तो कह रहे हैं हम मुसलमान हैं (सलवात)

अब आप मुलाहेज़ा फ़रमायें मैं एक मरतबा हदीस दोहरा दूँ ज़ेहन नशीन रहे पैग़म्बर ने फ़रमाया जिसने अली को छोड़ा उसने मुझको छोड़ा, जिसने मुझको छोड़ा उसने ख़ोदा को छोड़ा, जिसने खुदा को छोड़ा उसका हश्र मालूम है । तो मुसलमानों ने कहा हाँ बड़े पक्के मुसलमान हैं ... सबूत कलमा पढ़ो । अश्हद्दोवन्ना ला इलाहा इलल्लाहा कहा मुसलमान क्या है ? कुछ कुछ... और अश्हद्दोवन्ना मोहम्मदन रसूलअल्लाह । और कहा : हमको तो इतना ही कलमा पढ़ाया गया है और आगे ? कहा : कुछ नहीं है । कुछ नहीं है । कहा : अलीयन वलीउल्लाह छोड़ दिया कहा : हाँ : वो तो छोड़ दिया कहा : हाँ वो तो छोड़ दिया कहा : जिसने अली को छोड़ा उसने मुझे छोड़ा और जिसने मुझे छोड़ा उसने खुदा को छोड़ा (सलवात) ये सिर्फ़ अली की मोहब्बत में नहीं फ़रमाया बल्कि चूंकि अली नूरे नबवी का हिस्सा है एक नूर के दो टुकड़े हैं आधा नूर पैग़म्बर है आधा नूर अली हैं ओर नूर की अहमीयत क्या है ? अभी देखिये एक फ़्यूज़ गया पूरी बिजली नहीं गयी इत्तेफ़ाक़ से फ़्यूज़ गया जिससे वीडियो चल रहा था । अब नतीजा ये क्या हुआ ? मजलिस होती रही लाउडस्पीकर चलता रहा मैं पढ़ता रहा और आप सुनते रहे सलवात के नारे होते रहे, नारे हैदरी भी होता रहा लेकिन अब जो कोई वीडियो देखेगा तो इतना हिस्सा नहीं मिलेगा । ये नहीं कि मैंने पढ़ना छोड़ दिया हो, आपने सलवात भेजनी छोड़ दी हो, उसने रिकार्ड करना छोड़ दिया हो । क्योंकि नूर नहीं रहा अगर पांच मिनट के लिये नूर नहीं रहा तो मेरी मजलिस कट गयी । और अगर अली न रहे तो दस लाख कलमात कट गये । (सलवात)

अगर तसलसुले नूर टूट जाये तो बात होती है मगर दिखाई नही देगी और सुनाई भी नहीं देगी । तो फिर इसीलिये नूर ने नूर को

ज़िम्मेदार बनाया । अगर अलीयनवलीउल्लाह नहीं रहे तो फिर जिसने अली को छोड़ा उसने मुझको छोड़ा, जिसने मुझको छोड़ा उसने खुदा को छोड़ा, और जिसने खुदा को छोड़ा उसका हश्र मालूम है । अब ये हश्र मालूम का तरजुमा क्या करूँ । तवज्जोह चाह रहा हूँ । शायद नबी का मक़सद ये रहा हो कि जिसने अली को छोड़ा उसने मुझको छोड़ा, और जिसने मुझे छोड़ा उसने ख़ोदा को छोड़ा, और जिसने खुदा को छोड़ा जहन्नुम ने उसको न छोड़ा । आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कि बग़ैर अली के न तकमीले कुरआन हो सकता है न तकमीले दीन हो सकता है । न मुकम्मल इसलाम हो सकता है । अली की विलायत के बाद अलयौमा अकमलतो लकुम दीनकुम की आयत नाज़िल हुई अगर पैग़म्बर ये एलान न करते तो कुरआन में ये आयत न आती अली वो है जिसने कुरआन मुकम्मल किया अली ही ने सीराते रसूल को बरक़रार रखा । और अली ही नहीं उनका पूरा घराना वो है कि जब भी अल्लाह के दीन को मिटाने कोई चलता है कभी हसन ने ज़हर पीकर दीन को बचाया जनाज़े पर तीर बरसायें है मामूली मन्ज़िल नहीं है । जब इमामे हसन के जनाज़े पर तीर बरस रहे थे और मदीने के मुस्लमानकह रहे थे हम रौज़ये रसूल तक जाने नहीं देगें । अल्लाह अल्लाह वो नवासा जिसको लोगों ने कभी रसूलअल्लाह के कांधे पर देखा कभी गोद में देखा । उसका जनाज़ा तवाफ़ के लिये ले जाया जा रहा था नाना की क़ब्र से रूख़्सत के लिये ले जाया जा रहा था और बीच में मदीने वाले तीरो कमान लिये खड़े थे कि हम नाना के रौज़े पर नवासा का जनाज़ा न जाने देगें । और तीर बरसाना शुरू किये तीन चार तीर हसन के जनाज़े पर आकर लगे तो इमामे हुसैन ने फ़रमाया अब ले चलो माँ के पायती दफ़्न कर दें । कोई जुल्मो जौर की इन्तेहा है । इन्साफ़ से बताओ मुसलमानों ये कौन सा इस्लाम है कि नबी के नवासे का जनाज़ा नहीं जा सकता इसीलिये हुसैन के साथ एक शबीहे पैग़म्बर भी किया था ताकि दुनिया ये देख ले कि सिर्फ़ हसन के जनाज़े पर तीर चलाने वाले नहीं हैं इनके सामने अगर रसूलअल्लाह की तस्वीर भी आ जाये तो ये तीर चलायेगें । आज इन मजलिसों की नवीं मजलिस है और इस नवीं मजलिस में

उस जनाज़ का ज़िक्र होता है जो शबीहे पैग़म्बर है लिखा है जब शबे आशूर नमूदार होने लगी और वक़्ते सहर आया नमाज़े अव्वल का वक़्त आया तो नमाज़ी मुसल्ले पर बैठन लगे इमाम आगे थे तो फ़िज़्ज़ा ने आकर आवाज़ दी आक़ा शहज़ादी ज़ैनब ने कहा कि मेरा जी चाहता है कि आज अज़ान अली अकबर कहें । मुड़ कर देखा अली अकबर की तरफ़ फ़रमाया बिस्मिल्लाह, अली अकबर ने अज़ान देना शुरू की लिखा है जब अली अकबर अज़ान दे रहे थे तो एक अजीब कैफ़ियत मैदाने करबला की । क्योंकि रसूल की आवाज़ थी अल्लाहोअकबर मीर साहब फ़रमाते हैं ।

शोबे सदा में पंखड़ियां जैसे फूल में ।
बुलबुल चहक रहा था रियाज़े रसूल में ।।

एक अजीब बैत फ़रमाई मीर साहब ने इस वक़्त की तरजुमानी फ़रमायी है -

हर एक आंख आंसूओं से डबडबा गयी ।
गोया सदा रसूल की कानो में आ गयी ।।

मैने तारीख़ों मे देखा है कि जब बिलाल आये वफ़ाते रसूल के बाद मदीना छोड़ दिया था और जनाबे सैयदा को मालूम हुआ तो फ़िज़्ज़ा से कहा कि वो बिलाल से कहे कि अरसे से तुम्हारी अज़ान नहीं सुनी । बिलाल मस्जिदे नबवी में थे अज़ान देना शुरू की बेटी को बाप का ज़माना याद आ गया । शहज़ादी को रोना आ गया । यहाँ तक की बिलाल ने कहा अशहदुदोवन्जा मोहम्मदन रसूलअल्लाह ।

तो दौड कर फ़िज़्ज़ा ने कहा बस करो बिलाल बीबी फ़ातमा को ग़श आ गया है । मै कैसे कहूँ कि दिले ज़ैनब ने ज़ैनब को कैसे सम्भाला अरे ! जब शबीहे पैग़म्बर ने अज़ान दी होगी । नाना की अज़ान याद आ गई होगी । बीबीयाँ ज़ारो क़तार रो रही थीं नमाज़े ज़ुहर ख़त्म हुई करबला का कारज़ार शुरू हुआ और रफ़्ता रफ़्ता

एक-एक जाता रहा शहीद होता रहा । यहाँ तक कि वो वक़्त भी आ गया कि अब कोई बाक़ी न रहा सिवाये एक कड़ियल जवान के बेटा है एक छः महीने का बच्चाय अली असग़र है फ़ेहरिस्ते शोहदा अपनी तकमील की मन्ज़िल पर पहुँच रही थी । एक मरतबा अली अकबर ने कहा बाबा अब मुझे भी इजाज़त दीजिये बाबा । कहा : अली अकबर मै तुमको कैसे इजाज़त दे दूँ कि तुमको तो तुम्हारी फूफी ज़ैनब ने पाला है । ज़ैनब से इजाज़त मांगो आये ख़ैमे गाह पर सर झुका का अर्ज़ की फूफी अम्मा अब मुझे भी इजाज़त दे दीजिये । रवायत का कलमा है कि जनाबे ज़ैनब ने फ़रमाया अरे मेरे लाल अली अकबर कैसे तुमको इजाज़त दूँ । तुम मर जाओगे तो उम्मे लैला कैसे जियेगी । जनाबे अली अकबर ने फ़रमाया फुफी जान आप बजा फ़रमाती हैं मगर मेरी माँ उम्मे लैला, अगर मैं न जाऊँ तो इतन बता दीजिये कि अब कौन जायेगा ? कहा अली अकबर सच कह रहे हो सिवाये भईया के कोई नहीं है कहा फुफी अम्मा मेरे बाप की मौत मोहतरम है कि मेरी मौत ज़ैनब ने गले से लगा लिया अली अकबर क्या जवाब दे फूफी कहा नहीं चलिये मेरे साथ और बाबा से चलकर सिफ़ारिश कीजिये मेरी । जनाबे ज़ैनब आयीं कितना मुश्किल काम था अज़ादारों आकर भाई के सामने खड़ी हुईं कहा अली अकबर हमें सिफारिश के लिये लायें हैं जनाबे ज़ैनब ने अली अकबर की गुफ़्तगू दोहराई तो हुसैन ने सीने से लगा लिया । हाँ-हाँ मेरे लाल जा खुदा हाफ़िज़ हमीद कहता है कि सुब्ह से बनी हाशिम ख़ैमे से निकल निकल कर जा रहा थे । मगर जब अली अकबर रुख़सत के लिये ख़ैमे में गये तो इस तरह से अली अकबर रुख़सत हुऐ जैसे भरे घर से जनाज़ा निकलता है । जज़ाकुम रब्बोकुम । हाँ हाँ आप इन्शाअल्लाह बहुत रोयेगें । खुदा इस रोने को क़ुबूल करे । इसी रोने के लिये तो हम ख़ल्क़ किये गये हैं ।

अल्लाह अल्लाह लिखा है अली अकबर बाहर आये । तसव्वुर कीजिये कि अली अकबर को किसने घोड़े पर सवार किया होगा ? ज़ईफ़ बाप ने रकाब थामी अली अकबर को सवार किया

कहा अली अकबर जब तक सामना रहे मेरे लाल मुड़मुड़ कर देखते जाना अली अकबर सिधारे हुसैन ने दोनो हाथ जानिबे आसमान किये माबूद गवाह रहना अब तेरी बारगाह में फ़िदये के लिये अपने बेटे को भेज रहा हूँ जो सूरत और सीरत में, रफ़्तार और गुफ़्तार में रसूल से मुशाबेह है। ऐ माबूद जब हुसैन का नाना को देखने का जी चाहता था तो बेटे को देख लेता था । अब हुसैन नाना की ज़ियारत से महरूम हो रहा है । रवायत में है कि अली अकबर आगे बढ़े बाप की वसीयत याद आयी मुड़ कर देखा । क्या देखा हुसैन की कमर झुकी हुई है दोनो हाथ कलेजे पर रखे हुऐ हैं.... आहिस्ता आहिस्ता बढ़ते चले आ रहे हैं । अलीअकबर ने घोड़ा रोक दिया आवाज़ दी बाबा आप क्यों आ रहे है ? जवाब सुनोगे अज़ादारों, हुसैन ने कहा अली अकबर, अली अकबर मैं नहीं आ रहा हूँ । कलेजा खींचें ला रहा है । हाँ हाँ अज़ादारों हाँ मेरी मां बहनो, भाईयों और बुजुर्गो खुदा किसी को जवान बेटे का ग़म न दिखाये तुम्हारे जवान को परवान चढ़ाये बाप का कलेजा खिंचा जा रहा है । कहा बाबा आप को मेरे हक़ की कसम ख़ैमा गाह में वापस जाईये हुसैन पलट आये माँ दरे ख़ैमा पर आ गई उम्मे लैला इसलिये कि बेटे पर कोई वक़्त आयेगा तो बाप के चेहरे से अन्दाज़ा होगा । उम्मे लैला हुसैन को देख रही थीं हुसैन को देखा कि हुसैन के चेहरे का रंग मोतग़ईयर हुआ । आवाज़ दी आक़ा आक़ा मेरे लाल की ख़ैरियत..... हुसैन मुड़े आवाज़ दी उम्मे लैला एक नामी पहलवान तेरे बेटे के मुक़ाबले में आया है । उम्मे लैला तेरा बेटा तीन दिन का भूखा है तीन दिन का प्यासा है उम्मे लैला मां की दुआ बेटे के हक़ में मुस्तेजाब होती है ऐ उम्मे लैला जा कर दुआ करो उम्मे लैला सहने ख़ैमागाह में आयीं सर के बाल खोल दिये आवाज़ दी बीबीयों आओ मै अपने लाल के लिये दुआ करती हूँ । आवाज़ दी ऐ यूसुफ़ को याकूब पर पलटाने वाले मेरे लाल को पलटा दे ख़ैमागाह असलख़ैरियत से । अभी दुआ की ही थी कि अली अकबर ने इस नामी पहलवान को वासिले जहन्नुम किया.... प्यास की शिद्दत हुई लोहे की गिरानी ने सताया आये दरे ख़ैमा पर बाबा गेरानिये आहन सता रही है बाबा प्यास मुझे डाल रही है ।

ये अली अकबर नहीं आरें है ये उम्मे लैला की दुआ वापस आयी है । हुसैन ने कहा मेरे लाल अली अकबर अपनी ज़बान मेरे दहन में दे दो अली अकबर ने हुसैन के दहन में अपनी ज़बान दे दी फ़ौरन खींच ली कहा बाबा बाबा आप तो मुझसे ज़्यादा प्यासे है । जज़ाकुम रब्बोकुम । अज़ादारों मुझे नहीं मालूम की मजलिस कहाँ पर ख़त्म होगी । इतना सुन लो कि जब अली अकबर शबीहे पैग़म्बर है उन्होने ज़बान दहन मे दी होगी तो हुसैन को याद आया होगा । नाना । नाना आपने एक दिन मदीने में अपनी ज़बान चुसाई थी । ऐ नाना आप की ज़बान से दूध की नहरें जारी थीं ऐ नाना ये कैसी शबीह है अलीअकबर, सिधारो, बेटा सिधारो, तुम्हारे दादा तुम्हे कौसर पर सेराब करेगें बस अली अकबर.... मैदाने जंग में आये । तारीख़ में नहीं मिलता । मक़ातिल में नहीं मिलता मगर अक़्ल कहती है कि शायद हुसैन ने कहा हो कि उम्मे लैला बस अब दुआ मत करना अब अपने बच्चे को कुरबान करदे अल्लाह की राह में । क्यों उम्मे लैला ने दुआ न की, न अली अकबर वापस आये एक आवाज़ आई, आवाज़ आई बाबा- बाबा मेरा आख़िरी सलाम क़बूल कीजिये। हुज़ूर सुब्हे आशूर से जो रवायतें देखी है तो हर रवायत में है कि हुसैन जिसके जनाज़े पर गये जुलजनाह पर सवार हो कर गये । सिर्फ़ अली अकबर का जनाज़ा ऐसा है जैसे ही आवाज़ आई.... हुसैन दौड़े हमीद कहता है मै देख रहा था कि हुसैन कभी ज़मीन पर बैठ जाते थे कभी उठ जाते थे । कभी उठते थे कभी बैठते थे । मैने आवाज़ सुनी हुसैन कहते थे या अली, या अली, या अली, । कायनात में सन्नाटा था ज़ईफ़ बाप जब जवान बेटे के सरहाने पहुँचे सर उठा कर ज़ानू पर रखा ग़ौर से देखा बाप आ गया अली अकबर । बस ! बस ! हुज़ूर खुदा किसी बाप को अपने बेटे का ये आलम न दिखाये । जो हुसैन ने देखा कि अली अकबर ज़मीन पर ऐड़ियां रगड़ रहे है । ऐ मेरे लाल क्या अज़ीयत है ? कहाँ दर्द है ? देखा .... हाथ सीने पर रखा है हुसैन ने हाथ हटाया.... और जो मन्ज़र हुसैन ने देखा कोई बाप नहीं देख सकता । बरछी का फल कलेजे में टूटा हुआ है । लिखा है दो ज़ानू

बैठे फ़रमाया बिस्मिल्लाहे व बिल्लाहे व अला मिल्लते रसूलअल्लाहे सीनये अली अकबर पर झुके, बरछी का फल पकड़ा और खींचा कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलेहे राजेउन । सुनिये मै मजलिस को तमाम करूँ ।

अम्बिया की रूहें करबला का वाक़ेया देख रही थीं जब हुसैन बरछी का फल खींच रहे थे । मुहँ फेर लिया ऐ माबूद ... हम से नहीं देखा जाता । इब्राहीम ने फ़रियाद की अरे तेरे हुसैन का सब इसे कोई दोहरा नहीं सकता ।

●●●

बस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दसवीं मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने ईमानी सरवरे कायनात फ़ख़रे मरतबत जनाब मोहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्ल०) ने इस हदीस में ईरशाद फ़रमाया है कि ऐ मुसलमानों, मैं तुम में दो वज़नी चीज़ें छोड़े, दो गिरां चीज़े छोड़े जा रहा हूँ । एक कुरआन और दूसरे अपनी इतरत । ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें । अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना । सरवरे कायनात ने वक्ते वफ़ात तक ये चाहा कि मरे बाद भी उम्मत गुमराही से बची रहे । अब बचना न बचना हमारा आप का काम है ला इकराहा फ़िद्दीन दीन में किसी किस्म का जब्र नहीं है । रसूल इसलिये आया था कि शिरक व कुफ़्र से निकाल कर दामने इसलाम में लाये ताकि हम इसलाम हासिल कर सकें इस रसूल पर ही ये ज़िम्मेदारी थी कि जिनको इसमे मोहब्बत से मुसलमान बनाया था उनको निफ़ाक़ से भी महफ़ूज़ रखें इनको मुसलमान होने के बाद गुमराही से बचाये । इसके लिये मरते मरते गुज़रते गुज़रते विसाल के वक़्त पैग़म्बर ने ये हदीस ईरशाद फ़रमाई कि मैं तुममे दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ एक कुरआन दूसरे अपनी इतरत । इतरत के सिलसिले में मुसलमानों में बहस पैदा कर दी कि इतरत नहीं कहा था बल्कि सीरत कहा था । इस सिल सिले में तारीख़े तबरी में एक वाक्या लिखा है कि जिस वक़्त रसूल अल्लाह की वफ़ात हो गयी थी और

मुसलमानों में ये बहस चली कि रसूल अल्लाह ने इतरत कहा था या सीरत कहा था । ये बहस खुद इस बात की दलील है कि नबी ने एक बात ऐसी कही थी कि जिसके सुनने वाले दो तरह के थे कुछ लोग वो थे जिन्होने इतरत कहा और कुछ लोग वो थे जो कह रहे थे कि हमने सीरत सुना । इख़्तेलाफ़ इस बात की दलील है कि इतरत का लफ्ज़ भी कहीं से आया । मुसलमानों में इख़्तेलाफ़ हुआ वो एक अलग बात है तो तबरी ने लिखा है कि भई आपस मे लड़ने झगड़ने से क्या फ़ायदा है । चलो चल कर उम्मुलमोमनीन हज़रत आयेशा से पूछ लें कि रसूल अल्लाह ने इतरत कहा था कि सीरत कहा था । चुनांचे एक वक़्त आया असहाबे अकाबेरीन का उम्मुलमोमनीन के पास और दरवाज़े पर आ कर कहा कि उम्मत में एक निज़ा वाक़ेय हो गयी है । पैग़म्बर ने जो हदीस ईरशाद फ़रमाई वक़्ते वफ़ात इसमें इतरत कहा था या सीरत कहा था । तो आप जवाब मुलाहेज़ा फ़रमायें । उम्मुलमोमनीन का और अपनी अक़्ल से फ़ैसला करें कि उम्मुलमोमनीन ने फ़रमाया कि जब पैग़म्बर ये हदीस बयान कर रहे थे तो तुम लोग इतना हुल्लड़ कर रहे थे कि मैं सुन न सकी कि पैग़म्बर ने इतरत कहा या सीरत कहा । (सलवात)

आपकी समझदारी से तो ही दुनिया परेशान है मैने कुछ भी नहीं कहा और आप समझ गये । यानी खुली हुई बात है कि उम्मुल मोमनीन फ़रमाती हैं कि तुम हुल्लड़ कर रहे थे इतनी चीख़ व पुकार इतना शोरो फ़ुग़ाँ था वफ़ाते रसूल के वक़्त कि हम सुन ही न सके कि नबी ने इतरत कहा कि सीरत कहा । इसका मतलब ये है कि जब हदीस शुरू हुई थी । इन्नी तारेकुम फ़िक़ुमुस्सक़लैन वहीं से हुल्लड़ शुरू हो गया था । (सलवात) क्योंकि उम्मुल मोमनीन ये नहीं फ़रमा रही है कि मैने ये हदीस ही नहीं सुनी । ये फ़रमा रही है कि इतरत कहा कि सुन्नत कहा ये सुन ही न सके । इधर नबी ने ये कहा मै तुम मे दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ और हुल्लड़ शुरू हो गया (सलवात) इसका मतलब ये कि नबी फ़रमाते हैं कि मै तुममे दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ तो सब समझ गये कि वो दोनो चीज़े क्या होगी ? तबतो हुल्लड़ हुआ वरना हुल्लड़ की क्या बात थी ! तो जैसे ही नबी

ने कहा दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ । एक कुरआन दूसरे इतरत तो जब कुरआन और इतरत कहा तो हुल्लड़ हो रहा था । यानी उम्मत उस वक़्त न कुरआन पर राज़ी थी न इतरत पर राज़ी थी जब ही तो हंगामा कर दिया मुसलमानों ने । अब सवाल ये पैदा होता है कि मेरा ख़्याल ये है कि अगर नबी ने सीरत कहा होता तो हुल्लड़ ही क्यों होता ? उम्मुल मोमनीन का ये फ़रमाना कि हुल्लड़ हुआ नबी ने इतरत कहा इसी से लोग ख़फ़ा हो गये पैग़म्बर से इसीलिये तो हम किसी की ख़फ़गी का ख़्याल नहीं करते कि बिगड़ने वाले हम क्या चीज़ हैं... (सलवात) किसी के बिगड़ने का सवाल नहीं सवाल ये है कि बिगड़ कर हमारा क्या बिगाड़ लेगा । तवज्जोह फ़रमाईयेगा । अपना ही फ़ैसलाये निजात तबाह कर लेगा । और अपनी ही गुमराही का इन्तेज़ाम कर लेगा । तो पैग़म्बरे इस्लाम ने ईरशाद फ़रमाया कि दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। कुरआन और इतरत । आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया कि कुरआन के साथ क्या सलूक किया । जमा किया गया धोया गया, जलाया गया, मिटाया गया, ग़लतियाँ छेड़ दी गयीं कुरआन में उम्मत पर छेड़ दिया गया था कि वो सही कर लें ये सब कुरआन के साथ हुआ कि नहीं । यानी कुरआन के साथ भी उम्मत ने कोई अच्छा सलूक नहीं किया ये बात तारीख़ से साबित है । अब इतरत की बात रह गई तो कुरआन ने कहा तुम छोड़ दो इतरत को हम कैसे छेड़ देगें हम नहीं छेड़ सकते । इसलिये कि हममे और इतरत में फ़र्क़ नहीं है सिवाये इसके कि हम सामित हैं वो नातिक़ हैं हम थ्योरी है वो प्रैक्टिकल है । कुरआन पढ़ना हमारे सफ़ों में देखना अहलेबैत को तब कुरआन समझ में आ सकता है । वरना कुरआने समझ में नहीं आ सकता है । ये कुरआने मजीद जो आज हमारे पास है जिसपर सब मुसलमानों का ईमान है उस कुरआन को अल्लाह ने सूरये फ़ातेहा से शुरू किया फ़ातेहा के माने है इफ़्तेंताह । इब्तेदा की अल्लाह ने कुरआने मजीद में सूरये फ़ातेहा से सूरये फ़ातेहा की इतनी अहमीयत है कि बावजूद इसके तरतीब सोएम कुरआन में बड़े सुरे पहले रखे गये । छोटे सूरे बाद में रखे गये मगर सूरये अलहम्द पहले ही रखा गया । अब ये किसके असर से रखा गया ये मै नहीं

जानता । बहरहाल सूरये अलहम्द आज भी कुरआन में सबसे पहले मौजूद है जिसकी एक आयत मैने कल आपके सामने पढ़ी थी । एहदेनस्सेरातल मुस्तक़ीम देखिये सूरये अलहम्द में मुसलमानों ने समझा दिया कि यही से समझ लो कि कुरआन में है । क्या ? कुरआन में पहले हम अपनी महद करते है । हम अपनी तारीफ़ चाहते है और अपनी रूबूबीयत की तारीफ़ चाहते है ।

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन

फिर हम चाहते है कि तुम हमारी रहमानीयत और रहीमीयत का इक़रार कर लो । अर्रहमानिर्रहीम मालिके यौमिद्दीज । और ये भी जान लो कि हम यौमे दीन के मालिक है कुरआन के आने के बाद कुरआन के ज़ोर पर इस्लाम के नाम पर तुम चाहे कितनी दुनिया के मालिक बन जाओ मगर दीन के मालिक हम ही है । इस दिन के मालिक हम ही है । जिस दिन तुमसे हिसाब लिया जायेगा और ये आप को मालूम है कि हिसाब जब भी किसी से लिया जाता है तो जितनी रक़म होती है उतनी ही हिसाब में जोड़ लो । यानी जितना माल ज़्यादा होगा । दस रूपये का हिसाब, सौ रूपये का हिसाब, अरब का हिसाब कुछ टाईम लगेगा कि नही लोग ये कहते है कि सलातीन शाह और शहनशाह इस्लाम में गुज़रे तो नही तो उन्हें न जाने कितना हिसाब देना पड़ेगा । शायद हम लोग जन्नत में पहुँच भी जायें और उन लोगों को हिसाब देते ही रहें । (सलवात) इसके बाद इरशाद होता है । वईय्या कनस्तईन और कहो कि हमा तुझ से ही मदद चाहते ह। । यानी दीन के मामले में कोई माबूद नही सिवाये मेरे ।कोई लायक़े इबादत नही सिवाये मेरे । तुमको मेरी ही इबादत का इक़रात करना पड़ेगा । और मुझसे ही मदद हासिल करना पड़ेगी । तो लोग कहते है कि किसी के आसताने पर न झुको । तो आप तो इसलिये कहते है कि आप की समझ में ही न आया कि अल्लाह ने क्या-क्या सूरह पढ़वा कर (सलवात) खुदा जानता था कि ये क़ब्ज़े से निकल जायेंगें । कहो इय्या कनाबदो बस हम तेरी ही इबादत करते है । व इय्या कनस्तईन बस हम तुझ ही से मदद चाहते है । और पल्ले कहलाया ।

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन

तमाम तारीफें इसी के लिये है जो आलेमीन का रब है। यानी तुम मुसलमानों को किसी की तारीफ़ करने का हक़ है । न किसी की इबादत करने का हक़ है । और न तुम को किसी से मदद मांगने का हक़ है । ये सब मेरा हक़ है । तारीफ़ मेरी होगी । बस तुम को मेरी तारीफ़ करना होगी । अब मैं जिस चीज़ की तारीफ़ चाहूँ । (सलवात) मै जिस चीज़ की तारीफ़ करूँ । अगर मैं ये कहूँ कि सुब्हान अल्लाह खुदा ने क्या उम्दा सूरज बनाया है तो ये सूरज की तारीफ़ हुई या अल्लाह की तारीफ़ हुई । अल्लाह की तारीफ़ हुई । अगर मैं कहूँ क्या उम्दा चांद बनाया है तो ये चांद की तारीफ़ हुई या अल्लाह की तारीफ़ हुई । अल्लाह की तारीफ़ हुई । यानी जितनी चीज़ें अल्लाह ने बनाईं उन सबकी तारीफ़ अल्लाह की तारीफ़ है । और लफ्ज़ भी क्या क्या रखा । "रब" तो तारीफ़ अल्लाह के लिये है । किसी बन्दे की, किसी शै की कोई मुसलमान क़यामत तक की तारीफ़ नहीं कर सकता । सूरये अलहम्द पढ़नेके बाद अब सिर्फ़ अल्लाह की तारीफ़ होगी । मैं कहूँ कि मेरी शेरवानी बहुत उम्दा सिली है तो ये टेलर की तारीफ़ है । अगर मैं कहूँ कि मेरी ऐनक बहुत उम्दा है तो ये ऐनक बनाने वाले की तारीफ़ है । अगर मैं कहूँ ये मिम्बर बहुत उम्दा है तो ये मिम्बर बनाने वाले की तारीफ़ है । यानी जिसने जिस चीज़ को बनाया है इसके ख़ालिक़ की तारीफ़ होगी । इस शैय की तारीफ़ तैय है, कोई झगड़ा तो नहीं है । नहीं है । अब जिनको अल्लाह ने इमाम बनाया है तो उनकी तारीफ़ तो अल्लाह की तारीफ़ होगी । और जिन को आपने बनाया ? (सलवात) अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन तमाम तारीफ़ उसकी है जो आलेमीन का पालने वाला है । मक्का का नहीं । मदीने का नहीं, हिजाज़ का नहीं, सऊदी अरब का नहीं, लोग कहते है कि अरे साहब ! अरब का एहतेराम कीजिये, अरबों का ऐहतेराम कीजिये, ये ख़त्मी मरतबत का मुल्क है, है या था ? जब तक अरब मोहम्मदी था । हम पर तारीफ़ वाजिब है । जब से आप सऊदी अरब लिखने लगे तो अलहम्दो लिल्लाहे के ख़िलाफ़ हो गया । (सलवात) कैसे हिम्मत पड़ी उस ज़मीन को .... अरे हिन्दुस्तान में

है, जिस शहर को जो बसाता है उसके नाम पर शहर का नाम रख देतें हैं । हिन्दू बेहतर हैं कि शहर खुद बसाते हैं और अपने बुज़ुर्गाने दीन के नाम पर नाम रखते है । राम चन्द्र जी के नाम पर रख दिया लक्षमण जी के नाम पर रख दिया । शिवाजी के नाम पर रख दिया । बुद्ध जी के नाम पर बुद्ध गया रख दिया । ये अजब मुसलमान है कि मोहम्मद को उम्मी कह दिया । उसके मुल्क को सऊदी कह दिया । (सलवात)

ये कमाल है अब ज़रा मुलाहेज़ा फ़रमायें ये एक अलग से बात थी जो मै कहता हुआ गुज़र गया । यहाँ गुज़ारिश सिर्फ़ इतनी है कि जिस चीज़ की तारीफ़ खुदा करे उसकी तारीफ़ करना पड़ेगी । अगर कुरआन में अल्लाह ने मच्छर की तारीफ़ की है तो मच्छर की तारीफ़ करना पड़ेगी । ऊँट की तारीफ़ की है तो ऊँट की तारीफ़ करना पड़ेगी । अगर खुदा ने शहद की मक्खी की तारीफ़ की है तो शहद की मक्खी की तारीफ़ करना पड़ेगी । अगर ख़ोदा ने मकड़ी की तारीफ़ की है तो मकड़ी की तारीफ़ करना पड़ेगी । अरे माबूद ! जिसने सूरों को जानवरों के नाम पर रखा । अलबक़र:, गारे का सूरा, अलफ़ेल, हाथी का सूरा, अल्लाह, अल्लाह, अनकबूत मकड़ी का सूरा, ऐ माबूद ! मकड़ी याद रही तुझे । एक सूरा किसी साहाबी के नाम पर रख देता । (सलवात) सहाबी न सही सूरये असहाब ही रख देता । (सलवात) हाँ कहिये क्या कहना चाहते है । अहलेबैत के नाम पर कौन सा सूरह है । सुब्हानअल्लाह असली सूरा भूल गये । वही सूरा है जिसके आगे अरब अपने क़सीदे उतार ले गये । इन्ना अतैना कलकौसर । ऐ हबीब ! हमने तुम्हें कसरते औलाद अता की । नबी की औलाद का सूरह है । असहाब का सूरह नहीं है । (सलवात) आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया । नहीं रखा उसने नाम अरे कमाल कर दिया । काफ़िर के नाम पर सूरह रख दिया । कुलया अय्योहल काफ़ेरून । मै क्या कहूँ ? अरे क़यामत करदी । मुनाफ़िक़ों के नाम पर सूरा रख दिया । अम्बिया के नाम पर सूरा रख दिया । जानवरों के नाम पे सूरह औलाद नबी के नाम पे सूरा । सब के नाम पर सूरह । और नहीं है तो पूरे कुरआन में असहाब के नाम पे ही सूरह, और जमा

किया असहाब ने कुरआन । (सलवात)

भई किसी गाये ने जमा नहीं किया कुरआन । हाथी ने जमा नहीं किया । मकड़ियों ने कुरआन जमा नहीं किया । शहद की मक्खियों ने कुरआन जमा नहीं किया । जमा किया असहाब ने और सब के नाम पर सूरे । इसका मतलब ये कि सूरों के नाम तो कोई बदल नहीं पाया तो मानी क्या बदल पायेगा । अल्लाह ने कहा : देखो हमारे यहाँ मख़्लूक़ में क़द्र इसकी है जो हमारी राह पे चले जानवर सही । जानवर सही हम इसकी तारीफ़ करेगें । क्योंकि हमने बनाया है उसे हम इन्सान की तारीफ़ करेगें या हमने बनाया है । तो हमने अगर मकड़ी भी बनायी तो मकड़ी के नाम पर सूरा रख दिया अब ये जो चीज़ ख़लक़ की इसका ज़िक्र कुरआन में कर दिया । अरे हमने तो घोड़ों तक की क़सम खा ली अरे हमने सूरज के नाम पर सूरा रख दिया देखो तो हमारा क्या क्या है ? कुरआन मे देखो, अरे कम्बख़्त बदल गया । मै क्या कह रहा हूँ ? बदल गया.... मलऊन हो गया, मरदूद हो गया मगर कुरआन में मै शैतान को भी न भूला (सलवात) इसका भी ज़िक्र कर दिया मैने क़ौमे नूह का भी ज़िक्र कर दिया मैने ज़िक्र सबका किया है ? तज़किरा मैने सबका किया और असहाब को क्यूँ छेड़ दिया है । कहाँ छेड़ दिया है ? उनका भी ज़िक्र किया है आप जो चाहें ज़िक्र करें हमतो कुरआन में देखेंगें कि किसका ज़िक्र किया है ? अरे असहाबे कैफ़ का ज़िक्र ही नहीं इस कुत्ते का भी ज़िक्र किया है । (सलवात) अरे माबूद क़यामत है असहाबे कैफ़ का ज़िक्र और असहाबे मोहम्मद का ज़िक्र नहीं कमाल की बात है और है वहाँ अजब तरह से है । असहाबुन्नार वलजन्ना । अल्लाह अल्लाह असहाब सर्फ़ किया तो दो तरह से Adjective लगा कर यानी वह असहाब जो जहन्जुम जायेगें और वो असहाब जो जन्नत जायेगें तो ओहद की लड़ाई में ज़िक्र किया और बद्र की बात याद दिलाई और नबी की रिआयत से ओहद का फ़रार माफ़ किया ।

अरे माबूद जब मैदान में कोई नहीं टिक सका तो जहाँ तूने कोई ज़िक्र नहीं किया था ये ज़िक्र भी न करता । नहजे कुरआन

समझिये कुरआन का रूख़ देखिये । इतरत की बात नहीं कर रहा हूँ । कुरआन की बात नहीं कर रहा हूँ । उन्होने कहा : नहीं एक जगह जिक्र है सहाबी का हाँ !हाँ !! है ग़लत नही कहूँगा है ज़िक्र मगर क्या कहा है ? डरो नहीं ! डरो नहीं । ऐ मेरे माबूद ये तेरा तरीक़ा समझ में नहीं आता (सलवात) मकड़ी की ज़ात क्या, मकड़ी की हैसियत क्या मगर अगर उसने जाला बुन दिया तो उसकी तारीफ़ कर दी । जानवर की तारीफ़ कर रहा है । और सहाबी से कहा डरो नहीं डरो नहीं अच्छा : कह दिया था दिल सम्भाल दिया था तू माबूद है । तू न तसल्ली देगा तो कौन देगा । मगर फिर ये न कहना कि जो अल्लाह के वली होते हैं वो डरते नहीं । (सलवात) ये न कहना हुज़न न करो हुज़ूर इतनी तक़रीरें हो गईं अज़ादारी के ख़िलाफ़ बहुत बिदअत के फ़तवे आपको सुना दिये गये । सीधी सी आयत क्यों न सुनाऊँ । मैं क्या कह रहा हूँ ? अब जब पढ़िये तो कहिये देखो अल्लाह हुज़्न को मना करता है । साफ़ लफ़्ज़ो में है। वला तहज़ुन अरे भई तक़रीर का सलीक़ा नहीं हमसे सीखो अरे वाला तहज़ुन मौजूद है तहरीफ़ तो कह दी है । कह दो कि अल्लाह ने कुरआन में मना किया वला तैहज़ुन हुजन न करो । रो नहीं, रोते हो मुसलमानों तुम लोग, जब सहाबी का रोना पसन्द नहीं आया अल्लाह को तो तुम मुसलमानों का रोना कहाँ पसन्द होगा ? मगर नहीं कहता कोई सामने की आयत है कोई नहीं कहता मै परेशान हूँ क्यूँ नहीं कहता वो कहते हैं करें क्या ? हमको तो रोने से काफ़िर साबित करना है । (सलवात) हमें तो हुसैन पर रोने वालों को रोने की वजह से कुफ़्र का फ़तवा देना है कि जो भी शिया या सुन्नी, हुसैन कि ग़म मे रोये वह काफ़िर । अब अगर यहाँ ये आयत पढ़ दें । वला तैहज़ुन तो मजमा पूछेगा कि किस से कहा, (सलवात)

मन्ज़िल को तश्ना नहीं रहने देना है । हो सकता है आप ये ख़्याल ले के जायें कि फिर हमने नहीं पढ़ा, आप तो पढ़ रहे है वला तैहज़ुन कहा : आप न रोईये । हम क्यों रोयें ? जब जनाब याकूब के रोने का ज़िक्र किया उसने । फ़िराक़े युसुफ़ में याकूब रोते थे, और कमाल ये कि ज़िन्दा नबी ज़िन्दा पर रोता था । (सलवात)

और यहीं तक नहीं । कुरआन ने कहा : जब यूसुफ़ का कुर्ता मिला, और याकूब ने कुर्ते को गले से लगा लिया जबकि उस कुर्ते पर याकूब का खून नहीं था यूसुफ़ का जो जब आँखोंसे लगाया तो आँखों मे रौशनी आ गई । इसका मतलब ये कि अगर किसी कपड़े पर किसी नबीज़ादे का खून हो तो आँखों में रौशनी आती है अब न कहना कि अलम का फरेहरा आँखों से क्यूँ लगाते हो । (सलवात) और ये तो सब जानते है कि वह खून यूसुफ़ का न था बल्कि युसुफ़ का कहा गया था । कुर्ते को जानवर के खून मे रंग कर लाये थे । और कहा भेड़िया खा गया यूसुफ़ को, देखो, खा गया, याकूब रोते रोते नाबीना हो गये थे । और जब कुर्ता आँखों से लगाया तो फ़ौरन नूर आ गया आँखों में । इतनी अहम बात थी कुरआन में ज़िक्र करने को । कहा : देखो याकूब ने यूसुफ़ का कुर्ता आँखों से लगाया तो नूर वापस लौट आया । तुमने कैसा कुरआन पढ़ा कि अन्धे हो गये । (सलवात) कुरआन खुद अपनी जगह पर मौजिज़ा है । इसलिये ज़िक्र नहीं किया । हाँ ।

आप कहते है वला तहज़ुन तो मत रोईये । तो अगर खाली वला तैहज़ुन होता तो हम न रोते लेकिन वला नख़्फ़ा भी लगा है । डरो नहीं रो नहीं सुब्हान अल्लाह कुरआन है अरे कुरआन ही से समझ लो डरो नहीं रो नहीं यानी अगर नबी की मोहब्बत में रोना होता तो खुदा न मना करता । खुदा तो डर कर रोने को मना कर रहा है । (सलवात) अपनी जान के डर से रोना मना है । अज़ रूये कुरआन, लेकिन नबी का भी नबी की मोहब्बत में रोना मना नहीं है । कुरआन समझने के लिये भी अक़्ल चाहिये । इसलिये कहा हम जिसकी तारीफ़ करें बस उसकी तारीफ़ करो । तमाम अजल्ला उलेमाये अहले सुन्नत इस बात पर मुत्तफ़िक़ है कि अहलेबैत की शान में आयतें नाज़िल हुई जिनकी अल्लाह ने मदह की । जिनकी अल्लाह ने तारीफ़ की । खुदा जिनकी तारीफ़ करता है हम उनकी तारीफ़ करते है । जिनकी खुदा ने कभी तारीफ़ ही न की । बस इतना फ़र्क़ है कहा देखो ज़्यादा तारीफ़ का हक़ मेरा है । अपनी मरज़ी से तारीफ़ न करना । जिसकी तारीफ़ मैं करूँ, उसकी तारीफ़ करना पड़ेगी ।

इय्या क-नाबुदो, कहो बस तेरी ही इबादत करते हैं । बस तेरी ही इबादत । कहा :इय्या क-नाबुदो कहिये । अल्लाह की इबादत कीजिये । अज़ाये हुसैन को इबादत समझते हैं । अरे ये क्या बात हुई । मोहब्बत अहलेबैत को इबादत समझते हैं । समझते है कि अल्लाह समझाता है । दो बातों में बड़ा फ़र्क़ है । खुद समझना और है अल्लाह का समझाना और है । तो सवाल ये है कि उन्होने कहा : उनके आगे क्यूँ झुकते हैं आप ? हाँ झुकते हैं, और झुकेंगें । उन्होने कहा आप उनके दरवाज़े पर झुकते है । जी हाँ झुकते है । फिर क्यों झुकते है ? खुदा के होते हुऐ । इसलिये झुकते हैं कि एक दरवाज़े पर झुकना अच्छा है । झुकते तो सब ही हैं । मियाँ बड़े-बड़े देख लिये । झुकना तो सबको पड़ा । पूरी तारीख़े इस्लाम है । अरे कल लोग जानते नहीं थे कि झुकन बिदअत है । लेकिन आज तो लोग जान गये हैं कि झुकना बिदअत है । हमने देख लिया मुसलमानों को झुकते हुऐ । किसके सामने झुकते हुऐ ? रूस के आगे झुकते हैं या अमरिका के आगे झुकते हैं । (सलवात) कौन इस्लामी मुल्क ऐसा है जो इधर या उधर झुका नहीं है । एक मरतबा झुकना अलग बात है । मुस्तक़िल झुके हुऐ हैं । कुछ अमरीका की तरफ़ झुके हुऐ है । कुछ रूस की तरफ़ झुके हुऐ है । जब इय्या क-नाबुदो कहते है तो फिर क्यों झुकते हैं, कहा एक ही मुल्क है जो न इधर झुकता है न उधर झुकता है । उस मुल्क में रहने वालों का ज़रा मज़हब तो बताईये । (सलवात)

मज़हब बताईये । इय्या क-नस्तईन, हम तुझी से मदद चाहते है । देखो नमाज़ मे कहते हैं कि हम तुझ ही से मदद चाहते है और या अली पुकारते है । इसीलिये या अली कहते है कि उससे मदद चाहते है । क्या उसका नाम अली नहीं है । कहते हैं हम या अली । अल्लाह का नाम अली, आप क्यों समझते है कि हम अली को पुकारते है । मेरा तो रुख़ दूसरा है । हमें ठोकर लगी कहा या अली, कोई मुश्किल आयी कहा या अली । उन्होने कहा देखो देखो या अली कह रहे है । या अल्लाह नहीं कहते । ये अजीब लोग है । या रहमान कहें, या वदूद कहें, या हई कहें, या हाफ़िज़ कहें, तो आप कहेंगें या

अल्लाह नही कहते । कहने लगे ये अल्लाह के नाम है । तो अली भी तो अल्लाह का नाम है । क्यों दे दिया उसने अली को और किसी को क्यों न दिया । उन्होने कहा : नही आप अली कहते है । अगर अली का नाम अली न होता तो हम समझते कि आप अल्लाह को पुकार रहे है । आज तो हज़ारों के नाम अली है, मोहम्मद अली, अहमद अली, हसन अली, हुसैन अली, अरे पचासों नही हज़ारों अली है । आप उनको क्यों नही समझते है कि हम उनको कह रहे है या अली । नही आप न उन को कहते है न खुदा को कहते है, फिर किसे कहते है ? कहा अली इब्ने अबुतालिब को कहते है । कहा : हम कब कहते है या अली इब्ने अबुतालिब, हम तो या अली कहते है । हाँ हम जानते है, जानते है आप भी । हम कहते है । आप नही कहते है । (सलवात) गुफ्तगू बड़ी नाज़ुक मन्ज़िल से गुज़र रही है । जानते आप भी है कि दुनिया में या के साथ कोई पुकारने के क़ाबिल है । तो वो अली इब्ने अबूतालिब है और हमने जब या अली कहा या जिसने या अली कहा : सब यही समझते है कि अली को पुकारा नाम अल्लाह का भी है । नाम दुनिया में मुसलमानों के भी है तो अली को ही क्यों समझे । हाँ, हाँ हम समझते है कि आप उन ही को अली पुकारते है । क्यों पुकारते है । चौदह सौ बरस हो गये । आपको पूछते-पूछते, अब भूल जाईये अब हम पूछेगें कि आप क्यों नही पुकारते है ? (सलवात) मुझे सफ़ाई देने से चिढ़ है ।

जो लोग कहते है । हम सफ़ाई देंगे । हम जवाब देगें । सफ़ाई जुर्म की दी जाती है । सफ़ाई वो दे जो जुर्म करता है । क्या सफ़ाई देगा । नमाज़ वाजिब है कि नही ? कहा : नमाज़ वाजिब है । तो जब नमाज़ वाजिब है तो कोई पूछ सकता है कि भईया तुम नमाज़ क्यों नही पढ़ते ? अरे मियाँ नमाज़ वाजिब है । तुम नमाज़ क्यों नही पढ़ते ? उन्होने कहा : जी हाँ ! कपड़े पाक नही है, बाद में पढ़ेगें । अगले जुमा से पढ़ेगें । कहते हैं लोग रमज़ान में सिगरेट पीते देखते हैं तो कहते है भय्या कुरआन ने रोज़ा वाजिब किया । रमज़ान का महीना है । आप रोज़ा क्यों नही रखते है । पूछते है कि नही । माल की दौलत आप के पास है । माशाअल्लाह ये सिन आप

का हो गया । अभी तक आपने हज क्यों नही किया ? आप ज़कात क्यों नही देते ? आप खुम्स क्यों नहीं निकालते ? ये कौन सी मान्तिक़ है कि हम नमाज़ पढ़ते हैं । आप पूछते हैं कि नमाज़ क्यों पढ़ते हैं ? ये कौन सी बात है । नमाज़ तो वाजिब है । किसी को क्या हक़ है कि नमाज़ियों से पूछे कि नमाज़ क्यों पढ़ते हो ? नमाज़ी पूछेगा तारेकुस्सलात से कि नमाज़ क्यों नही पढ़ते हो । यही उसूल है कि जब जिस चीज़ के लिये खुदा का हुक्म हो जाये और उस हुक्म पर रसूल चल कर दिखा दे । उस पर अमल न करने वाले से पूछा जायेगा कि तुम अमल क्यों नही करते ? हमसे पूछते हो इय्या क-नस्तईन पढ़ते हो । रसूल अल्लाह पढ़ते थे या ये आयत छोड़ देते थे । कहा रसूल पढ़ते थे... इय्या क-नस्तईन, फिर क्यों कहा नादे अलीयुन मज़हरल अजायब (सलवात) इय्या क-नस्तईन माबूद तुझी से मदद चाहते है तो नबी ने अली से मदद नहीं चाही । अली थे कहाँ ? मै कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । उन्तालिस दिन अली थे ही कहाँ ? न अली थे न नबी ने मदद चाही । अलबत्ता असहाब थे । समझियेगा । ज़्यादा समझियेगा तो ज़िम्मेदार । देखिये असहाब से कहा : जाओ अलम ले कर जाओ ख़ैबर फ़त्ह करो । टका सा जवाब चाहिये था । नमाज़ में पढ़ते हैं इय्या क-नस्ताईन और हम से कहते हैं ख़ैबर फ़तह कर लो । हम से क्यों मदद मांग रहे हैं । आप ? आप अल्लाह के रसूल होते थे । उन्होने कहा : क्या करें सिवाये इसके अल्लाह तो दूर है तुम ही हम से करीब हो । उन्तालिस दिन तक मदद मांगी असहाब से नबी ने । जब असहाब की मदद काम न आयी नबी को, जब नबी को काम न आयी तो किसी को क्या काम आयेगी । (सलवात)

अरे भई न कहो न सुनो । उन्तालिस दिन तक असहाब से मदद मांगी, और असहाब गये मदद को, जाते थे मदद को इस्लाम की और लौट आते थे अपनी मदद के वास्ते । (सलवात) लौट आते हैं अपनी मदद को । गये और आ गये। चालिस दिन जब असहाब की मदद काम न आई । जब असहाब की मदद कारगर न हुई । जब सब मिल कर किसी एक से नही कहा था । सब जाओ जब तो मालूम

हो कि इजतेमा क्या है । ? (सलवात) सब जाओ क़िला फ़तह करा, मरहब को मारो, जाओ हारिस को मारो, अन्तर को मारो, क़त्ल कर आये, नहीं ख़ैर कोई वजह हो गई होगी । फिर जाओ । एक लड़ाई और करो उन्तालिस दिन तक असहाब से मदद मांगते मांगते नबी थक गया तो चालिसवें दिन उसने कहा : माबूद अब तो मदद करो । अब तो मदद करने को तो कोई आया नहीं । इतने मिल कर गये और लौट आये लेहाज़ा तू ही मदद कर । इय्या क-नस्तईन नबी ने उन्तालिस दिन तक पढ़ा कि नहीं और चालिसवें दिन भी नमाज़ में पढ़ा कि नहीं पढ़ा । तो जब नबी इय्या क-नस्तईन पढ़ते थे तो नबी को भेजा क्यों ? और फिर आज ख़ुदा को पुकारा क्यों ? क्या ये तफ़्सीरि सूरा अलहम्द की नहीं है । नबी ने कहा देखो हर एक को न पुकारना । मै तुम्हे तजरबा करके दिखाता हूँ कि मैं मौजूद हूँ और इस्लाम की नुसरत को पुकार रहा हूँ, भेज रहा हूँ और कोई नहीं फ़तह कर पा रहा है । अब मैं कहूगाँ इय्या क-नस्तईन माबूद ! तुझ ही से मदद चाहते हैं । तू ही मदद कर, ऐ अल्लाह ख़ैबर में । अल्लाह ख़ैबर मे आया ? तलवार लगा कर आया ? नैज़े ले कर आया ? घोड़े पर बैठ कर आया ! अर्श ही पर तो बैठा रहा । नमरूद का तीर लगता रहा । तेल टपकाया जाता रहा । आया ख़ुदा ? कहा : नहीं आया । क्या उसने कहा नहीं मदद करूगाँ । ये भी नही कहा मदद से इन्कार किया ? कहा : नही किया । आया मदद के लिये ? आया भी नहीं । फिर क्या कहा ? नादे अलीयुन मज़हरल अजायेब । ऐ मेरे हबीब पुकारो अली को । ये है इय्या क-नस्तईन की तफ़्सीर जो नबी ने अल्लाह की ज़बान से सुनवा दी ख़ैबर में । (सलवात) ऐ माबूद तुझही से मदद चाहते हैं । माबूद तेरे रसूल ने कह दिय है कि चालिस दिन में क़िला फ़तह हो जायेगा । अरे कह देते कि एक दिन में हो जायेगा । एक दम चालिस दिन चालिस दिन नबी सब को लिये पड़े रहे और भेज़ते रहे । और सब वापस आ रहे है । और सब्र करते रहे । एक डाँट बताते सब दहल जाते । दूसरे दिन कोई न जाता । जाओ । अब जाओ अच्छा आज जाओ । जाओ जाओ फिर जाओ उन्तालिस दिन का अमल करो । मै समझता हूँ कि लोग चालिस दिन

का चिल्ला बांधते है ये ख़ैबर से बंध रहा है । (सलवात)

चालिस दिन का चिल्ला और कहीं नही मिलते । चालिस दिन इसलाम की तारीख़ में नादेअलीयन अली को पुकारो । तो ये तफ़सीर अल्लाह ने उस आयत की खुद बयान फ़रमायी । अब किस की हदीस सुनेगें किसकी तफ़सीर सुनेगें । नादेअलीयन पुकारो उस अली को जो मज़हरल अजायब है । पुकारा नबी ने.... इस से क्या होता है ? कहा : आये अली मदीने से आये गये मैदाने ख़ैबर में पलट आये ? कहा : पलटे नहीं फ़तह करके पलटे और एक दिन में कहा : एक दिन में नहीं चन्द मिन्टों में । माबूद ये तो फ़तह हो गया ख़ैबर, कहा : तो फिर पहले ही भेज दिया होता अली को कहा : मुझे तो मुसलमानों को समझाना मक़सूद है । भई मैने तो बग़ैर अली के नबी को नबूवत के एलान की इजाज़त भी नहीं दी । जिस के बग़ैर जुल अशीरह न हुआ हो । जिस के बग़ैर बद्र मे न गये हों। उसके बग़ैर ओहद में न गये हों, जिसके बग़ैर ख़न्दक़ में न गये हों, उसके बग़ैर ख़ैबर में न गये हों । क्यों ? कहा : इसीलिये रोक लिया कि उन्तालिस दिन देख लो इस्लाम क्या है ? मुसलमान क्या है ? चालीसवें दिन दिखाऊँगा की अली क्या है ? (सलवात) चालिसवें दिन दिखाऊँगा कि अली क्या हैं ? पुकारो अली को नबी ने पुकारा है । हम आज सीरते नबी और हुक्मे खुदा के ज़ेल में या अली कहते हैं । नादे अली हुक्मे खुदा है । या अली सीरते रसूल हम हुक्मे खुदा और सीरते रसूल की पाबन्दी करते है । अब बताईये आप क्यों नही कहते ? नमाज़ क्यों नही पढ़ते ? हुक्मे खुदा है सीरते रसूल है । तुम क्यों नही कहते । हुक्मे खुदा है सीरते रसूल है । आप हमसे न पूछिये । क्यों कहते हो ? उनसे पूछिये क्यों नही कहते है ? किस की मोहब्बत में नही कहते हैं ? किसकी अदावत में कहते । या मुँह से निकलता ही नहीं (सलवात)

क्या मुंह से निकलता ही नहीं । पुकारो अली को इय्या क-नस्तईन माबूद हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते है । हमसे मदद चाहते हो । नादे अलीयन । जब हम से मदद

चाहो अली को पुकारो । जब मुझसे मदद चाहो अली को पुकारो । मेरा नाम भी अली है । घबराना नहीं । शायद एक आध नुसैरी वहाँ छुपा बैठा था । उसने जो देखा कि ये हाथ उठा कर दुआ मांग रहे हैं । माबूद मेरी मदद फ़रमा । इस्लाम की नुसरत फ़रमा । हाथ उठे देखेना उसने, उधर से अली को घोड़े पर आता देखा वो समझा खुदा आ गया । (सलवात) समझा खुदा आ गया । हुज़ूर अगर नादे अली न कहियेगा तो गुमराही फैल जायेगी । एक नहीं सारे मुसलमानों को नुसैरी बनना पड़ेगा । इसीलिये लफ्ज़ नाद रख दिया । पुकारो अली को । पुकारो अली । क्यों पुकारें मज़हरल अजायब ये क्या है ? कहा ये नहीं कि तुम ने नाम रख लिया अली । क्योंकि पुकारें । शर्त लगादी मज़हरल अजायब जो अजायब का ज़ाहिर करने वाला है । इसका मतलब ये कि उन्तालिस दिनों वाले मज़हरल अजायब नहीं थे । और आज जो आया है वह मज़हरल अजायब है । उन्होने कहा : हमें हैरत होती है किस बात की ये लोग अली को पुकारते हैं । हैरत होती है । ताअज्जुब होता है । कहा : हाँ, होना चाहिये । मज़हरल अजायब है । (सलवात) हाँ ! हुज़ूर कुरआन सब से हलफ़ ले रहा है । तारीफ़ बस अल्लाह के लिये । इबादत बस अल्लाह के लिये । उन्होने कहा साहब ! चलिये हमने मान लिया । नादे अली से कि पुकार लिजिये अली को क्योंकि खुदा का हुक्म है । लेकिन ये नजफ़ की ख़ाक पर सर झुकाना, करबला की ख़ाक पर ये कहाँ है ।

ये ख़ाके शिफ़ा रखते है। हाँ ख़ाके शिफ़ा रखते हैं । तुम्हारे पास किसी मरक़द की ख़ाक हो तो ले आओ । आप देखियेना भई सवाल ये है कि तुम लाओगे तो कहाँ से लाओगे ? अगर वहाँ से लाये तो रसूल अल्लाह की ख़ाक कहलायेगी । और अगर वहाँ से लाये तो यहूदियों के क़ब्रस्तान से । (सलवात) तो क्या कहलायेगी उन्होने कहा : भई ये सब आप तारीख़ी बातें करते हैं । जन्नतुल बक़ी मे दफ़न है । वहाँ तो और भी इमाम दफ़न है ख़ालिस लाओ । ला कर दिखाओ नहीं हम ख़ाक पर सर नहीं झुकायेगें । हम बस अल्लाह को सजदा करेगें । न झुकाना सर । हरगिज़ किसी मिट्टी के सामने सर न झुकाना। आपतो मिट्टी से अफ़ज़ल है । (सलवात) अशरफ़ुल

मख़लूक़ात हैं । आप क्यों झुकने लगे मिट्टी की तरफ़ तुम क्यों झुकते हो ? अरे हम तो फ़रिश्ते हैं (सलवात) हमतो फरिश्ते हैं क्योंकि झुका आदम के सामने । अरे वो अल्लाह का हुक्म था । क्यों दिया था उसने ऐसा हुक्म हमसे पढ़वायेगा इस्या क-नाबुदो और फ़रिश्तों से कहेगा सर झुकाओ । और लौहे महफ़ूज़ पर कुरआन महफ़ूज़ सूरह मौजूद और सब सर झुका रहे हैं । जब सबने सर झुका लिया सजदा कर लिया इल्ला इबलीस । बस ख़त्म कर रहा हूँ गुफ़्तगू को क्लाईमिक्स पर ले आया अल्लाह ने किसी से पूछा । फ़रिश्तों से पूछा कि तुमने आदम के सामने सर क्यों झुकाया या कि शैतान से पूछा कि तू ने सर क्यों नहीं झुकाया । (सलवात) हम औलियाये कराम, आईम्माये ताहेरीन, बुज़ुर्गानेदीन के सामने पेशानी झुकाते हैं किसी मुफ़्ती शरह मतीन को ये पूछने का हक़ नहीं है कि तुम सर क्यों झुकाते हो । जब हम देखते हैं कि आप कट कर चले गये लेकिन सर न झुकाया तो हम पूछ सकते है कि क्यों न झुकाया । पूछ कीजिये । क्यों पूछें एक मरतबा अल्लाह कुरआन में पूछ चुका है । (सलवात)

मा मनअका किस चीज़ ने मना किया । किस चीज़ ने रोका । हम पूछते हैं किसने रोका ? कौन मना करता है आपको सर झुकाने से एक मौलाना आये थे एक मुक़र्रिर आये थे । उनसे पूछिये । आप को किसने रोका ? वह कहेंगें हमारे अब्बू ने रोका । उन्हे किसने रोका । तुमको किसने रोका, उनको किसने रोका और ये कितने बरसों से रूका । कहा अभी दो सौ बरस से ही रूका है ।इसका मतलब ये कि हज़रत इबलीस के यहाँ इतने दिनों के बाद विलादत हुई । (सलवात) ज़रा आप ग़ौर फ़रमायें। आप कहेंगे ये आप ने कैसे कहा ? किसी का नाम लिया । मैने कुछ कहा मै । मै तो मा मनअका पूछ रहा हूँ । उन्होने कहा हम समझ गये आप किसको कह रहे हैं । तो अल्लाह करे आप की समझ में आ जाये । और हम चाहते क्या हैं ? उन्होने कहा : वह तो अल्लाह ने हुक्म दिया था। तो यहाँ किस आयत ने मना किया है वो तो क़ब्र के सामने नहीं । वो तो आदम ज़िन्दा थे । अच्छा तो जब हम रोयेगें तो आप कहेगें कि वे तो ज़िन्दा जावेद का मातम करते है । जब हम सर झुकायेगें तो

आप कहेंगें कि मुर्दे के सामने सर झुकाते है । आप को कोई पता नहीं कि कब कौन मर जाता है । कब ज़िन्दा हो जाता है । (सलवात) मिसाल बताईये क्या बतायें ? इतने दिन के बाद शैतान आया बज़्मे नबी में काहे के लिये आया मलऊन, माफ़ी के लिये आया हूँ । तेरी माफ़ी नहीं होगी । क्यों ? तूने दूसरों को बहकाया है । तो फिर ? जा मलऊन जा, कहा हम तो रहमतुल्लिआलेमीन समझ कर आये थे । माफ़ तो नहीं कर सकता हूँ । अज़ाब घटा सकता हूँ अब आप समझिये आपको नहीं मालूम कितना अज़ाब है लेकिन इतना मान लीजिये कि शैतान परेशान था । रुक गया कहा : अज़ाब ही घटा दीजिये । कहा : आदम के पाईती सज्दा कर ले । आदम की क़ब्र के पाईती सजदा कर ले । कहा : मुझे नहीं मालूम आदम कहाँ दफ़्न है ? कहा : निशान बनाले । यानी दोनो बातें साबित कर दीं असल क़ब्र बना लो तो वहाँ सर झुकाओ और न हो तो निशान बना कर सर झुकाओ । (सलवात) ताकि तख़्फ़ीफ़े अज़ाब हो जाये ।

बाहर निकला क्या सोचता हुआ निकला । क्या समझा । मुझे क्या पता । लेकिन तारीख़ बताती है कि जब बाहर निकला तो एक अरब मिल गया । अस्सलाम अलैकुम वाअलैकुम अस्सलाम, आप कैसे तशरीफ़ लाये ? माफ़ी मांगने आया था । हो गई माफ़ी कहा : नुस्ख़ा बताया नबी ने । कहा क़ब्रे आदम के आगे जा कर झुक जा । कहा : वाह आदम के आगे झुके नहीं । जुमला सुनिये । आदम के आगे झुके नहीं । क़ब्र पर क्या झुकोगे । कहा : हाँ ! ठीक कहते हो । जहाँ नास वहाँ सत्यानास । सरकारे नासिरुलमिल्लत से ये सुना हुआ जुम्ला है । इसीलिये दोहरा देता हूँ । हमेशा कि शैतान सारी दुनियाँ को बहकाता है । मदीने में ऐसे पड़े थे कि उन्होने शैतान को बहका दिया । तुम क्या चीज़ हो । (सलवात) हुज़ूर एक ज़रियाये तख़फ़ीफ़े अज़ाब है । अलहम्दो लिल्लाह कि हम ईमान के साथ सर झुकाते है । हम इस ख़ाके पाक पर सजदा करते है कि जिस में ख़ूने अली अकबर, जिसमें ख़ूने क़ासिम मिला हुआ है । जिसमे ख़ूने शोहदा मिला हुआ है । ऐसों का ख़ून मिला है कि जिन के लिये इमाम फ़रमाते है कि पाक हो गये तुम और पाक हो गई वह ज़मीन जहाँ

तुम्हारा ख़ून बहा । हुज़ूर सब का ख़ून है ख़ाके शिफ़ा में । जौन गुलाम का भी ख़ून है हुज़ूर अली अकबर का ख़ून, अब्बास का ख़ून, क़ासिम का ख़ून, औनो मोहम्मद का ख़ून बस एक ख़ून नहीं मिलता सिर्फ़ एक ख़ून, और वो है अली असग़र का ख़ून । इसलिये कि ज़मीन ने सब ख़ून बर्दाश्त कर लिये । हद ये कि ख़ूने हुसैन इब्ने अली भी बर्दाश्त कर लिया । मगर जब अली असग़र का मामला आया तो ज़मीन ने बा आवाज़ बलन्द कहा । हुसैन ! अगर एक क़तरा भी इस ख़ूने नाहक़ का टपक गया तो कभी दाना पैदा नहीं होगा । कभी ग़ल्ला पैदा नहीं होगा । कभी अनाज न होगा । चाहा कि आसमान की तरफ़ फेंकें आवाज़ आयी हुसैन ! एक क़तरा भी इस ख़ूने नाहक़ का आसमान की तरफ़ आ गया तो कभी पानी नहीं बरसेगा ।

हुज़ूर, ये हुसैन का कलेजा था कि ख़ून को चेहरे पर मल लिया और क्या फ़रमाया । फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन नाना के सामने जाऊँगा और कहूगाँ नाना मेरे चेहरे पे मेरे शशमाहे का ख़ून है । जज़ाकुम रब्बोकुम । शहादते जनाब अली असग़र, जिसने कलेजे हिला दिये थे । जो मुसलमान नहीं भी है जब वो शहादते अली असग़र सुनता है तो बेचैन हो जाता है । क्या तासीर है । ये आख़िरी हदिया था, जो हुसैन ने करबला के मैदान में बारगाहे यज़दी में हिफ़ाज़ते दीने इस्लाम के लिये और हमारी आपकी निजात के लिये हुसैन इब्ने अली ने अली असग़र का ख़ून चेहरे पर मल लिया । आगे बढ़े पीछे हटे । फ़रमाया इन्नालिलाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन रज़नबेक़ज़ाएही व तस्लीमन ले अमरेह । मुसलमानों एक हाजरा की याद में सब को सई करना पड़ती है । आमाले आशूरा हुसैन की याद है । जब छः महीने के बच्चे को लेकर आगे बढ़ रहे थे पीछे हट रहे थे, और ख़ैमेगाह तक जा नही पा रहे थे । सारी दुनियाँ जान गई कि करबला में शशमाहा शहीद हो गया है । हुज़ूर ! बाईस बरस तक मैने अशरह मोहर्रम कलकत्ता में किया और इनही आंखों से जो मनाज़िर देखे हैं वो भुला नहीं सकता । कहाँ करबला, ज़रा आप ग़ौर कीजिये, ये तक़रीरें, ये तहरीरें इस पैग़ाम को हुसैन ने कहाँ तक पहुँचा दिया, बंगाल पिछड़ा हुआ इलाक़ा, इल्म नहीं, तालीम नहीं, ज़रिया नहीं,

कोई मोक़र्रिर नहीं, कोई तक़रीर करने वाला नहीं । न जाने उन्हे कौन बता देता है कि दसवीं मोहर्रम कब है ? ये भी एक हैरत की बात है, देहातों से ज़ईफ़ औरतें, लुटियों में दूध ले कर सड़क के किनारे रात से आकर बैठ जाती है और सुब्ह को जब आशूरा का जुलूस निकलता है तो जुलजेनाह के पैरों में दूध डाल देती है जब उनसे पूछे कि ये दूध आपने लाकर क्यों डाल दिया तो कहती है तुम्हें नही मालूम ? इमाम बाबा का एक बच्चा था । जिसे दूध नहीं मिला था हमने सुना है कि आज इमाम की सवारी गुज़रने वाली है तो हम दूध ले कर आयें है कि आक़ा अगर वो बच्चा यहाँ आ जाता तो हम उसको दूध पिला देते । जज़ाकुम रब्बोकुम ।

ख़ुदा आपको किसी ग़म मे न रूलाये सिवाये ग़में हुसैन के । अल्लाह अल्लाह अजीबो ग़रीब मन्ज़िल है और इतनी सख़्त मन्ज़िल है कि देहात के लोग भी जाते है । आप कहते है ये तबर्रूकात क्या है ? हुज़ूर ये यादगारें है इन ही से तो इस्लाम ज़िन्दा है ग़ैर क़ौमे जिन्हे अज़ान ने नहीं खींचा, नमाज़ ने नहीं खींचा इफ़्तार ने नहीं खींचा मुसलमानों के किसी हुस्न अमल ने नहीं खींचा । खींचा तो बस हुसैन की मज़लूमियत ने खींचा । मैने अपनी आंखों से देखा कि आशूरा का जुलूस, क़यामत की गर्मी, डामर की गरम सड़क, दो मियाँ बीबी हिन्दु गोद में छोटा सा बच्चा लिये हुऐ आये और आने के बाद जुलजनाह के पैरों में बच्चे को डाल दिया सड़क पर, अल्लाह जो जुलजनाह की लगाम पकड़े था । उसने कहा उठा लीजिये कहीं घोड़ा पैर न रख दे । तो बिगड़ कर कहने लगे । क्या कहा ? उन्होने तो दिया है । ये दे कर वापस ले लेगें ? और आप यक़ीन मानिये कि ये मन्ज़र मै अपनी आंखों से देखता रहा जब तक बच्चा पड़ा रहा जुलजनाह ने क़दम नही उठाया । जुलूस बढ़ने लगा मगर जुल्जनाह ने क़दम नहीं बढ़ाया । उसने पैरों पर से बच्चे को उठा लिया जुलजनाह के गिर्द तवाफ़ कराया और ले कर जाने लगा। लोग कहते है कि हुसैन को कोई क्या जाने कि हुसैन क्या है ?अगर उनकी सिफ़ारिश पर एक क्या एक करोड़ बच्चे दे दे तो कम है । जिसने अपना बच्चा अल्लाह की राह में और कौन जिस का सिन

सिर्फ़ छः महीने का था । बस अज़ादारों ! मजलिस तमाम है । आगे बढ़े , पीछे हटे, आगे बढ़े- पीछे हटे ऐसे सात मरतबा किया कि एक मरतबा बानो की नज़र पड़ गई । आवाज़ दी अली असग़र । क्या तूने आक़ा की नुसरत नहीं की बस ये सुनना था कि हुसैन ज़मीन पर बैठ गये । बाबा की तलवार जुलफ़ेक़ारे म्यान से निकाली, नन्ही सी क़ब्र खोदना शुरू की, रोने की आवाज़े आने लगीं । हुसैन ने दाहिनी तरफ़ देखा... बायीं तरफ़ देखा, आसमान की तरफ़ देखा, ज़मीन की तरफ़ देखा, तो देखा कि जुल्फ़ेक़ार रो रही थी । हुसैन रोने लगे । ऐ बाबा की तलवार तू क्यों रो रही है ? आक़ा मैं दुश्मनों से इन्तेक़ाम के लिये आयी थी । अरे मुझे नहीं मालूम था कि नन्हे अली असग़र की क़ब्र भी खोदी जायेगी ।

हुसैन ने क़ब्र में अली असग़र को रखा, क़ब्र बराबर की, दस्तूर है कि जब क़ब्र बन जाती है तो पानी छिड़का जाता है । प्यासे अली असग़र की कब्र के लिये पानी कहाँ से आता ? हुसैन ने बैठ कर रोना शुरू किया । आसूँओ से क़ब्रे अली असग़र को तर किया । गये ख़ैमा पर आये । जो भी शहीद हुआ उसका जनाज़ा ख़ैमे के अन्दर आया मगर अली असग़र को दफ़न कर दिया हुसैन ने । अब बीबीयाँ कैसे रोयें । सुनेगें आप कुछ बीबीयाँ गईं अली असग़र का झुला उठा लाईं बीबीयों ने झुले के गिर्द मातम किया । ऐ अली असग़र ! अरे हम जब मदीने जायेगें तो फ़ात्मा सुग़रा को क्या जवाब देगें कि अली असग़र भी करबला में शहीद हो गये ।

●●●

बस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ग्यारहवीं मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेारादराने मिल्लत, सरवरे कायनात ख़तमी मरतबत जनाब मोहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्ल०) ने इस हदीस में इरशाद फ़रमाया है कि ऐ मुसलमानों, मै तुम में दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, । एक अल्लाह की किताब और दूसरे अपनी इतरत । ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें । अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना ।

इस आयत के ज़ेल में कुरआन और अहलेबैत के मौज़ू पर जो गुफ़्तगू मुसलसल जारी है । इस सिलसिले में आपकी ख़िदमत में इन्तेहाई खुलूस के साथ, अदब के साथ जो बात पेश करने की कोशिश की गई है कि आज जो अहलेबैत के मानने वालों और अली इब्ने अबूतालिब के मानने वालों पर एतराज़ किया जाता है कि उन का ताल्लुक़ अहलेबैत से है ये अहलेबैत ही को सब कुछ समझते है । इनका कुरआन से कोई वास्ता नहीं है । इनका कुरआन से कोई लगाव नहीं है । मआज़अल्लाह कुरआन की अहमियत इनके यहाँ नहीं है। इसके ज़वाब में दस दिन तक मुसलसल आप की ख़िदमत में ये भी अर्ज़ किया गया कि हमारे यहाँ कुरआन की क्या अहमीयत है ? और कुरआन का क्या मरतबा है और कुरआन का क्या दरजा है ? और फिर जवाब बा मजबूरन वरना हमें किसी के मज़हब से क्या ताअल्लुक़ ये भी आप की ख़िदमत में पेश किया गया कि हमारे

अलावा दीगर उलेमाये इस्लाम कुरआन को क्या समझते हैं ? कुरआने मजीद के मुताअल्लिक़ उनके क्या ख़्यालात हैं ? कुरआने मजीद के साथ उनका क्या सलूक रहा है ? और कुरआने मजीद की क्या अहमीयत है ? बस आज और कल दो मजलिसें रह गयीं हैं इस सिलसिले में चूंकि मौज़ू कुरआन और अहलेबैत है इसलिये अहलेबैत के सिलसिले में कुछ अर्ज़ करना ज़रूरी है ।

ये बात कहना कि ये लोग अहलेबैत के चाहने वाले हैं.... अहलेबैत के मानने वाले हैं.... आईम्मा के मानने वाले हैं । ये रसूल के बाद इमाम ही को बहुत कुछ समझते हैं और वाजिबुल इताअत समझते हैं । उनकी इताअत फ़र्ज़ समझते हैं और जो उनके आईम्मा ने उनको बताया है इसी पर अमल करते हैं । इनका ताअल्लुक़ न कुरआन से है न वही से । गुज़ारिश ये है कि डायरेक्ट कुरआन किसी पर नाज़िल नहीं हुआ । कुरआन तो रसूल अल्लाह पर नाज़िल हुआ । कुरआन के मानने के क्या मानी हैं ? क्या ख़ाली कुरआन की तिलावत करना ही कुरआन को मानना है ? अगर कुरआन मजीद का कोई वास्ता अहलेबैत से न होता, कोई राब्ता कुरआन से न होता, तब तो कुरआन या अहलेबैत का नारा सही होता । लेकिन जब कुरआने मजीद ही ये कहता हैकि अहलेबैत की अहमीयत को समझो और जब अहलेबैत ही ने हिफ़ाज़ की और आज हम तक कुरआन पहुँचा । अगर अहलेबैत न होते तो इस कुरआन का क्या हश्र होता ? पिछली मजलिसें आप को याद होंगी, और कुरआन है मौजूद । मुसलमानों के घरों में मौजूद है । उनमे आयतें हैं. अहलेबैत के फ़ज़ायल हैं और उसके बाद भी हम परये इलज़ाम रखा जाये कि अहलेबैत को मानते हैं । हम अलग से नहीं मानते हैं । कुरआन के कहने से मानते हैं । अहलेबैत को हम इसलिये मानते हैं कि कुरआन में अल्लाह ने अहलेबैत को मानने का हुक्म दिया है । हमने अहलेबैत को नहीं बनाया है । कुरआन ने हमको अहलेबैत का पता दिया है । अगर आयऐ ततहीर नाज़िल न होती तो हम अहलेबैत को भी असहाब ही समझते । (सलवात) एक शायर का शेर फ़ना बनारसी मरहूम उनकी रूह को भी सवाब पहुँच जाये जो पहले अहले सुन्नत में से थे

बाद में वो माहब्बते अहलेबैत में शिया हो गये थे अब तो उनकी वफ़ात भी हो गयी है । फ़क़ीर मनुष आदमी थे गेरुये रंग का कपड़ा पहनते थे और मोहिब्बे अहलेबैत थे । उन्होने एक अजब मतला कहा :-

तुम कहते हो कुरआन की तिलावत है बड़ी चीज़ !

कुरआन ये कहता है कि इतरत है बड़ह चीज़ !!

तो आज गुफ़्तगू इसी बात पर होगी ।

मैने सूरये अलहम्द भी छोड़ दिया, उसकी बहुत सी चीज़े रह गईं । वक़्त कम था और बहुत सी आयतें रह गयीं । हद ये कि ग़ैरिलमग़ज़ूबे अलैहिम वलज़्ज़ालीन भी रह गया । (सलवात) लेकिन मौज़ू मोकम्मल न होता अगर इस ज़ेल में आपसे गुफ़्तगू न होती कि अहलेबैत को मानना या अहलेबैत की तरफ़दारी करना न किसी की अदावत में है और न किसी की मुख़ालेफ़त मे । इसलिये कि कुरआन में अहलेबैत की अज़मत को बयान किया गया है और इसलिये है कि रसूल अल्लाह ने अहादीस के ज़रिये, कसीर अहादीस के ज़रिये और खुद अपने अमल के ज़रिये अहलेबैत की अहमीयत और फ़ज़ीलत बताई अगर सिर्फ़ अहलेबैत की अज़मत करना, अहलेबैत की मदह करना, अहलेबैत की तारीफ़ करना, शिया मसलक होता तो अजल्लाये उलेमाये अहले सुन्नत अहलेबैत की मदह न करते । क्योंकि शिया हो जाते । और इतने बड़े-बड़े औलिया अहलेबैत का नाम न लेते । उन का ज़िक्र न करते, उनका तज़किरा न करते । ज़रा आप किताबें उठा कर देखें कौन सी आलमे इस्लाम की किताब है चाहे मुख़ालफ़ते अहलेबैत में लिखी गई हो जिसमें फ़ज़ायले अहलेबैत नहीं है । इतनी हदीसें पैग़म्बरे इस्लाम की हैं कि मुफ़स्सेरीन को लिखना पड़ता है । क्या अल्लामा जलालुद्दीन स्योति शिया थे ? जिन्होनें तफ़सीरों में ये लिखा है कि ये आयत अहलेबैत की शान में है । अगर अहलेबैत के मानने से ही आदमी शिया हो जाता तो जब चौदह सौ बरस से इतने बड़े-बड़े शिया हो गये तो आप ही सुन्नी क्यों रह जायें । (सलवात)

... तो अहलेबैत के मानने वाले अहलेसुन्नत में भी हैं जो अहलेबैत की मदह करते हैं अहलेबैत के मसायब भी बयान करते हैं, और अहलेबैत की याद भी दिल में रखते है । यहाँ गुफ्तगू उनसे है जिन्होने अपना मज़हब ही मुख़ालफ़ते अहलेबैत बना रखा है । मै कल की मजलिस में इशारा कह चुका हूँ कि चौदह सौ बरस से हम वफ़ा कर रहे हैं । इतने हमले हुऐ और इतनी जारहैयत हुई कि हम वफ़ा पर रहे ।हमने हमेशा वफ़ा किया । मज़हब का वफ़ा किया, अपने अक़ीदों का वफ़ा किया । हमने अहलेबैत तय्यबीनत् ताहेरीन की मदह सराई का वफ़ा किया । चौदह सौ बरस तक हमारी ज़िन्दगी वफ़ा में गुज़र गई । और लोग हमले करते रहे । और हम जवाब देते रहे । भई अब पन्द्रहवीं सदी आ गई कुछ तो रंग बदलना चाहिये । मेरा ये कहना है कि चौदह सौ बरस में आपने पूछा कि तुम अहलेबैत को क्यों चाहते हो ? अब पन्दरहवीं सदी से क़यामत तक हम आप से ये पूछते है कि आप क्यों नहीं चाहते अहलेबैत को (सलवात) आप क्यों नही चाहते ? उन्होने कहा : नहीं ! नहीं , ऐसा नही है ? हम अहलेबैत के मुख़ालिफ़ नहीं हैं मगर जिस तरह से आप मानते हैं उस तरह से हम नही मानते । ठीक है मानते आप भी हैं । मानते हम भी हैं । तैय हो गयी बात लेकिन जिस तरह से हम मानते हैं आप उस तरह से नहीं मानते । हमें अहलेबैत वाला क्यों कहते हैं ? ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । ये कहना ही दलील है कि हम इसे क्यों मानते है ? ये इल्ज़ाम ही इस बात की दलील है । मिसाल के तौर पर अल्लाह को कौन नहीं मानता ? खुदा को कौन नहीं मानता ? क्या हिन्दु ईश्वर, भगवान या परमात्मा को नहीं मानते ? कहा : मानते है । क्या यहूदी खुदा को नहीं मानते । मानते हैं । क्या ईसाई खुदा को नही मानते ? मानते हैं । अरे ईसा का बाप मानते हैं बाप मानते हैं ईसा का । कौन धरम ऐसा है जो खुदा को नहीं मानता । बल्कि खुदा को न मानने वाला बेधर्म कहलाता है । खुदा मानना ज़रूरी है । मुसलमान तो सब कहते हैं कि मानते हैं मगर, मगर का क्या मतलब है । अगर मुसलमान अल्लाह को मानता है तो हिन्दु भी मानता है, सिख भी मानता है, ईसाई भी मानता है, यहूदी भी मानता है । तो सब

मानने वाले बराबर ।

कहा : आप क्या बात करते हैं । मानते हैं मगर खुदा जैसा है वैसा नहीं मानते । वैसे मुसलमान ही मानते हैं । तौहीद मुसलमानों के ही यहाँ है । ये तौहीद क्या है ? अल्लाह की वहदानियत, खुदा का एक होना, तो क्या हिन्दु कई खुदाओं को मानते है ? ईश्वर एक ही है । ईसा उसका बेटा है मानते हैं मगर ईसा को खुदा नहीं मानते । खुदा इसी को मानते हैं । तो सब खुदा को मानने वाले हैं । कहा : देखिये खुदा को खुदा में सब शरीक कर देते है । तो खुदा का मानना दूसरे को शरीक करना नहीं है । फिर खुदा का क्या मानना ? कहा : ला एलाहा इल्लल्लाह । लाएलाहा कोई अल्लाह नहीं है इल्लल्लाह सिवाये इस अल्लाह के । अब हुआ मुसलमान । तिहत्तर फ़िरक़ों को नाज़ है कि हम हैं अल्लाह वाले । हम तो भई अल्लाह वाले हैं । यानी कैसे आप ने ठेका ले लिया है । क्या हिन्दु अल्लाह वाला नहीं है ? क्या यहूदी अल्लाह वाला नहीं है ?क्या ईसाई अल्लाह वाला नहीं है ? क्या सिख अल्लाह वाला नहीं है ? कहा नहीं अल्लाह-अल्लाह तो सभी करते हैं । राम राम तो सभी जपते है लेकिन जब तक लाएलाहा इल्लल्लाह न कहे । अल्लाह का सच्चा मानने वाला नहीं । देखिये लाएलाहा इल्लल्लाह क्या हुआ ? कोई अल्लाह नहीं है । बस इतनी सी बात । यानी अल्लाह को सब मानते है । आप अपने को सच्चा इसलिये कहते हैं कि इस अल्लाह के अलावा किसी को नहीं मानते । बस यहीं से आयेइये ।सारे मुसलमान अहलेबैत को मानते है, मगर हम से ये शिकायत है कि सिवाये अहलेबैत के किसी को नहीं मानते । (सलवात)

यानी मानने का ये मतलब है कि जिसे माने बस उसे माने । और सब को मानने में किसी को बीच में मान लिया तो ये मानना नहीं कहलाता । तो बस इसी तरह हिन्दुओं में सिखों के सामने ईसाईयों के सामने, यहूदियों के सामने आप ये कह सकते है कि तुम सब मानने वाले हो । मगर हम से ज़्यादा नहीं क्योंकि हम अल्लाह के अलावा किसी और को नहीं मानते । इसी तरह से अहलेबैत के मानने

वाले सब है मगर हमारे ऐसा नहीं । क्योंकि हम अहलेबैत के अलावा किसी नहीं मानते । (सलवात) अहलेबैत के अलावा किसी को नहीं मानते । कुरआन ने अहलेबैत के अलावा किसी को मानने का हुक्म क्यों नही दिया ? कुरआन ने अहलेबैत के अलावा किसी की मदह क्यों नहीं की ? अगर अहलेबैत मदह असहाब ही में छोड़ देता तो हर मदह अहलेबैत असहाब पर बराबर से बंट जाती । क्यों नबी से कहा : चादर ओढ़ कर लेटो, और जमा करो अहलेबैत को और उनसे भी कहा कि जाना तो इजाज़त ले कर जाना, और वो सब इजाज़त ले कर चादर मे दाख़िल हुऐ । हदीसेकिसा है । जनाब जाबिर अब्दुल्लाह अन्सारी से रवायत है और किसने रवायत दी । रोअइया अन फ़ातेमतज़्हरा ने रवायत की । एक ही रवायत दी है और उसे भी क़बूल नहीं किया । हमने उन दस मजलिसों में उम्मुल मोमनीन की कितनी हदीसों को क़बूल करके बता दीं । इसका सबब बतायें ? उम्मे सलमा से रवायत हो तो अहमीयत, आयेशा से रवायत हो तो अहमीयत, हफ़्साा से रवायत हो तो अहमीयत और अगर रसूल की बेटी से रवायत हो तो क्यों अहमीयत न दें ? यानी ज़ौजा जो कहे वो इस्लाम हो जाये और बेटी जो कहे । जबकि ज़ौजा से सिर्फ़ एक बोल का रिश्ता है । इसका ज़्यादा नही है । और जिसे बेज़तो मिन्नी कहा हो । जिसे रसूल ने अपना टुकड़ा कहा हो । मेरा एक सवाल है उससे ज़्यादा नही । हदीसे किसा ये मुसलमान क्यों नहीं पढ़ते ? भई जहाँ सारी हदीसे पढ़ी जाती है तो ये भी हदीस है, इसकी तिलावत क्यों नही करते ? इसका मतलब ये है कि हदीसें बंट गई । तो अब जब बटवारा हो ही गया तो ये अपना मुक़द्दर कि किसी को बटवारे में मासूम मिले तो किसी को ग़ैर मासूम । (सलवात) अपना मुक़द्दर, आप मुलाहेज़ा फ़रमायें कि अल्लाह ने, वह रवायत है कि मै एक दिन घर में बैठी हुई थी कि मेरे बाप अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि मेरी बेटी मेरी पारये जिगर, मै ज़ोफ़ महसूस कर रहा हूँ । नबी कह रहा है । लेहाज़ा मुझे चादर दे दो । फ़रमाया मैने चादर दे दी रसूल अल्लाह चादर ओढ़ कर लेट रहे । एक लम्हा न गुज़रा था कि हसन आये और कहा ऐ वालदाये गिरामी हम अपने घर में अपने नाना की पाकिज़ा

खुश्बू महसूस कर रहे है । (सलवात)

कहा : हाँ बेटा तुम्हारे नाना जान चादर मे है । हसन गये इजाज़त चाही इजाज़त है कि मै चादर में आऊँ ? रसूल अल्लाह ने कहा हाँ इजाज़त है चादर में आओ । और इमामे हसन चादर में दाख़िल हो गये । फिर लम्हा न गुज़रा था कि हुसैन घर में आये और उन्होने कहा मादरे गिरामी अपने घर में हम पाकिज़ा खुश्बू महसूस कर रहे है अपने नाना की । कहा : जाओ चादर में तुम्हारा बड़ा भाई भी है और नाना भी । हुसैन गये इजाज़त मांगी मै चादर में आऊँ ? कहा : इजाज़त है चादर में जाओ । हुसैन भी दाख़िल हो गये चादर में । फिर फ़रमाती है कि मौलाये कायनात तश्रीफ़ लाये और आके पूछा : अरे रसूल की बेटी, मै घर में रसूलअल्लाह की खुश्बू महसूस करता हूँ । कहा : जाईये हसनैन भी है पिदरे बुजुर्गवार भी है, अली गये और कहा : इजाज़त है कि मै चादर में आऊँ ? इजाज़त है आ जाओ। फ़ात्मा फ़रमाती है कि जब सब जमा हो गये तो मै भी पहुँची और मैने कहा इजाज़त है कि मै चादर में आऊँ ? बाबा ने कहा हाँ ! हाँ तुम भी चादर में आ जाओ । जब हम सब जमा हो गये यही रवायत के कलमे है । जो बराबर पढ़ते है उन्हे मालूम है । जब हम सब जमा हो गये तो एक नूर साता हुआ । (सलवात) जिसे मलाएका ने देखा और जब मलाएका ने देखा तो उन्होने खुदा से पूछा माबूद ये कौन है ? ये कौन है ? और इरशाद फ़रमाती है कि मेरे बाबा ने फ़रमाया कि माबूद माबूद ये है मेरे अहलेबैत और जब नूर अर्श से टकराने लगा तो मलाएका ने माबूद से पूछा कि चादर के नीचे कौन है ? तो जवाब मिला जानते हो कौन है ? तुझे मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम, ये चादर के नीचे वो है कि अगर उनको ख़लक़ न करता तो मै न ज़मीन बनाता न आसमान बनाता और न ये दरियाओं को ख़ल्क़ करता न बहती हुई किश्तीयाँ चलती दरिया में कुछ न होते जो कुछ मैने ख़ल्क़ किया है इनकी मोहब्बत में । ज़रा ग़ौर फ़रमाईये, ये खुदा की लफ़्ज़ें हैं कि जो कुछ मैने ख़ल्क़ किया है वो इन की मोहब्बत में इसका मतलब ये कि कायनात में जो कुछ ख़ल्क़ किया है वो इनकी मोहब्बत में । शायद इसी कायनात में हम भी हैं । आप

भी है । खुदा कहता है मा ख़लाक़ा । हम ख़ल्क़ ही न करते । हमने जो कुछ ख़लक़ किया *इन्नी मा ख़ल्क़तो समायेअम्बम्बजीयतौंव वला अर्ज़म मदहीयतौंव वला क़मरम मुनीरौंव वला शमसममुज़ीयतौंव वला फुलकईं यदूरे वला बहरईं यजरी वला फुलकईं यसरी इल्ला की मोहब्बते हाउलाये* तरजुमा न ज़मीन, न आसमान, न चांद, न सूरज, न सितारे कुछ ख़ल्क़ न करते । जो कुछ ख़ल्क़ किया उनकी मोहब्बत में । यानी हम सब तो उनकी मोहब्बत में ख़ल्क़ हुऐ । इतना ही तो फ़र्क़ है कि हमने मक़सदे ख़िलक़त अदा किया और तुमने इन्कारे मक़सदे ख़िलक़त किया । (सलवात)

और क्या बात है । मुझे हदीसे किसा नहीं पढ़ना है सिर्फ़ मौजू के अन्दर यानी खुदा ने ये इरशाद फ़रमाया कि हमने उनकी मोहब्बत में सब कुछ बनाया । और अगर मोहिब्बाने अहलेबैत से ख़फ़ा हो तो पहले अल्लाह मियाँ से बिगड़ो तो लोग जवाब देगें कि क्या बिगड़े नहीं । क्या ख़ाली तुम्हारी गत बनाते हैं । अल्लाह को क्या छेड़ दिया है । बाल तो बढ़ा दिये कमर तो पतली कर दी आंखों में सुरमा तो लगा दिया । (सलवात) सब तो कर दिया । ज़रा ग़ौर फ़रमाईये जो उलेमाये इस्लाम अल्लाह को न छेड़े वह हम को सड़क पर अगर गालियां देते है तो हमें क्यों शिकवा है सुनिये और हंस कर टाल दीजिये । अरे भई अल्लाह कह रहे है कि मै अहलेबैत को चाहता हूँ तो ये अल्लाह को नहीं छोड़ते तो बन्दे को क्या छेड़ेगें जितनी ऐसी बातें है अरे शिया ऐसे शिया वैसे और लोग बिगड़ते है कि साहब शियों को ये कहा गया । वो कहा गया । अरे भई शियों की क्या क़द्र । आपकी क्या हक़ीक़त है ? ये वो है जो खुदा को नहीं छोड़ते है । और बिगड़ते क्यों है ? अल्लाह ने क्या बिगाड़ा है ? इसी बात पर तो बिगड़े है हम जैसे हम जिसे चाहते है तू उसे क्यों नहीं चाहता ये जब तक दुनिया रहेगी ।

ज़हूर तक ये सब उसपर ख़फ़ा रहेगें कि जिसको हम मानते है जिनके हाथों पर हमने बैयत की । जिनकी तारीफ़ हम करते है । जिनको हम चाहते है । उन्हे तुम क्यों नहीं चाहते । तवज्जोह

उसने कहा : याद रखना मालिके यौमिद्दीन दुनियां में तुम मनवालो कि जिनको हम चाहते है तुम क्यों नहीं चाहते । क़यामत में मैं पूछूगाँ कि जिनको मैं चाहता था उनको तुमने क्यों न चाहा । (सलवात) बस हुज़ूर जवाब के लिये नहीं पढ़ रहा हूँ मोहिब्बाने अहलेबैत और आशिक़ाने अली इब्ने अबी तालिब के इत्मीनान और तसल्लीये क़ल्ब के लिये पढ़ रहा हूँ । कि बेशक आप का दिल दुखता होगा । ये सुनके कि ये ऐसे वो ऐसे । ये शिया ऐसे वो शिया वैसे । कहने दीजिये । किसी के कहने से क्या कुछ हो जाता है । कहने दीजिये । क़यामत तक कहने दीजिये शिया ऐसे है, शिया वैसे है हम तो नहीं कहते कि सुन्नी ऐसे हैं, सुन्नी वैसे है हम कब कहते है हम नहीं कहते है हमको तो आर्डर है कि जो कलमा पढ़े, ज़िब्हा खाये उसे काफ़िर न कहना । वह तुम्हारे लिये पाक है । तवज्जो चाहता हूँ हम तो मुसलमान के हाथ से पानी पी लेते है पाक समझ कर । इसलिये कि कलमा पढ़ रहा है । अब वह अश्हदो अन्ना पढ़े या असहदो अन्ना पढ़े । इससे बहस नहीं करते । हम पानी पी लेते है । (सलवात) हमारे लिये तो रसूल का हुक्म काफ़ी है कि उनको मुसलमान समझो । हम मुसलमान समझते है इस लिये काफ़िर काफ़िर का फ़तवा नहीं देते । ये काफ़िर है ये काफ़िर है क्यों काफ़िर है ? क्या कुफ़्र किया हमने ? क्या अल्लाह के वजूद का इन्कार है । क्या रसूल की रिसालत का इन्कार किया है । क्या क़यामत का इन्कार किया । क्या नमाज़ का इन्कार किया । क्या ज़कात का इन्कार किया क्या खुम्स का इन्कार किया । किस का इन्कार किया तो काफ़िर । काफ़िर किसे कहते है ? जो इन्कार करे । जो इन्कार करे वो काफ़िर । हमने किस बात का इन्कार किया कुरआन की किस बात का इन्कार किया । कुफ़्र क्या है ? इस्लाम है तस्लीम करना कुफ़्र है इन्कार करना ।

आज अंग्रेज़ी की कौन सी तारीख़ है १७ अक्टूबर । मै इक़रार करता हूँ कि आज १७ अक्टूबर है । मुसलमान हो गया । मै मुसलमान होके इन्कार करता हूँ आज १७ अक्टूबर नहीं है कलेन्डर ग़लत है । काफ़िर हो गया । कहा : नहीं । आप ही ने तो कहा :

तस्लीम करने वाला मुस्लिम और इन्कार करने वाला काफ़िर । कहा हर बात का तस्लीम करने वाला मुस्लिम नहीं हर बात का इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं । जिन बातों को अल्लाह ने कुरआन में दोहराया है उनको तस्लीम करने वाला मुस्लिम है और कुरआन की आयत का इन्कार करने वाला काफ़िर है । (सलवात) मोहब्बते अहलेबैत ज़रूरियाते इस्लाम में है कि नहीं । उन्होने कहा आपने वो हदीस सुना दी जो जनाब सैयदा ने ... अरे भई जो हदीस सुनाऊँगा डायरेक्ट सुना नहीं सकता । मै कैसे कहूँ कि मुझसें रसूलअल्लाह ने कहा अरे कहाँ से ऐसी हदीस लाऊँ जो मैने खुद सुनी हो । मैने सुनने वाले से ही सुनी है । सुनने वालों में बीबी फ़ात्मा है, सुनने वालों में अली है, सुनने वालों में हुसैन है, सुनने वालें में बीबी आयेशा है, सुनने वालों में बीबी हफ़सा है, सुनने वालों में बीबी उम्मे सलमा है, सुनने वालों में असहाब है, मुसलमान भी हैं मक़दाद भी है, ख़लीफ़ये अव्वल भी है, ख़लीफ़ये दोउम भी है, ख़लीफ़ये सोउम भी है । ये सब सुनने वाले ही तो है । आप जो हदीस पढ़तें है । फ़लां ने कहा, फ़लां ने कहा, अरे भई कहा तो सुन के होगा । फ़लां फ़लां कहे तो हदीसे रसूल और रसूल के दिल का टुकड़ा कहे तो न सुनोगे । (सलवात)

उन्होने कहा । हदीस में है । हदीस ... पता नहीं क्या पता नहीं । सहीह है या ग़लत, यही कहा जाता है और जिसकी हदीस है उसे क्या कहते हैं । बेटी सिद्दीक़ा की बात का इन्कार तो नबी की ज़बान का क्या असर रहा । मर्दों में किसी को सिद्दीक़ कहें तो मुसलमान मान लें और औरतों में किसी को सिद्दीक़ा कहें कहें तो मानना पड़ेगा कि नहीं । जिसने उन्हें सिद्दीक़ किया बक़ौल आपके, जान है ये लफ़्ज़ याद रखियेगा । जिसने उसी बेटी को कहा हो कि ये सिद्दीक़ा है मेरी समझ मे न आया कि इतने असहाब में एक ही सिद्दीक़ थे । इतनी घर में औरतें थी एक ही सिद्दीक़ा थीं । मगर अब क्या करें ? तारीख़ें बताती हैं । हम मुनकिरे तारीख़ नहीं हो सकते तो सिद्दीक़ को ये चाहिये था कि अपने अपने लक़ब बचाने के लिये कभी मुक़ाबिल न होते । यानी कभी ऐसी बात न आने देते

कि जिसमें एक आम मुसलमान सोचनें पर मजबूर हो जाये । ये सच्चे है या वोह सच्ची (सलवात) और जब मैने ये वाक़िया तारीख़ में पढ़ा और सहीह बुख़ारी शरीफ़ में भी देखा तो मुझे हैरत हो गई कि जब जनाबे सैयदा ने ये कहा कि फ़िदक मेरे बाबा मुझे दे कर गये तो फिर मुझे दे देना चाहिये था । क्योंकि ये वह कह रही हैं जिसे नबी ने सिद्दीक़ा कहा हो । मगर जवाब क्या मिला ? मगर हमसे तो रसूल ये कह रहे थे कि कि हम अम्बिया न वारिस होते हैं और न वारिस बनाते हैं । फ़िदक नहीं पढ़ूगाँ । सिर्फ़ इशारे अच्छा अब मामला ये है कि हम आप करें क्या ? सम्भालिये अपना ईमान । अगर सिद्दीक़ कहा क्यों ? जो ग़लत कहे । अगर बीबी फ़ात्मा मआज़अल्लाह ग़लत कह रही है नबी ने उन्हे सिद्दीक़ा कहा क्यों ? ऐसी को सिद्दीक़ा कहा क्यों ? जो नबी की तरफ़ ग़लत हदीस मन्सूब करे । ऐसे सिद्दीक़ क्यों कहा जो नबी की तरफ़ ग़लत हदीस मन्सूब करे तो दोनो तो ग़लत हो नहीं सकते । दो मे से एक सही और एक ग़लत । उन्होने कहा ये भी तो हो सकता है कि नबी ने उनसे ये कहा हो उनसे वो कहा हो । एक साहब ने लिखा भी है कि ये भी तो हो सकता है कि उनसे ये कहा हो और उनसे वो कहा हो । मैने कहा ठीक है । ये सिद्दीक रहेंगें क़यामत तक वह सिद्दीक़ा रहेगीं क़यामत तक लेकिन ये दोहरी बातें जो कर रहा है वह .... वह ... (सलवात)

फ़िदक नहीं पढ़ना है । मुसलमानों सिर्फ़ इशारा है कि आप उलेमा से पूछ सकते है । ये मामला तैय कैसे हुआ । ? बस ये पूछता हूँ । एक सवाल इधर से एक सवाल उधर से । रसूल की बेटी कहे । मुझे बांबा दे कर गये । वह कहते हैं हमने कुछ छोड़ा ही नहीं और जो कुछ छोड़ा वो बैतुलमाल का है । अब अगर नबी ने दो बातें दो से कह दी । आप है इस क़िस्म के मुसलमान कि नबी ने दो बातें कहीं । कहा नहीं हो सकता दो में से एक ही कही होगी । या बेटी से कहा होगा या दोस्त से कहा होगा । दो बातें नबी नहीं कह सकता । तो कहा नबी एक ही बात कही होगी तो अब या ये ग़लत कह रहे होगें या मआज़अल्लाह वोह ग़लत कह रही होगीं । कहा ये बात तो है । दो

मेसे एक बात तो सही हो सकती है । दोनो कैसे सहीह हो सकती है । आप चौदह सौ बरस बाद हमारी आप की बहस कि कौन सही कह रहा है ? कौन ग़लत कह रहा है ? उन्होने कहा भई तुम तो बता नहीं सकते । तो आख़िर हुआ क्या ? तो कहा सिद्दीक़े अकबर ने सिद्दीक़ा से कहा : आप गवाही रखती है । कहा हाँ ! मै गवाही रखती हूँ । ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । मै पढ़ चुका कि ख़लीफ़ा दोउम ने बहुत सी आयतें कुरआन में इसलिये नहीं रखीं कि वह तन्हा गवाह थे । जिसे आयते रजम । फ़रमाते थे कि मै जानता हूँ कि आये रजम रसूल अल्लाह पर नाज़िल हुई । और पहले कुरआन में थी । मगर अब नहीं है । लोगो ने कहा । बढ़ा दीजिये । कहा मै अकेले गवाही पर कैसे बढ़ा दूँ । क्योंकि कोई गवाह नहीं मिलता । अब ये फ़ैसला कीजिये कि बग़ैर गवाही कि आयत बढ़ नही सकती हदीस बग़ैर गवाही के कैसे बढ़ जायेगी । (सलवात)

अच्छा फिर क्या हुआ ? फिर हुआ ये कि शहज़ादी गवाहियाँ लाई । किसके सामने ? रसूल अल्लाह ने कहा और किसको गवाही लाई उम्मेएमन को । उम्मेएमन कौन ? ये वो कनीज़ा थीं जो रसूल अल्लाह के बाप की कनीज़ थीं । और फिर नबी की कनीज़ रहीं और अब बेटी के पास है । क्या उम्दा गवाही लाई । अरे भई गवाह का आना ही मुक़दमा का फ़ैसला किये देता है । क्योंकि हदीस ये बयान की गई है कि हम न वारिस बनाते है न किसी के वारिस होते है । और गवाही में उम्मेएमन को लायीं और अगर नबी अपने बाप के वारिस नही थे तो उम्मेएमन मिलीं कैसे ?, और अगर सैयदा उनकी वारिसादार नहीं थीं तो सैयदा के पास कैसे है ? देख लिया आपने खुद गवाह खुद ही ऐसा है । गवाह आया जब उम्मेएमन आयीं । कहा उम्मेएमन आप गवाही देने आयीं है । कहा गवाही तो मै बाद में दूगीं । पहले मुझे आपसे एक बात पूछना है ? कहा : वह क्या है ? रसूलअल्लाह ने ये फ़रमाया है कि नहीं कि उम्मेएमन जन्नती बीबी है । कहा हाँ-हाँ मै गवाही देता हूँ । ज़रा देखिये । दुनिया की अदालतें गवाहियां लेती हैं आले मोहम्मद के गवाह अदालत से गवाही मांगते है । (सलवात) मानते है । कहा : हाँ मानता हूँ कि आप जन्नती बीबी

हैं । पैग़म्बर ने एक बार नहीं बार बार कहा है । कहा मै गवाही देती हूँ कि जो शहज़ादी कह रही हैं । हदीस मेरे सामने है । रसूल ने कहा । फ़िदक की मिलकीयत फ़ात्मा को दी । बात ख़त्म हो गयी । जवाब क्या मिला ? और उम्मेएमन गवाह । उन्होने कहा । ये तो औरत है औरत की एक गवाही कैसे चलेगी । ? याद रखियेगा मेरी बात । एक औरत की गवाही कैसे चलेगी । ? वह कह रही है मै जन्नती बीबी हूँ । भई दो गवाहियाँ तो वो चाहते हैं जहाँ झूठे गवाह हों । जन्नती गवाह भी क्या झूठा हो सकता है ? कहा और लाती हूँ गवाह बेटों को लाईं हसनैन को, हसनैन ने गवाही दी । कहने लगे ये तो बच्चे हैं । अब शहज़ादी ने भी अली से मदद ली । अली इब्ने अबुतालिब आये लोग कह देते हैं कि अली ने गवाही दी । कहाँ दी गवाही ? तारीख़ पढ़िये । अली ने कहा । क्या बात है ? कहा हमसे नबी ने ये कहा था । ये कहती हैं नबी ने इनसे ये कहा था । और मैने उनसे गवाही मांगी । ये उम्मेएमन को लाईं । तो मैने कह दिया ये तो औरत हैं । हसनैन को लाईं तो मैने कहा ये बच्चे हैं । अली ने कोई बहस नहीं की गवाही पर । कहा आपने गवाही मांगी ? कहा हाँ हमने गवाही मांगी । कहा क्यों मांगी ? बस यहीं पर बात है । कहा क्यों मांगी ? कहा दावा जो भी करता है गवाही मांगी जाती है । कुरआन का हुक्म है गवाही मांगो । कहा क्या आयए ततहीर नहीं है कुरआन में कहा है । कहा फ़ात्मा चादर में थीं कि नहीं । अब ख़ाली जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह अन्सारी नहीं रहे । अब सिद्दीक़ भी रावी हैं (सलवात) कहा या अली आप सही कहते हैं । फ़ात्मा भी चादर में थी जब आयऐ तत्हीर नाज़िल हुई । कहा : अल्लाह जिस के लिये कहे रिजस क़रीब नहीं आ सकता । इस से गवाही मांगने का कैसा हक़ है ? अरे फ़िदक़ मिले न मिले । अली ने बतला दिया कि कुरआन जानते नहीं और फ़ैसला करने बैठ गये । (सलवात)

हाँ हुज़ूर अजब मन्ज़िल पर गुफ़्तगू आ गई । बग़ैर किसी की शान में गुस्ताख़ी किये हुये इस्लाम के सहीह वाक़ेयात । ये तैय है कि आयए तत्हीर आई । लेहाज़ा उस से गवाही क्यों मांगी । कहा हाँ हम से ये ग़ल्ती हो गई । इसका मतलब ये कि अहलेबैत से जो

रवायत आये उसे गवाही की ज़रूरत नहीं । और असहाब से जो रवायत आये । चाहे उसमें सिद्दीक़ ही क्यों न हों । क़ानूने इस्लाम में गवाही की ज़रूरत है । अब समझे हमने अहलेबैत का दामन क्यों पकड़ा । यहाँ हमें गवाही नहीं ढूढ़ँनी पड़ती । (सलवात) अब जो ये उलेमाये इस्लाम कहते हैं कि ये तो सिर्फ़ आइम्मा को मानते हैं । ये तो सिर्फ अहलेबैत को मानते हैं । ये तो सिर्फ़ आईम्मा जो कहते हैं वही मानते हैं । सही है भई जब इमाम ने कह दिया तो गवाही की ज़रूरत नहीं । मासूम की बात पर गवाही की ज़रूरत नहीं । जब गवाही की बात नहीं तो हम क्यों किसी से पूछें कि कोई गवाह है । गवाही मांगना ही अदम ईमान की दलील है । मैने कहा उन साहब ने मुझसे दस रूपये कर्ज़ लिये थे । उन्होने कहा मौलाना गवाही है । आपके पास गवाही तो नहीं है । तब फिर नहीं मिलने के दस रूपये । इसका मतलब ये कि आपने मुझे झूठा समझा जब तो आपने गवाही मांगी । अगर आप मुझे सच्चा समझते तो गवाही क्यों मांगते ? जिनको नबी ने सिद्दीक़ा कहा । जब उनसे सिद्दीक़ ने गवाही मांगी । ग़लत समझा जब तो गवाही मांगी । एक ही ज़बान से निकले हुऐ दो कलमें । इधर सिद्दीक़ा उधर सिद्दीक़ खुद ही बता दिया कि कोई अपने को सिद्दीक़ या सिद्दीक़ा कहे तो मान न लेना गवाही मांगना । (सलवात) बस अब मैं सिर्फ़ बेरादराने इस्लाम से हाथ जोड़ कर इन्तेहाई अदब के साथ ये गुज़ारिश करूँगा कि वो अपने उलेमा से पूछें कि ये सिद्दीक़ के लक़ब की जो हदीस है। उस पर भी कोई गवाह है कि नहीं । (सलवात) मै इतनी बड़ी बात कल भी पढ़ सकता था । आने वाले कल आख़री मजलिस में लेकिन आख़री से पहले मैंने इसलिये पढ़ी की कल आप ये कहते कि पढ़ कर चले गये । हम तो लाये थे गवाही ।

लाओ गवाही अब असहाब और अहलेबैत के मानने वालों मे फ़र्क नुमायां हो गया कि अहलेबैत कुछ कहें तो गवाही की ज़रूरत नहीं और सहाबी कुछ कहे तो बे गवाही लिये न मान लेना । अमां सब गवाह तो मर गये गवाही कौन देगा । (सलवात) दूसरा अहम और क़ीमती जुमला सुनिये । सहाबियत मर गई । इमामत ज़िन्दा है ।

(सलवात) इमामत ज़िन्दा है सहाबियत को वफ़ात । अब कोई सहाबी ज़िन्दा नही है कायनात में । तो गवाही का भी सवाल नही । अब तो गवाहो की गवाही है और ऐसे गवाह । इमामत बाक़ी है । कहा : परदे में है परदे में ही रहने दो । देखिये अजब बात कह रहा हूँ । कहते है कि आप का इमाम तो परदे मे है । आपके इमाम पर्दे से निकलें तो देखें । सुब्हानअल्लाह । अमां पर्दे की बात है । पर्दे में रहने दो । तुम न तक़ाज़ा करो । क्यों कि जिस दिन वह निकल आया । फिर हम ही हम रह जायेगें । तुम होगे कहाँ ? (सलवात) हमारा जो राब्ता आले मोहम्मद से है, अहलेबैत से है वह इसलिये कि इमामत बाक़ी रहने वाली चीज़ है । और सहाबीयत ख़त्म हो गयी । रवायत रह गई । गवाही की ज़रूरत रह गई । गवाह सिधारे । हमने लोगों से पूछ सुना है कि आप के मुक़दमें में आपके ख़िलाफ़ पचास गवाह गुज़रे । कहा अजी सौ भी गुज़रते तो क्या था । क्यों ? कहा : जिससे हमारी लड़ाई है वो बहुत मालदार है । माल से क्या मतलब ? कहा जनाब गवाह क्या ख़रीदे नहीं जाते ? भई तुम भी ख़रीद लो । कहा हमारे पास कौन सी सलतनत है जो हम भी ख़रीद लें । हमारा गवाह तो मर कर गवाही देता है । और जो मरने पर तैयार होता है वह बिकता नहीं । क्योंकि बिक जायें तो मरे क्यों ? यानी यहाँ पर मरना ही गवाही है । अब समझे आप कि शहादत के मानी गवाही के है । मरने वाले को शहीद क्यों कहते है ? इसलिये कि वो गवाह मरता है ।

कौन गवाह है । आईये अल्लामा ज़ेमहशरी से पूछें । अल्लाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी से पूछें । जिन्होने आयऐ मोअद्दत के ज़ेल में, देखिये मै आयत से हदीस पर नहीं आया । हदीस से चला आयत पर । मैने कहा कि शहादत क्या चीज़ है ? अब जो वरक़े गरदानी की तो देखा कि अल्लामा फ़ख़रुद्दीन राज़ी और अल्लामा जलालुद्दीन स्योति अपनी तफ़सीरों में लिखते है कि - पैग़म्बरे इस्लाम ने इरशाद फ़रमाया -

"मन माता आला हुब्बे आले मोहम्मद माता शहीदा"

अब जो हदीस पर नज़र गई । फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने लिखा, और अल्लामा ज़महशरी ने लिखा - दो नाम इसलिये पेश कर दिये कि आप गवाही न मांगे । ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । मै घबराया कि हदीस का क्या तअल्लुक़ है । ये क्या लिख दिया उन्होने तफ़्सीरि कुरआन लिखते-लिखते । हदीस पर कहाँ उतर आये । तो मैने कहा : ज़रा ऊपर भी पढ़ूँ कि किस आयत की तफ़्सीर में ये आयत लिखी तो देखा कि ऊपर आयत लिखी थी कि -

"कुल-लॉ असअलकुम अलैहे अजरन इल्ला अलमोअद्दते फ़िल कुरबा"

यानी ऐ रसूल ! उनसे कह दीजिये कि हम अजरे रिसालत में तुम से कोई सवाल नहीं करते सिवाये अक़रबा की मोअद्दत । न लफ़्ज़े अहलेबैत न लफ़्ज़े आले मोहम्मद । अक़रबा है कुरआन में । अक़रबा की मोअद्दत । अक़रबा की मोहब्बत अजरे रिसालत है । इसके ज़ैल में जब इस आयत की तफ़्सीर लिखी जाने लगी तो फ़ख़रुद्दीन राज़ी जैसा आलिम । जलालुद्दीन स्योति तफ़्सीर बयान करने पर मजबूर हुआ । हदीसे रसूल लिखने पर । हदीस क्या लिखी । मन माता अला हुब्बे अक़रबा नहीं । आयत में अक़रबा है । हदीस में आले मोहम्मद है और उस हदीस को अल्लामा फ़ख़रुद्दीन राज़ी उस आयत की तफ़्सीर बताते है । अब आप हमसे कैसे पूछ सकते है कि अक़रबा में ख़ाली आले मोहम्मद को क्यों मानते हैं । अरे नबी ही ने ख़ाली आले मोहम्मद कहा नबी ने आले मरवान नहीं कहा तो हम क्या करें ? (सलवात) नहीं कहा तो हम क्या करें ? आले मोहम्मद कहा । हदीस का तफ़्सीर में लिखा जाना ये दलील है कि फ़ख़रुद्दीन राज़ी भी जानते थे कि कुरआन आले मोहम्मद की मोहब्बत मांग रहा है । अब पूछो कि आले मोहम्मद को क्यों चाहते है ? हमको इस्लाम ने ये सिखाया है कि जिस की उजरत हो उसकी उजरत अदा करो । हम ये नहीं करते कि मेहनत किसी की और उजरत किसी को । बद्र अली ने जीता माल मुसलमान उठायें । ओहद में तन्हा अली लड़े । माले ग़नीमत सब लूटें । ख़ैबर में चालिसवें दिन

फ़तह अली करें और अरब कुर्ते की जेबें भरें । (सलवात) जब हम फोकट का माल नहीं लेते तो फोकट का ईमान क्या लेगें ? अगर अल्लाह ने दाम न मांगे होते तो हमें क्या पड़ी थी अदा करने की, और ये भी तो आपके बुजुर्ग फंसा गये । (सलवात) हम कब गये । आप ही के बुजुर्ग फंसा गये । न किश्तीयां ले कर जाते न आयत आती । किश्तीयां लेकर गये ज़र व जवाहर लेकर गये । आपकी उजरत देना चाहते हैं । डांटा कुरआन ने - "लॉ असलकुम अलैहे अजरन" । अगर मुसलमान ज़रा भी कुरआनसमझता है तो कुरआन पढ़ कर देख ले कि अल्लाह कुल कहाँ पर कहता है । -

"कुल या अय्योहल काफ़ेरून"

यानी कुरआन में अल्लाह ने जब भी मोमिन से बात की, तो *या अय्यो हल लज़ीना आमेनू* । इस वक़्त कौन आये है कि जिन्हे *"या अय्योहल लज़ीना आमेनू"* नहीं कहा खुदा ने । खुदा खुद बात नहीं कर रहा है । कुल । मेरे हबीब ! तुम कह दो हम उन्हें मुहं न लगायेगें । कुरआन ने साबित कर दिया कि जिनको अल्लाह ने दुनिया में मस्जिदे नबवी में मुंह न लगाया । महशर में क्या मुंह लगायेगें । (सलवात) हमतो गुफ्तगू बहस में मुसबत तरीक़े रखते है क्योंकि बम्बई की सड़कों पर ये कहा गया है कि ये ऐसे ये वैसे । तो हम बता दें कि हम कैसे ? और उन्हें समझा लीजिये कि अगर ज़्यादा ऐसा वैसा किया तो हम भी चौदह सौ बरस में बतायेगें कौन क्या ? कौन क्या ? (सलवात) अपना तरीक़ा मुसबत रखो, अपनी फ़ज़ीलत बताओ । जिन को चाहते हो उनकी फ़ज़ीलत बयान करो । हमे बिगड़ने की क्या ज़रूरत है ?बड़ी अजीबो ग़रीब बात है । बदनाम शिया है कि तबर्रा कहते हैं और शिया बेचारे तबर्रा कहते ही नहीं । अब तो तबर्रा उनकी ज़बान से सुनने को मिल रहा है । जो तबर्रा के ख़िलाफ़ है । उन्होने कहा शियों को कहते हैं बरात शख़्सीयत पर नहीं होती अमल पर होती है । खुदा ने झूठों पर लानत कही है । तो झूठे पर लानत है । मेरे पर आप पर उस फ़िरके पर थोड़े ही है जो झूठ बोलेगा उस पर लानत । फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि घर मे झूठ

बोलेगा लानत घर मे आयेगी । भरे मजमे मे बोलेगा तो भरे मजमे मे बात आयेगी । उन्होने कहा कि हाँ साहब हमने आते तो नहीं देखी । हाँ तो ये मोहलत का ज़माना है । नहीं देखी तो एक बात आज बता देता हूँ । जब भी कोई आले मोहम्मद, या उनके चाहने वालों की बुराई करे । ज़रा नज़र जमा कर चेहरा देख लेना । अगर नूर बरसे तो समझ लेना सही कह रहा है अगर फिटकार बरसे तो समझ लेना झूठ बोल रहा है । (सलवात) कुरआन ने आले मोहम्मद की मोहब्बत को अजरे रिसालत क़रार दिया । हम शिया किसी को चिढ़ाने कि लिये मदहे अहलेबैत नहीं बयान करते । चिढ़ाने के लिये नहीं । क्योंकि हम समझते हैं कि मुसलमान ही नहीं जो मदहे अहलेबैत से चिढ़े । हमारी नीयत किसी को चिढ़ाना नहीं है हमारी नीयत सबको बताना है । हम तन्हाख़ोर नहीं है । हम तो जायेगें जन्नत । जायेगें जन्नत ग़ल्ती इसलिये है कि चाहते हैं कि तुम्हे भी ले जायें । हर मुसलमान को ले जायें हर मुसलमान मोहिब्बे अहलेबैत बने, और अजरे रिसालत अदा करके दाख़िले जन्नत हो । फोकट की नमाज़ से क्या फ़ायदा ? फोकट के रोने से क्या फ़ायदा ?

ये लोग जो बे हुब्बे अहलेबैत इबादत करते हैं ये फोकट का माल है और ग़लत माल कभी टिकता नहीं । अरे जब सिक्का नहीं बिकता तो नमाज़ क्या बिकेगी । बग़ैर उजरत दिये अगर कोई चीज़ इस्तेमाल करें तो लोग कहते हैं कि रास न आयेगी । मकान रास आता नहीं । क़मीज़ रास आता नहीं । पायजामा रास आता नहीं नमाज़, हज, रोज़ा, सब रायेगां । (सलवात) बस हुज़ूर दामने वक़्त तंग हो रहा है । इतना समाअत फ़रमा लीजिये । पूछिये उलेमाये इस्लाम से कि - *"कुल ला असलोकुम अलैहा, अजरन इल्ला मोअद्दते फ़िल कुरबा"* कुरआन की आयत है कि नहीं । उन्होने कहा : हाँ है । अजरे रिसालत देना है । मगर अक़रबा से मुराद क़राबतदार, अगर आप ये साबित कर दें कि सारे मुराद हैं तो क़सम ख़ुदा की जैसी मोहब्बत हम अहलेबैत से करते हैं । जिसे भी आप क़राबतदार साबित कर देगें और वह करना पड़ेगा । हम मुतासिब नही हैं । उन्होने कहा - क्या नबी के और क़राबतदार नहीं थे । अरे थे क्यों

नहीं ? हज़रत अबू जहेल ही थे । आप कहाँ काफ़िर का नाम ले रहे हैं । अरे अक़रबा का लफ़्ज़ है । काफ़िर और मुस्लिम की शर्तें नहीं है कहा : नहीं ईमान तो देखना ही पड़ेगा । हम तो देख कर ही मानते हैं । आप भी ईमान देखना चाहते हैं । (सलवात) ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । अरे जाने दीजिये । जाने दीजिये किसी के ईमान से हमको क्या मतलब ? सब मर गये। ख़त्म हो गये । अब आप क्या ईमान देखने बैठ गये । अबूतालिब का ईमान क्यों देखते हैं ? कहा : भई क्या करें ? अबूतालिब ने कलमा नहीं पढ़ा अबू तालिब ने कलमा नहीं पढ़ा ? अबू तालिब ईमान नहीं लाये ? अरे लाये होगें । मर गये बे चारे । जाने दीजिये । दुहराने की क्या ज़रूरत ! अरे भई ईमान नहीं लाये थे ।

तो कहा ही जायेगा । नबी के चचा थे । बेशक, बेशक, नबी को पाला है गोद में... बेशक, नबी की मदद की है... बेशक, अपने लड़कों को कुरबान किया है, बेशक ये सब सही है । अबू तालिब की कुरबानी तस्लीम । उनकी बुज़ुर्गी तस्लीम । मगर ईमाननहीं लाये तो कहना पड़ेगा । कलमा नहीं पढ़ा, नहीं पढ़ा होगा । बयान न कीजिये । अली के बाप थे । वह चौथे ख़लीफ़ा सही लेकिन उन के बाप ईमान नहीं लाये, तो हमको तो कहना पड़ेगा अरे अच्छा हुआ नहीं लाये क्योंकि जो लाये थे उनके पास कहाँ रह गया ? (सलवात) अबू तालिब ईमान लाये और बे शक लाये । जो कुल्ले ईमान का बाप हो और जो कुल्ले कुफ़्र से कहे कि क्या बकता है ? कुफ़्र और ईमान मे दोस्ती नहीं हो सकती । लिख रहे हैं ईमान नहीं लाये । न लाये होंगे । अे भई उस से इस्लाम को तो कुछ फ़ायदा होने वाला नहीं है बल्कि मुसलमान और सोंचने लगेगा । कि जब चचा ईमान नहीं लाये तो ग़ौर करना पड़ेगा कि क्यों ईमान नहीं लाये ? अरे हिदायत क्या हुई ? गुमराही का रास्ता है और क्या है ? कहना पड़ेगा कि कुछ नहीं है । अबूतालिब के सिलसिले में जो गुफ़्तगू है सिर्फ़ इसलिये कि अली के बाप थे । तवज्जो सिर्फ़ इसलिये कि अली के बाप थे । अरे भई अली के बाप ईमान नहीं लाये तो उस को कहने की क्या ज़रूरत है ? कहा : मामला ये है कि हम जितनों को मानते है उनमे किसी

का बाप ईमान नही लाया था । (सलवात) अरे सारे मुसलमान काफ़िरों की औलाद, तो अली क्यों बचे ? इसलिये हमने कभी पूछा ? फ्लां के बाप ईमान लाये । फ्लां के बाप ईमान लाये । फ़्लां के बाप ईमान लाये थे । हमने कभी पूछा ? हमने कभी बहस छेड़ी ? तो आप चाहते हैं कि ये भी छिड़ जाये (सलवात) और छेड़ सकता हूँ इसलिये कि आरटिकल २५ में हिन्दोस्तान में सब का तहफ़्फ़ुज़ है जब आप अली के बाप को कहोगे तो हम किसी के बाप को नहीं छोड़ेगें ।

फिर भी हम नहीं कहेगें । इस साल छुट्टी दी । मगर मोहर्रम में आने वालों को समझा दीजियेगा कि अली के बाप को कुछ न कहें वरना ताहिर साहब कह गये हैं कि हम किसी के बाप को न छोड़गें । (सलवात) हाँ हक़ तो हमें आज भी है मगर हम मुसलमानों का दिल नहीं दुखाना चाहते हैं । हम मुसलमानों में तफ़रका नहीं डालना चाहते हैं । हम कलमागोईयों के बीच नफ़रत का बीज नही बोना चाहते हैं । हम कहना नहीं चाहते और आप कहलाना चाह रहे हैं । मगर जब बहुत मजबूर कीजियेगा तो फिर कहना ही पड़ेगा । बस इतना इशारा काफ़ी है कि किसी का बाप बचेगा नहीं । और फिर तारीख़ में दो के बाप ही मुसलमान मिलेगें । या मोहम्मद के बाप या अली के बाप (सलवात) और सबने क्या किया बाप रे बाप (सलवात) बस इससे ज़्यादा नहीं हुज़ूर अल्लामा फ़ख़रुद्दीन राज़ी, अल्लामा जलालुद्दीन स्योति अपनी तफ़सीरों में आयए मोअद्दत के ज़ेल में "मन माता अला हुब्बे आले मोहम्मद माता शहीदा" की हदीस लिखी । यानी जो आले मोहम्मद की मोहब्बत में मर जाता है वह शहीद हो जाता है । ये तफ़सीर हैं आयए मोअद्दत की । इसमें अक़रबा कहाँ है ? वहाँ तो आले मोहम्मद कह दिया तो फिर हम जिन को चाहते है, हम जिनसे मोहब्बत करते हैं । कुरआन उनसे मोहब्बत करने का हुक्म देता है । रसूल उनसे मोहब्बत करने की जज़ा देता है , और हदीसों से पुर है सहाह सत्ता में फ़ज़ायल अहलेबैत की हदीसें मौजूद हैं । अहलेबैत की मदह कुरआन में भी है, अहलेबैत की मदह कुतुबे सत्ता में भी है तो मिम्बर से क्या हर्ज है ? पूरा एक अशरा हो सकता है, जिसमें सिर्फ वही हदीसें पढ़ी जायेगीं जो बुख़ारी शरीफ़ में हैं आले

मोहम्मद की शान, हम तो इस डर से नही कहते कि चौदह सौ बरस में चलो एक किताब को तो सही कहा । अगर हम आले मोहम्मद की हदीसें पढ़ें तो इन्शा अल्लाह कल उस पर भी कहेगें कि ग़लत है । ग़लत है । और अगर साबित हो गई मोहब्बत आले मोहम्मद में तो कहेगें इमाम बुख़ारी भी शिया मालूम होते हैं । (सलवात)

बस आख़री बात सुनिये । जिसने अहलेबैत की फ़ज़ीलत बयान की, जिसने मदह की अहलेबैत की, आज भी जो अहले सुन्नत पढ़े लिखे तालीम याफ्ता हैं वो मदहे अहलेबैत करते हैं, तो फ़ौरन चार्ज लगता है कि शिया हो गया है । देखा ! अहलेबैत की बहुत तारीफ़ करता है । देखा ! अहलेबैत की तारीफ़ मे किताब लिखी है । शिया हो गया । शिया हो गया । क्या मतलब ? इसका मतलब शीयत कोई बुरी चीज़ नहीं है । मोहब्बते अहलेबैत का नाम है । सुन्नी भी अहलेबैत की तारीफ़ कर ले तो शिया कहलाता है । इसका मतलब शिया मद्दाहे अहलेबैत अहलेबैत की मदह करने वाला । अगर इस जुर्म में तुमने बुरा कहा कि हम अहलेबैत की मदह करने वालें हैं । तुम्हारे मुहँ में ज़बान हो तो कहो । हम क्या कहते हैं । जो रसूल ने कहा वो पढ़ते हैं वो तो जो फ़ज़ायल बयान कर गये हैं उनसे पूछो जिसका कुरआन है उससे पूछो तीन सौ तेरह आयतें । कमाल है जितने सिपाही बद्र की लड़ाई में थे उतनी आयतें धर दीं कुरआन में मदहे अली में । कहो कहो क्या कहेंगें । जला तो चुके, सिरके से धो चुके, तीर तो मार चुके, मगर वह कुरआन तो जाता ही नहीं । (सलवात) अब बस उससे ज़्यादा कुछ न कहेंगें जो मुहावरों से नहीं वाकिफ़ हैं । वह क्या समझेगें । समझने वाले समझेगें । बस हमारे तुम्हारे दरमियान है । कुरआन में मदह अहलेबैत हैं कुरआन मे तारीफ़ की हैं और कुरआन ही में अहलेबैत की मुहब्बत को अजरे रिसालत क़रार दिया है । तो फिर मोहिब्बे अहलेबैत होना अगर शिया है तो सब से पक्का और बड़ा शिया अल्लाह तआला जल्ले शानहू और दूसरा शिया का गिरोह है एक लाख चौबिस हज़ार पैग़म्बर शिया थे । क्योंकि रसूल अल्लाह ने कहा कि किसी को अल्लाह ने नबूवत नहीं दी । जब तक मेरी नबूवत और विलायत का इक़रार न ले लिया

। ज़रा ग़ौर फ़रमाईये कि किसी को नबूवत नही दी । समझो । समझो । क्या समझा रहे है । अमां नबूवत तो मिली नहीं बग़ैर अली की विलायत के ख़िलाफ़त क्या मिलेगी ? और एक बात कहता हुआ मसायब पढ़ूगाँ कि इस हदीस में जिसमें नबी ने फ़रमाया कि किसी नबी को अल्लाह ने नबूवत नहीं दी जब तक कि मेरी नबूवत और अली कि विलायत का इक़रार न ले लिया ।

इसका मतलब ये है कि मोआहिद थे सारे अम्बिया क्यों कि तौहीद का ज़िक्र नहीं है । मोआहिद थे अल्लाह के एक कहने वाले थे । उनसे कहा मोहम्मद की नबूवत का इक़रार करो । अली की विलायत का इक़रार करो तब नबूवत देगें । तो सब ने मोहब्बते नबी का इक़रार किया कि नबी की नबूवत को मानते हैं और इसके बाद अली की विलायत को मानते हैं । इसका मतलब ये है कि अपना कलमा पुराना है । (सलवात) आप पूछते हैं कि अलीयन वलीउल्लाह कब शामिल किया ? सुब्हानअल्लाह अब हम पूछेंगें कि कब निकाला ? (सलवात) क्योंकि आदम ने नबी की नबूवत का इक़रार किया तो कहा होगा.....? अली की विलायत का इक़रार किया तो क्या हुआ होगा । ? जनाबे नूह, जनाबे इब्राहीम, जनाबे मूसा, जनाबे ईसा, अरे भई सबको नबूवत न मिलती अगर अली की विलायत का इक़रार न करते, तो जन्नत क्या मिलेगी बग़ैर इक़रारे विलायते अली के । और यही चीज़ थी जो करबला मे मैदान में, माफ़ करें गुस्ताख़ी मगर क्या करूँ मौजू का हक़ अदा करना चाहता हूँ । अगरच हक़ अदा नहीं कर सकते । करबला में बहत्तर एक तरफ़ लाखों एक तरफ़ दो के मज़हब का फ़र्क बताईये । इधर अहलेबैत के चाहने वाले उधर दुश्मनाने अहलेबैत । ये मोहिब्बाने यज़ीद नहीं थे । दुश्मनाने अहलेबैत थे । वह अहलेबैत के दुश्मन थे इसीलिये इमामे हुसैन अपने खुत्बे में खुद लश्करे कूफ़ा से कह रहे हैं । बस हुज़ूर अजब मन्ज़िल है जब जनाबे अली असग़र को दफ़्न कर चुके और दरे ख़ैमा पर आये और आने के बाद ये इरशाद फ़रमाया । ज़ैनबो उम्मे कुलसूम तुम पर मेरा आख़री सलाम, लैला आख़री सलाम, ख़ैमे में रोने का शोर उठ गया । फ़िज़्ज़ा आई । आक़ा बहन बुला रही है । हुसैन घोड़े

से उतरे ख़ैमे मे आये कहा : भईया सलाम क्यों करते है ? बहन बस अब जा रहा हूँ । न लश्कर न सिपाही, न कसरते नासे। न क़ासिमे, न अकबरे, न अब्बासे, लिखा है हुज़ूर कि एक ख़ैमे में भाई और बहन में बातें हुई । बीबीयां कहती है हमें नही मालूम कि भाई और बहन में क्या बातें हुई ? मगर जब ख़ैमे से निकले तो हमने ये देखा कि बहन आगे-आगे चल रही है भाई पीछे-पीछे सर झुका कर चल रहा है । हम समझ गये भाई ने बहन को घर सुपुर्द कर दिया । बस अज़ादारो रुख़सते हुसैन पर मजलिस तमाम होगी । ज़िक्रे शहादत कल होगा । वो आपको ख़ुत्बा सुनाऊँगा जो हुसैन इब्ने अली ने मैदाने जंग में वक़्ते आख़िर पढ़ा था और उस में बताया कि ऐ मुसलमानों समझो कि हक़ क्या है और हक़ीक़त क्या है ।

जो हुसैन के समझाये नहीं समझ सकता वोह किसी के समझाये नहीं समझ सकता । कहा अच्छा हमने देखा कि बीबी ज़ैनब ने सैयदे सज्जाद के ख़ेमे का परदा उठाया । भाई बहन ख़ैमे में दाख़िल हुए । ज़ैनब ने आवाज़ दी सैयदे सज्जाद उठो... उठो... बाबा रुख़सत को आयें है । आप का बीमार इमाम फ़रमाता है मैने आंखें खोली तो बाबा को नहीं पहचान सका । क्योंकि इतने तीर जिस्म में लगे थे कि मालूम होता था कि कोई तायर सफ़ेद सामने खड़ा हो । कहा : बाबा आप रुख़सत के लिये आये है ? क्यों ? हबीब क्या हुऐ ? जुहैर क्या हुऐ ? मुस्लिम क्या हुऐ ? कहा बेटा सब शहीद हो गये । बीमार की बेचैनी बढ़ी आवाज़ दी । आक़ा ज़रा मेरे भाई अलीअकबर कहा : शहीद हो गये । कहा : मेरा चचा अब्बास कहा : शहीद हो गये । कहा मेरे भाई औनो मोहम्मद कहा : सैयदे सज्जाद मेरे तुम्हारे सिवा कोई बाक़ी नहीं है । कहा बाबा अभी मै बाक़ी हूँ । फुफी अम्मां मेरी तलवार मुझे दे दीजिये मैं अपने बाबा पर से अपनी जान निसार करूगाँ । बीबी ज़ैनब कहती है हुसैन ने बाज़ू पकड़ लिये । कहा : नहीं ! नहीं ! तुम्हारा इम्तेहान तो मुझसे ज़्यादा सख्त है । तुम तो बाज़ारों मे जाओगे । दरबार में जाओगे । माँ बहनो को साथ लेकर जाओगे । बस बस ज़ैनुल आबेदीन सैयदे सज्जाद । मेरे लाल तुम इमामे वक़्त हो मै सिर्फ़ वसीयत करने आया हूँ । कहा फ़रमाईये ।

क्या है ? कहा पहली वसीयत ये है कि मदीने जा कर शियों से मेरा सलाम कहना । अल्लाह - अल्लाह आगे बढ़े हुसैन कहा सैयदे सज्जाद एक वसीयत और है । बाबा वो क्या है ? कहा दोस्तों से कहना जब कोई मुसीबत आये तो मेरी मुसीबत को याद कर लेना । और कहना कि मेरे ग़म में रोना इसलिये कि मुझे रुला रुला के क़त्ल किया जायेगा । ये कह कर हुसैन निकले । रुख़सत के लिये आये ।

बीबीयों ने हाथ जोड़ लिये कहा आक़ा कहा क्या है ? कहा एक ख़्वाहिश है । कहा वो क्या है ? कहा हम दो रोया ख़ड़े हो जाये और आप बीच से गुज़र जायें । आख़िरी बार आपकी ज़्यारत करलें । बीबी दो रोया खड़ी हुई । आज जैसे हमारे बीच ताबूत आता है, ज़रीह आती है, शबीह आती है, अलम गुज़रता है । ये उसी की याद है जब बीबीयां दो रोया खड़ी थीं और हुसैन बीच से गुज़र रहे थे कैसे कह दूँ ? कहा बहन देर हो रही है कहा भईया बस गले से रूमाल खोल लीजिये तो मै अलविदा कहूँ । हुसैन ने गले से रूमाल खोला । ज़ैनब ने बढ़ कर गले का बोसा ले लिया । कहा भइया मेरी माँ ने वसीयत की थी ऐ ज़ैनब जब हुसैन जाने लगें तो गला चूम लेना । जज़ाकुम रब्बोकुम । ख़ोदा आपको किसी मुसीबत में न रूलाये सिवाये ग़मे अहलेबैत के, अजब वक़्त था आले मोहम्मद के लिये । हुसैन ने कहा ज़य बाजूओं से रिदा हटा दे । ज़ैनब ने बाजूओं से रिदा हटाई । भाई ने बहन के बाजू चूमे कहा : भईया ये क्या ? कहा जानती हो माँ ने क्यों वसीयत की । इसलिये कि उस गले पर ख़न्जर चलेगा । मैने तेरे बाजू इसलिये चूमे कि इन बाजूओं में रसन बंधेगी हुसैन ख़ैमे के बाहर निकले । जनाबे ज़ैनब ख़ैमेगाह मे अलविदा कहा । लेकिन जब बाहर आये दाहिनी तरफ़ नज़र की । बायीं तरफ़ नज़र की, सामने देखा दिल भर आया । पुकारने लगे ऐना ऐना हबीब इब्ने मज़ाहिर, ऐना ऐना मुस्लिम बिन औसजा, ऐना ऐना जुहैर इब्ने क़ैन, हमीद कहता है जब हुसैन पुकारते थे तो जनाज़े ज़मीन से उठ जाते थे । और आवाज़ आती थी । लब्बैका लब्बैका या इब्नुल हुसैन फ़रमाते हैं बहादुरों तुम्हें क्या हो गया है ? हुसैन तुम्हें पुकार रहे है कोई न समझा कि हुसैन क्यों पुकार रहे थे ।

बहन ख़ैमे से निकली बढ़ कर रकाब थामी ऐ भईया तेरी ग़रीबी पर बहन निसार अब कोई रकाब थामने वाला नहीं है । तो ये बहेन रकाब सम्भालती है । ऐ भईया आप जुलजेनाह पर सवार होईये । बस हुज़ूर मजलिस तमाम है । हुसैन जुलजेनाह पर बैठे कहा : बहेन ख़ैमे में चली जाओ । ख़ैमे मे चली जाओ । ज़ैनब ख़ैमे मे गई । हुसैन ने जुलजेनाह की बागों को उठाया मगर घोड़ा न बढ़ा । जब घोड़ा न बढ़ा तो कहा । ऐ मेरे नाना के घोड़े अरे ये मेरी आख़री सवारी है । ऐ मेरे नाना के घोड़े मै तीन दिन का भूखा हूँ, तीन दिन का प्यासा हूँ । मैने सुब्ह से जनाज़े उठाये हैं । अब मुझे मक़तल तक पहुँचा दे । ये तेरी आख़री ख़िदमत है । जब घोड़े ने कलमे सुने सर उठा कर हुसैन की तरफ़ देखा और झुक कर पैरों की तरफ़ इशारा किया । अब जो हुसैन ने देखा कि सकीना पैरो से लिपटी कह रही थी ।

ऐ मेरे घोड़े मेरे बाबा को न ले जा । ऐ मेरे घोड़े मेरे बाबा को न ले जा । हुज़ूर बड़ी मुश्किल मन्ज़िल है कौन बाप ऐसा है जिस पर वक़्त नही आता कि जब बाप घर से जाने लगता है अगर बेटी बहुत चाहती है चहीती होती है तो लिपट जाती है कि बाबा न जाईये । बाबा न जाईये । दफ़्तर जाना है । थोड़ी दूर पर जाना है मगर बच्चों को सम्भालने में मुश्किल होती है । हाय वो बाप जो जा कर आने वाला नहीं इस बेटी को कैसे समझाये । गोद में उठाया । बेटी को सीने से लगाया प्यार किया कहा सकीना जाने दो । कहा कैसे जाने दूँ चचा अब्बास गये पलट कर नहीं आये । अली अकबर गये पलट कर नहीं आये अब हमारा कौन है । सुनिये आख़री बात। बेटी अगर मै न जाऊँगा तो नाना की उम्मत बख़्शी न जायेगी । सकीना खड़ी हो गई । बाबा जाईये अरे सकीना ने यतीमी बर्दाश्त की मातमदारों की नजात के लिये अज़ादारी के लिये ख़ुदा हाफ़िज़ । ऐ बाबा अब आप को न रोकूँगी सकीना नजात की राह में हायल न होगी ।

●●●

बिस्मिअल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बारहवीं मजलिस

खुत्बा :

इन्नी तारेकुम फ़ीकुमुस्सक़लैन

किताबुल्लाहे व इतरती ।

बेरादराने मिल्लत ! सरवरे कायनात फ़ख़रे मौजूदात ख़त्मी मरतबत जनाब मोहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्ल०) ने वक़्ते वफ़ात हदीस इरशाद फ़रमाई कि ऐ मुसलमानों, मैं तुम में दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ । एक कुरआन और दूसरे अपनी इतरत । अल्लाह की किताब और इतरत तुम्हारे दरमियान छोड़े जा रहा हूँ ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें । अगर तुम चाहते हो कि मेरे बाद गुमराह न हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना इन दोनो से वाबस्ता रहना इन दोनो से राब्ता रखना इन दोनो की पैरवी करना इन दोनो की तासी करना ये इरशादे नबूवत है और जिस में पैग़म्बरे इस्लाम ने उम्मत को गुमराही से बचाने के लिये ये इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम में दो वज़नी चीज़े छोड़ रहा हूँ । एक कुरआन और दूसरे अपनी इतरत । इस हदीस के ज़ैल में कुरआन और अहलेबैत के मौज़ू पर जो गुफ़्तगू आपके सामने मुसलसल जारी है इसमें मुसलमानाने आलम को ये बताने की कोशिश की गई है कि हम ही कुरआन से वाबस्ता हैं, हम ही कुरआन का ऐहतेराम करते हैं, हम ही कुरआन की अज़मत के क़ायल हैं । हमारे यहाँ ही कुरआन कुरआन है और बाक़ी जो हमें इल्ज़ाम देते हैं कि कुरआन से उनका कोई ताअल्लुक़ नहीं है सिर्फ़ उनका ताअल्लुक अहलेबैत से है वो सही नहीं कहते ।

कुरआन उसे मिल ही नहीं सकता जो अहलेबैत से वाबस्ता न हो, अहलेबैत को वो समझ ही नहीं सकता जो कुरआन से वाबस्ता न हो ये दोनो लाज़िमो मुलज़ूम है । कोई कहे कि हम कुरआन खुद समझ लेगें बग़ैर अहलेबैत के तो वह कुरआन नहीं समझ सकता । कोई कहे कि हम अहलेबैत को तारीख़ से समझ लेगें कभी नहीं समझ सकता । अहलेबैत को कुरआन की आयतों से समझना पड़ेगा । (सलवात) आज की मजलिस में जो इस सिलसिले की आख़री मजलिस है, और विदाई मजलिस है । इसमें फ़ज़ायल कम और मसायब ज़यादा पढ़े जाते है । लेकिन फिर भी मैं अर्ज़ करने की कोशिश करूगाँ इस मजलिस में कि मुसलमानों में एक लफ्ज़ बहुत आम है और वो आम लफ्ज़ ये है कि ये फ़िरक़ा गुमराह है । ये गुमराह है उलेमाये इस्लाम, हर फ़िरक़े के आलिम दूसरे फ़िरक़े के मुसलमानों को गुमराह कहते है अहलेसुन्नत के उलेमा शियों को गुमराह जानते है शियों के उलेमा उनको गुमराह जानते है । गुमराह यानी जिनसे रास्ता गुम हो गया और फिर बेरादराने अहलेसुन्नत में भी एक फ़िरक़ा दूसरे फ़िरक़े को गुमराह करना जानता है । यानी हम सब फ़िरक़ों की बात जमा कर लें तो नतीजा ये निकलता है कि हम सब गुमराह है (सलवात) जब जब हमने फ़तवा देखे और उलेमाये अहलेसुन्नत को एक दूसरे को गुमराह कहते सुना तो हमारे लिये बड़ी दुश्वारी हो गयी कि हम किस की बात न मानें और ये सब मुफ़्तीयान शरहे मतीन उनका हर एक फ़तवा अपने अपने फ़िरक़े में महदूद है । शिया आलिम का फ़तवा शिया फ़िरक़े में महदूद है । सुन्नी आलिम का फ़तवा सुन्नी फ़िरक़े में महदूद है । और फिरक़ों में जो फ़िरक़े उनके फ़तवे भी अपने अपने फ़िरक़ों में महदूद है । दूसरों पर आयद नहीं होते है । लेकिन अगर रसूल अल्लाह कोई बात कह दें तो उससे कोई फ़िरक़ा इन्कार नहीं कर सकता । जब हमने सारे उलेमाये इस्लाम के फ़तवे देख लिये कि एक दूसरे को गुमराह कह रहे है तो हमें ये फ़िक्र हुई कि रसूल अल्लाह ने किसी को गुमराह नहीं कहा । तो ये हदीस हमारे सामने आई जिसमें पैग़म्बरे इस्लाम ने इरशाद फ़रमाया मै तुममे दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ दो वज़नी चीज़ें । एक कुरआन अल्लाह की किताब और

दूसरे अपनी इतरत । ये दोनो एक दूसरे से जुदा न होगें । यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौसर पर मिलें । अब क्या फ़रमाते हैं कि अगर तुम मेरे बाद गुमराह नहीं होना चाहते हो तो पहली बात ये कि ये अन्देशा और ये ख़दशा नबी को भी था कि मेरे मरने के बाद कुछ मुसलमान गुमराह हो जायेगें । अगर मर्ज़ न हो तो नुस्ख़ा क्यों लिखा जाये ? नबी ने जो नब्बाज़े उम्मत था । हकीमे उम्मत था उसने नब्ज़े उम्मत पर हाथ रख कर बता दिया कि तुम्हें मेरे बाद बुख़ार चढ़ने वाला है । (सलवात)

अगर चाहते हो कि बुख़ार न चढ़े अगर तुम गुमराही से महफ़ूज़ रहना चाहते हो तो इन दोनो से तमस्सुक रखना । अब मै चैलेन्ज करूँगा तमाम उलेमाये उम्मत से कि आप तो गुमराही का फ़तवा देते ही रहते हैं । लेकिन कभी नबी की बात पर ग़ौर भी कीजिये कि नबी ने किसको गुमराह कहा है । नबीने उसको गुमराह कहा जो कुरआन और इतरत को छोड़ दे या कुरआन को छोड़ दे या इतरत को छोड़ दे तो वो भी गुमराह हो जायेगा । गुमराही से निजात का एक ही ज़रिया है कि कुरआन और इतरत दोनों से वाबस्ता रहा जाये । (सलवात) इस ज़ेल में मुसलसल आप की ख़िदमत में कुरआने मजीद के मुताल्लिक़ थोड़ा बहुत जो कुछ मेरे इल्म में था । आपकी ख़िदमत में ब नज़रे इस्लाह पेश किया । कुरआन कब नाज़िल हुआ ? कैसे नाज़िल हुआ ? फिर नज़ूले कुरआन के बाद किस किस तरह से जमा किया गया । फिर जमा होने के बाद हम तक किस तरह से कुरआन पहुँचा और आज जो कुरआन हमारे दरमियान मे मौजूद है इसकी हैसियत हमारी नज़र में क्या है ? ये मैने आप की ख़िदमत में हल्का सा ख़ाका ग्यारह मजलिसों में पेश किया कि कुरआन और इतरत दोनों का अगर वजूद न होता तो नबी कभी नहीं फ़रमाते कि मै दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ और फिर हमेशा अर्ज़ कर देता हूँ कि ये आवाज़ कि हमें कुरआन काफ़ी है ।

कोई दलील देने की ज़रूरत ही नहीं है । इस हदीस पर हसबेना किताबुल्लाह का जुमला ही दलील है कि नबी ने किताब के

अलावा भी कुछ छोड़ा था । तो काफ़ी कहा गया । और फिर उसके बाद इतरत की हैसियत क्या है ? और कुरआन की हैसियत क्या है ? कुरआन भी अल्लाह की किताब है और इतरत रसूल की इतरत है । कुरआन भी अल्लाह का कलाम है और इतरत को अपनी मशीयत से ख़ल्क़ फ़रमाया है । क्योंकि इतरत में वो भी शामिल है जो नूरे मोहम्मदी से है और जिस का ताअल्लुक़ नूरे मोहम्मदी से नहीं है वह कभी शामिले इतरत नही है । इतरते नूर मुराद है । यानी इतरत उसे कहते हैं जो एक नूर से बनी है । कुरआन भी नूर, इतरत भी नूर है, दो वज़नी चीज़े छोड़ी हैं, एक कुरआन दूसरे अपनी इतरत अब ये बहस है कि क्या कुरआन काफ़ी हो सकता है बग़ैर इतरत के या नहीं । (सलवात) इस सिलसिले में मैं आज एक मशहूर व मारूफ़ वाक़ेया का सहारा लूगाँ आप की ख़िदमत में और दलील के तौर पर उसे भी पेश करूगाँ पहले मेरा सवाल ये है कि कुरआन तो बड़ी चीज़ है । कुरआन तो बड़ी किताब है अल्लाह की किताब है, कुरआन अल्लाह की किताब है । एक छोटी सी किताब ला दीजिये छोटी सी अलिफ़ बे की सही, अरे भई बग़दादी क़ायदा ला दीजिये , और लाकर अपने बच्चे को दे दीजिये । और कहिये पढ़ो तो कहेगा पढ़ाओ । ये पढ़ाओ के क्या मानी हैं ? यानी ए, बी, सी, डी, की किताब, बग़दादी क़ायदा हो, अ, बा, क, ख हो कोई किताब हो बग़ैर पढ़ाने वाले के काफ़ी नहीं होती । तो जब दुनिया की कोई किताब बग़ैर पढ़ाने वाले के काफ़ी नही होती तो अल्लाह की किताब (सलवात) अल्लाह की किताब हर किताब का कोई लिखने वाला होता है और कोई किताब का पढ़ाने वाला होता है लिखने वाला वोह है जिसने किताब लिखी और पढ़ाने वाला वो है जो किताब पढ़ाता है । याद रखियेगा अगर लिखने वाला इल्म न रखे तो जो किताब कभी नहीं पढ़ सकता और अगर पढ़ाने वाला इल्म न रखे तो पढ़ाने वाला कभी पढ़ा नहीं सकता । तो मानना ये पड़ेगा कि जिसने किताब लिखी इल्मे ऐन ज़ात है तो जो इल्म पढ़ायेगा उसके साथ भी इल्म वाबस्ता होना चाहिये । क्योंकि ये कोई एम० ए० और पी० एच० डी० की किताब नहीं है । अल्लाह की किताब है और कैसी किताब है । (सलवात)

कुरआन कैसी किताब है ! आप जब भी कोई किताब सामने लाकर रखते है पूछते है कि ये नुस्ख़ों की किताब है, तिब की किताब है, इसमें अमराज़ के नुस्ख़े है । एक किताब आप लाईये । मैने कहा काहे की किताब है आप ने कहा ये तारीख़ की किताब है । इसमें तारीख़े इन्सानीयत लिखी हुई है । तारीखे बशरीयत लिखी है । आप एक किताब लाये । मैने कहा ये काहे की किताब है आपने कहा ये जुग़राफ़िया की किताब है । इसमें जुग़राफ़िया लिखी है । आप एक किताब लाये काहे की किताब है उन्होने कहा । जनाब ये अर्थमैटिक की किताब है । ये अलजेबरा की किताब है, ये ज्योमेट्री की किताब है, ये साईंसं की किताब है, ये नाविल है, ये अफ़साना है ये कहानी और क़िस्से की किताब है और ये फ़लसफ़े की किताब है । ये मन्तिक़ ये नफ़सीयात की किताब है । अब सवाल ये होगा कि किताब तो आपने मुझे दी तो अब मै पढ़ूँ किस से ? मै पढ़ूँ किससे ? अक़्ल ये कहती है कि इस किताब के इल्म का जानने वाला है उससे ये किताब पढ़ो । कभी आप ग़ालिब का दीवान ले कर किसी साईंटिस्ट के पास नहीं जायेगें । कभी साईंस की किताब लेकर आप किसी शायर के पास नहीं जायेगें । यानी इल्म इतना फैलाव मे है कि एक आलिम की ज़िन्दगी गुज़र जाती है और इक का माहिर नहीं बन पाता है । (सलवात) अब मै तमाम उलेमाये इस्लाम से पूछता हूँ कि अगर साईंस नहीं पढ़ी है तो तिब नहीं समझ सकता ।

अगर फ़लसफ़ा नहीं पढ़ा तो फ़लसफ़े की किताब नहीं समझ सकता । अगर मन्तिक़ नहीं पढ़ी तो मन्तिक़ की किताब नहीं समझ सकता । अगर जुग़राफ़िया नहीं पढ़ी तो जुग़राफ़िया नहीं समझ सकता । यानी जब इल्म अन्दर न हो किताब समझ में नहीं आती और जिस एक किताब में सब कुछ हो तारीख़ भी कुरआन में है मगर कुरआन को तारीख़ की किताब नही कहते, फ़लसफ़ा भी कुरआन में है मगर कुरआन को फ़लसफ़े की किताब नहीं कहते है आयाते शिफ़ा भी कुरआन में है, ऐसी-ऐसी आयतें कुरआन में है कि जिन से बड़े बड़े अमराज़ दुरूस्त हो जाते है । तवज्जोह फ़रमाई आप ने लेकिन हर एक नहीं समझ सकता । कुरआन एक किताब ऐसी है

कि अल्लाह ने सारा इल्म कुरआन में भर दिया और उसके बाद एलान किया कि हर खुश्को तर कुरआन में है । कायनात की कोई चीज़ भी ऐसी नहीं है जो कुरआन में नहीं है । अब किस से पढ़ियेगा कुरआन ? मै कुछ नहीं कहता । मै तारीख़े इस्लाम को चैलेन्ज करता हूँ । खुलफ़ाये इस्लाम में, असहाब कराम में, अज़वाजे करम में, ताबेईन मे,तबे ताबेईन में, आईम्माये अरबा में, आज तक के उलेमा में एक नाम लो । एक का जिसने ये दावा किया हो कि मै हर इल्म का माहिर हूँ (सलवात) ज़रा आप ग़ौर फ़रमाईये । दावा पूछ रहा हूँ । मै दावा करूँ कि ये आप का मकान मेरा है । चार गवाही देगें कि हाँ ये ताहिर साहब का मकान है । मै दावा ही नहीं कर रहा हूँ । मै ने अदालत में इस बात का दावा ही नहीं किया । गवाह खड़े है हम गवाही देते है । किस बात की गवाही देते है ? उन्होने कहा ये मकान ताहिर साहब का है । उन्होने कहा उनसे भी तो पूछिये । आपने मुझसे पूछा ये मकान आप का है ? मैने कहा नहीं उन्होने कहा वो कहा करें हम गवाह है । ये गवाही कहाँ गुज़रेगी । ये गवाही जो बग़ैर दावा की हो कहाँ गुज़रेगी ? लोग कहेगें ये गवाही बेकार है मुद्दई दावा नहीं करता है गवाह मौजूद है ।

आलमे इस्लाम में एक भी मुद्दई नहीं है कि मैं उलूम का माहिर हूँ । गवाहों की कसरत है, गली कूचों में है, (सलवात) ज़रा तवज्जोह फ़रमाईयेगा । आपने बम्बई में एक अदालत में लिख कर विटनस गवाही दाख़िल की कि हम गवाही देते है कि ये मकान हमारे ताहिर साहब का है । गवाह आ गया मुद्दई आया नहीं गवाह ही को रख लीजिये । हम मुद्दई को ले आयेगें आप हमारे पास आयेगें आप हमारे साथ चलिये । हमने सौ गवाहियाँ पहले दाख़िल कर दी है । लिखी हुई है अब आप सिर्फ इतना कह दीजियेगा कि हमारा है । मैने कहा मै नहीं कहता कि हमारा है तो मै ही नहीं कहता तो आप की गवाही क्या होगी । सिवाये इसके कि भट्ठी में डाल कर जला दी जाये । और किस काम की...? बेकार काग़ज़ है । मुसलमानों ये उलेमाये इस्लाम ने जो तुम्हें गवाह बनाया है पछे तो किसका गवाह बनाया है । अरे वह दावा कहाँ है ? किसी ने रसूल की ज़िन्दगी मे

दावा किया हम तो वाक़िफ़े कुरआन हैं । हम मानिये कुरआन जानते हैं । किसी ने नबी की वफ़ात के बाद दावा किया । ये आपकी गवाही आप पर मुक़दमा चलायेगी क्योंकि खुलेफ़ा महशर में कहेगें माबूद हमने तेरे कुरआन के इल्म का दावा नहीं किया । वह गवाह झूठे हैं । (सलवात) हमने दावा नहीं किया । आप बतायें उलेमाये इस्लाम से पूछें कि क़सम खुदा की फ़ौरन अपना मज़हब बदलने को तैयार हूँ एक गली सड़ी रवायत किसी गली सड़ी किताब से ले आयें । या एक झूठे से झूठे आलिम को ले आयें और वो मेरे मुहँ पर आकर कह दे कि ख़लीफ़ये अव्वल ये कहते थे कि मैं इल्मे कुरआन से वाक़िफ़ हूँ । ख़लीफ़ये दोउम ये फ़रमाते थे कि मै इल्मे कुरआन से वाक़िफ़ हूँ । ख़लीफ़ये सोउम ये ये फ़रमाते थे कि मै इल्में कुरआन से वाक़िफ़ हूँ । अरे पूरी ज़िन्दगी तो जमा करने में गुज़र गई । (सलवात)

आप ख़लीफ़ा मानते है मुझे बहस नहीं करना है आप मुझे पहले ख़लीफ़ा से लेकर तीसरे ख़लीफ़ा का कोई खुत्बा कोई टुकड़ा कोई तक़रीर जिसमें उन्होने ये दावा किया हो कि हम आलिमे कुरआन हैं । हम रमूज़े कुरआन से वाक़िफ़ है । हम आयत की शाने नज़ूल से वाक़िफ़ है । हम मन्शाये यज़दी से वाक़िफ़ है । किस लफ़्ज़ से क्या मुराद है हम जानने वाले है । है दावा लाईये पहले गवाही बाद मे दीजियेगा । पहले दावा लाईये और जब चौथा ख़लीफ़ा मिम्बर पर आया तो उसने कहा पूछे-पूछे जो कुछ तुम को पूछना हो । (सलवात)

सलूनी-सलूनी क़ब्ल अनतक़ज़ूनी पूछे-पूछे जो कुछ तुम पूछना चाहते हो पूछे क़ब्ल इसके कि मै तुम्हारे दरमियान न रहूँ । ये किसने दावा किया चौथे ख़लीफ़ा ने । तीन ख़लीफ़ा ने दावा नहीं केया । जब दावा नहीं किया तो गवाही कैसी ? हमारे मौला ने और आप के चौथे ख़लीफ़ा ने दावा किया । सब मिल कर अली के गवाह बनिये । इसीलिये अशहदवन्ना ला एलाहा के साथ लगेगा अशहदवन्ना मोहम्मद के साथ लगेगा । क्योंकि खुदा का खुदाई का दावा हम

गवाह है बे शक तू एक है । मोहम्मद का नबूवत का दावा हम गवाह है कि आप अल्लाह के रसूल हैं । अली की विलायत का दावा हम गवाह है कि अली अल्लाह के वली है (सलवात) हुज़ूर ख़ोदा ने एलान किया कुलहो अल्लाहो अहद । कहो कहो कि अल्लाह एक है । हमने गवाही दी क्योंकि दावा खुदा का है कि मैं एक हूँ । अश्हद्वन्ना ला एलाहा इल्लल्लाह लिखो फ़रिश्तों गवाही हमारी । हम गवाह है इस दावा के कि खुदा एक है । नबी ने कहा कुन्ता नबीयन । मै उस वक़्त भी नबी था जब आदम आबो गिल के दरमियान थे । हमने कहा अश्हद्वन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह देखो तारीख़े खुदा कब से एक है । तारीख़ बताओ । कब तक एक रहेगा । टाईम बताओ । कलमे की डेट बताओ । ये जो गवाही देते हो कि हम गवाहीदेते है कि कोई अल्लाह नहीं सिवाये वहदहू ला शरीक के वह कब से ? नमरूद के बाद से, शद्दाद के बाद से, फ़िरऔन के बाद से, कब से आज से, अरे हमेशा से ? कहा हमेशा से कहा कहने की क्या ज़रूरत है । अश्हद्दो अन्ना का मतलब ही हमेशा से है कब तक ? कहा हमेशा अच्छा ! अश्हदोअन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह हम गवाही देते हैं कि मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं कब से ? जुलअशीरा से ? जिस दिन एलान किया कहा नहीं वोह तो पैदा ही नबी हुऐ थे । अच्छा ! तो पैदाईशी नबी है । मैं कुछ कह रहा हूँ पैदाईशी नबी और जब वफ़ात हो गई अब नबी नहीं है । कहा अब भी है कहा मर गये कहा मरने से क्या होता है ।

बशरीयत मरी है नबूवत थोड़े मरी है । बशरीयत मक्का में पैदा हुई थी नबूवत थोड़े मक्का में पैदा हुई थी । वो तो जब नूर ख़ल्क़ किया था तो नबी ही बनाया था । और कब तक नबी रहेगें । क़यामत तक ? क़यामत में नबी नहीं रहेगें ? सेरात पर नबी नहीं रहेगें ? कौसर पर नबी नहीं होगें ? अरे साहब होगें तो बस होगें और कब से हुए ? जब से बने थे तब से थे । ये जुलअशीरा क्या है ? ये तो हमे मालूम होने की तारीख़ है ये नबूवत की तारीख़ है ये एलाने नबूवत की तारीख़ है । अली कब से वली है ? ग़दीर से जी नहीं वो पैदा ही वली हुऐ आज भी वली है और हमेशा वली रहेगा

। ग़दीर तो हमे मालूम होने की तारीख़ है । (सलवात) अश्हदो अन्ना के मानी क्या होते हैं ? हम गवाही देते हैं गवाही मुताल्लिक़ दी जाती है । गवाही में डेट नहीं है कि फ़्लां सिन तक खुदा एक है और फ़्लां सिन तक खुदा एक रहेगा । ये कहियेगा तो मजमा सन से हो जायेगा । तवज्जोह फ़रमाई आपने । अरे हुज़ूर हमेशा से और हमेशा रहेगा । नबी जब से ख़लक़ हुऐ वली थे । वली हैं और वली रहेगें । अश्हदोअन्ना वहाँ ज़ेब देता है जहाँ बात अज़ली हो । अबदी हो । (सलवात) फ़रमाया कि पूछो-पूछो, पूछो जो कुछ पूछना हो । क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हारे दरमियान न रहूँ । फ़रमाया कहा हाँ फ़रमाया और किसी ने कहा ? किसी ने नहीं कहा । तो जिसने कहा उसी से पूछो । हम क्यों पूछें कल यहीं पर बात रुकी थी कि आप अहलेबैत के अलावा किसी को नहीं मानते । भई माने जब कोई मनवाये मै कहूँ कि मै डाक्टर हूँ । आप मानीये कि मैं डाक्टर हूँ । मै कहूँ कि मै हकीम हूँ आप मानिये मैं कहता ही नहीं कि मैं डाक्टर हूँ आप माना करें ।

अरे भई बग़ैर दावे के मानना कैसा ? मेरी ये बात समझ में नहीं आयी कि सारी दुनिया का तरीक़ा ये है कि जब कोई दावा करे तब माना जाता है और दावा न करे और माना जाये । ये तारीख़े आदमो आलम में मैने कहीं नहीं पाया सिवाये एक मज़हब में और वो मज़हब है बुत परस्तों का कि एक पत्थर नहीं कहता कि मै खुदा हूँ लोग मान रहे है कि तुम खुदा हो । लात ने कभी नही कहा कि मैं खुदा हूँ मनात ने कभी नही कहा कि मै खुदा हूँ जबल ने कभी नहीं कहा कि मैं खुदा हूँ । उन्होने कहा तुम्हारे कहने की क्या ज़रूरत है हम जिसको माने वो खुदा । लाके काबे मे तीन सौ साठ रखे । ला कर रखे खुद तो नहीं आये । (सलवात) ये बारीक फ़र्क़ जिस दिन मुसलमान समझ लेगा इन्शाअल्लाह निजात का रास्ता वाज़ेह हो जायेगा । एक है जिनको हम मान रहे हैं उसका दावा है खुदा का दावा है कि मै एक हूँ । हम मान रहे हैं कि रसूल का दावा है कि हम मान रहे हैं अली का दावा है कि मै अल्लाह का वली हूँ । हम मान रहे हैं दावा बताईये । तारीख़ में ख़लीफ़ये अव्वल ने

फ़रमाया कि मैं रसूल के बाद ख़लीफ़ा हूँ । कभी अपनी ज़बान से नहीं फ़रमाया । लोगों ने कहा हम आप को मानते हैं । क्या ख़लीफ़ये दोउम ने फ़रमाया । मैं ख़लीफ़ा हूँ । ख़लीफ़ये अव्वल ने कहा मैं आपको बनाता हूँ । क्या ख़लीफ़ये सोउम ने कहा मैं ख़लीफ़ये रसूल हूँ । कोई दावा है । अरे भई अहलेबैत को तोहमत देते-देते चौदह सौ बरस हो गये । अब क्या ख़लीफ़ा को भी उलेमा तोहमत देगें । बताईये कहाँ कि ज़िद है । कमेटी ने तैय किया है । यानी दो बातों में फ़र्क़ मैं दावा करूँ और आप मानें । मैं मजबूर हो जाऊँ ये और बात है । मजबूरी जबरी है । दावा इख़्तेयारी है । आप बतायें किसने दावा किया ।

कहा भई दावा तो किसी ने नहीं किया दरख़्वास्त दी उम्मत को । फ़रमाईश की उम्मत से । किसी सहाबीये रसूल ने फ़रमाईश की कि भई अबकी हमको बनाना कहा नहीं वह क्यों करते फ़रमाईश । किसी ने नहीं की, किसी ने कहा कि हमारा हक़ है । एक तारीख़ दिखा दीजिये लाईये । उन्होने कहा वो क्यों कहते । अच्छा जब आदमी खुद नहीं कह रहा है कि मेरा हक़ है तो आप हक़ मानने वाले कौन ? सवाल ये है कि जब मैं कहूँ कि ये मकान मेरा है । मैं कहता ही नहीं कि मेरा है । आप गवाही देने पर तैयार । किसने कहा कि बादे नबी हक़ मेरा है । आप गवाही कहा बस वो तो अली ही कहते थे । तो अब सवाल ये है कि अली क्यों कहते थे ? और सब क्यों नहीं कहते थे ? कहने में क्या हर्ज था ? अरे उम्मत मानती या न मानती ये और बात है । उनकी बात कहाँ मानी । कमाल है जो कह रहा है मेरा हक़ है उसकी गवाही नहीं देते । और जो कहता ही नहीं कि मेरा हक़ है उसकी गवाही दे रहे हैं । ये कौन सा क़ानूने इस्लाम है । उन्होने कहा वह तो आप समझते हैं । लोगों ने बनाया । अब दूसरी मन्ज़िल है कि जब लोगों ने अली को नहीं बनाया था तो अली ने कहा कैसे कि मेरा हक़ ? देखिये कहाँ पर ले आया बात । जब उम्मत ने अली को ख़लीफ़ये रसूल बनाया तो अली से पूछिये कि उन्होने कहा कैसे कि ये हक़ मेरा है ? मै अली से पूछ रहा हूँ । उन्होने कहा : हक़ था नहीं । कहा तो अब चौथा न

बनाईयेगा । क्योंकि अली वो जो कहते हैं मेरा हक़, और हक़ है नहीं जो ना हक़ कहे । वो ख़लीफ़ा बनने के क़ाबिल नहीं । ये इल्ज़ाम तीन ख़ुलेफ़ा पर नहीं आता मैं किसी की तरफ़दारी नहीं करता हूँ । हक़ कहता हूँ । क्योंकि उन ख़ोलेफ़ा ने कभी नहीं कहा कि मेरा हक़ है । तुमने माना । उन्होने दावा किया नहीं । अली ने दावा किया तुमने माना नहीं । अगर अली का दावा हक़ था तो माना क्यों नहीं ? और अगर ना हक़ था तो नाहक़ कहने वाले को चौथा माना ही क्यों (सलवात)

देखिये बड़ी दलदल में फंसा दिया आप को । तवज्जो और जितना ज़ोर लगाईयेगा इन्शा अल्लाह धंसते ही जाईयेगा । इसलिये कि अली कहते हैं कि मेरा हक़ है । किसी ने कहा या अली आप का हक़ नहीं । मेरा हक़ है । कोई था ही नहीं तो डिग्री एक तरफ़ा हो गई । डिग्री क़ानून एक तरफ़ा हो गई । भई मुक़द्दमा तो जब क़ायम होता है जो दावा दार हो । उम्मत में कहता ही नहीं कोई मेरा हक़ है । अली एक-एक कुण्डी खटखटा कर कह रहे हैं कि मेरा हक़ । अब तो बड़ी परेशानी आ गई । ये हक़ मेरा है और कोई कहता नहीं कि ये हक़ मेरा है । ये भी अजीबो ग़रीब बात है । कोई नहीं कहता तारीख़ में कहीं नहीं है कि कोई कहे ये मेरा हक़ है । बहुत ज़िम्मेदारी से कह रहा हूँ और सड़ी गली किताबों का हवाला मांग रहा हूँ । तवज्जो। कहा ? कहा तो किसी ने नहीं मगर उम्मत ने बनाया । इससे किसी को इन्कार है । जब ही तो हम भी कह रहे हैं कि अली को चौथा बनाया । हम हक़ीक़त के हिसाब से चौथा थोड़े कहते है तारीख़ के हिसाब से कहते हैं । अच्छा, फिर, उन्होने कहा नहीं हमारा हक़ । अली ने कहा हमारा हक़ । तो नाहक़ कहा । कहा ये भी नहीं कह सकते । वह भी नहीं कह सकते । समझ लीजिये कि वहाँ हक़ होगा ही नहीं । एक अक़्ल में आने की बात है । दिन है नहीं रात है । रात है ! हाँ रात है । रात है । नहीं कह सकते । दिन है नहीं कह सकते । ये कौन सी मन्तिक़ हुई ? एक बात तो कहना ही पड़ेगी । अरे यहाँ नहीं कहोगे ....? लेकिन क़ब्र में तो कहना ही पड़ेगी । (सलवात) क़ब्र में तो कहना ही पड़ेगी । हश्र में तो कहना

ही पड़ेगी । यहाँ से तैय करके चलें हम । उन्होने कहा । नहीं हक़ तो नहीं था । अली का नहीं था । तो चौथा क्यों माना ? और अगर चौथा था तो पहले ही क्यों न कह दिया कि आप का नम्बर चार है । सब्र कीजिये । घर बैठिये । कहा नम्बर मालूम किसे था ? अजब बात है । एक को मालूम है कि मैं जानशीन हूँ । वह कह रहा है और आप को ये भी मालूम नहीं कि ये है या नहीं। हो जायेंगे कि नहीं हो जायेगें । और होगें तो कब तक और कितने दिन के लिये होगें। (सलवात)

ज़रा ग़ौर फ़रमाईये । मै कहना ये चाहता हूँ कि ये ला यक़ीनीयत । यक़ीन ही नहीं जब यक़ीन ही नहीं तो ईमान कैसे होगा ? ईमान यक़ीन की वो डिग्री है जहाँ शक न होने पाये और यहाँ यक़ीन ही नहीं है । कोई शक की ज़रूरत क्या है ? तो जब यक़ीन नहीं है तो ईमान नहीं है । कहा ठीक है । जो हुआ सो हुआ । तो फिर जो होगा सो होगा । मै कुछ कह गया । जो हुआ सो हुआ तो फिर जो होगा सो होगा जो दुनिया में होना था वोह हो गया । जो क़यामत होना था वो होगा । नजात तो जब यक़ीनी होगी । जब हक़ यक़ीनी होगा । आप कहना क्या चाहते है ? मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूँ मैं तो सिर्फ़ इस इन्तेज़ार में था कि नबी के कलमे में मुसलमान पहले की तरह गवाही देगा । चौथे की गवाही देगा । अरे मैं तो मुन्तज़िर था कि अमीरि शाम की भी गवाही देगा । मैं इन्तेज़ार कर रहा था कि यज़ीद की भी गवाही देगा । जो जो बनता जायेगा । उसका गवाह बनता जायेगा । कहा देखिये हम अश्हदोअन्ना के साथ नही कह सकते क्यों ? क्योंकि अल्लाह को एक माना । अश्हदोअन्ना ला एलाहा इल्लल्लाह कहा । रसूल को माना । अश्हदोअन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह अगर मैं अहलेसुन्नत में होता अगर होता । अश्हदोअन्ना हज़रत अबूबकर ख़लीफ़तुलल्लाह क्यूँ न कहता । वह तो हुआ ही नहीं । नहीं तो मैं भी कहता । और मै फिर भी कहता । हज़रत उमर ख़लीफ़तुल्लाह । अश्हदोअन्ना हज़रत उस्मान ख़लीफ़तुल्लाह । अश्हदोअन्ना अलीयुन वली उल्लाहे एक दो तीन, चार । जब हुऐ तब ही कहिये । क्यों नहीं कह सकते । क्या दिल गवाही नहीं देता ।

गवाह बनने के । देखिये मैं कुछ कहने जा रहा हूँ । आप रात को चारपाई पर लेट कर ग़ौर कीजियेगा ।

अभी तक तो मैं पढ़ रहा था कि कोई दावा नहीं है । लेकिन अब मैं कह रहा हूँ कि मुस्लमानों में कोई गवाह नहीं है । (सलवात) देखिये हुज़ूर कोई गवाह नहीं है । एक फ़िरक़ा भी गवाह नहीं है, और अगर है तो कहे..... अश्हदोअन्ना । हम गवाही देते हैं, कहा । नही भई ! नहीं कहा । क्या वाक़ेया ग़लत है । कहा । नहीं । वाक़ेया सही है ख़लीफ़ये अव्वल थे । हम एहतेराम करते हैं कलमें में हम नाम नहीं ले सकते क्यों नहीं ले सकते अब वो ज़माने ख़त्म ही हो गये । अब अलीयुन वलीउल्लाह क्यों कहते हैं । हम कहते हैं कि आप क्यों नहीं कहते । ठीक है आप चौथा कहते हैं । चौथी मन्ज़िल पर कहिये । कलमा जो पूरा करेगा शिया हो या सुन्नी बग़ैर अली के नाम का किसी का कलमा पूरा नहीं होगा । (सलवात) हद ये है कि देखिये अब गुफ़्तगू का रूख़ बस दामने वक़्त में गुन्जाईश नहीं कि नबी के बाद किसी की ज़रूरत ही क्या है । ? कहने लगे, नहीं साहब, ज़रूरत है, तो कल थी, आज तो नहीं है । उन्होने कहा नहीं कल भी थी और आज भी है । तो आज कौन ख़लीफ़ा है कहा कोई नहीं है । इसका मतलब ये कि आप कच्चे मुसलमान हैं वक़्त का तकाज़ा आप क्यों नही पूरा करते । कहा । आज कोई बनने को तैयार नहीं हैं । ऐसा न कहिये । ज़ियाउल हक़ से आप झूठों कहिये । सच्चों बन जायेगें (सलवात) झूठों कह कर देख लीजिये । मैं कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ । झूठों पैग़ाम भेज कर देखिये । हिन्दुस्तान के सारे मुसलमान एक हो कर एक मुसलिम कान्फ्रेंस करके ये तजवीज़ पास करें कि हम ज़ियाउल हक़ को इस वक़्त का ख़लीफ़तुल मुसलेमीन मानते हैं । अच्छा तो शिया हैं न आप । हमको दांव देने चले। हम इण्डिया में बैठ कर, ज़ियाउल हक़ के लिये तजवीज़ पास करें । क्या हर्ज है भई ये तो मज़हब का मामला है । हाँ हाँ ये तो मज़हब का मामला है । यूँ ही पुलिस पीछा किये हुऐ है यूँ ही सीआईडी लगी हुई है, और लोग कहेगें । देखो उनका ख़लीफ़ा पाकिस्तान में है तो गौरमेन्ट के क़ानून के हिसाब से तजवीज़ नहीं पास हो सकती । इसका मतलब

ये है कि जहाँ ख़ौफ़ होगा नहीं वहाँ गवाही भी नहीं देता कोई नहीं देता ।

आज तक कोई नहीं देता । तो जिस बात का दावा न जिस बात की गवाही । वो बात कैसे साबित होगी ? मन्तिकी बात है । उन्होने कहा अली । अली ने दावा कि दावा किया किया कि मै जानशीने रसूल हूँ । मै अल्लाह का वली हूँ । मै वारिसे कुरआन हूँ । पूछो, तुम्हे जो कुछ पूछ्ना है । कब्ल इसके मै तुम्हारे दरमियान से उठ जाऊँ । दावा किया, किसने गवाही दी ? हमने दी । अश्हदोअन्ना अलीयुन वली उल्लाह (सलवात) हाई कोर्ट जाईये। सुप्रिम कोर्ट जाईये । अरे सऊदी अरब के हाई कोर्ट जाईये । सुप्रिम कोर्ट जाईये कही किसी इस्लामी मुल्क में कहीं एक जगह दावा हो । गवाही हो मुक़ाबले में न दावा हो न हो न गवाही हो । मुक़द्दमा कैसे चलेगा ? अली मुद्दई कि मै जानेशीने रसूल और वारिसे कुरआन और हम गवाह कि अली जानेशीने रसूल और वारिसे कुरआन इसके मुक़ाबले में न किसी का दावा, न किसी की गवाही, देखिये कहाँ तक मै बात ले आया । दावा भी नहीं, गवाही भी नहीं, अली का दावा हम गवाह, आप भी अगर गवाह बनना चाहते है तो दावे में गवाही देने आ जाईये । और अगर गवाह नहीं बनना चाहते हैं तो घर बैठिये । दावा कहाँ है ? किसका दावा है ? किसका दावा नहीं । कोई गवाह नहीं । इस बात का कोई क्या माने कि जिसका न कोई दावा और जिसकी न कोई गवाही हो । यहाँ दावा भी है और गवाही भी है । आप तो गवाही देते हैं आप क्यों कहते हैं । अश्हदो अन्ना अलीयुन वली उल्लाह । अली ने क्यों कहा मै अल्लाह का वली हूँ । न वो दावा करते न हम गवाही देते जैसे आप चुप बैठे अश्हदोअन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह के बाद वैसे हम भी चुप बैठते । दावा न होता, तो हम गवाह कहाँ से होते । दावा है इसलिये हम गवाह है इन्होने कहा । ठीक है है साहब हम तक न दावा पहुँचा न हम गवाही देगें । यहाँ के लिये हमने इतना इधर उधर घुमाया फिराया, नहीं है कहा । हम तक न अली का दावा पहुँचा न हम गवाही देगें ।

अली का दावा नहीं पहुँचा ? कहा : हमसे किसी ने नहीं कहा । कुरआन पढ़ा ? कहा : हाँ पढ़ा कुरआन, कुरआन तो बराबर पढ़ते है कुरआन में अल्लाह ने कहा अल्लाह तुम्हारा वली है । इसका रसूल तुम्हारा वली है, और वह वली है । जो हालते रुकूअ में ज़कात देता है । अब तो दोगे गवाही, किस ने ज़कात दी ? कहा सारे असहाब में अली ने ज़कात दी । हो गयी सब से गवाही । सारे असहाब की गवाही की ज़कात अली ने दी । कुरआन का दावा है जो ज़कात रूकू में दे वो वली । अब जो अलीयुन वली उल्लाह न कहे वो शियों को नही झुठला रहा है । बल्कि वो कुरआन को झुठला रहा है । (सलवात) तो सुनिये कुरआन मे अल्लाह फ़रमा रहा है कि अल्लाह तुम्हारा वली गवाही दी कि नहीं । रसूल तुम्हारा वली है । मुसलमान ने गवाही दी कि नहीं । और वो वली है जिसने हालते रूकू में ज़कात दी । माबूद तुझे इसका नाम नहीं मालूम कि किसने हालते रूकू में ज़कात दी । कुरआन ने कहा । मुझे सब मालूम है कि इस का नाम क्यों न रखा आयत में । कहा । मैं इसी का नाम लेता जिसने ज़कात दी तो न जाने कितने लोग नाम रख लेते । और कहते ये नाम उनका था । इसलिये हमने नाम की बात नहीं की । नाम तो कोई भी रख लेगा लेकिन काम न कर पायेगा । (सलवात) अल्लाह तुम्हारा वली, उसका रसूल तुम्हारा वली, और वह वली जिसने हालते रूकू में ज़कात दी । किसने ज़कात दी । असहाबे कराम फ़रमाते है कि अली न ज़कात दी । तो अली वली अज़ रूये कुरआन । तो मुनकिरे विलायत अली शियों का मुनकिर नहीं । शिया किस गिनती शुमार में है ।

इन्कारे कुरआन है । आपने कहा हमें कुरआन काफ़ी । कुरआन कहता है वली मानो अली को । मै काफ़ी नहीं हूँ । एक जुमला कहूँगा मैं भी काफ़ी का । सोच के आया हूँ । सबने कहा कुरआन काफ़ी । मगर किसी को काफ़ी नहीं हुआ । मैं कहता हूँ विलायते अली साबित करने को कुरआन काफ़ी है । (सलवात) हाँ हुज़ूर दामने वक़्त में गुन्जाईश नहीं है । इतना समाअत फ़रमा लें कि अली के विलायत साबित करने को कुरआन काफ़ी है । हमे न रवायत

की ज़रूरत है न तारीख़ की, हमें न वायज़ की ज़रूरत है, हमें न शख़्सीयतों की ज़रूरत है, हमें न सही की ज़रूरत है, हमें न मुस्लिम की ज़रूरत है, न मुनाफ़िक़ की ज़रूरत है । कोई पढ़े न पढ़े,क़ुरआन पढ़ेगा, कोई कहे न कहे क़ुरआन कहेगा, कोई बोले न बोले क़ुरआन बोलेगा और जब सिरके से न धुल सका । (सलवात) ये आयत जब तक रहेगी, तब अली अल्लाह का वली अब मेरी बात समझ में नही आती कि जब अली को वली मान लिया तो अब कहने में क्या बात है ? क़्यामत के दिन फिर पूछा जायेगा कि क्या अली मेरा वली नही । मालिके यौमिद्दीन बोलो अली मेरा वली है कि नही ? तो कहा : क्यों नहीं ? कहा क्यों नहीं ? मा मनाका । किसने तुमको रोका ? अब ये सब सड़क के ख़तीबों के नाम लेना पड़ेगें । मेरे माबूद फ़लाँ आये थे कह गये । मत कहना फ़लां आये थे । कह गये मत कहना । खुदा कहेगा, लाओ सबको, तुमने मना किया कि अली को वली न कहो । हाँ, तुमको किसने मना किया ? किसने मना किया ? किसने मना नहीं किया ! वल्लाह क़सम खा कर कह रहा हूँ शरई, ये ख़लीफ़ये अव्वल ने मना किया कि अली को वली न कहो । न ख़लीफ़ये दोउम ने कहा कि अली को वली न कहो, न ख़लीफ़ये सोउम ने मना किया कि अली को वली न कहो । हद ये है कि माविया ने भी मना नही किया कि अली को वली न कहो । यज़ीद ने भी नहीं कहा कि अलीको वली न कहो ।

इमाम अबू हनीफ़ा ने भी कहा नहीं कि अली को वली न कहो । इमामे मालिक ने भी नहीं कहा कि अली को वली न कहो । इमाम शाफ़ई ने भी नही कहा कि अली को वली न कहो । इमाम हम्बल ने भी नहीं कहा कि अली को वली न कहो । ये कहा किसने ? देखिये, तीसरी अजूबा चीज़ पेश कर रहा हूँ कोई मना करने वाला नहीं । तो कहना छोड़ा कबसे ? किसने मना किया ? बताईये ढूँढ़ कर लाईये । ख़लीफ़ये अव्वल ने अपने दौर में किसी को सज़ा दी कि अली को वली क्यों कहते हैं ?ख़लीफ़ये दोउम ने किसको टोका कि हमने सुना है कि हमने सुना है कि तुम अली को वली कहते हो । ख़लीफ़ये सोउम ने किसी को सज़ा दी इस बात पर कि तुम अली को

वली कहते हो । खुद अली ने कहा कि तुम अली को वली क्यों कहते हो ? फिर हुक्म हुआ मावियेा तख़्त पर बैठ गया न जाने क्या क्या कहा अली को किसने कहा कि अली वली नहीं हैं । कहा : अब जा कर पूछेगें । मौलवी साहब से अरे ये काम आप का है कि उलेमा से पूछ कर हमें बताईये कि किसने मना किया । मालूम हुआ कि किसी ने मना नहीं किया । लोगेा ने खुद कहना छोड़ दिया, किसकी मोहब्बत में । (सलवात) बस आ गई क्लाईमेक्स पर बात । किसकी मोहब्बत में अली को वली कहना छोड़ा । मना तो किया नहीं किसी ने, किसकी मोहब्बत में कहना छुड़वाया अली को, किसकी आशिक़ी में क़हना छुड़ाया जबकि जिसकी मोहब्बत में छुड़वाया उसने खुद भी मना नहीं किया । क्यों हुज़ूर । मोहब्बत अली को वली कहना छुड़ा सकती है । ये तो अपनी अपनी मोहब्बत की बात है । आप को उनसे मोहब्बत है कि जिनकी मोहब्बत का तक़ाज़ा ये है कि आप अली को वली नहीं कहें आप को अल्लाह और रसूल से मोहब्बत है । जिनकी मोहब्बत का तक़ाज़ा ये है कि अलीको वली कहें । (सलवात)

कुरआन अली को वली कह रहा है । मुसलमान अली को वली मानता है । बड़े बड़े मुसलमानों ने अली को वली माना, और हमने तो ये देखा कि हम शियों में जिसने अली को वली माना वह शिया हो गया । और बेरादराने अहलेसुन्नत में जिसने अली को वली माना, वली हो गया । (सलवात) अली ऐसा वली है कि जिसको दिल से अली को वली मान ले वो अपने दौर का वली बन जाये । वलीबन गये । या अली कहते कहते । इसीलिये तो कहते हैं या अली कहना बिदअत है डरते हैं कि सुन्नीयों में तो इतने वली बन गये । कहीं शियों में वली बनने लगे तो क़यामत ही हो जायेगी । यहाँ कोई वली नहीं है सब क़ायले विलायते अली है और विलायते अली से मुश्ताक़ हैं विलायते आईम्मा और विलायते आईम्मा से मुश्ताक़ हैं । विलायते फ़क़ीहा का जवाब ला नहीं सकते । विलायते फ़क़ीह का जवाब ला नहीं सकते । विलायेते आईम्मा का जवाब क्या कोई लायेगा। एक ने दुनिया के सामने विलायते फ़क़ीह को पेश किया तो अमेरिका का चेहरा उतर गया । रूस के चेहरे का भी रंग फ़क़ हो गया । जब

विलायते फ़क़ीह को नहीं बर्दाश्त कर सकते तो विलायते अली क्या बर्दाश्त होगी । (सलवात)

नायबे इमाम ऐसा है कि जब नायबे इमाम बनाया हुआ आदिल शरई हुकूमते इस्लामी में पहुँचता है और कोई आर्डर देता है तो इसको शरीयत को भी तस्लीम करना पड़ता है । जो मैंने अर्ज़ किया था । रात में याकूब गली की मजलिस में तो दूसरे दिन "इन्क़ेलाब" रोज़नामा में छप गया कि जब आक़ाये अर्दबली जो चीफ़ जस्टिस ईरान के है ज़्यारते जन्नतुल बक़ी के लिये पहुचें तो कहा दरवाज़ा खोलो कहा : दरवाज़ा नहीं खुलेगा । कहा : दरवाज़ा खुलेगा कहा हम को हुक्म नही है कहा : जो तुम्हारा हाकिम है इससे पूछे । हाकिम से पूछा । इसने कहा खोल दो दरवाज़ा । दरवाज़ा खुला जन्नतुल बक़ी का और अहलेबैत के चाहने वाले दाख़िल हुऐ रोये भी और मातम भी किया और कोई हदें सऊदी अरब ने इन पर नहीं जारी किये आक़ाये अर्दबली को न ताज़ियाने लगाये गये । न क़ैद किया गया, और न इनके साथ के लोगों पर रोने पर ताज़ियाने नक़ैद किये गये । आप पूछ लें अगर मेरी बात का यक़ीन न हो । दरवाज़ा खुला ।रोये, मातम हुआ, न रोका गया और न सज़ा दी गयी । अब ये जो ऐजेन्ट हिन्दुस्तान में घूम रहे है , ये बिदअत है । ये इस्लाम में नहीं है तुम ने क्यों करने दिया अगर इस्लाम में नहीं है और ज़बर दस्ती कर लिया था तो सज़ा क्यों न दी ? देखिये इण्डिया की बात नही है । इण्डिया सेक्यूलर स्टेट है यहाँ कोई क्या सज़ा दिलायेगा । वहाँ की बात है जहाँ इस्लामी क़ानून है अब्दुल्लाह इब्ने बाज़ कहाँ चला गया । जिसमें रसूल अल्लाह के मीलाद को बिदअत का फ़तवा दिया । इसने अर्दबली के मातम को बिदअत का फ़तवा क्यों न दिया ? ऐ जाहिलों ख़त लिख कर पूछे फ़तवा बदल गया है । (सलवात) फ़तवा बदल गया है । हाँ । इस साल तक बिदअत था अब बदल गया है । फ़तवा बदल गया है । आपके पास है फ़तवा । मेरे पास नहीं है । मेरे पास तो "इन्क़ेलाब " की ख़बर है सवाल ये है कि अगर अली की तरह धक्का मार कर दरे ख़ैबर तोड़ दिया होता तो और बात होती । खोलो कह कर खुलवा दिया, और खोलने वाले

ने डर कर नही खोला पूछ कर खोला, यानी इस्लामी फ़तवा लिया, और फ़तवा मिला, अरे क़ौम एक हो गयी तो फ़तवा बदल गया । अरे सारे मुसलमान एक हो जायें तो (सलवात) सब फ़तवा बदल सकते हैं । दावा नहीं है । दलील नही है । गवाही नही है । शरीयत नही है । सियासत है सियासत और इसके अलावा कुछ नही है । अब जन्नतुल बक़ी में मातम होगा । अब हिन्दोस्तान में जब मातम हो तो मना न कराना कि हमारे मजहब में इजाजत नही है ।

नहीं है तो जन्नतुल बक़ी में करने क्यों दिया ? और पूछ कर किया ? अरे वो मन्ज़िल और है । इसका मतलब ये कि कल तक मन्ज़िल थी कि मातम बिदअत है अब मन्ज़िल बदल चुकी है, और फ़तवा भी बदल चुका है । अब ठाठ से हिन्दोस्तान में सबीलें लगाईये और मातम कीजिये । और जब कोई पूछे तो कहिये फ़तवा किसका है और जब कोई कहे, इनका है तो ये बातिल मुफ़्ती ये बातिल फ़तवा, मुफ़्ती मर गया । फतवा मौजूद इन्होने कहा :नहीं । अब्दुल्लाह इब्ने बाज़ जो ज़िन्दा है मुफ़्ती ज़िन्दा है कहा :हाँ, ज़िन्दा है मरा नहीं है तो नानी मरी होगी । (सलवात) मुफ़्ती नहीं मरा तो मुफ़्ती की नानी ज़रूर मर गई होगी । भई ये मुहावरा है हमारा । नानी ज़रूर मरी । कहा : साहब नहीं रोक सके । क़सम ख़ुदा की जब सऊदी अरब की हुकूमत न रोक सकी तो हिन्दोस्तान की गौरमेन्ट को क्यों गुमराह करते हो ? कौन सी जगह है जहाँ हुसैन का मातम नही है । ये जो तुम्हारा लाल क़िला देहली है उसमे हुसैन का मातम हुआ । अभी शिया अख़बार में अली जव्वाद ज़ैदी साहब का पहला मज़मूल छपा है । जिन्होने ख़ानदाने मुग़लिया के दौर में लाल क़िला देहली में और आगरे में इमाम हुसैन की अज़ादारी दिखाई । तारीख़ शाहिद है मरसिये पढ़े गये । अल्लाह'-अल्लाह यही नहीं । यज़ीद के दौरे हुकूमत से गिरिया हुआ । मातम हुआ । यज़ीद तो रोक न सका । इब्ने यज़ीद क्या रोकेगें । आज तुम्हारे पास क्या पावर है, जो हुसैन की अज़ादारी से रोकोगे ये अज़ा होती रहेगी । सौ बरस इसी अन्जुमन हो गये है और इन्शा अल्लाह ता ज़हूरे हुज्जते मातम होता रहेगा । हुसैन पर गिरिया होता रहेगा । क्यों ? ये किसी से किसी का वादा

है किसका किससे वादा है अल्लाह का उस दुखियारी माँ से वादा है । जिस माँ ने अल्लाह से अपने बच्चे को कुरबान करने का वादा किया है। इस माँ से अल्लाह ने इस बच्चे पर क़यामत तक गिरिया करने वाले पैदा करने का वादा किया है ।

मुसलमान अब भी इतरत और कुरआन के पास आ जाओ । मुसलमानों अपने जादे पर बाक़ी रहो । ये रसूल अल्लाह के घर का ग़म है । ये शब्बेदारी, अन्जुमन रात भर क़ायम करेगीं । रात काफ़ी न होगी ! तो दिन में भी मातम होगा। लोग कहते है नाम शब-बेदारी है दिन में क्यों मातम होता है । मुझे याद आता है कि जब इब्ने अब्बास ने बिस्मिललाह की तफ़सीर पूछी तो अली ने कहा कि अफ़सोस कि रात ख़त्म हो गयी । वरना तफ़सीर और बताता । ये कुरआन करबला की तफ़सीर है कि रात ख़त्म हो जाती है और तफ़सीरि करबला ख़त्म नही होती । और बेहम्दो लिल्लाह जो समझदार मुसलमान है शिया हो या सुन्नी हों वो हुसैन के मातम को नबी का मातम समझता है और अपने रसूल की बारगाह में ये नहीं चाहता कि वो क़यामत में पूछें कि मेरा घर लुट गया । मेरा बच्चा शहीद हो गया । और तुमने ग़म नही मनाया । अलहम्दो लिल्लाह हर तरफ़ अज़ा है । हर तरफ़ रौनक़े अज़ा है । ये अशरा अन्जुमने इमामिया का आज की शब्बेदारी पर ख़त्म होगा । लेकिन मजलिस तमाम नहीं होगीं । कल भी यहाँ मजलिस होगी । मुग़ल मस्जिद में अभी मजलिस होगी । ज़िक्रे हुसैन जारी रहेगा । मातमे हुसैन जारी रहेगा । इसलिये कि ये वादये इलाही है । बस आप अमादा हो जायें । आप को हम को मिल कर आज इस मज़लूम पर रोना है जो सुब्हे आशूर से अस्र तक एक एक शहीद पे रोया । मगर जब वो शहीद हुआ तो इसका रोने वाला कोई नही । जज़ा कुम रब्बोकुम ।

हाँ अज़ादारों ये मातम ये मजलिस, इसकी क़द्र कोई क्या जाने । फ़ारसी का मशहूर शेर सुना है कि क़द्र गौहर शाह दान्द या बेदान जौहरी । गौहर की क़द्र बादशाह जानता है या ज़ौहरी जानता है तो गौहरे अश्क़े अज़ा की क़द्र क्या जाने । इसे भी या ख़ुदा जानता

है या जो इन आसूओं का जौहरी है वो जानता है । कि ये आंसू क्या है ? रात जागना आसान है । अकबर नेकहा है कि वस्ल हो या फ़िराक़ हो अकबर रात भर जागना क़यामत है । लेकिन ये हुसैन से मोहब्बत करने वाले रात भर जाग कर गुज़ार देते है मातम में रात बसर करते है । इन अन्जुमानों का मरतबा कोई क्या समझेगा ? इन मातम की इज़्ज़त कोई क्या जानेगा । इनकी क़द्र दान हुसैन की दुखियारी माँ है । ये सीनो पर दागे़ मातम नहीं है ये नजात के परवाने है । जानते है हुसैन का जिससे रब्त हो जाये मलायका कितना इसका एहतेराम करते है मलायका जानते है कि ये हुसैन वाले है ये हुसैन के नाम पर आंसू बहाते है ये हुसैन के नाम पर खून बहाते है । हुज़ूर दुनिया महवे हैरत है कि सब मिलकर बिदअत के फ़तवे देते है मगर इधर हेलाले मोहर्रम नमूदार होता है उधर सफ़े मातम बिछ जाती है औरतें बालों से अज़ाख़ाने साफ़ करती है । हुज़ूर औरतों का मिजाज़ बड़ा नाजुक होता है मगर ज़रा हुसैन की महफ़िले अज़ा में आकर देखो किसी भी औरत से जो शौहरदार है अगर कह दो कि चूड़ी तोड़ दे तो कभी न तोड़ेगी कहने वाले का मुहँ तोड़ देगी । मगर शौहर की ज़िन्दगी में चूड़ी न तोड़ेगी ।

अगर किसी के मांग से कोई सिन्दूर छुड़ाना चाहे कभी न छुड़ाने देगी । बाल कभी परेशान न करेगी । इसलिये कि ये बद शगूनी समझी जाती है । सिर्फ़ शौहर के मरने पर चूड़ी तोड़ी जाती है । शौहर के मरने पर रंगीन कपड़े नही पहने जाते । बाल नहीं खोले जाते .... और ये हुसैन कौन है ? कि इधर मोहर्रम का चांद हुआ बीबीयां अज़ाख़ानों में पहुँची चूड़ियाँ तोड़ डाली, मांग उजाड़ी, बाल परेशान कर लिये । स्याह लिबास पहन लिये । जब उनसे पूछा कि क्या शौहर मर गया तो कहती है ये क्या कह रहे है ?मेरा शौहर नहीं मरा है अभी ज़िन्दा है चूड़ी क्यों तोड़ी जब बेवा नही हुई तो चूड़ी क्यों तोड़ी । बेवा न हुई तो सिन्दूर क्यों छुड़ाया ? जब बेवा नहीं हुई तो बाल क्यों खोले ? तो कहती है, उम्मे लैला बेवा हो गयी, रबाब बेवा हो गयीं । हमारी शहज़ादियां इस महीने में बेवा हो गई हम उनका सोग मना रहे है । जज़ाकुम रब्बोकुम हौं इन्शा अल्लाह आप रोयेगें

और बहुत रोयेगें... अज़ादारों सुनो मां का दिल इतना नाजुक होता है कि बच्चे के अगर सुई लग जाये और एक क़तरा खून निकल आये तो माँ का दिल तड़प उठता है । अरे मेरे बच्चे के खून बह रहा है । कैसे खून बन्द हो ? क्या दवा लगायें कि खून बन्द हो । लाओ खून निकल रहा है । जल्दी बन्द हो जाये । इसलिये कि मां का दूध बेटे के खून में शामिल होता है । मगर जब आशूर का दिन आता है तो मायें बच्चों को लेकर आती है । इसे क़मा लगा दो । इसका खून हुसैन के नाम पर बहा दो । जज़ाकुम रब्बोकुम । जब बच्चे ज़न्जीर का मातम करते है ।

जब बच्चे क़मा का मातम करते है खून में नहा जातें है मायें कहती है आज हमारे बच्चे ने मातम किया है ये ग़म खुशी में कैसे बदलजाता है । ये मां का दिल किसने बदल दिया ये उम्मे लैला ने बदल दिया, रबाबा ने बदल दिया । किस माँ ने बदला । जिसने बेटे के कलेजे में बरछी काफ़ल देखा । उस माँ ने बदला जिसने छः माह के बच्चे के गले में तीर देखा आज भी ज़ब कमसिन बच्चे शीर ख़ार बच्चे रोते है माँ तड़प जाती है दूध पिला कर ख़ामोश करती है और जब आशूर का दिन आता है बच्चे तड़पते है माँ उन्हे दूध नहीं पिलाती है कोई ना वाक़िफ़ अगर कहता भी है कि तुम्हारा बच्चा रो रहा है । दूध पिला दो तो जवाब देती है कि आज आशूर का दिन है हम दूध नहीं पिला सकते इसलिये कि आज अली असग़र भी तड़प रहे थे। अली असग़र को भी दूध नहीं मिला था । ये फ़र्शे अज़ा ये रौनक़, ये रौशनी, भी नागवार गुज़रती है । ये रौनके अज़ा भी नागवार गुज़रती है । लोग कहते है कि आप इतनी रोशनी क्यों करते है ? विलादत है कि शहादत है । आप को नहीं मालूम जज़बात दो ही वक़्त भड़कते है या विलादत के वक़्त या शहादत के वक़्त, चीज़ें मुश्तरक होती है । हुज़ूर शादी में दूल्हा के आगे भी रौशनी चलती है, और रात में जनाज़े के आगे भी रौशनी चलती है । दूल्हा के सर पर भी फूलों का सेहरा चढ़ाया जाता है । जनाज़े पर भी फूलों की चादर चढ़ाई जाती है । चीज़ एक ही है नवीयत अलग अलग है ये खुशी की रौशनी है ये ग़म की रौशनी है । वो खुशी के फूल है और वो ग़म के

फूल है ये कैसा सन्नाटा है । आज कैसी विरानी है ।

अज़ादारें अशरा ख़त्म होता है तो घर वीरान हो जाता है और जब हुसैन चले गये ख़ेमो से इस वीरानी का अन्दाज़ा लगाओ कि जब हुसैन रुख़सत हो गये मैने कल रुख़सत अर्ज़ की आये मैदाने करबला में, आवाज़ दी ओ साद के बेटे । मैं कुछ कहना चाहता हूँ । ऐ साद के बेटे बाजों को बन्द कर दें ताकि मेरी आवाज़ सफ़े आख़िर तक पहुँच जाये । बाजे बन्द हो गये । कहा ऐ साद । लगामे घोड़े की खिचवा दें । मोहारें नाक़ों की खिचंवा दें अन्दाज़ा लगाईये । करबला में क़त्ले हुसैन के लिये कितने घोड़े आये थे । कितने नाक़े आये थे । कि आवाज़ दब रही थी । उमरे साद घोड़े पर बैठ कर आगे निकला हुसैन । हमने बाजा बन्द करा दिया है । लेकिन घोड़े हमारे अख़्तियार में नहीं । नाक़े हमारे अख़्तार मे नहीं है । बस रकाबों से पैर निकाले । फ़र्श से ज़मीन पर दो ज़ानू बैठे । कहा :तेरे अख़्तियार में नहीं है कि इस मज़लूम नातवां के अख़्तेयार में है । हमीद कहता है कि मैने देखा हुसैन ने कलमे की अंगुली घूमाना शुरू की जिधर जिधर अगुंश्ते शहादत जाती थी घोड़े गरदने डाल देते थे । और आंखों से आसूँ क्यों बहने लगे आसूँ । आक़ा हम मजबूर है जब करबला में ख़ामोशी छा गयी हुसैन ने आवाज़ दी । सुनो । जो जानता है वो जानता है । जो नहीं जानता वो जान ले । कल न कहना हमें मालूम न था कि हमने किसे क़त्ल किया । देखो मै मक्का का बेटा हूँ । मै मेना का बेटा हूँ देखो मै ख़ानये काबा का बेटा हूँ, मै सफ़ा और मरवा का बेटा हूँ, मै मोहम्मदे मुस्तफ़ा का बेटा हूँ । मै ख़दीजतुल कुबरा का बेटा हूँ । मै अलीये मुरर्तज़ा का बेटा हूँ, मै फ़ात्मा ज़हेरा का बेटा हूँ मै मोहम्मद का नावासा हूँ, मै तीन दिन का प्यासा हूँ, देखो मेरे ख़ून से हाथ रंगीन न करो बताओ मेरी ख़ता क्या है ? मैने कुरआन बदला है ? क्या मैने शरीयत बदली है ? क्या मैने नाना की सीरत बदली है ? क्या मैने नाना का दीन बदला है ? बोलो । सबने कहा नहीं हुसैन आप ने कुछ नहीं बदला है कहा : फिर मुझे क़त्ल न करो । कहा : हुसैन यज़ीद कीबैयत क़बूल कर लो ।

क़त्ल न करेगें । कहा : लाहौल विलाकूवत इल्ला बिल्लाह । क्या तुमने हुसैन को मजबूर जान लिया है । ये कह कर जुल्फ़ेक़ार म्यान से निकाल ली । मैमना पर टूट पड़े । मैमना भागा । मैसरे पर टूट पड़े मैसरा भागा । क़ल्बे लश्कर का रुख़ किया क़ल्बे लश्कर भागा । हुजूर तीन दिन के प्यासे से, न किसी में हिम्मत थी । एक रावी कहता है, इससे किसी ने पूछा हमीद ने लिखा है कि तू क्यों भागा जा रहा है । उसने कहा मुझसे हुसैन की आंखें नहीं देखी जाती । आंखों से ही डर कर भागा । अल्लाह अल्लाह । मैदान साफ़ हो गया । हुसैन ने जुल्जेनाह का रुख़ फुरात की तरफ़ डाल दिया । पहुँचे । लोग कहते है हुसैन पानी पीने गये । वो बाप क्या पानी पियेगा । जिसका कड़ियल जवान बेटा मार डाला गया हो । वो बाप क्या पानी पियेगा जिसका छः महीने का प्यासा बच्चा मार डाला गया हो । वो बाप कैसे पानी पिये जिसकी बेटी ख़ैमे मे प्यासी हो । हुसैन दिखाने गये थे कि उमरे साद मुझे मजबूर न जानना या हो सकता है कि भाई अब्बास के पास गये हो । भईया अब्बास तुम ने प्यासे कीजंग न देखी । भईया अब्बास तुम्हारे ग़म में मेरी कमर टूटी हुई है । एक मरतबा उमरेसाद ने आवाज़ दी । हुसैन तुम फुरात के किनारे हो यहाँ लश्कर ख़ैमागाह की तरफ़ जा रहा है । बस एक मरतबा फुरात से घोड़ा निकाला आवाज़ दी ख़बरदार जो किसी ने ख़ैमागाह का रुख़ किया अभी हुसैन ज़िन्दा है । लिखा है कि हुसैन की आवाज़ पे ही लश्कर दहल गया । हुसैन ख़ैमागाह के सामने आ गये कहा : जिसमें हिम्मत हो आगे बढ़े ।

किसमें मजाल थी की आगे बढ़ता । उमरे साद ने कहा : तीरों की बारिश करो बग़ैर इसके क़त्ले हुसैन मुमकिन नहीं है । लीजिये रीसालों ने तीर फेंकना शुरू किया । हुसैन ने जुल्फ़ेक़ार से तीरों को काटना शुरू किया अब जिधर बढ़ते थे उधर का लश्कर भागने लगता था । एक मरतबा किसी ने आवाज़ दी । हुसैन हुसैन तुम्हे अली अकबर का वास्ता तलवार रोक लो । बस ! बस ! हुजूर मै पढ़ चुका । कड़ियल जवां बेटे का नाम सुना । कहा : नाना के घोड़े ज़रा मुझे अलीअकबर तक ले चल घोड़ा ले कर आया । बेटे को

देखा । अली अकबर, अब ये तुम्हारा वास्ता दे रहा है । बेटा गवाह रहना मैने तलवार म्यान में रख ली । फिर क्या था ? हर तरफ़ से पत्थर आने लगे । तीर चलने लगे ! हुसैन यको तन्हा । जज़ाकुम रब्बोकुम । खुदा आपको किसी ग़म में न रूलाये सिवाये ग़में हुसैन के । लिखा है कि हुसैन के जिस्म पर नौ सौ नब्बे ज़ख़्म थे । अरे जिसके जिस्म पर नौ सौ नब्बे ज़ख़्म हो वो जुलजेनाह पर बैठा हो मगर अभी किसी की मजाल नहीं है कि क़रीब आये । एक मरतबा धूप में एक साया महसूस हुआ । सर उठाया, कौन, कहा : ख़ादिम जिब्राईल, जिब्राईल कैसे आये ? कोई पैग़ाम लाये ? जवाब दिया । जी नहीं कोई पैग़ाम नहीं । मैने आपको झूला झूलाया है ।

मैने चक्की पिसी है । ऐ शहज़ादे जब आप मदीने मे लेटते थे मै एक पर से साया करता था । मै एक पर को फ़र्श बनाता था । मैने जो आपको धूप में अकेला देखा तो मेरा दिल तड़प गया । मैने अल्लाह से कहा । माबूद । ये मन्ज़र नहीं देखा जाता । इजाज़त दें मै हुसैन की नुसरत को जाऊँ । खुदा ने इजाज़त दी, मगर कहा हुसैन से इजाज़त ले लेना । कहा : जिब्राईल तेरा हुसैन इम्तेहान में है । जिब्राईल मुझे तेरी मदद नहीं दरकार है । ऐ जिब्राईल ज़रा सामने से हट जाओ । कहा : आक़ा क्यों ? कहा : धूप की तेज़ी कम हो गयी है । मै साया नहीं चाहता । जिब्राईल पर समेट कर हटे । हुसैन ने हाथ बलन्द किये । माबूद आफ़ताब के रुख़ को हुसैन के सामने की तरफ़ कर दे आज हुसैन तेरी बारगाह में इम्तेहान देने को आया है । ये फ़रमा रहे थे कि एक तीर आकर सीने पर लगा । तीर दिल के पार हो गया । फौरन पुश्ते ज़ीन पर झुक गये । अरे नाना के वफ़ादार घोड़े इसने आहिस्ता आहिस्ता ज़मीन पर घुटने टेके । नबी की अमानत को करबला की ज़मीन के सुपुर्द किया । उधर दरे ख़ैमे पर फ़िज़्ज़ा खड़ी थीं । बीबी ज़ैनब आती थीं । फ़िज़्ज़ा मेरा भाई कहाँ है । फ़िज़्ज़ा कहती आप का भाई जेहाद कर रहा है । अब आप का भाई खुत्बा दे रहा है । अब आप का भाई फुरात के किनारे है ।

ख़ैमे मे जाती थीं कभी सैयदे सज्जाद की नब्ज़े देखती थी । कभी लैला को सम्भालती थी। कभी रबाब को सम्भालती थी, कभी बानो को सम्भलती थीं। कभी उम्मे फ़रवा को तसल्ली देती थीं । हाय ज़ैनब । हाय ज़ैनब । कभी सकीना को गोद में उठाती थीं कि एक मरतबा फ़िज़्ज़ा ने आवाज़ दी शहज़ादी ग़जब हो गया कहा : क्या हुआ । फ़िज़्ज़ा ने कहा :

बलन्द मरतबा शाहे अस्त बर ज़मीं उफ़्ताद

अगर ग़लत न कुन्म अर्श बर ज़मीन उफ़्ताद

ज़ैनब ने कहा : फ़िज़्ज़ा आगे बढ़ों, फ़िज़्ज़ा आगे, आगे ज़ैनब पीछे पीछे, फ़िज्ज़ा आवाज़ दे रही है । हटो, हटो, अली की बेटी आ रही है । क्या रोबो जलाल था कि लश्कर काई की तरह फट रहा था । बीबी ज़ैनब एक बलन्दी पर पहुँची गौर से देखा क्या मन्ज़र देखा । खुदा किसी बहन को ये मन्ज़र न दिखाये । देखा कि उमरे साद, चितर जुर्रे लगाये खड़ा है । क़ातिल ख़न्जर लेकर आगे बढ़ रहा है । आवाज़ दी । ओ साद के बेटे अरे तू खड़ा है मांजाया ज़िब्ह किया जा रहा है । बस ये आवाज़ हुसैन के कानो में पहुँची ज़मीने करबला पर कुहनियां टेकीं, सर उठा कर बहन को देखा, बहन मतलब समझ गई । फ़ौरन मैदान से ख़ैमागाह की तरफ़ चली अभी ज़ैनब ने पहला क़दम रखा था कि ज़मीने करबला हिलने लगी । आसमान से खून बरसने लगा । आवाज़ आयी । क़त्लल हुसैनो बे करबला । जनाबे ज़ैनब आयीं । सैयदे सज्जाद क़यामत आ गई । कहा : फूफी अम्मा ..... ज़रा ख़ैमा का पर्दा उठाईये । ज़ैनब ने पर्दा उठाया सैयदे सज्जाद निकले । अमामा उतार दिया । फूफी अम्मा हम यतीम हो गये ।

अस्सलामअलैका या अबाबदुल्लाह अस्सलामअलैका याब्ना रसूलउल्लाह

●●●